देश दर्शन पुस्तक-माला

तिरंगा कवर, पृष्ट संख्या प्रायः ८० से अधिक।

इस पुस्तकमाला में ११६ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। प्रा
प्रत्येक पुस्तक यात्रा के आधार पर लिखी गई हैं। इसके सम्पाद
पं० रामनारायण मिश्र ने समस्त योरुप, पश्चिमी एशिया, भारतव
लंका, बरमा, अफ्रीका आदि की यात्रा समाप्त करने पर ही इस पुस्त
माला का आरम्भ किया। प्रत्येक पुस्तक आवश्यक नकशों और चि
से सुसज्जित है। १ प्रति का मूल्य ।॥), ११६ पुस्तकों के सेट का मूल
केवल ५८) रु०। यह पुस्तक माला आप के पुस्तकालय की शो
बढ़ावेगी। इससे पाठकों के मनोरंजन के साथ ससार का ज्ञान प्र
करने में अपूर्व सुविधा होगी। हम दावे के साथ कह सकते हैं कि दे
दर्शन अत्यन्त उपयोगी और सस्ती पुस्तक-माला है। इस पुस्तक-मा
की पुस्तकें यह हैं:-

१—लङ्का	२—इराक	३—फिलिस्तीन
४—बरमा	५—पोलैंड	६—चेकोस्लोवेकि
७—आस्ट्रिया	८—मिस्र भाग १	९—मिस्र भाग
१०—फिनलैंड	११—बेल्जियम	१२—रोमानिया।
१३—प्राचीन जीवन	१४—यूगोस्लैविया।	१५—नार्वे
१६—जावा	१७—यूनान	१८—डेन्मार्क
१९—हालैंड	२०—रूस	२१—थाई देश
२२—बलगेरिया	२३—अलसेसलारेन	२४—काश्मीर
२५ जापान	२६—ग्वालियर	२७—स्वीडन
२८—मलय देश	२९—फिलीपाइन	३०—तीर्थ दर्शन
३१—हवाई द्वीप समूह	३२—न्यूजीलैंड	३३—न्यूगिनी
३४—आस्ट्रेलिया।	३५—मैडेगास्कर	३६—न्यूयार्क
३७—सिरिया	३८—फ्रांस	३९—अलजीरिया।
४०—मरक्को देश	४१—इटली	४२—ट्यूनिस
४३—आयरलैंड	४४—अन्वेषक-दर्शन ।	४५—अन्वेषक ॥
४६—अन्वेषक-दर्शन ॥।	४७—नैपाल	४८—स्विजरलैंड

शेष सूची कवर के दूसरे पृष्ट पर देखिये।

भारतवर्ष का भूगोल

उत्तर-प्रदेशीय और अजमेर बोर्ड द्वारा हाई स्कूल की परीक्षा के लिये,
हिन्दू यूनिवर्सिटी द्वारा काशी की प्रवेशिका परीक्षा के लिये,
पटना यूनिवर्सिटी द्वारा बिहार-उड़ीसा की मेट्रीकुलेशन
परीक्षा के लिये, हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा
प्रथमा और मध्यमा परीक्षा तथा प्रयाग
महिला-विद्या पीठ द्वारा विदुषी
परीक्षा के लिये स्वीकृत)

लेखक

'भू-परिचय' के रचयिता, "भूगोल" सम्पादक

रामनारायण मिश्र बी० ए०

प्रकाशक

"भूगोल"-कार्यालय, प्रयाग ।

१९५२

चतुर्दशमावृत्ति]

प्रकाशक
"भूगोल"-कार्यालय,
प्रयाग

पहला संस्करण, जुलाई १९३१
दूसरा संस्करण, मार्च, १९३५
तीसरा संस्करण, जुलाई १९३८
चौथा संस्करण, सितम्बर १९३९
पांचवां संस्करण, जुलाई १९४३
छठवां संस्करण, अगस्त १९४४
सातवां संस्करण, जुलाई १९४५
आठवां संस्करण, अगस्त १९४६
नवा संस्करण, अक्टूबर १९४७
दसवा संस्करण, अगस्त १९४८
ग्यारहवां संस्करण, जुलाई १९४९
बारहवां संस्करण, नवम्बर १९५०
तेरहवां संस्करण, अप्रैल १९५१
चौदवां संस्करण, जून १९५२

मुद्रक
'भूगोल'-प्रेस, दफ्करहाघाट, इलाहाबाद।

प्रस्तावना

आज से प्रायः ४० वर्ष पहले मैंने भारतवर्ष का एक अच्छा भूगोल अंग्रेजी में देखा था। उसे देखते ही मेरे मन में यह विचार उठा कि हिन्दुस्तानी लोग अपने देश का भूगोल स्वयं क्यों नहीं लिखते हैं। आगे चल कर शायद इसी विचार ने मुझे प्रेरित किया।

मैं देश से परिचय प्राप्त करने के लिए भिन्न भिन्न भागों की यात्रा करने लगा। यात्रा से मुझे बड़ा लाभ हुआ। इसलिये कठिनाइयों से कुछ भी न डर कर मैंने धीरे-धीरे सारे भारतवर्ष, ब्रह्मा और लंका का पर्यटन कर डाला।

इस यात्रा के आरम्भ से लेकर अब तक भारतवर्ष के सम्बन्ध में मुझे जितने ग्रन्थ मिले, मैंने उन्हें बड़े चाव से पढ़ा। यह पुस्तक इसी यात्रा और अध्ययन के आधार पर १६३१ ई० में पहली बार प्रकाशित हुई।

इस पुस्तक को भूगोल के शिक्षकों और विद्यार्थियों ने अपना कर मुझे आशातीत प्रोत्साहन दिया। इसीलिये आवश्यक परिवर्तन और संशोधन के साथ फिर पुस्तक को चौदहवीं बार प्रकाशित कर रहा हूँ।

इस पुस्तक में प्रादेशिक विवरण के साथ-साथ मानवी भूगोल को सब कहीं प्रधानता दी गई है। प्रथम प्रकरण में भारतवर्ष की

३० जून १९५७

लेखक
रामनारायण मिश्र,
'भूगोल'-कार्यालय,
प्रयाग।

भारतवर्ष

का

भूगोल

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
पहला अध्याय	६
स्वाधीन भारत और पाकिस्तान	
दूसरा अध्याय	११
भारतवर्ष का विस्तार, स्थिति और सीमा	
तीसरा अध्याय	१४
प्राकृतिक विभाग	
चौथा अध्याय	२६
नदियां	
विशेषतायें	
पांचवां अध्याय	४०
भू-गर्भ विद्या और प्राकृतिक सम्पत्ति	
छठा अध्याय	५१
जलवायु	
सातवां अध्याय	६३
सिंचाई	
आठवां अध्याय	६७
वनस्पति और पशु	
नवां अध्याय	७२
कृषि	
दसवां अध्याय	६५
कला-कौशल	
ग्यारहवां अध्याय	१०७
मनुष्य-धर्म, भाषायें	
बारहवां अध्याय	११६
भारतवर्ष के प्राकृतिक प्रदेश	
तेरहवां अध्याय	१२७
हिमालय प्रदेश के राजनैतिक विभाग	
चौदहवां अध्याय	१३७
नैपाल, शिकम, भूटान	
पन्द्रहवां अध्याय	१४५
आसाम-प्रान्त	
सोलहवां अध्याय	१५३
बङ्गाल प्रान्त	
सत्रहवां अध्याय	१६६
बिहार उड़ीसा	
अठारवां अध्याय	१७४
उत्तर प्रदेश	
उन्नीसवां अध्याय	१९२
पूर्वी पञ्जाब	
बीसवां अध्याय	२०३
बम्बई प्रान्त	
इक्कीसवां अध्याय	२१२
मद्रास प्रान्त	

विषय	पृष्ठ
बाइसवां अध्याय मध्य-प्रदेश या महाकोशल	२२१
तेईसवां अध्याय मध्यभारत	२२६
चौबीसवां अध्याय राजस्थान	२३२
पच्चीसवां अध्याय ब्रह्मा	२३६
छब्बीसवां अध्याय अंडमान और निकोबार द्वीप	२५३
सत्ताईसवां अध्याय लङ्का	२५४
अट्ठाइसवां अध्याय पाकिस्तान	२६३
उन्तीसवां अध्याय सीमा प्रान्त	२७३
तीसवां सिन्ध, पश्चिमी पञ्जाब, पूर्वी पाकिस्तान	२८०
इक्तीसवां अध्याय भारतवर्ष की सड़कें और तार	२८०
बत्तीसवां अध्याय भारतवर्ष के जल मार्ग, जलशक्ति नाव चलाने योग्य नहरें, नदियां	२८६
तैंतीसवां अध्याय भारतवर्ष के रेल-मार्ग	२९५
चौंतीसवां अध्याय भारतवर्ष में हवाई मार्ग	३०४
पैंतीसवा अध्याय संसार से भारतवर्ष का व्यापारिक सम्बन्ध, प्रधान बन्दरगाहों का व्यापार, तटीय व्यापार बन्दरगाहों की दशा, सीमा प्रान्तीय व्यापार, लङ्का का व्यापार	३०८

तालिकायें १-९

विषय	पृष्ठ
विदेशों में भारतीय	३२५
प्रसिद्ध स्थानों की मासिक तथा वार्षिक वर्षा और तापक्रम	३३०
भारतवर्ष की उपज का बिस्तार वर्गमीलों में	३३७
भारतवर्ष के प्रसिद्ध स्थानों की दूरी, समुद्री मार्ग से	३३८
रेल-मार्ग से दूरी	३३९
भारतवर्ष की प्रसिद्ध नहरें	३४१
प्रश्न	३४२
मानचित्र	३४४

संसार के प्राकृतिक विभागों में भारतवर्ष का स्थान

भारतवर्ष का भूगोल

पहला अध्याय

स्वतन्त्र भारत और पाकिस्तान

जब भारतवर्ष स्वतन्त्र हुआ तब देश का वह भाग अलग हो गया जहाँ मुसलमान बहुसंख्या में रहते थे। सिन्ध, बिलोचिस्तान, सीमाप्रान्त और पश्चिमी पञ्जाब प्रधान पाकिस्तान है। यह पश्चिमी पाकिस्तान कहलाता है। इसका क्षेत्रफल १,७२,००० वर्गमील है। पूर्वी पाकिस्तान में पूर्वी बंगाल और सिलहट का जिला शामिल है। पूर्वी पाकिस्तान का क्षेत्रफल ५४,००० वर्गमील है। पूर्वी पाकिस्तान पश्चिमी पाकिस्तान से स्थल-मार्ग से लगभग १२०० मील दूर है। दोनों पाकिस्तानी क्षेत्रों का क्षेत्रफल २,३३,००० वर्गमील है। पाकिस्तान की जनसंख्या ६ करोड़ है। इसमें ४ करोड़ मनुष्य पूर्वी पाकिस्तान में और २ करोड़ प्रधान पश्चिमी पाकिस्तान में रहते हैं। पश्चिमी पाकिस्तान रेगिस्तान है। इसी से यहां की जनसंख्या कम है। पूर्वी पाकिस्तान प्रबल वर्षा और बाढ़ का प्रदेश है। यहां बङ्गाली मुसलमानों की अधिकता है।

पश्चिमी पाकिस्तान की लम्बाई ९०० मील और चौड़ाई औसत से २०० मील है। भारत का विभाजन किसी प्राकृतिक या वैज्ञानिक आधार पर नहीं हुआ। अतः पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के बीच की

दूसरा अध्याय

भारतवर्ष का विस्तार और स्थिति

जिस देश में हम रहते हैं, उसकी स्थिति भूमंडल में बड़े महत्व की है। इसी स्थिति के कारण संसार का सभ्य समाज भारतवर्ष से सदा ही परिचित रहा है।

भारतवर्ष की स्थिति को ठीक ठीक समझने के लिये संसार का नक़शा सामने रख लेना चाहिये। संसार का विशाल स्थलसमूह भूमध्य रेखा के उत्तर में ही है। हमारे देश का अत्यन्त दक्षिणी भाग (लङ्का का दक्षिणी तट) भूमध्य रेखा से केवल ४०० मील उत्तर की ओर दूर है। पर कर्क रेखा भारतवर्ष को दो भागों में बांटती है। यह रेखा कच्छ, गुजरात, मालवा, मध्यप्रदेश, छोटा नागपुर होती हुई गंगा के डेल्टा को कुछ दूर दक्षिण में छोड़ देती है। इसी कर्क रेखा से कुमारी अन्तरीप तक दक्खिन का पठार प्राय:समद्विबाहु त्रिभुज बनाता है। इस रेखा के उत्तर में एक दूसरे विषम वाहु त्रिभुज का उत्तरी सिरा पामीर के नीचे प्राय: ९७ अक्षांश पर काश्मीर का अत्यन्त ऊपरी स्थान है। उत्तरी ध्रुव इस स्थान से प्राय: साढ़े तीन हजार मील दूर है। चूंकि उत्तरी ध्रुव और भूमध्य रेखा के बीच सवा छ: हजार मील की दूरी है इसलिए उत्तर से दक्षिण तक भारतवर्ष की अधिक से अधिक लम्बाई २,००० मील है। ८० पूर्वी देशान्तर काश्मीर के पूर्वी सिरे और लङ्का के पश्चिमी तट को पार करती है भारतवर्ष की यही प्राय: मध्यवर्ती देशान्तर रेखा है। सौराष्ट्र (कच्छ का पश्चिमी सिरा ६६ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है और आसाम का पूर्वी सिरा ९६ पूर्वी देशान्तर को छूता है। इस प्रकार पूर्व से पश्चिम तक भारतवप का

अधिक से अधिक विस्तार ३० देशान्तरों*के बीच में प्राय: दो हजार मील को घेरे हुये है। इस विशाल विस्तार के कारण आसाम और पश्चिमी सौराष्ट्र के स्थानीय समय में प्राय. दो घंटे का अन्तर रहता है। जब दिब्रूगढ़ में दोपहर होता है. उस समय भुज में दिन के दस ही बजते हैं। पर रेल आदि में भारतवर्ष के सभी नगर मद्रास के मध्यवर्ती सामारिक समय का प्रयोग करते है। केवल कलकत्ते में मध्यवर्ती और स्थानीय दोनों ही समयों का प्रयोग होता है।

कटान बहुत कम होने पर भी भारतवर्ष की तट-रेखा प्राय. ८,००० मील है। स्थल-सीमा लगभग ५,००० मील है और पाकिस्तान, अफगानिस्तान. रूस, चीन और बरमा से मिली हुई है। इन सीमाओं के भीतर भारतवर्ष का क्षेत्रफल प्राय. १४ लाख वर्गमील है। इस विशाल क्षेत्र में समस्त ससार के २० प्रतिशत जनसंख्या (प्राय: ३५ करोड़) का निवास है।

जिस प्रकार एशिया महाद्वीप ससार के स्थल-समूह के प्राय. मध्य मे है उसी प्रकार एशिया में भारतवर्ष का मध्यवर्ती स्थान है। प्राचीन समय में प्रधान स्थल-मार्गों का आरम्भ भारतवर्ष से होता था। इस बात का प्रमाण, चीन, फारस, मिस्र, यूनान, इटली आदि कई देश के प्राचीन इतिहास से मिलता है। जल-मार्गो के लिये भारतवर्ष की स्थिति और भी केन्द्रवर्ती है। कोलम्बो से पर्थ (आस्ट्रेलिया) और (डर्बन दक्षिणी अफ्रीका) प्राय: समान दूरी पर है। कलकत्ते से सिंगापुर और हांग-कांग होकर याकोहामा को अक्सर जहाज छूटते रहते हैं।

---

*अक्षाश का प्रत्येक अंश सब कहीं प्राय: ६६ मील के बराबर होता है। पर देशान्तर का एक अंश केवल भूमध्य-रेखा पर ही ६६ मील होता है और अक्षांशो पर दूर घटती जाती है। आजकल बरमा या ब्रह्मा भारतवर्ष से अलग हो गया है।

अदन और स्वेज होकर योरुप में हम प्रायः दो ही सप्ताह के भीतर पहुँच सकते हैं। योरुप के आगे अमरीका का पूर्वी तट बम्बई से उतना ही दूर है जितना कि अमरीका का पश्चिमी तट कलकत्ते से पूर्व की ओर है। संसार की परिक्रमा करने वाले हिन्दुस्तानी यात्री
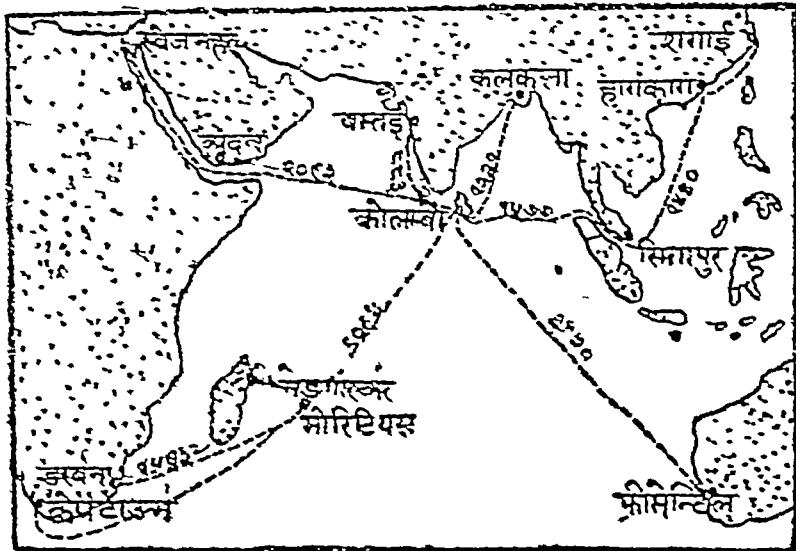
२—संसार के मार्गों के लिये कोलम्बो की महत्वपूर्ण और केन्द्रवर्ती स्थिति

अक्सर योरुप होकर न्यूयार्क पहुँचते हैं और जापान होकर घर लौट आते हैं। वायु-मार्ग के लिये भारतवर्ष की स्थिति और भी अधिक महत्वपूर्ण है। हवाई जहाज द्वारा संसार का चक्कर लगाने वाले प्रायः सभी यात्री कराची या कलकत्ते में पेट्रोल लेने के लिये उतरते हैं।

तीसरा अध्याय

प्राकृतिक विभाग

भारतवर्ष एक विशाल देश है। यहां समतल उपजाऊ खेत, सघन वन, उजाड़ रेगिस्तान और उच्च निर्जन हिमागार आदि संसार के सभी प्रदेशों का समावेश है। भूरचना के अनुसार हमारा देश चार भागों में बांटा जा सकता है :—

१—सर्वोच्च पहाड़ी प्रदेश उत्तर में है। इसकी उपशाखायें एक विशाल कोष्टक के समान अरब सागर और बङ्गाल की खाड़ी तक पहुँचती हैं।

२—पहाड़ों की तलहटी में एकदम नीचा मैदान है। यह मैदान दुनिया भर के मैदानों में सबसे अधिक उपजाऊ, सघन और सभ्य रहा है। यह मैदान गंगा के डेल्टा से लेकर सिन्ध के डेल्टा तक फैला है।

३—मैदान के दक्षिण में दक्षिण (दक्खिन) का पठार है। यह पठार मैदान की अपेक्षा अधिक ऊँचा है। पर हिमालय के सामने इसकी ऊँचाई कुछ भी नहीं है। यह पठार मैदान तथा हिमालय पहाड़ दोनों ही से अधिक पुराना है।

४—पठार के पूर्व और पश्चिम की ओर तग तटीय मैदान हैं। इस तट का बहुत सा भाग छथले (६०० फुट से कम गहरे) समुद्र से ढका है। वास्तव में हमारे देश की स्थल-सीमा इसी ३०० फुट गहराई वाली रेखा के पास से आरम्भ होती है। इस प्रकार लङ्का द्वीप हमारे भारतवर्ष का अंग है। इन दोनों के बीच वाले पाक जल संयोजक की गहराई ८० गज से कम ही है। रामेश्वरम् से १६ मील आगे धनुष्कोटि तक रेल-मार्ग है। धनुष्कोटि और तलेमनार के बीच में भी जल के ऊपर निकली हुई शिलायें प्राचीन सेतु की

साक्षी हैं। अगर समुद्र की गहराई २०० गज कम हो जावे तो लङ्का से भी और आगे प्राय: ५०० मील तक सूखी भूमि निकल आवे जहाँ हम भारतवर्ष से पैदल पहुँच सकते हैं।

पर्वतीय प्रदेश

विशाल हिमालय पर्वत दुनिया भर के पहाड़ों से कहीं अधिक ऊँचे हैं। इनकी पर्वत-श्रेणी पामीर (बामे दुनिया या संसार की छत) से आरम्भ पोती है। दक्षिण-पूर्व की ओर मुड़ने के कारण इस पर्वत श्रेणी का आकार तलवार के समान हो गया है। इस उत्तरी पर्वतीय प्रदेश में हिमालय की एक ही श्रेणी नहीं है। वास्तव में यहाँ कई
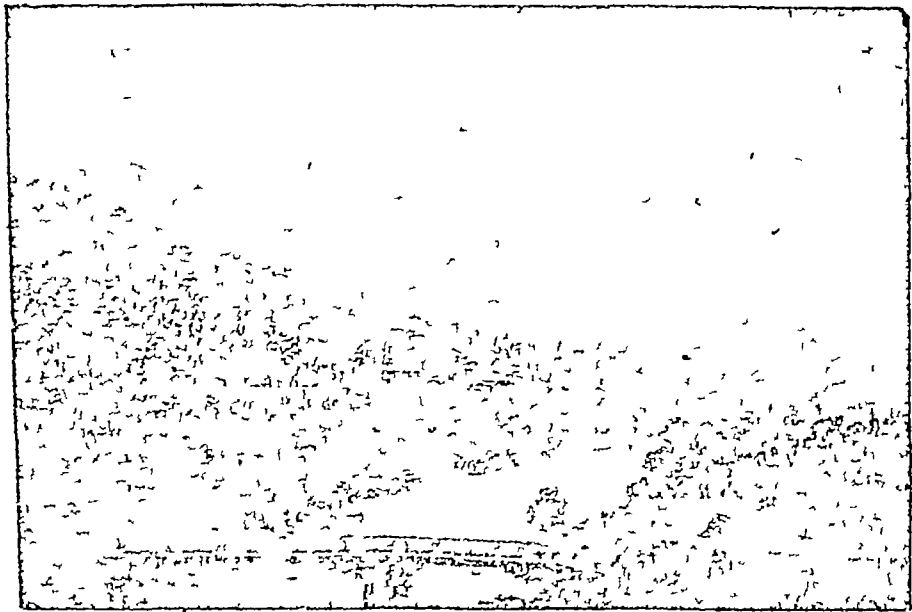
३—पहलगांव का पर्वतीय दृश्य और पुल

पर्वत-श्रेणियां हैं। इनके बीच में दुर्गम हिमागार और डरावनी घाटियाँ हैं। इस पर्वतीय प्रदेश के दक्षिण में सिंध और गङ्गा का उपजाऊ और नीचा मैदान है। इसके उत्तर में तिब्बत का प्राय: तीन मील ऊँचा वीरान और पथरीला पठार है। इस प्रकार गंगा के मैदान

में हिमरेखा १६,००० फुट की ऊंचाई पर मिलती है। दूसरी ओर तिब्बत में हिमरेखा की ऊंचाई इससे भी (२०,००० फुट अधिक हो जाती है, क्योंकि दूसरी ओर पहुंचने पर मानसूनी हवा में गर्मी नहीं रहती है। हिमालय की छोटी श्रेणी की ऊंचाई १२,००० फुट के भीतर ही है, इसलिये इस समय यहाँ हिमागारों का अभाव है। इन पर पुराने हिमागारों के चिन्ह अवश्य मिलते हैं। पर २०,०००फुट की ऊंचाई पर हिमालय में अनेक हिमागार (ग्लेशियर) है। इनमें से कुछ तो दुनिया भर में सबसे बड़े हिमागार हैं। कुछ विशाल हिमागार ऊंचे खड्डों से नीचे नहीं उतरते हैं। फिर भी आर्क्टिक प्रदेश के हिमागारों से टक्कर लेते हैं। हिस्पार, चोगोलुङ्मा आदि कुछ हिमागारों की लम्बाई २४ मील के ऊपर है। वाल्टोरो आदि एक दो तो प्रायः ४० मील लम्बे हैं। पर अधिकाश हिमागारों की लम्बाई दो तीन मील ही है। लम्बाकार हिमागार (काश्मीर में) सात या आठ हजार फुट तक नीचे उतर आते हैं। पर समानान्तर घाटियों में विचरने वाले हिमागार १०,००० फुट से नीचे नहीं आते हैं। हिमागारों की दैनिक गति किनारों पर तीन चार इंच होती है, पर बीच में एक फुट तक देखी गई है। भारतवर्ष के प्रसिद्ध हिमागारों की लम्बाई आगे दी जाती है :—

शिकम

हिमागार	लम्बाई
जेमू	१६ मील
किंचचिंगा	१० मील

काश्मीर

हिमागार	लम्बाई
रुपल	१० मील
दिमामीर	७ मील
सोनापानी	७ मील
रुनदुन	१२ मील

कमायूं

हिमागार	लम्बाई
मिलन	१० मील
केदारनाथ	६ मील
गङ्गोत्री	१६ मील
कसा	७ मील

कराकोरम

हिमागार	लम्बाई
वियाफ़ा	३९ मील
हिस्पार	२५ मील
वाल्टोरी	२५ मील
गगन्त्रम	४२ मील
चोंगोलुङ्मा	२४ मील

उत्तर में विशाल हिमालय पर्वत ने हिन्दुस्तान को मध्य एशिया से प्राय: बिल्कुल अलग कर दिया है। जो विशाल पर्वत-प्रणाली योरुप और एशिया के बीच में चली गई है, हिमालय उसी का दक्षिणी-पूर्वी और सबसे ऊंचा भाग है। पामीर से निकलने वाली पर्वत श्रेणियों में हिमालय सब से दक्षिण में है। सिन्ध नदी से लेकर ब्रह्मपुत्र नदी के मोड़ तक हिमालय पर्वत तलवार के आकार में १६०० मील तक फैला हुआ है।
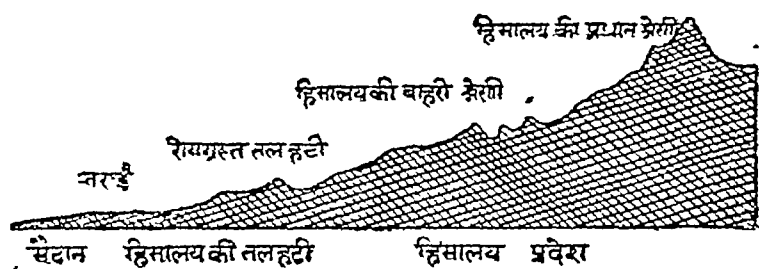
५—मैदान से हिमालय तक एक खंड

हिमालय पर्वत प्राय: तीन समानान्तर श्रेणियों से बने हैं। सिन्ध और गङ्गा के मैदान के किनारे वाली श्रेणी मैदान की तरह मिट्टी, बालू और कंकड़ की बनी है। इस श्रेणी पर कहीं कहीं हाथी और दूसरे स्तन धारी जानवरों के पुराने ढांचे मिले हैं। इससे सिद्ध होता है कि यह श्रेणी किसी समय में हमारे मैदान से मिली थी। यह श्रेणी बहुत ऊंची भी नहीं है और सिवालिक* नाम से प्रसिद्ध है। इसके आगे हिमालय की दूसरी श्रेणी है जो पचास साठ मील चौड़ी और १,००० फुट से १२,००० फुट तक ऊंची है। दक्षिण की ओर यह श्रेणी कहीं कहीं सिवालिक पहाड़ियों से जुड़ी हुई है। अक्सर इन दोनों श्रेणियों के बीच में खुले हुए मैदान हैं, जो पश्चिम में दून (जैसे देहरादून) और पूर्व में (भूटान के पास) द्वार कहलाते हैं।

---

*सिवालिक शब्द सवालाख से बिगड़ कर बना है। इस ओर कई छोटी छोटी चोटियाँ होने के कारण यह नाम पड़ा।
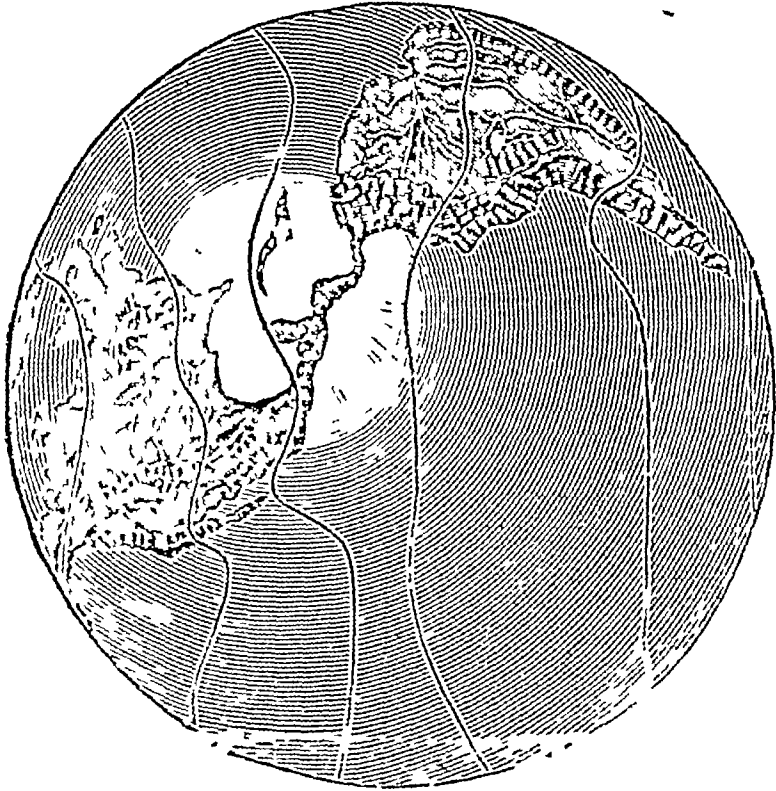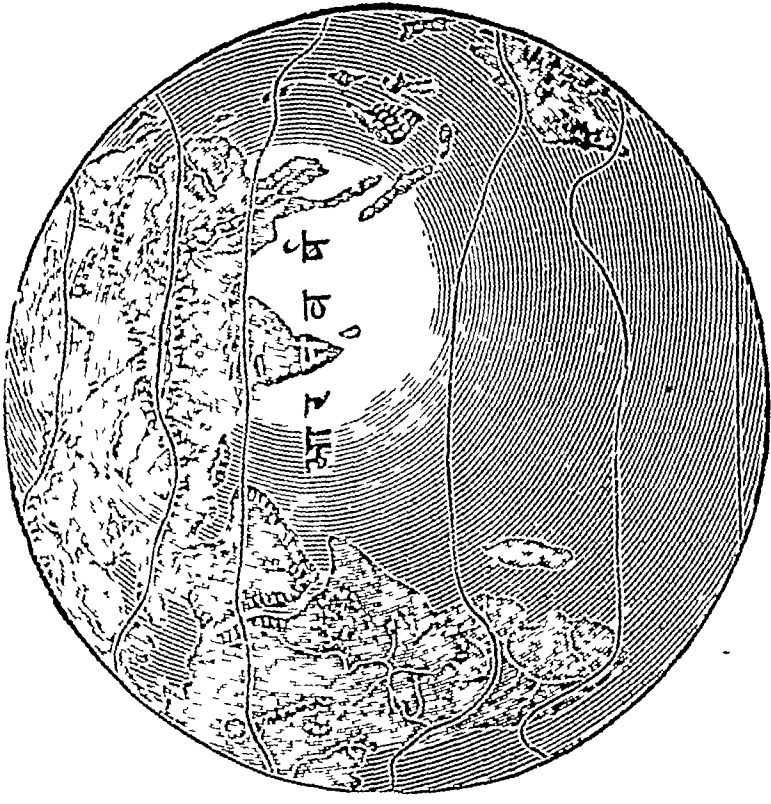
६—संसार की पर्वत श्रेणियाँ

दूसरी श्रेणी के उत्तर में हिमालय की सबसे ऊँची तीसरी श्रेणी की औसत ऊँचाई २०,००० फुट है। अधिक ऊँची चोटियों ये हैं—नागा पर्वत २६१८२ फुट (काश्मीर में) नंदादेवी २५,६६३ फुट (उत्तर-प्रदेश) में गौरीशङ्कर या माउंट एवरेस्ट २६१४१ फुट, किंचि-चिंगा २७,८१४ फुट और धवलागिरि १६,८२६ फुट (नैपाल में) ऊँची हैं। इस श्रेणी की सब चोटियां साल भर बरफ से ढकी रहती हैं। इस
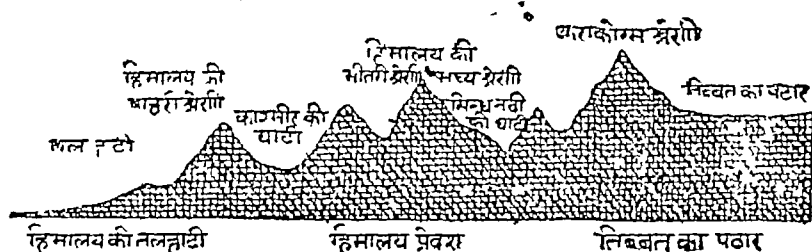
७—पहाड़ी भाग का एक खड

उच्च पर्वत श्रेणी के दर्रे १७,००० फुट से ऊँचे हैं और आठ नौ महीने बरफ से घिरे रहते हैं। यह बर्फीली श्रेणी मैदान से प्राय: १०० मील ही दूर है। पर यहाँ पहुंचना या इसको पार करके तिब्बत के पठार में जाना सरल नहीं है। पहाड़ी प्रदेश के मार्ग अत्यन्त दुर्गम है। सड़कों के स्थान पर केवल पगडंडियाँ हैं। कहीं कहीं इसका भी अभाव है हिमागारों में यात्री को बरफ काट कर अपना रास्ता बनाना पड़ता है। नदिया अत्यन्त गहरी कन्दराओं में होकर बहती है। इन्हें पार करने के लिये रस्से का पुल बना होता है। पर पहाड़ी लोग बोझा लाद कर इन पुलों को बेधड़क पार कर जाते हैं। साधारण ऊंचाई पर भेड़ से और अधिक ऊंचाई पर याक से बोझा ढोने का काम लिया जाता है।

दर्रे

हिमालय के प्रधान दर्रे लेह, शिमला, नैनीताल और दार्जिलिंग

तीसरा अध्याय

८—यह पहाड़ी पोस्टमैन अपने दुर्गम मार्ग के सङ्कटों को हँस हँस कर पार करता है।

से तिब्बत जाने वाले मार्गों पर पड़ते हैं। लेह से आगे चलने पर प्रसिद्ध कराकोरम दर्रा पश्चिमी तिब्बत के लिये रास्ता खोलता है। शिमला के आगे सतलज की कन्दरा के ऊपर शिपकी दर्रा पड़ता है। नैनीताल और अल्मोड़ा के आगे भी हिमालय में माना और नीति दर्रे हैं। हिन्दू यात्री इसी मार्ग से मानसरोवर को जाया करते हैं। कुछ और पूर्व काली नदी ने एक दर्रा (मार्कशाग) बना दिया है। दार्जिलिंग के आगे चोला और जलप दर्रा से चुम्बी घाटी में होकर लासा को मार्ग गया है। सम्भव है कि ब्रह्मपुत्र की घाटी का मार्ग भविष्य में सिन्ध के मार्ग की तरह प्रसिद्ध हो जावे। पर आजकल इस ओर कुछ खूंख्वार लोग बसे हुये हैं। इन सब दर्रों से साल के कुछ महीनों में थोड़ा सा व्यापार होता है। अधिकतर महीनों में ये दर्रे बरफ से घिरे रहते हैं। ये दर्रे फौजी सामान के लिए अत्यन्त दुर्गम हैं। इसी लिये इनके सिरों पर कहीं भी नहीं बने हैं।

उत्तरी-पश्चिमी शाखायें

हिमालय की उत्तरी-पश्चिमी शाखायें पाकिस्तान में हैं। हिमालय के पश्चिम में हिन्दूकुश पर्वत है। जो दक्षिण-पश्चिम की ओर अफगानिस्तान में चला गया है। काबुल नदी के दक्षिण में सफेद कोह (पर्वत) है। यह पहाड प्रायः पूर्व-पश्चिम की ओर चला गया है। सफेद-कोह के दक्षिण में और पञ्जाब के पश्चिम में सुलेमान पहाड़ उत्तर से दक्षिण को गया है। इस पहाड के मध्य में तख्त सुलेमान चोटी ११,३०० फुट ऊंची है। सुलेमान के दक्षिण में और सिन्ध प्रान्त के पश्चिम में किरथर या हाला पहाड है। किरथर पहाड की कई समानान्तर श्रेणियां दक्षिण में प्राय समुद्र-तट तक चली गई हैं।

हिमालय की पश्चिमी-पूर्वी शाखायें अधिक नीची और उजाड़ है। इन पहाड़ियों को काट कर सिन्ध में मिलने वाली नदियों ने

इनमें कई सुगम दर्रे बना दिये हैं। पेशावर और काबुल के बीच में खैबर और बोलन दर्रे सर्वोत्तम हैं। यह दर्रे आजकल भारतीय सीमा के बाहर हैं।

उत्तरी-पूर्वी शाखायें

ब्रह्मपुत्र के मोड़ के आगे हिमालय की शाखायें दक्षिण की ओर हाथ की अँगुलियों की तरह निकली हुई हैं। पटकोई, नागा और लूशाई पहाड़ियां आसाम को ब्रह्मा से अलग करती हैं। मनीपुर राज्य में होती हुई ये पहाड़ियां बरमा में अराकान योमा से मिल जाती हैं और इरावदी मुहाने के पश्चिम की ओर नीग्रेस अन्तरीप में समाप्त होती हैं। वास्तव में अंडमान और नीकोबार द्वीपों के द्वारा इन पहाड़ियों की श्रेणी पूर्वी द्वीप समूह (सुमात्रा) से जुड़ी हुई हैं। पटकोई पहाड़ी के दक्षिण में नागा पहाड़ी से प्रायः समकोण बनाती हुई जयन्तिया, खासी और गारो पहाड़ियां ठीक पश्चिम की ओर चली गई हैं। वे आसाम की घाटी को सिलहट और कछार से अलग करती हैं। हिमालय की पूर्वी शाखाओं का दृश्य पश्चिमी शाखाओं के दृश्य से बिल्कुल भिन्न है। प्रबल वर्षा के कारण ये पहाड़ियां सघन और दुर्गम बनों से ढकी हुई हैं। उत्तर में हुकांग घाटी ने अपने पहाड़ी भाग को काट कर मार्ग बना दिया है। इसी तरह दक्षिण में चिंडविन (इरावदी की प्रधान सहायक नदी) की एक सहायक नदी ने मनीपुर से ब्रह्मा के लिए दरवाजा खोल दिया है। पर यह दरवाजे ऐसे भयानक हैं कि इस स्थल मार्ग की अपेक्षा कलकत्ता और रंगून के बीच का समुद्री मार्ग कहीं अधिक पसन्द किया जाता है।

मैदान

पहाड़ी दीवार के दक्षिण में सिन्ध और गंगा का उपजाऊ मैदान है। यह समतल मैदान बहुत ही घना बसा है। यहीं प्राचीन समय की सर्वोच्च सभ्यता का जन्म हुआ। इसका क्षेत्रफल पांच लाख वर्ग मील है। इसमें सिन्ध का बड़ा भाग, उत्तरी राजपूताना, समस्त

पञ्जाब, उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल और आधा आसाम शामिल है। इसकी अधिक से अधिक चौड़ाई (पश्चिमी भाग में) ३०० मील है। कम से कम चौड़ाई (पूर्व में) प्रायः ६० मील है। इसकी मुटाई का अभी तक पूरा पूरा पता नहीं लगा है। एक दो जगह की खुदाई से जाना गया है कि इसकी गहराई ऊपरी धरातल से १,३०० फुट अर्थात् समुद्र तल से १,००० फुट नीची है। पाताल तोड़ कुआँ खोदने के लिये जब कहीं गहराई की जांच की गई तो नीचे की कड़ी चट्टान का पता नहीं लगा, न बारीक मिट्टी (कांप) का ही अन्त मिला। हावड़ा में जमीन के नीचे नीचे चलने वाली रेल के लिये जो खुदाई हुई, उसमें कई तरह की मिट्टी निकली।

मैदान की अधिक से अधिक ऊंचाई समुद्रतल से ९०० फुट है। यह ऊंचा भाग सहारनपुर, अम्बाला और लुधियाना जिलों के बीच पंजाब में स्थित है। यही ऊँचा भाग (जल-विभाजक) गंगा में आने वाले पानी को सिन्ध में जाने वाले पानी से पृथक करता है। पर यह जल-विभाजक बहुत पुराना नहीं है। कुछ लोगों का अनुमान है कि वैदिक काल की सरस्वती नदी पहले पूर्वी पञ्जाब और राजपूताना में होकर समुद्र में गिरती थी। फिर वह पूर्व की ओर हटते हटते प्रयाग में गंगा से मिल गई और यमुना कहलाने लगी। सरस्वती के पुराने मार्ग में अब एक छोटी नदी बहती है जो बीकानेर के रेत में समाप्त हो जाती है।

इस विशाल मैदान में जहां तहां कंकड़ को छोड़ कर पत्थर का नाम नहीं है। इसका पुराना ऊँचा भाग उत्तर प्रदेश और बंगाल में बांगर कहलाता है। नये नीचे भाग को खादर या कछार कहते हैं। गंगा का डेल्टा (५०,००० वर्गमील) वास्तव में खादर का ही अंग है। इसी प्रकार सिन्ध का डेल्टा सिन्ध के खादर का अंग है। सिंध नदी का वर्तमान डेल्टा बहुत ही नया है। पहले यह नदी अधिक पूर्व की ओर खम्बे या खम्भात की खाड़ी में गिरती थी। फिर कुछ समय तक कच्छ के रेत में पानी गिरता रहा। अन्त में वर्तमान डेल्टा बना।

गङ्गा की घाटी की तरह पञ्जाब का ढाल बहुत ही क्रमश: है। पञ्जाब में यह ढाल दक्षिण-पश्चिम की ओर है। पञ्जाब के दक्षिण-पश्चिम में सिन्ध प्रान्त का प्राय: प्रत्येक भाग सिन्ध नदी के नीचे रह चुका है।

राजपूताना का रेगिस्तान प्राय: ४०० मील लम्बा और सौ मील चौड़ा है। अरावली पहाड़ ने इसे उत्तरी-पश्चिमी और दक्षिणी-पूर्वी दो भागों में बांट दिया है। दक्षिणी-पूर्वी भाग वास्तव में गङ्गा नदी का बेसिन है। चम्बल नदी इस प्रदेश का पानी यमुना में बहा लाती है। उत्तरी-पश्चिमी राजपूताना सिन्ध नदी का बेसिन है। यही असली रेगिस्तान है और हवा से उड़ा कर लाई हुई बालू से बना है। जगह जगह पर सौ दो सौ फुट ऊंचे रेतीले टीले मिलते हैं। यहाँ की प्रधान नदी लूनी है जो कच्छ की खाड़ी में गिरती है और प्राय: सूखी पड़ी रहती है। अधिक दक्षिण में काठियावाड़ का थैलो के आकार का प्राय: द्वीप है। इसकी लहरदार धरती बीच में तीन हजार फुट ऊँची है। सम्भव है कि पहले यह भूमि एक द्वीप रही हो और कच्छ और खम्भात की खाड़ियां एक दूसरे से मिलती हों। काठियावाड़ के उत्तर में कच्छ का उजाड़ रेतीला और पहाड़ी द्वीप है। बड़ा रन दो सौ मील लम्बा और एक सौ मील चौड़ा है। इस ओर रेतीला नमकीन उजाड़ रहता है जहां जङ्गली गधे लोटते हैं। पर मानसून के दिनों में जुलाई से नवम्बर तक वह नमकीन और उथले (एक दो गज गहरे) पानी से घिर जाता है

गङ्गा और सिन्ध के मैदान के दक्षिण में पठार की भूमि कछारी मिट्टी के नीचे दबती जा रही है। मैदान के दक्षिण में कुछ दूर तक कछारी मिट्टी से ढकी हुई पहाड़ियां और चट्टाने मिलती हैं। इस मैदान के उत्तर मे हिमालय की पर्वत-श्रेणियां एकदम ऊंची होती जा रही हैं।

भावर

जहां पर हिमालय की श्रेणियों का आरम्भ होता है, वहीं पर असंख्य धाराओं और नदियों ने कंकड़-पत्थर का ढेर इकट्ठा कर दिया है। इस

तरह के पथरीले ढाल हिमालय के एक सिरे से दूसरे सिरे तक मिलते हैं। कंकड़ और पत्थर मिले हुए निर्जल भाग को भावर कहते हैं। इस ढाल को पार करते समय केवल बड़ी नदियों का पानी ऊपर रहता है। छोटी छोटी धाराओं का पानी कंकड़ों के नीचे छिप जाता है। इससे इस प्रदेश में बड़े-बड़े पेड़ तो नजर आते हैं पर खेती और आबादी का प्राय: अभाव है। यह प्रदेश ५ मील तक चौड़ा है।

तराई

अधिक आगे भावर की जमीन मैदान में मिल जाती है। यहां पर (भीतर का) पानी ऊपर प्रगट हो जाता है। इससे बड़े बड़े दलदल हो गये हैं। इन दलदलों में ऊंची घास और घने पेड़ हैं। इन भयानक जंगलों में मलेरिया के कारण आबादी नहीं है। अभी बड़े बड़े जंगली जानवर बहुत हैं। इस रोगग्रस्त प्रदेश को तराई कहते हैं। जिस तरह हिमालय की पहाड़ियों के नीचे एक सिरे से दूसरे सिरे तक भावर है उसी तरह भावर के नीचे तराई का प्रदेश है। अधिक पश्चिम में वर्षा की कमी के कारण सिन्ध के मैदान और हिमालय के ढालों के बीच में भावर तो बहुत है, असली तराई का अभाव है। असली तराई का प्रदेश सहारनपुर, पीलीभीत, खीरी, बहराइच, गोरखपुर, मोतिहारी, जलपाईगुड़ी आदि नगरों के उत्तर में आरम्भ होती है। भावर की अपेक्षा तराई का प्रदेश अधिक चौड़ा है।

पठार

मैदान के दक्षिण में भारतवर्ष का प्राय: समस्त त्रिभुजाकार प्रदेश पठार है। गंगा और सिन्ध के निचले मैदान के दक्षिण में मालवा और बुन्देलखंड की जमीन धीरे धीरे ऊंची होती गई है। मालवा पठार के इस लहरदार प्रदेश में कहीं कहीं साधारण ऊंचाई की पहाड़ियाँ मिलती हैं। पर विन्ध्याचल काफी ऊँचा और लम्बा है। यह पर्वत बम्बई प्रान्त से शुरू होता है और विन्ध्य-प्रदेश, बघेलखड, उत्तर प्रदेश होता हुआ बिहार-उड़ीसा प्रान्त में सोन-घाटी के ऊपर ऊंची दीवार

के समान खड़ा हुआ है। यह पहाड़ गंगा के प्रवाह-प्रदेश को नर्मदा, ताप्ती और महा नदी में मिलने वाले पानी से पृथक करता है। नर्मदा की घाटी विन्ध्याचल को सतपुड़ा पहाड़ से अलग करती है। सतपुड़ा विन्ध्याचल के ही समानान्तर ७०० मील तक (प्राय: अरब सागर से गंगा के मैदान तक) चला गया है। इसकी ऊंचाई प्राय: तीन चार हजार फुट है। सतपुड़ा के दक्षिण में ताप्ती नदी की घाटी है। इन दोनों नदियों ने काफी चौड़े कछारी मैदान बना दिये हैं। नर्मदा का
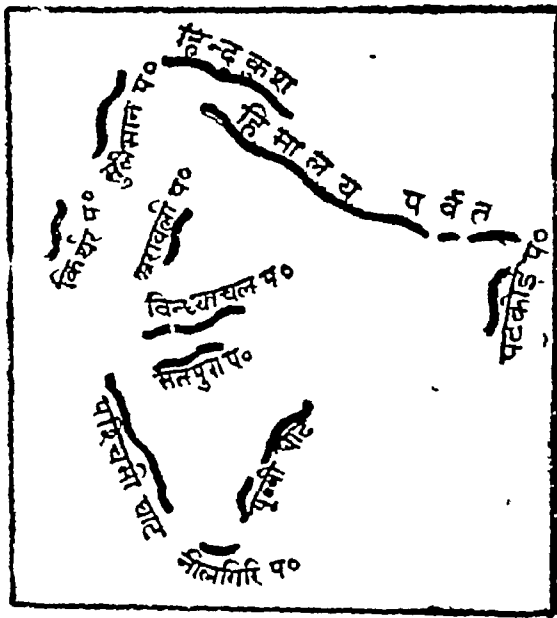
९—भारतवर्ष का पहाड़ी ढांचा।

मैदान प्राय: जबलपुर से हरदा तक २०० मील लम्बा है। इसकी चौड़ाई १२ मील से २५ मील तक है। गाडरवारा में इसकी गहराई ५०० फुट से भा अधिक पाई गई है। ताप्ती का मैदान प्राय: १५० मील लम्बा और २० मील चौड़ा है। दोनों घाटियाँ समुद्र-तल से प्राय: १०० फुट ऊंची है। इसलिये एक घाटी से दूसरी घाटी में जाना सुगम नहीं है। पर खंडवा और बुढ़ानपुर के बीच में पहाड़ियों के नीचे हो जाने से दो घाटियों के बीच सुगम मार्ग बन गया है। उत्तरी भाग से दक्खिन में

पहुँचने के लिए सदियों तक यही राजमार्ग रहा है। इस समय बम्बई और जबलपुर को जोड़ने के लिये ग्रेट इण्डियन पेनिन्सुला रेलवे ने भी इसी मार्ग का अनुसरण किया है।

ताप्ती नदी के दक्षिण में दक्खिन का असली त्रिभुजाकार पठार है। यह पठार पश्चिम में सबसे अधिक ऊँचा है और दक्षिण-पूर्व की ओर क्रमशः नीचा होता गया है। इस पठार का पूर्वी किनारा पूर्वी घाट के नाम से प्रसिद्ध है। पूर्वी-घाट की टूटी-फूटी पहाड़ियों की औसत ऊँचाई दो हजार फुट से अधिक नहीं*है। पहाड़ियाँ पूर्वी समुद्र-तट के समानान्तर चली गई हैं। पूर्वी घाट के पीछे की धरती पश्चिम की ओर ऊँची होती गई है। बीच में ऊँचे और चौड़े मैदान है। कुछ मैदान भूरे रंग के हैं, पर अधिकाश काले हैं। कहीं कहीं पर चपटी चोटी वाली विचित्र पहाड़ियो हैं। पश्चिमी किनारे पर पश्चिमी घाट वास्तव में पहाड़ कहे जा सकते हैं। इनकी औसत ऊंचाई ३,००० फुट है। दक्षिण में नीलगिरी की सर्वोच्च चोटी (दोदाबेटा) की ऊंचाई प्राय नौ हजार फुट है। पश्चिमी घाट बम्बई से लेकर प्राय. कुमारी अन्तरीप तक फैले हुये हैं। समुद्र की ओर से देखने पर पश्चिमी घाट वास्तव में ऊंचे घाट की तरह दिखाई पड़ते हैं। उनको पार करने के लिये केवल तीन सुगम दर्रे हैं। थाल-घाट (दो हजार फुट से कुछ कम) बम्बई के उत्तर-पूर्व में और भोर-घाट (२००० फुट से कुछ ऊपर)। बम्बई के दक्षिण-पूर्व में स्थित है। नीलगिरी के दक्षिण में २० मील चौड़ा और केवल एक हजार फुट ऊचा है पालघाट का विचित्र दरवाजा है।

तटीय मैदान

पूर्वी घाट और बङ्गाल की खाडी के बीच में कारोमंडल का चौडा और उपजाऊ समतल तटीय मैदान है। पश्चिमी घाट और अरब सागर के बीच का तटीय मैदान तग है और मालाबार तट के नाम से प्रसिद्ध है।

---

*गञ्जाम जिले में इनकी केवल एक चोटी (महेन्द्रगिरि) लगभग ५०२० फुट ऊँची है।

चौथा अध्याय

नदियाँ

गङ्गा

गङ्गा नदी मध्यवर्ती हिमालय में १२,८०० फुट की ऊंचाई पर गङ्गोत्री के पास गौ-मुख (गाय के मुंह के सदृश हिमागार) की हिम-कन्दरा से निकलती है। इसकी समस्त लम्बाई १,५५० मील है। आरम्भ में यह भागीरथी कहलाती है। निकास के पास गङ्गा केवल २ गज चौड़ी और १५ इंच गहरी है। प्रथम १८० मील तक यह एक प्रबल
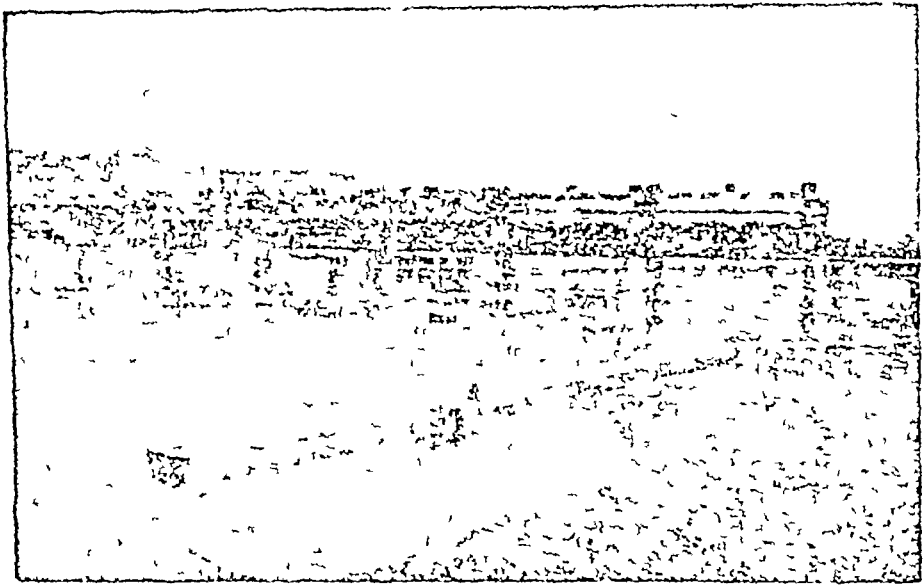
१०—हरिद्वार में गङ्गा की बड़ी नहर का दृश्य

पहाड़ी धारा रहती है। टेहरी के नीचे इसमें अलखनन्दा आ मिलती है। हरिद्वार तक गङ्गा में अधिकांश पिघली हुई बरफ का निर्मल जल रहता है। हरिद्वार से ही गङ्गा की बड़ी नहर निकलती है। हरिद्वार में दूर-दूर से यात्री स्नान करने आते है, हर १२वें साल कुम्भ के दिनों में ४ लाख से कम यात्रियों की भीड़ नहीं रहती है। यहां से आगे गङ्गा मैदान में प्रवेश करती है और यमुना के सङ्गम (इलाहाबाद) तक प्रायः

दक्षिण-पूर्व की ओर मन्दगति से बहती है। इसके बाद घाघरा के सगम तक गंगा का रुख कुछ उत्तर-पूर्व की ओर हो जाता है। इस सगम के आगे गगा पूर्व की ओर बहती है। राजमहल की पहाड़ियों के आगे गङ्गा फिर एक बार दक्षिण की ओर मुड़ती है और कई शाखाओं में बंट जाती है। इसकी प्रधान शाखा पद्मा दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है। गोआलण्डो के पास ब्रह्मपुत्र की प्रधान शाखा यमुना भी पद्मा (पद्दा) में मिल जाती है। गगा की पश्चिमी बड़ी शाखा पहले भागीरथी फिर मुहाने के पास हुगली कहलाती है। हुगली के ही बायें किनारे पर कलकत्ता और दूसरी ओर दाहिने किनारे पर हावड़ा बसा हुआ है।

यमुना

दाहिने किनारे की सहायक नदियों में यमुना मुख्य है। यमुना नदी नन्दादेवी के उत्तरी ढाल में १३,००० फुट की ऊंचाई पर यमुनोत्री से निकलती है। यमुनोत्री और गगोत्री पास ही पास हैं। ८६० मील बहने के बाद यमुना (इलाहाबाद में) गगा से मिलती है। सगम के आगे कुछ दूर तक यमुना का नीला पानी गगा के भूरे जल से बिल्कुल अलग दिखाई देता है। चम्बल नदी मालवा पठार (पश्चिमी विन्ध्याचल और अरावली क्योंकि अरावली के पूर्वी ढाल से निकलने वाली बानस नदी चम्बल में गिरती है) का वर्षा जल*यमुना में बहा लाती है। सिन्ध, वेतवा और केन नदियों द्वारा विन्ध्याचल के उत्तरी ढाल का पानी भी यमुना में आ मिलता है। इस प्रकार यमुना नदी गगा के प्रवाह प्रदेश को बहुत बड़ा बना देती है।

रामगङ्गा और गोमती नदियों बाईं ओर से गङ्गा में मिलती है,

---

*मालवा और विन्ध्याचल अधिक पुराना होने से कड़ी चट्टान का बना हुआ है। यही कारण है कि इधर बहने वाली नदियों के पानी में मिट्टी कम मिली रहती है। पर वर्षा का अधिकांश जल नदियों में बह आता है और कड़ी चट्टान में भिद नहीं पाता है।
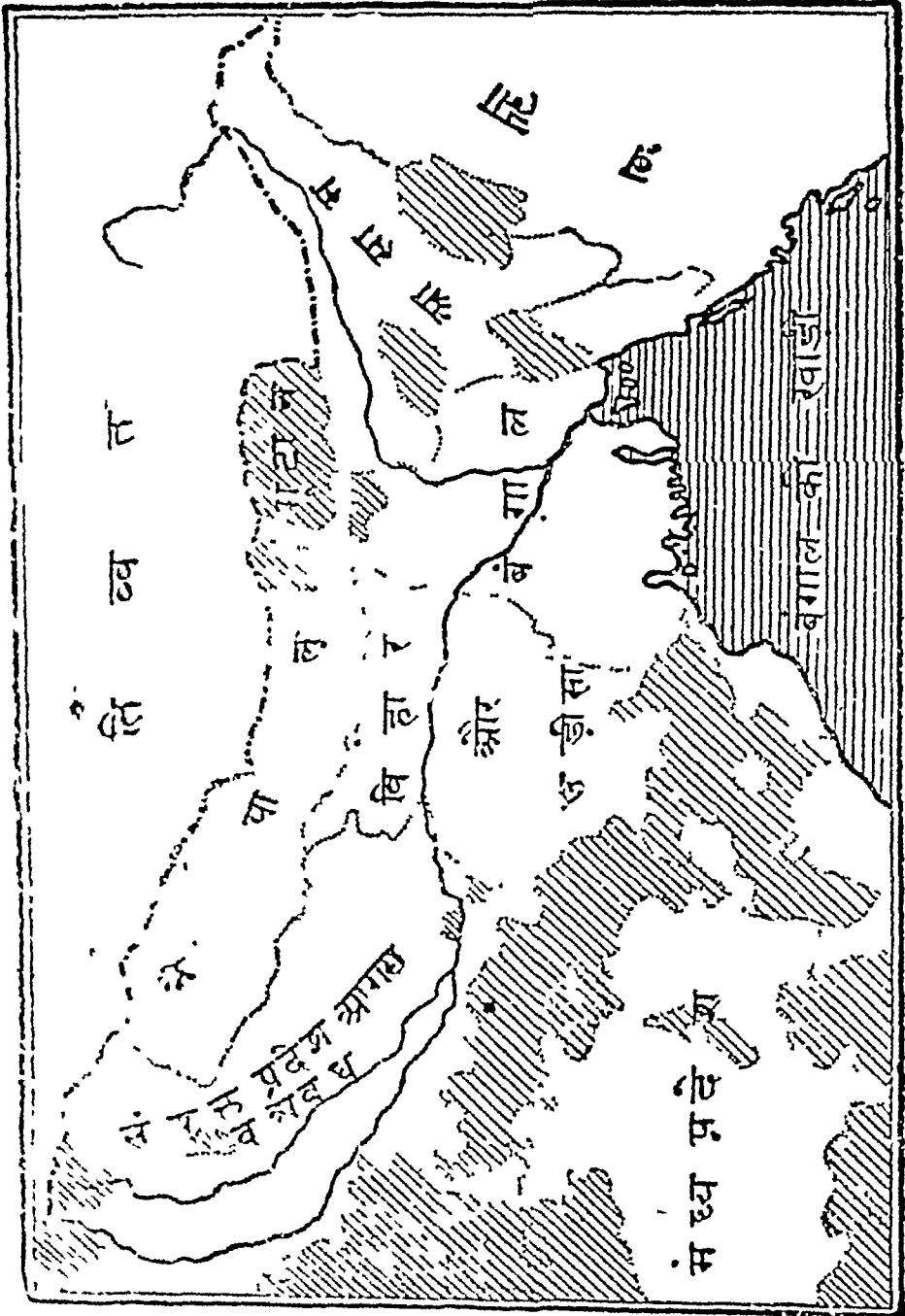
१३ — गंगा का प्रवाह प्रदेश

और उत्तर प्रदेश के एक बड़े भाग का पानी बहा लाती है। रामगंगा अपने पास के गांवों को काटने के लिए और गोमती भयानक बाढ़ के दिनों में अपने पास के गावों को डुबाने के लिये प्रसिद्ध है। घाघरा या सरजू नदी सिन्ध और सतलज की तरह हिमालय की प्रधान श्रेणी के उत्तरी ढाल से निकलती है। वास्तव में घाघरा, सतलज, सिन्ध और ब्रह्मपुत्र का निकास पास ही पास है। नैपाल से बाहर आने पर सारदा नदी दाहिनी ओर से और ताप्ती नदी बाईं ओर से घाघरा में आ मिलती है। अन्त में घाघरा नदी छपरा के पास गंगा में आ मिलती है। इस सगम से कुछ नीचे बाये किनारे पर गंडक नदी मिलती है। दाहिने किनारे पर सोन नदी मिलती है जो अमरकटक (नर्मदा के निकास) के पास से निकलती है और विन्ध्याचल के उत्तरी-पूर्वी भाग का बरसाती पानी बहा लाती है। सोन नदी सिंचाई की नहरों और बाँस और लकड़ी के लट्ठों के बहाने के लिये भी प्रसिद्ध है। अधिक पूर्व में कोसी नदी हिमालय की ओर से गङ्गा में मिलती है। अन्त में छोटा नागपुर के पठार से दामोदर नद हुगली के दाहिने किनारे पर मुहाने के पास आ मिलती है।

डेल्टा

गंगा का डेल्टा तीन नदियों के मिलने से बना है। गंगा और ब्रह्मपुत्र गोआलंडो में मिलती है। कुछ नीचे की ओर सुरमा या बारक नदी मिलती है डेल्टा की प्रधान धारा मेघना कहलाती है। डेल्टा प्रदेश का क्षेत्रफल ५०,००० वर्गमील है। यह डेल्टा उस अपार कांप से बना है, जो नदियों द्वारा हिमालय, आसाम की पहाड़ियों और ऊपरी ब्रह्मा से लाई गई है। डेल्टा का कुछ भाग जंगल और दलदल है। शेष में धान के खेत है। डेल्टा में नदियों की अनेक धारायें हो गई हैं। बङ्गाल की खाड़ी से नीचे दलदली भाग में साँप, मगर और चीता आदि जंगली जानवर बहुत है। यहीं एक पेड़ होता है जिसे बङ्गाली में सुन्दरी कहते है। इसीलिए डेल्टा का यह भाग सुन्दरवन कहलाता है।

चौथा अध्याय

यदि मिस्र को नील नदी का वरदान कहें तो उत्तरी-पूर्वी भारत को गंगा का वरदान कह सकते हैं। गंगा की लाई हुई उपजाऊ मिट्टी और मीठे पानी से क़रोड़ों मनुष्यों का पालन-पोषण होता है। भोजन, जल और आने जाने की सुविधा होने के कारण गङ्गा के क़िनारे संसार की एक उच्च कोटि की सभ्यता का विकास हुआ है। कई अंशों में भारत-वर्ष का इतिहास गङ्गा का इतिहास है। फिर इसमें आश्चर्य ही क्या यदि यहाँ के निवासी गङ्गा को पूज्य समझें और उसे गंगामाता कह कर पुकारें !

ब्रह्मपुत्र

यह नदी १८०० मील लम्बी है और तिब्बत तथा उत्तरी-पूर्वी हिन्दुस्तान के विस्तृत (२०,०००० वर्गमील) प्रदेश का पानी बहा लाती है। यह नदी मानसरोवर झील के पूर्व कैलाश पर्वत से निकलती है। तिब्बत में यह नदी सांपू कहलाती है। अपने आधे मार्ग में ब्रह्मपुत्र एक तंग घाटी में पूर्व की ओर हिमालय के समानान्तर होकर बहती है। हिमालय के पूर्वी सिरे को पार करते समय वह नदी दिहांग कहलाने लगती है और पश्चिम की ओर मुड़ती है। आसाम की घाटी में ब्रह्मपुत्र ४५० मील तक ठीक पश्चिम की ओर बहती है। गोआ-लंडो में ब्रह्मपुत्र गंगा नदी से मिल जाती है। इसके आगे का वर्णन गंगा के साथ दिया जा चुका है। ब्रह्मपुत्र के मार्ग में आसाम में प्रबल ४,०००० फुट ऊँची है। इसलिये आगे चल कर इसकी मन्द और गहरी धारा गावों के लिये अत्यन्त अनुकूल है। सदिया के पास नदी की चौड़ाइ बहुत ही कम है। दोनों किनारों पर उज्जल रेत है। आगे बढ़ने पर हिमालय और आसाम की पहाड़ियों से सहायक नदियां इतना मटीला पानी लाती हैं कि इसमें कई सौ मील तक स्टीमर चलते हैं।

सिन्ध

सिंध नदी पश्चिमी तिब्बत में कैलाश से (१७,००० फुट की

पानी आता है। इसलिये ये नदियाँ सिंचाई के लिये बहुत ही अच्छी हैं। सिंचाई के लिये सिंध और उसकी सहायक नदियों का संसार भर में प्रथम स्थान है। नदी कुछ-कुछ सिन्ध की बराबरी कर सकती है।

मध्य भारत और दक्खिन का नदियाँ

नर्मदा

अमरकटक से निकल कर नर्मदा एक तंग और सीधी घाटी में पश्चिम की ओर बहती है। नर्मदा के उत्तर में विन्ध्य और दक्षिण में सतपुरा की ऊंची पहाड़ी दीवार खड़ी हुई है। जबलपुर के नीचे संगमरमर की चट्टानों और प्रपात का दृश्य बड़ा मनोहर है। मध्य प्रदेश छोड़ने के बाद नर्मदा बीच में चौड़ी हो जाती है। लेकिन इसकी धारा मन्द पड़ जाती है। भड़ौंच के नीचे इसकी एस्चुअरी (खुला मुहाना) १३ मील चौड़ा है। यहाँ बड़ी बड़ी नावें चलती हैं। पर नर्मदा का ऊपरी भाग नाव चलाने और सिंचाई करने के लिये अनुकूल नहीं है। गंगा की भांति नर्मदा नदी भी पवित्र मानी जाती है। होशंगाबाद आदि बहुत से स्थानों पर नर्मदा नदी के किनारे सुन्दर घाट और मनोहर मन्दिर बने हैं।

ताप्ती

ताप्ती नदी मध्यप्रान्त के बेतूल जिले में मुल्ताई (मूलताप्ती) नगर के पास से निकलती है। ताप्ती नदी की घाटी सतपुरा के दक्षिण में है। वह मध्यभारत का बहुत सा पानी ले कर ४५० मील बहने के बाद खम्भात की खाड़ी में गिरती है। इसकी लाई हुई मिट्टी ने सूरत शहर को आजकल स्टीमरों के लिये व्यर्थ कर दिया है। मुगल-काल में पश्चिमी हिन्दुस्तान का यही बन्दरगाह था।

महानदी

महानदी रायपुर जिले में अमरकंटक के पूर्वी सिरे से निकल कर दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है। यह नदी मध्यप्रदेश के आधे भाग और मद्रास के कुछ भाग का पानी लेकर ५०० मील बहने के बाद उड़ीसा
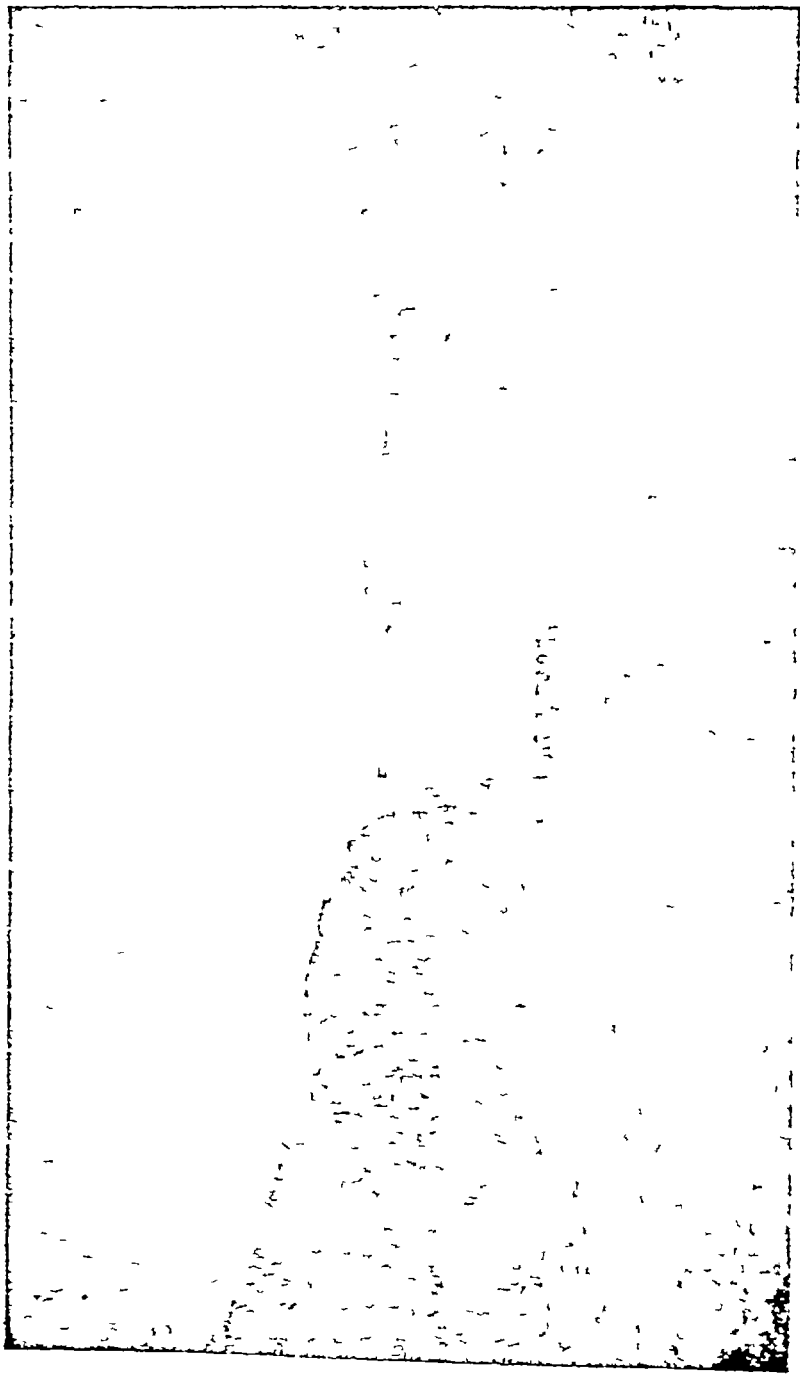
१२—जबलपुर में नर्मदा का जल-प्रपात

में डेल्टा बनाती है डेल्टा के पास ही बाईं ओर से ब्राह्मणी नदी आ मिलती है। दोनों का संयुक्त डेल्टा अत्यन्त उपजाऊ है।

गोदावरी

गोदावरी बम्बई के उत्तर में नासिक के पास पश्चिमी घाट से निकलती है। इस नदी के पथ का दृश्य बड़ा मनोहर है। भवभूति आदि पुराने सस्कृत-कवियों ने भी इसके दृश्य की प्रशंसा की है। यह नदी ६०० मील लम्बी है। अपने तिहाई भाग में यह नदी हैदराबाद राज्य में होकर ठीक पूर्व की ओर बहती है। यहीं दक्षिण में मींजरा नदी गोदावरी के समानान्तर बहने के बाद दाहिनें किनारे पर मिल जाती है। इस राज्य के बाहर निकलने पर यह नदी दक्षिण-पूर्व की ओर मुड़ती है। मोड़ के पास ही इसके बांये किनारे पर पैनगङ्गा, वर्धा और वैनगङ्गा का संयुक्त जल गोदावरी में आ मिलता है। मोड़ के आगे कुछ दूर तक गोदावरी नदी हैदराबाद राज्य और मद्रास प्रान्त के बीच में सीमा बनाती है। यहीं इन्द्रावती नदी दुर्गम प्रदेश को पार करती हुई गोदावरी के बायें किनारे पर आ मिलती है। इन्द्रावती की ही पहाड़ियों में गोंड़ लोग रहते हैं जो बीसवीं सदी में भी पत्थर के हथियार काम में लाते हैं। इन्द्रावती के संगम के उत्तर-पूर्व से चल कर सवरी नदी गोदावरी में गिरती है। इन नदियों में मिलने से गोदावरी का जल बहुत बढ़ जाता है। पर गोदावरी को पूर्वी घाट की पहाड़ियां पार करनी पड़ती हैं। इसलिये मद्रास के २० मील में गोदावरी की घाटी बहुत ही तंग हो जाती है। पूर्वी घाट को पार करने के बाद अपने अन्तिम ६० मील में यह नदी फैल कर इतनी चौड़ी हो जाती है कि इसमें अवसर द्वीप बन गये हैं। राज-महेन्द्री के पास गोदावरी की धारा के आर-पार ढाई मील लम्बा बांध (एनीकट) बना हुआ है। यहां से तीन नहरें निकाली गई हैं जिन्होंने गोदावरी डेल्टा की ८ लाख एकड़ धरती को अत्यन्त उपजाऊ बना दिया है।

कृष्णा

कृष्णा नदी अरब सागर से केवल ४० मील पूर्व में महाबलेश्वर क

भारतीय नदियों की विशेषतायें

प्रदेश के अनुसार नदियों की गति भिन्न हैं। उत्तरी-पश्चिमी भारत की नदियां वर्षा की कमी के कारण प्रायः साल भर सूखी पड़ी रहती हैं केवल बरफ के पिघलने पर उनमें ग्रीष्म के आरम्भ में कुछ पानी हो जाता है।

हिमालय के बड़े बड़े हिमागारों का बर्फीला पानी लाने वाली सिंध आदि नदियों में ग्रीष्म ऋतु में प्रबल बाढ़ आती है और ऋतुओं में भी उनमें काफी पानी रहता है। इसीलिए सिंध और पञ्जाब के उपजाऊ प्रदेश को सींचने के लिये इन नदियों से बड़ी बड़ी नहरें निकालने में सुविधा हुई है। मध्य और पूर्वी हिमालय से निकलने वाली नदियों में दो बार बाढ़ आती है। इस बाढ़ से नदियों में पानी बढ़ जाता है। पर पानी मटीला नहीं होता है। दूसरी और अधिक बडी बाढ़ प्रबल वर्षा से होती है। इसी से पानी एकदम मटीला हो जाता है और अकसर किनारे के गांव डूब जाते हैं। इन नदियों का मध्यवर्ती भाग उपजाऊ है और प्रायः समतल मैदान में स्थित है। इसलिये ये नदियां सिंचाई करने और नाव चलाने के लिए अत्यन्त उपयोगी हैं दक्षिणी भारतवर्ष की नदियां ऐसे भागों से निकलती हैं। जहां बरफ कभी नहीं गिरती है। इन नदियों में केवल वर्षा-जल रहता है। इनका अधिकतर भाग कड़ी चट्टानों के प्रतेश में स्थित है। इसलिये धरती में पानी न भिदने के कारण नदियों में अचानक बाढ़ आती है। खुश्क ऋतु में इनमें बहुत ही कम पानी रहता है। नदियों की तली इतनी गहराई पर होती है कि पथरीली जमीन में यदि किसी तरह अपार धन खर्च करके नहरें बना भी ली जावें तो उनमें लगातार पानी न रह सके और ऊसर जमीन से उसका खर्च न पूरा हो सके। इसलिये दक्खिन की नदियां छोटे से डेल्टा प्रदेश को छोड़ कर अपने शेष लम्बे मार्ग में सिचाई के लिये अनुकूल नहीं है। वर्षा ऋतु में तेज धारा और ग्रीष्म-ऋतु में उथला पानी होने के कारण वे नाव चलाने के योग्य नहीं हैं।

राजमहल की पहाड़ियाँ, दामोदर घाटी, उड़ीसा के मुहाल, छत्तीस गढ़, छोटा नागपुर, ऊपरी सोन-घाटी और गौदावरी के पास सतपुरा श्रेणी ऐसे प्राचीन प्रदेश हैं जिनमें पुराने समय के पौधों के निशान तो मिलते हैं पर इनके जानवरों के ढांचों का पता नहीं लगता है। ये प्रदेश गोंडवाना विभाग में शामिल हैं।

हैदराबाद राज्य विन्ध्य प्रदेश और उत्तरी-पश्चिमी हिमालय के प्रदेशों में मध्यकालीन चट्टानें मिलती हैं। इनमें रेंगने वाले विशाल जानवरों के ढांचे मिले हैं।

हिमालय और मैदान आदि भारत के नवीन भाग हैं।

हीरा और बहुमूल्य खनिज अधिक पुरानी चट्टानों में ही मिल जाते हैं। कोयला मध्यकालीन चट्टानों में मिल जाता है। खेती के योग्य उपजाऊ ज़मीन नवीन काप में होती है।

भारतवर्ष में नई पुरानी सभी तरह की चट्टानें हैं। इसी से यहाँ भिन्न प्रकार के निम्न उपयोगी पदार्थ मिलते हैं:

जल

गंगा और सिंध के मैदान में कुछ ही फुट गहरा खोदने से कुओं में पानी निकल आता है। पहाड़ी स्थानों में चश्मों से पानी मिलता है। बिलोचिस्तान में कारेज़ और पाताल-तोड़ कुएं हैं। गुजरात के नवसारी बीरमगांव और माही जिलों तथा पांडचेरी में आर्टिजियन कुएँ खोदे गये हैं। गरम पानी तथा धातु मिश्रित पानी के चश्मे भी हिन्दुस्तान के कई स्थानों पर पाये जाते हैं। गङ्गोत्री और कुलू के गरम कुण्ड प्रसिद्ध हैं।

मिट्टी

जबलपुर और अम्बाला के रेत से अच्छा शीशा बनता है। मैदान में कंकड़ बहुत से स्थानों में मिलता है। इससे सीमेंट तैयार किया जाता है। सड़कें भी बनाई जाती हैं। चिकनी मिट्टी बहुत स्थानों में पाई जाती है। राजमहल की पहाड़ी, भागलपुर

और गया की मिट्टी सर्वोत्तम है। कटनी, जैसलमेर और बीकानेर में मुल्तानी मिट्टी मिलती है।

निम्नलिखित स्थानों में चूना और सीमेन्ट तैयार करने के बड़े बड़े केन्द्र हैं।

कटनी (जबलपुर)—यहाँ कच्चा माल विन्ध्याचल की निचली पहाड़ियों से आता है।

सतना (रीवाँ)—यहाँ कच्चा माल ऊपरी विन्ध्याचल से मिलता है

गङ्गापुर (बङ्गाल)—यहाँ कच्चा माल कुछ विन्ध्याचल से और कुछ स्थानीय ककडों से लिया जाता है।

शाहाबाद (विहार)—जिले के डालमिया नगर आदि कारखानों में रोहतास (विन्ध्याचल) के चूने का पत्थर काम आता है। सीमेन्ट बनाने के लिये रिगाडी, साल्टरेंज, हजारा और बाहरी हिमालय में भी कच्चा माल मिलता है।

मकान बनाने का पत्थर

आर्काट, बङ्गलोर और दक्षिणी भारत के बहुत से स्थानों में सुन्दर पत्थर निकलता है। यह पत्थर संसार के और देशों के पत्थरों से कहीं अधिक मजबूत होता है। दक्षिणी भारत के प्रसिद्ध मन्दिर (सदियों पहले) इसी पत्थर के बने थे और आज भी वैसे ही मजबूत हैं। चूने का पत्थर अरावली तथा अन्य कई भागों में मिलता है। यह पत्थर चूना, सड़क और घर बनाने के काम आता है।

सङ्गमरमर

यह पत्थर भारतवर्ष के भिन्न-भिन्न स्थानों में विशाल मात्रा में मिलता है। मकराना (जोधपुर) खरवा (अजमेर) मौंडला और भैंसलाना (जैपुर) दादिका (अलवर) तथा अन्य स्थानों में कई तरह और कई रङ्ग का सगमरमर पत्थर निकलता है। ताजमहल आदि मुगल-भवनों का निर्माण इसी सुन्दर पत्थर की अधिकता के कारण हुआ।

अराकान (वरमा) और विलोचिस्तान का लहरिया पत्थर घरों के भीतरी भागों के सजाने के लिए अच्छा होता है।

स्लेट

यह केवल कांगड़ा हिमालय और रिवाड़ी (अरावली) में मिलती हैं। वलुआ पत्थर बहुत से स्थानों में पाया जाता है।

कोयला

भारतवर्ष के खनिज पदार्थों में कोयला सर्व प्रसिद्ध है। प्रतिवर्ष लगभग दो करोड़ टन कोयला भिन्न-भिन्न स्थानों से निकाला जाता है। जो भारतवर्ष की आवश्यकता के लिये काफी होता है। साढ़े इक्यान्वे फीसदी कोयला रानीगंज, झरिया, गिरिडीह और डाल्टनगञ्ज (बंगाल, विहार और उड़ीसा) में मिलता है। साढ़े तीन फीसदी कोयला सिंगरेनी (हैदराबाद राज्य) से, डेढ़ फीसदी वेलारपुर पेंचघाटी से और मोहपानी मध्यप्रदेश) से, दो फीसदी उमरिया (विन्ध्य प्रदेश) निकलता है। शेष माकूम (आसाम), दंदोत और पल्ना (बीकानेर) से निकलता है। इसके अतिरिक्त मध्य भारत, काश्मीर और कच्छ में भी कोयला निकाला जा सकता है।

पीट

नीलगिरि, नैपाल और काश्मीर की घाटियों और कई झीलों में पीट पाया जाता है। उसे काट कर और सुखा कर जलाने के लिये ईंधन वनाया जाता है।

मिट्टी का तेल

जहां हिमालय के दोनों सिरे मुड़ते है वहीं मिट्टी के तेल के प्राचीन केन्द्र है। यह अधिकतर पूर्व की ओर वरमा और आसाम प्रान्त में मिलता है। कुछ पश्चिम की ओर पाकिस्तान (पञ्जाव) और विलोचिस्तान से निकलता है। वरमा में यनाजाऊ, सिंजू, यनाजात और मिनबू प्रसिद्ध तेल-केन्द्र है। यहां प्रतिवर्ष प्रायः २७ करोड़ गैलन तेल निकलता है। आसाम के लखीमपुर जिले के तेल का सम्बन्ध

मालूम की कोयला की खानों से है। डिगबोई इसका मुख्य केन्द्र है जहां से ४५ लाख गेलन तेल प्रतिवर्ष निकलता है।

पञ्जाब में रावलपिंडी और अटक जिलों के तेल के चश्मों से लोग बहुत वर्षों से परिचित है। साल्टरेञ्ज के उत्तर में पिडगेब के चश्मे बहुत ही लाभदायक जान पड़ते हैं। प्राकृतिक तेल के साफ करने पर वेसलीन, मोम (मोमबत्ती) आदि बहुत सी गौण उपज मिलती है। प्राकृतिक गैस हमारे यहां व्यर्थ ही चली जाती है। पर और देशों में यह नलों के द्वारा शहरों में भेजी जाती है और प्रकाश तथा गरमी पैदा करने के काम आती है।

सोना

सोने की उपज के लिये संसार में भारतवर्ष का आठवां स्थान है। पर समस्त उपज का केवल २ फीसदी सोना यहां निकलता है। भारतवर्ष में सोना दो रूप में निकलता है। कुछ सुवर्ण रेखा, इरावदी, सिंध तथा मध्य प्रदेश की नदियों के रेत में छोटे छोटे कणों के रूप में मिलता है। कुछ चट्टानों से मिलता है। मैसूर राज्य में कोलार जिले की स्वर्ण-शिलाएं बहुत प्रसिद्ध हैं। यहां कई स्थानों में सोने की चट्टानें उत्तर-दक्षिण दिशा में एक दूसरे के समानान्तर चली गई हैं। कोई कोई चार फुट मोटी हैं। इनमें सोने के छोटे छोटे टुकड़े मिलते हैं।

लोग चट्टान को चूर-चूर कर लेते हैं। फिर उसमें पानी मिलाकर पारा गड़े हुये तांबे के बर्तनों में बहाते हैं। सोने का अधिक बड़ा भाग इस प्रकार प्राप्त होता है। शेष भाग को दूसरे वैज्ञानिक ढङ्गों से निकालते हैं।

यह सब काम बिजली से होता है जो यहां से ९२ मील की दूरी पर कावेरी के शिवसमुद्रम् प्रपात से तैयार की जाती है और तार द्वारा यहां पहुंचाई जाती है। मजदूरों की संख्या प्रायः २०,००० है। प्रतिवर्ष कोलार से तीन करोड़ रुपये का सोना निकलता है। प्रायः ; लाख रुपये का सोना हट्टी (निजाम राज्य) और एक लाख रुपये

का सोना अनन्तपुर (मद्रास प्रान्त) से मिलता है। सारा सोना बम्बई की टकसाल में खरीद लिया जाता है। युद्ध काल में कई करोड़ रुपये का सोना बाहर चला गया।
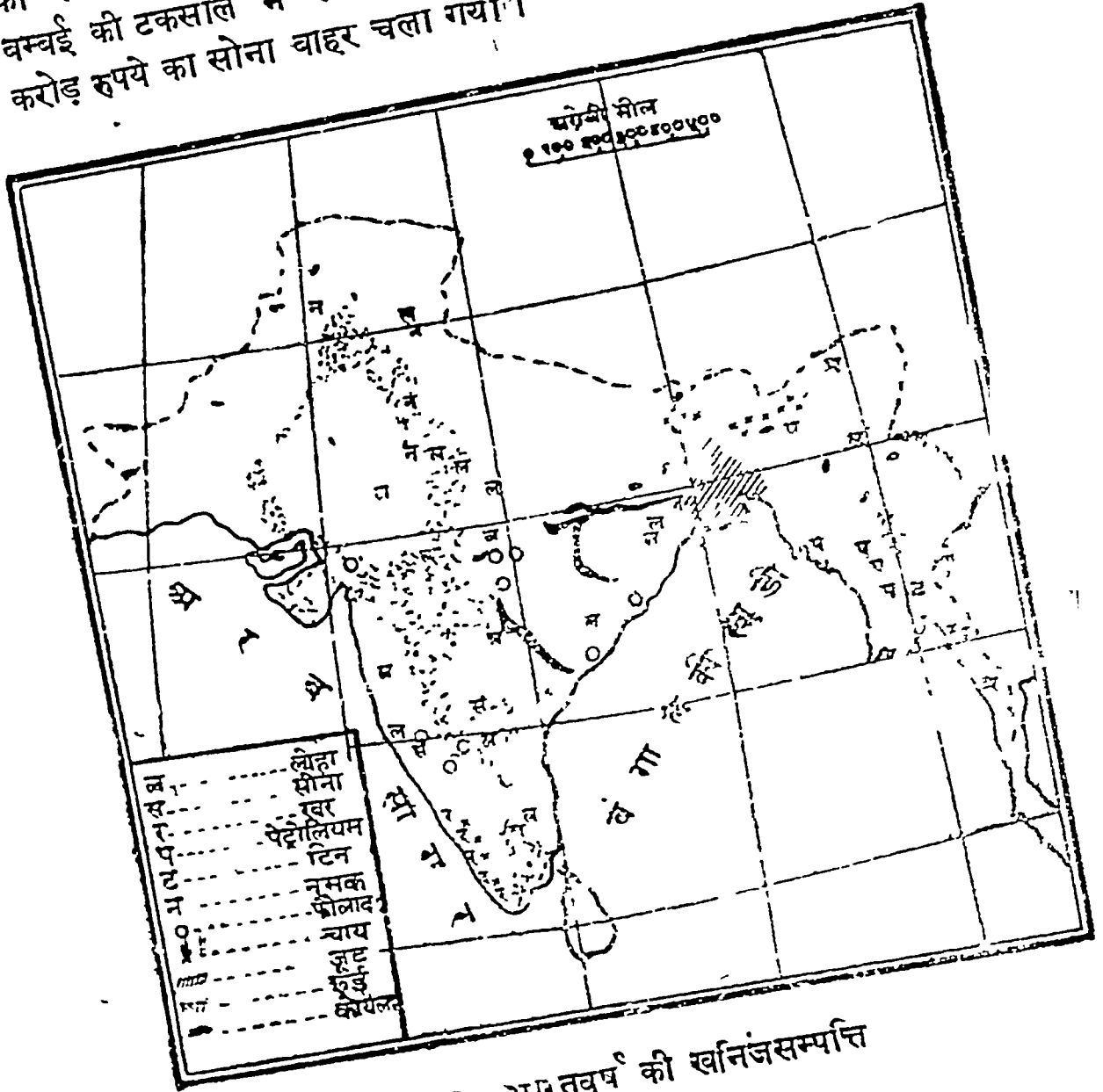
१३—भारतवर्ष की खनिजसम्पत्ति

तांबा

सिंहभूमि, छोटा नागपुर, अजमेर, खत्री, अलवर, उदयपुर, शिकम,

कुल्लू, गढ़वाल आदि कुछ स्थानों में तांबा पाया जाता है। प्रायः दो ढाई लाख रुपये का तांबा इस प्रकार निकलता है। पर देश में तांबे की बड़ी मांग है। इस मांग को पूरा करने के लिये प्रतिवर्ष ३ करोड़ रुपये का तांबा विदेशों से मंगाया जाता है।

लोहा

सर्वोत्तम लोहा उड़ीसा के मयूरभञ्ज, मध्यप्रदेश में रायपुर जिले और मैसूर के बाबाबूदन पहाड़ से निकलता है। बङ्गाल-बिहार अपनी सिंह भूमि, वमानभूमि, र्दवान और सम्भलपुर की लोहे की खानों के लिये प्रसिद्ध है। वङ्गाल में दामुदा के लोहिया पठार के पास कोयला बहुत समय से निकलता है। आसाम में भी कोयले के पास ही लोहा मिलता है। मद्रास प्रान्त में सलेम, मदुरा, कड़ापा और कर्नूल जिलों से लोहा निकलता है। मध्यप्रदेश के चांदा जिले में खंडेश्वर नामी लोहे की पहाड़ी २५० फुट ऊची है। जबलपुर और बिलासपुर में भी लोहा बहुत है। बम्बई प्रान्त में कुछ नदियों के रेत में लोहा मिलता है। हिमालय के कमायूँ और जम्मू प्रदेश में भी लोहा मिलता है।

मैंगनीज

रूस को छोड़ कर भारतवर्ष दुनिया भर में सब से बड़ा मैंगनीज का केन्द्र है। प्रतिवर्ष सात या आठ टन मैंगनीज निकलता है। मध्य प्रदेश के बालाघाट, भंडारा, छिन्दवाडा, जबलपुर और नागपुर जिलों में समस्त उपज का भाग ¾ निकलता है। मद्रास के सन्दूर और विजिगापट्टम जिलों का दूसरा स्थान है। बम्बई में पचमहल, उड़ीसा में गङ्गापुर, मैसूर में चित्तलदुर्ग और शिमोगा और मध्य भारत में झलना दूसरे केन्द्र है।

कटनी और बालाघाट, कालाहाडी, सरगूजा, महाबलेश्वर, भोपाल और पलना-पहाड़िया (मद्रास से अलमोनिया निकलती) है।

हजारीबाग, मानभूमि और मध्यप्रदेश के कुछ जिलों में सीसा

मिलता है। बरमा के बाडविन स्थान में चांदी की प्रसिद्ध खान है। इसीसे सीसा भी निकलता है। पालनपुर, हजारीबाग और मरगुई (लोअर बरमा) टीन के लिए प्रसिद्ध हैं।

हीरा

बुन्देलखंड "पन्ना" और कर्नूल, कड़ापा तथा बिलारी जिले गोलकुण्डा हीरे के लिये प्रसिद्ध है।

बरमा का मोगो (मोगोक) जिला लाल के लिए प्रसिद्ध है। काश्मीर में पुखराज निकलता है।

अन्य मूल्यवान पत्थर भी कहीं कहीं हिमालय या विन्ध्याचल के पहाड़ी भागों में पाये जाते हैं।

नमक

मद्रास तथा बम्बई तट, कच्छ और सिन्ध डेल्टा के पास समुद्र के पानी को धूप में सुखाकर नमक तैयार किया जाता है। जैपुर की सांभर, जोधपुर की डीडवाना तथा फलौदी और बीकानेर की लूनकरन-सर झीलों से भी नमक निकाला जाता है। बिहार, दिल्ली और उत्तर प्रदेश के आगरा आदि खुश्क जिलों में खारी सोतों और कुओं से नमक बनाया जाता है। उत्तरी भारत में पहाड़ी नमक अपार है। झेलम जिले में खेउड़ा की खानों से शुद्ध नमक निकाला जाता है। एक तह की मोटाई ५५० फुट है। इसकी लम्बाई बहुत बड़ी है। कोहाट जिले में बहादुरखेल के पास नमक की एक पहाड़ी की मुटाई १००० फुट और लम्बाई ८ मील है।

शोरा

बिहार, पञ्जाब, सिन्ध आदि प्रान्तों में खारी मिट्टी को खुरच कर उससे शोरा बनाया जाता है। पहले बारूद बनाने के लिए हिन्दुस्तानी

एक शिला ४ मील लम्बी ४ फुट चौड़ी और कहीं कहीं ६६० फुट गहरी है।

शोरा योरुप को बहुत जाता था। पर अब बनावटी शोरा तैयार हो जाने से बहुत थोड़ा शोरा बाहर जाता है।

फिटकरी

बनावटी फिटकरी तयार हो जाने से हिन्दुस्तान में अब केवल कच्छ और कालाबाग (पाकिस्तान) में फिटकरी तयार की जाती है।

सोहागा

पुगाघाटी, लद्दाख के गरम चश्मों और तिब्बत की झीलों से सुहागा मिलता है।

रेह

गङ्गा की घाटी में रेह बहुत है। पर यह अभी बहुत कम काम में आता है।

अभ्रक

बिजली और शीशे के सामान में इसकी बडी आवश्यकता पड़ती है। दुनिया भर में इसकी सब से अधिक उपज हिन्दुस्तान में होती है।

हजारीबाग, नेलोर, गया, मुँगेर, अजमेर और मेरवाड़ा में अभ्रक मिलती है।

गन्धक

लद्दाख और पश्चिमी बिलोचिस्तान से गन्धक आती है।

कांप

गङ्गा और सिन्ध आदि नदियों ने अपनी अपनी बारीक मिट्टी से विशाल उपजाऊ मैदान बना दिये हैं जो खेती के लिये प्रसिद्ध है :—

भारतवर्ष की अधिकांश जमीन चार तरह की है :—

१—सिंध और गङ्गा की कांप खुलते रंग की होती है। इसकी मिट्टी बहुत ही बारीक होता है। इसमें पत्थर के टुकड़ों का बिल्कुल अभाव है। कहीं कहीं धरातल के पास कंकड़ अवश्य मिलते हैं।

इस जमीन में कहीं रेत, कहीं मटियार या चिकनी मिट्टी और कहीं दोनों का मिश्रण (लोम) या मटियार मिलता है।

२—रेगार या दक्खिन की काली जमीन काफी उपजाऊ होती है। इसमें चूना आदि कई खनिज पदार्थ मिले रहते हैं।

१४—भारतवर्ष की मिट्टी

३—मद्रास की भूरी कछारी जमीन गङ्गा के मैदान की ज़मीन से कम उपजाऊ होती है।

४—मद्रास प्रान्त की खाड़ी लाल जमीन (जो कोयम्बटूर, मदुरा, करनूल और कृष्णा जिलों में मिलती है) कमजोर होती है। यह ऐसी चट्टानों के घिसने से बनी है जिनमें पौधों का भोजन अधिक नहीं रहता है।

५—लुहारी मिट्टी महाराष्ट्र, रीवाँ आदि हिन्दुस्तान के बहुत से भागों में पाई जाती है। इसमें पच्चीस या तीस फी सदी लोहा मिला रहता है। जब यह ताजी खोदी जाती है, तो वह मुलायम होती है। इसमें लाल, पीले और भूरे रंग के निशान रहते हैं। इसके अधिक

भारतवर्ष की धरती का नक्शा

१५—भारतवर्ष की धरती का नक्शा

भाग में सफेद रंग रहता है। सूखने पर यह मिट्टी कड़ी हो जाती है। अक्सर इसकी तह २०० फुट मोटी मिलती है। यह बहुत कम उपजाऊ होती है।

छठा अध्याय

नदियाँ

भारतवर्ष एक विशाल देश है। यह प्राय: ६ उत्तरी अक्षांश से लेकर ३० उत्तरी अक्षांश तक फैला हुआ है। इसका बहुत सा भाग समुद्र-तल से कुछ ही ऊंचा रहता है। कुछ भाग समुद्र-तल से चार-मील ऊंचा है। कहीं समुद्र पास है। कहीं समुद्र और भीतरी प्रदेश के बीच में सैकड़ों मील की दूरी है। देश के कुछ भाप पानी लाने वाली हवाओं के मार्ग में स्थित हैं। कुछ भाग इनके मार्ग से दूर अलग पड़े हुये हैं। इन सब कारणों से हमारे देश में प्राय: सभी तरह की जलवायु पाई जाती है। दक्षिणी भाग में भूमध्य रेखा की उष्णार्द्र (गरम और तर) जलवायु है। हिमालय के उच्च शिखर ध्रुव प्रदेश की भांति ठंडे हैं।

तापक्रम (सरदी और गरमी) नमी, हवा और वर्षा ही जलवायु के ४ प्रधान अंग हैं।

तापक्रम

सरदी गरमी की मात्रा को ही तापक्रम कहते। नापने के लिये आजकल हजारों मनुष्य थर्मामीटर का प्रयोग करते हैं। देश के बहुत से शहरों में प्रतिदिन यह तापक्रम लिख दिया जाता है। यों तो तापक्रम में प्रति घंटे कुछ न कुछ अन्तर रहता है। पर प्राय: सवेरे चार बजे अल्प तापक्रम होता है। तीसरे पहर लगभग दो बजे परम तापक्रम होता है। अल्प तापक्रम और परम तापक्रम को जोड़ कर दो से भाग देने से किसी दिन का औसत तापक्रम निकल आता है। अगर हम परम तापक्रम में अल्प तापक्रम को घटावे तो तापक्रम-भेद शेष रहता है। दो स्थानों का औसत तापक्रम चाहे समान हो, पर यदि उनके तापक्रम-भेद में भारी अन्तर हो तो उनकी जलवायु में भी भारी अन्तर होगा।

हिन्दुस्तान का दक्षिणी आधा भाग कर्क रेखा और भूमध्यरेखा के बीच में स्थित है। दक्षिणी हिन्दुस्तान लंका और टनासिरम (ब्रह्मा) में दोपहर का सूर्य कभी अधिक नीचा नहीं होता है। यहाँ साल के सभी समय में दिन और रात की लम्बाई में बहुत ही थोड़ा अन्तर रहता है। इसलिये ये भाग प्रायः साल भर गरम रहते हैं। कोलम्बो के लोग दिसम्बर-जनवरी में भी बरफ का शराब पीते हैं और दोपहर को धूप में छाता लगाते हैं। दक्षिणी-भारत के लोग आग तापना या गरम ऊनी और रुई भरे हुये सूती कपड़े पहनना जानते ही नहीं हैं। लङ्का के दक्षिणी स्थान में साल के अत्यन्त ठंडे और अत्यन्त गरम महीने के तापक्रम में केवल ४ अंश फारेनहाइट का भेद होता है।

अगर हम उत्तर में बम्बई तक बढ़ें तो तापक्रम-भेद भी बढ़ता जायगा। पर प्राय: द्वीप के सब भागों में यह तापक्रम-भेद एकसा नहीं बढ़ता है। एक ही अक्षांश में पश्चिमी तट का तापक्रम-भेद सब से कम पूर्वी तट की और उससे अधिक और समुद्र से दूर बीच में सब से अधिक है। उदाहरणार्थ पश्चिमी तट पर मंगलोर, पूर्वी तट पर मद्रास और मध्य में बङ्गलोर प्रायः एक अक्षांश में स्थित हैं पर अत्यन्त ठण्डे और अत्यन्त गरम महीने का तापक्रम-भेद मङ्गलोर में ७ अंश मद्रास में १२ अंश और बङ्गलोर में १३ अंश होता है। सूरत, नागपुर और कटक भी प्राय: एक अक्षांश में हैं, पर सूरत का तापक्रम-भेद १३ अंश नागपुर का २६ अंश और कटक का १८ अंश है। पर अधिकतर उत्तर की ओर चल देने पर पश्चिमी तट के पास वाले स्थानों का तापक्रम-भेद पूर्वी तट के स्थानों के तापक्रम-भेद से कहीं अधिक बढ़ जाता है। अत्यन्त-ठण्डे और अत्यन्त गरम महीने का तापक्रम-भेद हैदराबाद (सिन्ध) में २८ अंश, बनारस में ३० अंश, सिल्चर (आसाम) में १८ अंश होता है। इन एक अक्षांश वाले स्थानों में सूर्य की किरणें समान कोण से गिरती हैं। दिन रात की लम्बाई भी समान होती है। पर हवा की नमी और खुश्की के कारण इनके ताप-

क्रम में भेद हो जाता है। हवा जितनी ही अधिक नम (आर्द्र) होगी उतना ही कम भेद शीतकाल और ग्रीष्मकाल के तापक्रम में रहेगा।
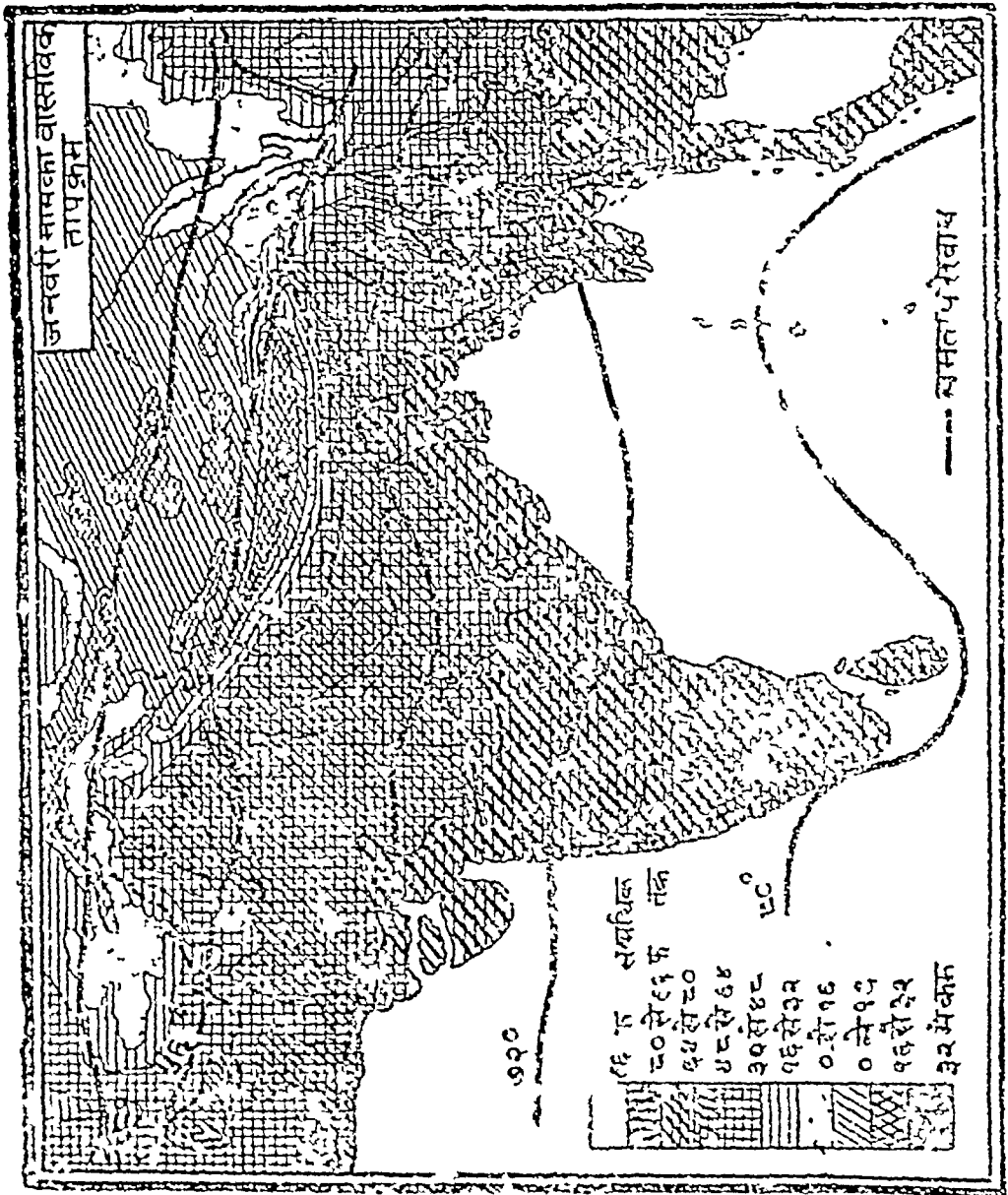
२६—संकेतों में फारेनहाइट होना चाहिये। नीचे के अन्तिम तीन संकेतों में अङ्कों से पहले [चिन्ह] है।

बम्बई के दक्षिण में पश्चिमी तट की हवा पूर्वी तट की हवा से कहीं अधिक नम होती है। मध्य भाग की हवा दोनों तटों से भी कहीं
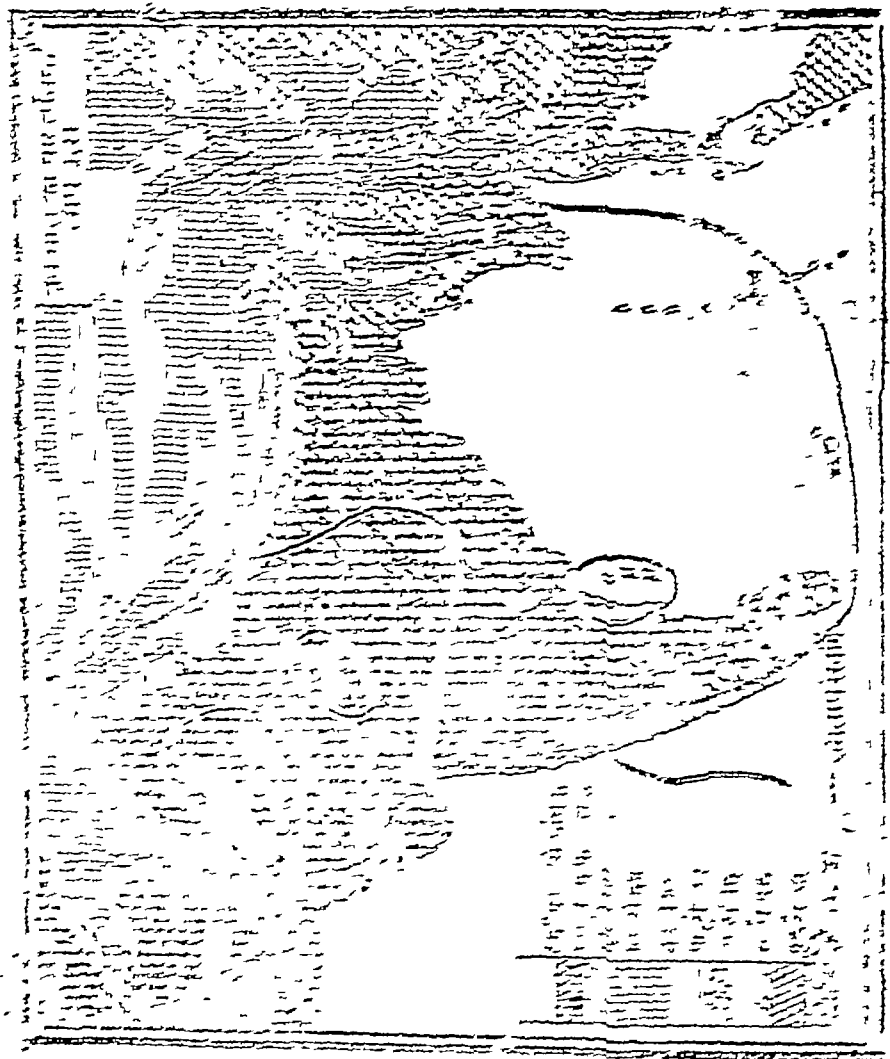
ठंड से बचने के लिये कुछ न कुछ गरम कपड़ा पास रख कर सोते हैं। डेराइस्मालखां में किसी किसी साल सरदी की ऋतु में बरफ पड़ जाती है, पर गरमी में तापक्रम १२० अंश फारेनहाइट रहता है। इसके विपरीत आसाम और पूर्वी बङ्गाल से गरमी की ऋतु कभी खुश्क नहीं होती है। जिन दिनों में उत्तरी-पश्चिमी भारत में खेतों की घास झुलस जाती है और गलियों में धूल उड़ा करती है। उन दिनों में भी आसाम, बङ्गाल, लङ्का, और ब्रह्मा के तर आर्द्र भागों में सब कहीं हरियाली रहती है।

गुजरात, मध्यप्रान्त, मध्यभारत, विहार और उत्तर प्रदेश सिंध की तरह खुश्क और न आसाम की तरह नम है। कर्क रेखा से भी दूर नहीं है। इसलिये यहां गरमियों में काफी गरमी पड़ती है और सरदी में मामूली ठंड होती है।

ऊँचाई और तापक्रम

समुद्र-तल से प्रायः प्रति ३०० फुट की ऊंचाई पर १ अंश फारेनहाइट तापक्रम कम होता जाता है। इसी से हिमालय की ऊंची चोटियों पर जून के महीने में भी बरफ जमी रहती है। गरमी की ऋतु में जब मैदान में हम लोग पसीने से भीग जाते हैं और रात को हवा चलने से भी चैन नहीं पाते हैं। उसी समय छः सात हजार फुट की ऊंचाई पर उसी अक्षांश में ऐसी ठंडक रहती है कि लोग गरम कपड़े पहनते हैं और रात को अँगीठी जलाकर मकान के अन्दर सोते हैं। औसत से ७००० फुट की ऊंचाई पर हमारे यहां उसी तरह की ठण्डी जलवायु है जिस तरह की दक्षिणी योरुप में रहती है। पर उत्तरी हिन्दुस्तान में शीतकाल दक्षिणी योरुप में ग्रीष्मकाल से बहुत कुछ मिलता है। यही कारण है कि हिन्दुस्तान के प्रायः प्रत्येक प्रान्त में योरोपियन लोगों ने गरमियों में रहने के लिये कोई न कोई पहाड़ी स्थान निश्चित किया था।

मानसून

तापक्रम के विवरण में हम देख चुके हैं कि हिन्दुस्तान के बहुत से भागों की जलवायु अनुकूल रहती है। समुद्र और भूमध्यरेखा की समीपता के अतिरिक्त हिन्दुस्तान की बनावट भी इस जलवायु को अनुकूल बनाती है। हिंदुस्तान का जो भाग भूमध्यरेखा के पास है वही भाग ऐसा त्रिभुजाकार है कि उसपर समुद्र का अधिक से अधिक असर पड़ता है। पठार की ऊंचाई भी प्रायद्वीप की गरमी को कुछ कम कर देती है। सिंध और गङ्गा के मैदान के उत्तर में प्राय: चार पांच मील ऊंचा हिमालय का पहाड़ है। यह पहाड़ दूसरी ओर वाले दो तीन मील ऊंचे तिब्बत के पठार को ठण्डी (धरातलीय) हवाओं को हिंदुस्तान में नहीं आने देता। हिन्दूकुश, सफेद-कोह, सुलेमान आदि उत्तर-पश्चिम की पहाड़ियां भी औसत से पाच हजार फुट ऊंचा है। इसलिये हिंदुस्तान की उत्तरी-पश्चिमी पहाड़िया भी ईरानी तूफानों से हिन्दुस्तान को काफी सुरक्षित रखती हैं। दर्रों के द्वारा से आने वाली हवा का असर बहुत अधिक नहीं होता है।

दक्षिणी-पश्चिमी मानसून

हिमालय की ऊंची पहाड़ी दीवार से दूसरा लाभ यह है कि हिंदुस्तान की पानी बरसाने वाली हवाओं को बाहर नहीं जाने देती है। यदि अटलांटिक महासागर और प्रशांत महासागर की तरह हिंदमहासागर में भी उत्तर में आर्क्टिक महासागर तक फैला होता तब तो हिंदमहासागर में भूमध्यरेखा के पास सदा परम तापक्रम और अल्प-वायु-भार रहता है। इसलिये यहाँ उत्तरी-पूर्वी ट्रेड हवायें चल

*शिमला (पञ्जाब) मसूरी और नैनीताल (उत्तर प्रदेश) रांची (बिहार) दार्जिलिंग (बङ्गाल) शीलांग (आसाम) पचमढ़ी (मध्यप्रांत) आबू (राजपूताना, महाबलेश्वर (बम्बई) उटक्माण्ड (मद्रास) के सभी स्थान ६,००० और ८,००० फुट के बीच की ऊँचाई पर बसे हैं।

करती हैं। पर हिन्द महासागर के उत्तर में स्थल समूह है जो गर्मी के दिनों में समुद्र से कहीं अधिक गरम हो जाता है। जून-जुलाई में
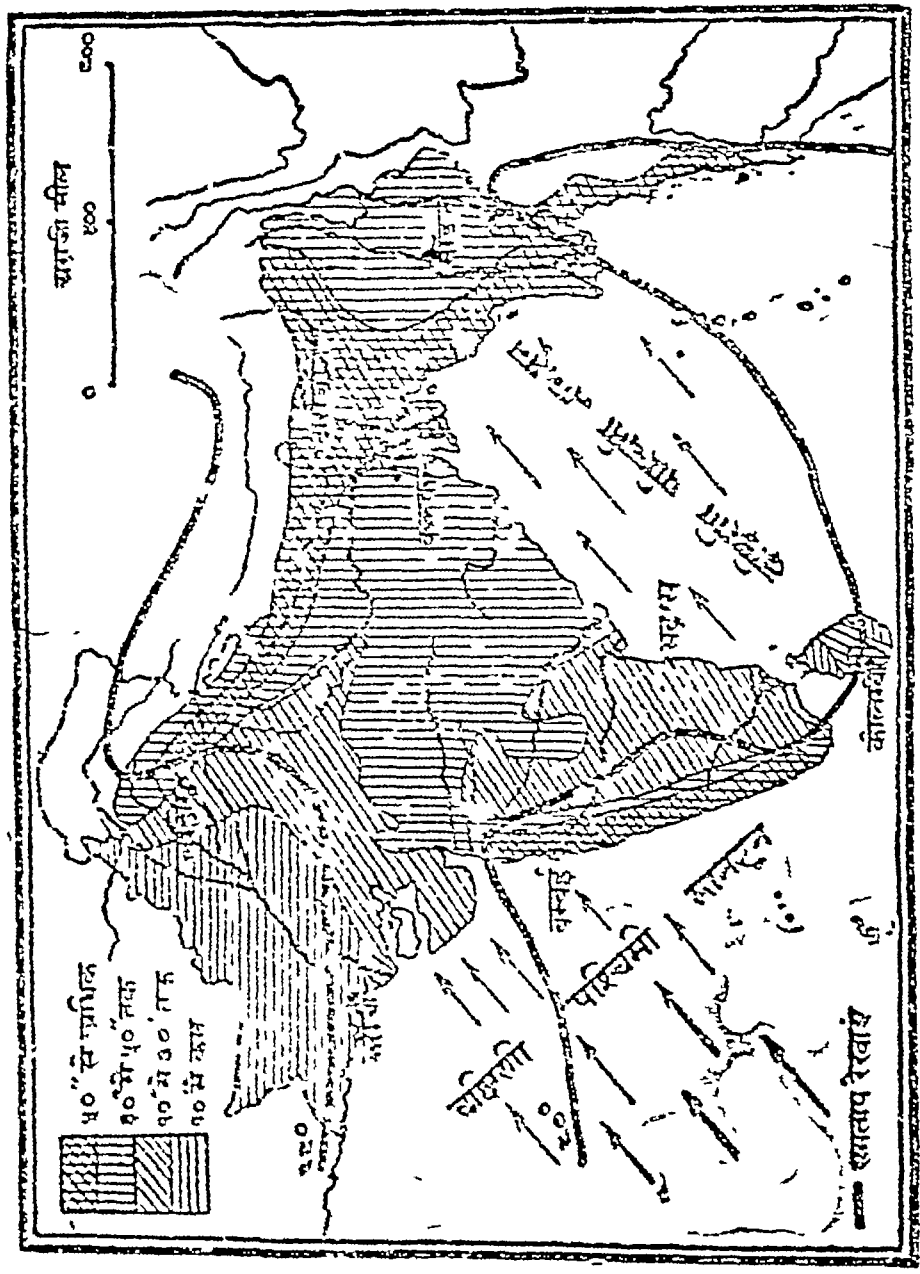
१८—ग्रीष्म-ऋतु की वर्षा

भूमध्यरेखा के पास हिन्द महासागर का औसत तापक्रम केवल ८२ अंश फारेनहाइट होता है। पर उन्हीं दिनों में भारतीय प्रायःद्वीप का

औसत तापक्रम ६० अंश हो जाता है। अधिक गरमी के कारण स्थल की हवा इसका स्थान भरने के लिये आती है। लगातार भाप के मिलते-रहने से यह नमी से सन्तृप्त होती है। इस हवा का एक भाग पूर्वी अफ्रीका (एबीसीनिया) की ओर जाता है। दूसरा भाग हिन्दुस्तान की ओर आता है। अरबसागर की हवा पहले पहल पश्चिमी घाट से टकराती है। यह हवा प्रतिवर्ष प्राय: नियत समय पर बड़े वेग (प्रतिघंटे प्राय: २० मील की चाल) से आया करती है। दक्षिणी-पश्चिमी मानसून हिन्दुस्तान के भिन्न-भिन्न प्रान्तों में भिन्न-भिन्न तिथियों को पहुँचा करती है। सब प्रान्तों से इसके लौटने का समय भी भिन्न है :—

प्रान्त	मानसून के आरम्भ होने की तिथि	लौटने की तिथि
बम्बई	५ जून	१५ अक्टूबर
बङ्गाल	१५ जून	१५-३० अक्टूबर
उत्तर प्रदेश	२५ जून	३० सितम्बर
पंजाब	१ जुलाई	१४-२५ सितम्बर

जुलाई तक यह हवा समस्त हिन्दुस्तान में फैल जाती है। साल भर की ८५ फी सदी वर्षा इसी हवा से होती है। पर यहां मानसून लगातार पानी नहीं बरसाती है। बीच बीच में वर्षा रुक जाती है।

सब भागों में एक सी वर्षा नहीं होती है। लंका और पश्चिमी घाट में अधिक वर्षा (१०० इंच के ऊपर) होती है। बम्बई में प्रति वर्ष औसत से ७१ इंच वर्षा होती है। बम्बई के दक्षिण में तट पर वर्षा की मात्रा बढ़ते-बढ़ते धुर दक्षिण में ३०० इंच तक हो जाती है। पर बम्बई के उत्तर में वर्षा की कमी है। कराची में प्रतिवर्ष औसत से केवल ६ इञ्च वर्षा होती है। सिन्ध का डेल्टा अक्सर खुश्क पड़ा

रहता है। पश्चिमी घाट को पार करने के बाद इस हवा में बहुत कम नमी रह जाती है। इसलिये दक्खिन में बहुत थोड़ी (२६ इञ्च) वर्षा होती है।

अरब सागर की ओर से आने वाली मानसून की मात्रा बंगाल की खाड़ी की मात्रा से कहीं अधिक होती है। बंगाल की खाड़ी वली मानसून का विस्तार अधिक हो जाता है इस हवा से इरावदी के डेल्टा, ब्रह्मा के पश्चिमी तट और गंगा के डेल्टा में प्रबल वर्षा होती है। आगे बढ़ने पर खासिया पहाड़ और अराकानयोमा के बीच में इस हवा को तग रास्ते में एकदम ऊंचा चढ़ना पड़ता है। मैदान में अधिकतर पानी होने से तापक्रम भी ऊँचा रहता है। इसलिए जहां मैदान (ढाल) में ४७ इञ्च पानी बरसता है, वहीं सिलहट में १०४ इंच पानी बरसता है। पर सिलहट भी पहाड़ के नीचे मैदान पर ही बसा है। चेरापूँजी ४४५ फुट ऊँची पहाड़ी के ठीक दक्षिणी ढाल पर बसा है। यहां दुनिया भर में सबसे अधिक (४०० इंच) वर्षा होती है। एक वर्ष तो यहां ६०५ इञ्च वर्षा हुई। इस पहाड़ी के अधिक आगे भी वर्षा कम है। चेरापूंजी से ४५ मील भीतर की ओर होने से शीलांग में ५० इञ्च ही वर्षा होती है। हिमालय की रुकावट होने से बङ्गाल की खाड़ी का प्रधान भाग उत्तर-पश्चिम की ओर बढ़ता है। पर अधिक पश्चिम की ओर बढ़ने से वर्षा क्रमशः कम होती है। बरेली में ३६ इञ्च और पेशावर में केवल ४ इंच वर्षा होती है। इन मानसूनों के उत्तरी सिरे पर (हिमालय) सब कहीं दक्षिणी सिरे से अधिक वर्षा होती है। गया में पटना से, झाँसी में इलाहाबाद से, आगरे में बरेली से, दिल्ली में देहरादून से, कहीं कम वर्षा होती है। अक्टूबर के महीने से शीतकाल आरम्भ हो जाता है। तभी जल की अपेक्षा स्थल ठंडा हो जाता है और हवा को समुद्र की ओर लौटना पड़ता है। लौटते समय इस हवा में अधिक नमी नहीं रहती है। बङ्गाल की खाड़ी में कुछ भाप मिल जाने से यह हवा पूर्वी तट से गोदावरी के

सुहाने से कुमारी अन्तरीप तक पूर्वी लंका में विशेष रूप से पानी
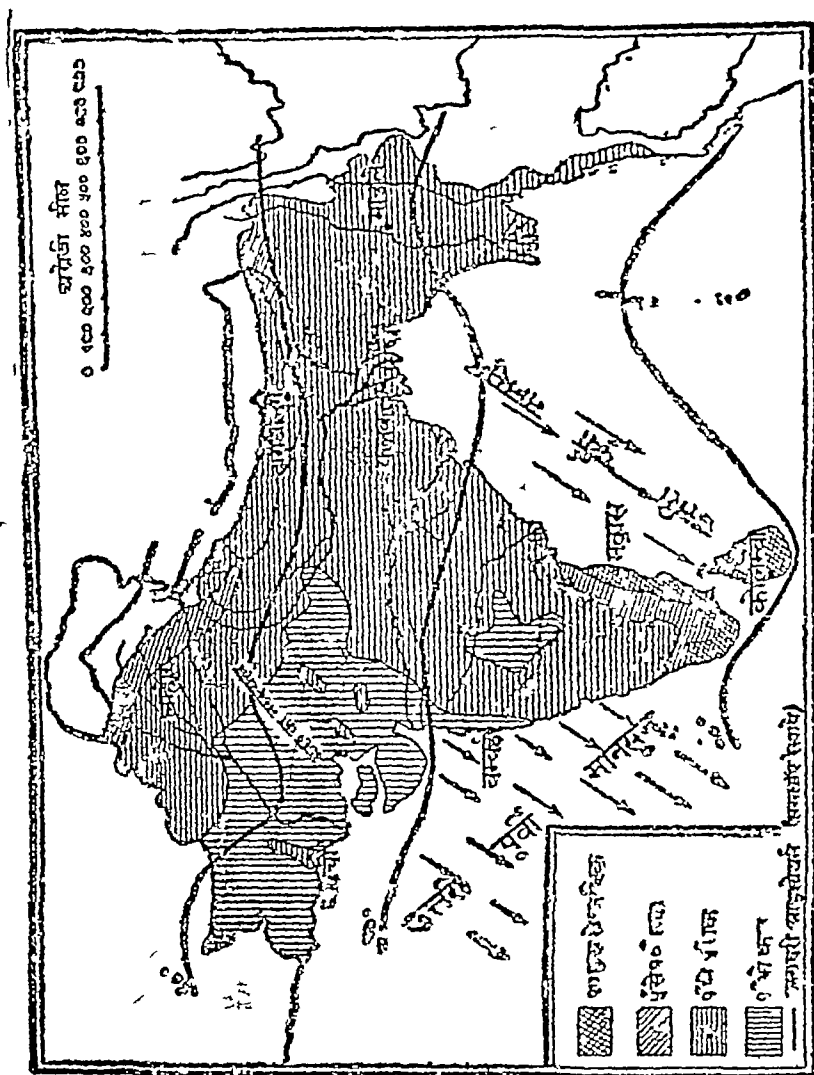
२६—शीतकाल की वर्षा

बरसाती है। अरब सागर की मानसून लौटते समय मालाबार तट पर पानी बरसाती है।

इस समय सीमाप्रान्त, पञ्जाब और उत्तर प्रदेश के पश्चिमी जिलों

में दो-तीन इञ्च पानी बरसा देती है। अधिक ऊँचाई पर बरफ गिरती है। इस प्रकार वर्षा के अनुसार हिन्दुस्तान चार भागों में बँटा हुआ है। :—

१—अधिक वर्षा के प्रदेश

१०० इंच से ऊपर वर्षा पश्चिमी तट, गंगा-डेल्टा आसाम और सुरमाघाटी, ब्रह्मा के तट और इरावदी डेल्टा में होती है।

२--अच्छी वर्षा के प्रदेश

५० से ८० इंच तक वर्षा गंगा की निचली घाटी में इलाहाबाद तक, पूर्वी तट, दक्षिणी ब्रह्मा के उत्तरी-पूर्वी पहाड़ी प्रदेश में होती है।

३—खुश्क प्रदेश

२० से ४० इंच तक वर्षा दक्खिन, मध्य भारत के पठार और मांडले के दक्षिण में ब्रह्मा के मध्य भाग में होती है।

४—अधिक खुश्क प्रदेश

१ से १० इंच तक वर्षा अरावली के पश्चिम में पाकिस्तान के सिन्ध और बिलोचिस्तान में होती है। अकाल से पीड़ित होने वाले प्रान्त क्रमशः ये हैं :—सिन्ध और कच्छ, उत्तर प्रदेश, खानदेश और बिहार, हैदराबाद, मध्यभारत, गुजरात, बम्बई वाला दक्खिन प्रदेश, मैसूर, करनाटक, राज स्थान, पंजाब, उड़ीसा, और उत्तरी मद्रास।

बङ्गाल की खाड़ी के चक्रवात

ये कुछ दूर भीतर तक पहुंचते हैं और निचले भागों में अपने साथ पानी भी बहा लाते हैं। अगर इनके साथ ज्वार भी मिल गया तो कुछ ही मिनट में दस बारह गज पानी बढ़ आता है। १८७६ ई० की लहर में आध घन्टे के भीतर ही भीतर मेघना के कछार (बाकर गंज) में १ लाख से अधिक मनुष्य डूब गये और इससे जो बीमारी

फैली उससे भी २ लाख मनुष्य मर गये। पर ऐसे भयानक तूफान कहीं दस-बीस वर्ष में एक-दो बार आते है।

मानसून से निम्न बातों का गहरा सम्बन्ध है

१—जब हिमालय और उत्तरी-पश्चिमी पहाड़ों पर मई के महीने तक भारी बरफ पडता रहती है तो उत्तर की ओर पूर्वी खुश्क हवाये चलने लगती है। इससे मानसून देर से आती है और कम पानी बरसाती है।

२—मारीशस के पास हिन्द महासागर में हवा का बहुत भारी दबाव होने से हिन्दुस्तान में भी हवा का भार बढ़ जाता है और मानसून अच्छी चलती है।

३—मार्च, अप्रैल और मई महीनों में जिस तरह का वायु-भार अर्जेन्टाइना और चिली (दक्षिणी अमरीका) में रहता है उसका उल्टा हिन्दुस्तान मे देखा गया है। यदि वह वायु-भार ऊंचा होता है। तो मानसून अच्छी चलती है।

४—यदि अफ्रीका में जंजीबार आदि भूमध्य रेखा के पास वाले स्थानों में अप्रैल और मई में जोर की वर्षा होती है तो मानसून कमजोर पड जाती है। यदि इन महीनो में वहा कम पानी बरसता तो मानसून खूब पानी बरसाती है।

५—यदि हिन्द महासागर के दक्षिणी भाग में अधिक बरफ पाई जाती है तो मानसून उस साल खूब पानी बरसाती है।

६—नील नदी मे अधिकतर बाढ़ एबीसीनिया की वर्षा से होती है। जिस साल नील नदी में बाढ़ आती है उस साल हिन्दुस्तान में मानसून से भी अच्छी वर्षा होती है।

७—यदि हिन्दुस्तान मे किसी वर्ष वायु-भार ऊंचा रहता है तो दूसरे वर्ष वायु-भार कम रहता है और वर्षा अच्छी होती है।

सातवाँ अध्याय

सिंचाई

हिन्दुस्तान में बहुत से भाग ऐसे हैं जहां काफी पानी नहीं बरसता हैं। सिंचाई के बिना वहां मुश्किल से एक फसल उग सकती है। कुछ भागो में तो सिंचाई के बिना एक भी फसल नही उग सकती है। इसलिये यहां सिंचाई की ओर अति प्राचीन समय से ध्यान दिया गया है। कुओं से सिंचाई का काम बहुत पहले से लिया गया। इस
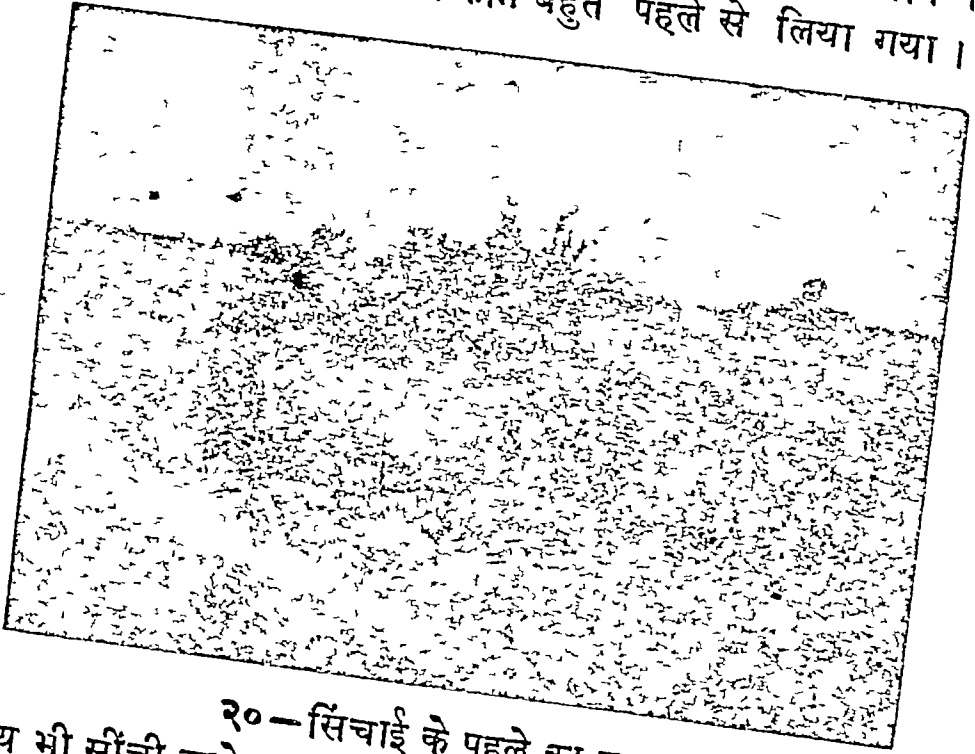
२०—सिंचाई के पहले का दृश्य

समय भी सींची जाने वाली जमीन का प्रायः १/४ भाग कुओं से सींचा जाता है। कुओं से सींची जाने वाली जमीन में छोटे छोटे किसानों को खर्च भी कम पड़ता है और नहर से सींची हुई जमीन से सवाई पज होती है। तालाबों की संख्या भी बहुत है। केवल मद्रास प्रान्त ही २५ हजार तालाब हैं जो तीस लाख एकड़ जमीन सींचते हैं।

पर तालाब अधिकतर दक्खिन की पहाड़ी भूमि में ही है। राजस्थान की रेतीली भूमि में जहां तहां तालाबों और कुओं से सिंचाई होती है। बिलोचिस्तान में सिंचाई का एक विचित्र साधन है जिसे कारेज कहते हैं। कारेज (नहर) जमीन के भीतर ही चलकर पहाड़ी ढाल का पानी समतल खेतों तक ले जाती है।
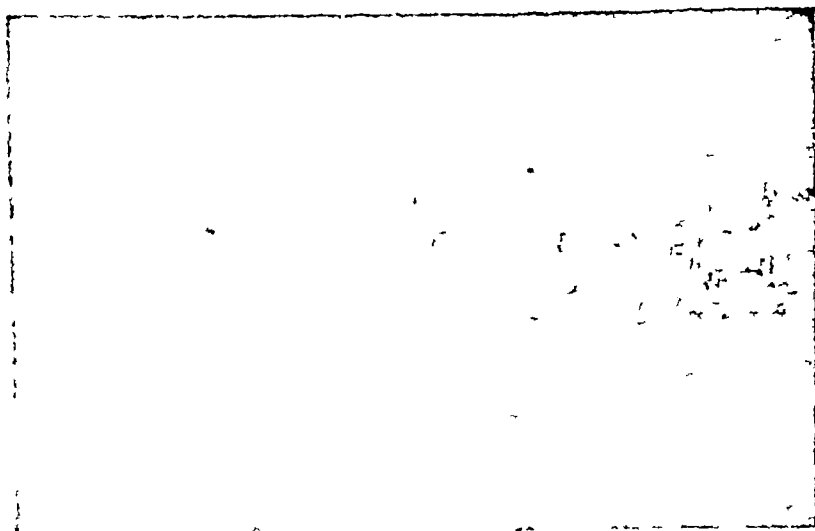
सरहिन्द नहर

सिंचाई की बड़ी बड़ी नहरें आजकल पंजाव, सिन्ध और उत्तर-प्रदेश में पाई जाती हैं। कुछ प्रसिद्ध नहरों का उल्लेख नीचे किया जाता है :—

बारी द्वाब नहर

रावी नदी के दाहिने किनारे से उस स्थान (मधुपुर) से निकलती है जहां रावी नदी पहाड़ों से बाहर आती है। यह नहर रावी और व्यास नदियों के बीच में गुरुदासपुर, अमृतसर और लाहौर जिलों के एक बड़े प्रदेश (५० लाख एकड़) को सींचती है।

यह नहर सिवालिक के पास रूपर स्थान पर सतलज नदी से निकलती है। और पटियाला, नाभा, झींद, फरीदकोटि रियासतों तथा लुधियाना और फिरोपुर जिलों की जमीन को सींचती है।

लोअर चनाब नहरें

यह दुनिया की बड़ी नहरों में से एक है। चनाब नदी में वजीराबाद के पास खानकी स्थान पर बांध बनाकर यह नहर निकाली गई है। इस नहर से ढाई लाख एकड़ जमीन सींची जाती है।

लोअर झेलम नहर

यह नहर रसूल नगर के पास झेलम नदी से निकलती है।

अपर चनाव और लोअर बारी द्वाव नहरों को ट्रिपिल प्रोजेक्ट भी

१—पञ्जाव की नहरें सिक्खों की दूसरी लड़ाई के बाद आरम्भ हुई। जब वीर सिक्ख सेना छिन्न-भिन्न कर दी गई तब पञ्जाव में विद्रोह की आशंका थी। इसलिये बेकार सिपाहियों को काम देने के लिये नहरें बनने लगीं।

२—उत्तर प्रदेश की नहरें प्राय. अकाल के समय में खोदी गईं। अकाल पीड़ित मजदूरों ने दो चार मुट्ठी भर अन्न के लिये दिन भर खुदाई की। इसलिये वे सस्ती बन गईं।

कहते हैं। इनके निकालने में बड़ी होशियारी से काम लिया गया है। रावी नदी में पुल बनाकर चनाब नदी का पानी दूसरी ओर पहुँचाया गया है। यहां इसे लोअर बारी द्वाब नहर कहते हैं। लोअर चनाब
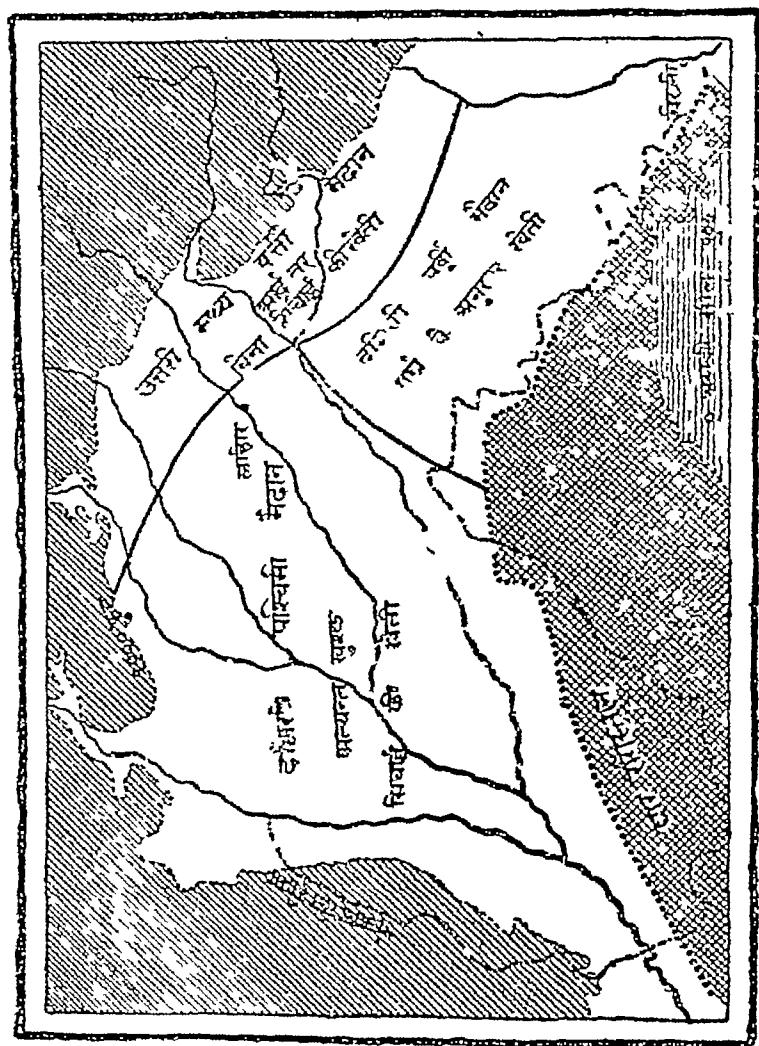
२३—पञ्जाब की नहरें

नहर में भी पानी की कमी न पड़े, इसलिये झेलम नदी का पानी खानकी के पास चनाब नदी में छोड़ दिया गया।

गंगा नहर

यह नहर सबसे पहले खोली गई है। हरिद्वार के घाट के नीचे यह नहर गङ्गा के दाहिने किनारे से निकलती है। नहर का ढाल क्रमशः रक्खा गया है। इसलिये मार्ग के नालों और छोटी नदियों को पार करने के लिये कहीं नहर के ऊपर पुल बनाया गया है और नदी का पानी नहर के ऊपर से निकाल दिया गया है, कहीं नदी के ऊपर पुल बनाया गया है और नहर का पानी नदी के ऊपर से लाया
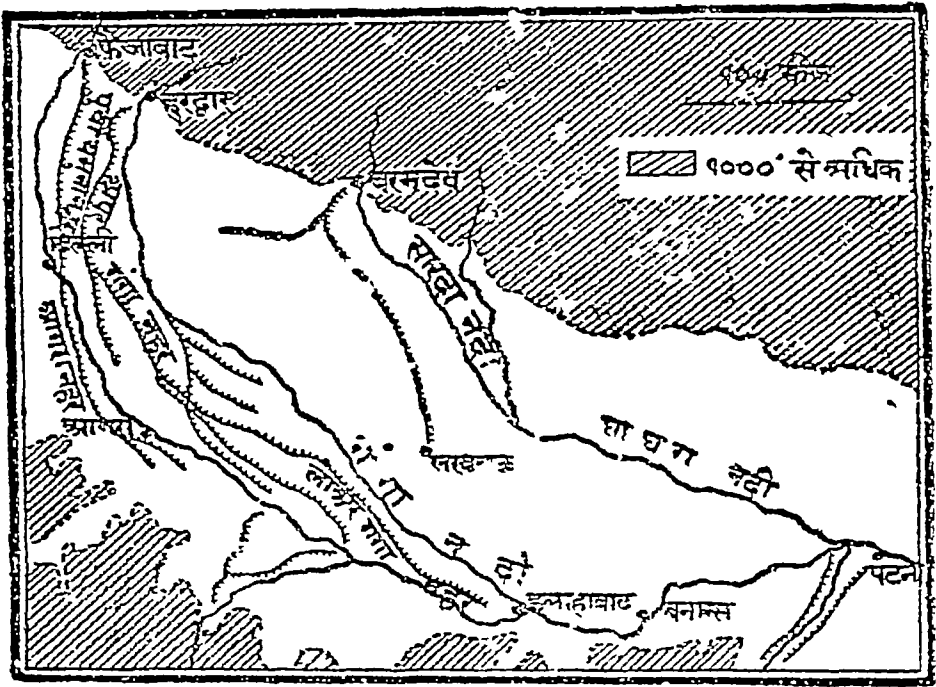
२३—उत्तर-प्रदेश की प्रधान नहरें

गया है। रुड़की के पास सोलानी नदी के ऊपर पुल बांध कर नहर का पानी दूसरी ओर ले जाने में बड़ी कुशलता दिखलाई गई है। हरिद्वार से १३० मील नीचे नारोरा (अलीगढ़) में इसी नहर से गङ्गा की छोटी नहर निकाली गई है। बड़ी नहर द्वावा (गंगा और यमुना के वीच के प्रदेश) के ऊपरी भाग की और छोटी नहर से द्वावा के निचले भाग की सिंचाई होती है।

यमुना नहर

पश्चिमी यमुना नहर को पहले पहल फीरोज़ तुगलक ने हिसार जिले को सींचने के लिये निकलवाया था। यह नहर यमुना के दाहिने किनारे से मैदान के आरम्भ से निकलती है। पास ही पूर्वी यमुना नहर बायें किनारे से निकलती है। यह नहर भी पुरानी है और अकबर के समय में निकाली गई थी। आजकल दोनों नहरें पहले से बहुत सुधर गई हैं। आगरा नहर बहुत छोटी है और दिल्ली से १ मील नीचे ओखला स्थान के पास यमुना के दाहिने किनारे से निकलती है। यह नहर गुरुगांव, मथुरा और आगरा जिलों की जमीन को सींचती है।

बेतवा नहर

यह नहर यमुना की सहायक बेतवा नदी के बायें किनारे से निकलती है। यह नहर झांसी से बारह मील उत्तर में आरम्भ होती है और बुन्देलखंड के जालौन, हमीरपुर जिलों को सींचती है।

सारदा नहर

सारदा नदी उत्तर प्रदेश और नैपाल की सीमा पर बहती है। ब्रह्मदेव के पास इस गहरी नदी में बीस-बीस फुट की दूरी पर १६ फौलाद के फाटक लगे हैं। यहीं से दुनिया भर में सबसे अधिक लम्बी (शाखाओं समेत चार हजार मील) सारदा नहर निकाली गई है। इसकी नालिया १८ हजार मील लम्बी हैं। रुहेलखंड और अवध के उपजाऊ प्रदेश की १५ लाख एकड़ जमीन इससे सींची जाती है।

दक्खिन की नहरें

गोदावरी, कृष्णा और कावेरी नदियों के डेल्टा बड़े उपजाऊ हैं। वर्षा कम होने के कारण इधर सिंचाई की बड़ी आवश्यकता थी। इस लिये डेल्टा के पास इन नदियों में बाध बनाकर सिंचाई का प्रबन्ध किया गया है। कर्नूल-कडापा नहर तुङ्गभद्रा नदी से निकलती है।

पर सबसे अधिक विचित्र नहर पेरियर प्राजेक्ट है। पेरियर नदी ट्रावनकोर राज्य में स्थित थी और पश्चिमी घाट से निकल कर अरब सागर में गिरती थी। पश्चिमी घाट की प्रबल वर्षा से मदुरा के खुश्क जिले में सिचाई करने के लिये पेरियर नदी की घाटी में एक विशाल (६२ गज) ऊँचा बांध बांधा गया। जब यह घाटी एक बड़ी झील बन गई तब पश्चिमी घाट में सुरंग लगाया गया। इस सुरंग के द्वारा पेरियर नदी का पानी पूर्व की ओर वैगाइ नदी में छोड़ा गया। इससे पूर्वी खुश्क भाग में सिंचाई सुगम हो गई।
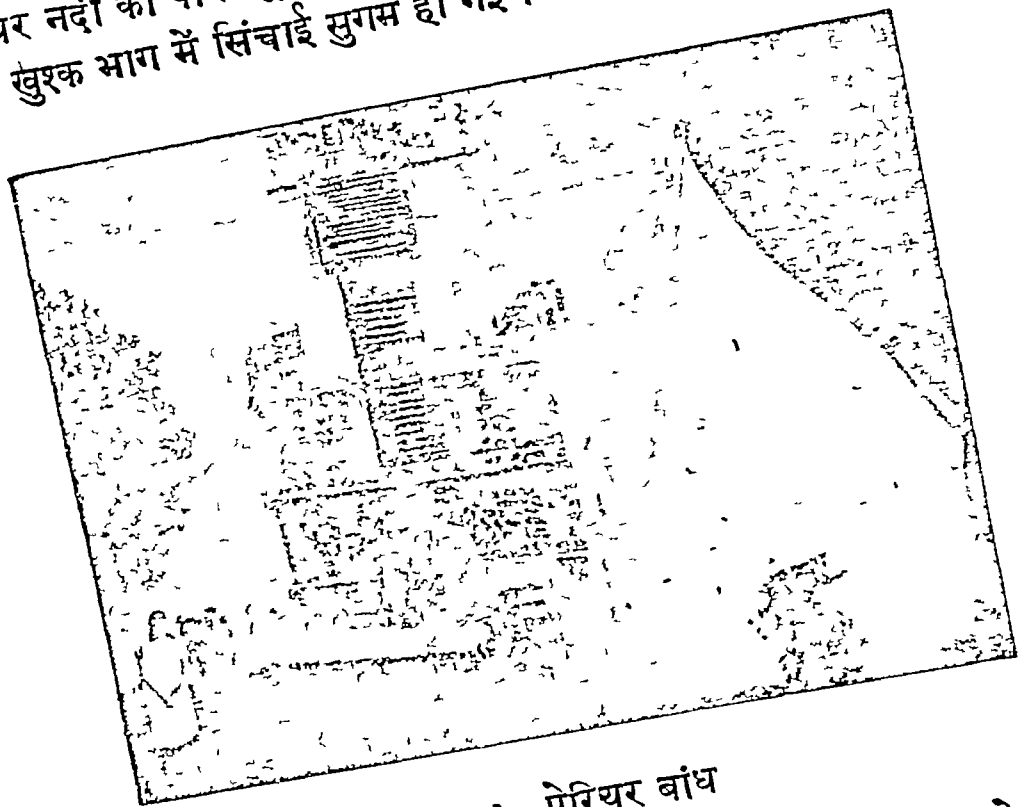
२४—पेरियर बांध

बम्बई प्रान्त में छोटी छोटी नहरें हैं। नीला, मूठा और गोदावरी नहर प्रधान हैं।

पहले दक्खिन (मैसूर राज्य) में कृष्णराजा सागर सिंचाई के लिये सबसे बड़ा तालाब बनाया गया। पर हाल में कावेरी नदी में

मेट्टूर डैम (बांध) दुनिया भर में सब से बड़ा बांध तयार किया गया है। हैदराबाद का निज़ाम सागर भी बड़ा है।

सिन्ध का प्रान्त सिंचाई पर ही निर्भर है। सक्खर नहर संसार की सब से बड़ी नहर है। सक्खर नहर में पास की सिन्ध नदी से ७० बड़ी बड़ी नहरें निकाली गई हैं। तीन दायें किनारे और चार बायें किनारे से चलती हैं। इनमें से प्रत्येक नहर स्वेज नहर के बराबर है। ये कई लाख एकड़ जमीन सींचती हैं। इन नहरों के निकालने से सिन्ध प्रान्त की काया पलट हो गई है।

बीकानेर की गङ्गा नहर विशेष उल्लेखनीय है। रेतीली भूमि नहर के पानी को सोख न ले, इसलिये नहर की समस्त लम्बाई भर नहर की तली और दीवारें सीमेंट लगा कर पक्की कराई गईं। अधिक खर्च होने के कारण यह नहर बहुत दूर तक न बढ़ाई जा सकी। यह नहर सतलज के पानी से बीकानेर के उत्तरी भाग को हरा भरा करती है।

अपर स्वात नहर सीमा प्रान्त से २० मील आगे स्वात नदी से आरम्भ होती है। स्वात-घाटी में ४ मील बहने के बाद नहर के मार्ग में मलाकन्द श्रेणी पड़ती है। इस श्रेणी को पार करने के लिये १८ फुट चौड़ी, १० फुट ऊँची और २० मील लम्बी सुरंग बनानी पड़ी। चट्टानें कड़ी होने के कारण सुरंग बनाने में साढ़े तीन वर्ष लग गये। अन्त में यह नहर दरगाई प्रदेश को सींचने लगी जिससे सीमाप्रान्त के कुछ लड़ाका लोग शान्ति पूर्वक खेती के काम में लग गये।

आठवाँ अध्याय

बनस्पति और पशु

यदि हम किसी देश की जमीन और जलवायु को ठीक ठीक समझ लें तो वहां की बनस्पति का समझना सरल हो जाता है। पिछले पाठों में हम पढ़ चुके हैं कि हिन्दुस्तान का प्रायः आधा भाग उष्ण कटिबन्ध में है। दूसरा आधा भाग शीतोष्ण कटिबन्ध में स्थित है। कुछ भाग समुद्र-तल से अधिक ऊँचे नहीं हैं। लेकिन कुछ भाग समुद्र तल से हजारों फुट ऊँचे हैं। कहीं वर्षा का अभाव रहता है। कहीं १०० इञ्च से ऊपर वर्षा होती है। कुछ भागों की हवा बिल्कुल खुश्क है और कुछ भागों की हवा अत्यन्त आर्द्र रहती है। जमीन भी एक सी नहीं है। इन सब कारणों से भारतवर्ष की बनस्पति कई प्रकार की हैं :–

सदा बहार वाले वन

पश्चिमी घाट, पूर्वी हिमालय के निचले ढाल, आसाम, अराकान-तट, अंडमन द्वीप आदि प्रदेशों में जहां प्रतिवर्ष ८० इञ्च से अधिक वर्षा होती है वहीं सदा हरे भरे रहने वाले बन मिलते हैं। इन बनों के पेड़ बड़े ऊँचे और मजबूत होते हैं। पर तरह तरह की बेल और छोटे-छोटे पौधों की अधिकता से वे प्रायः दुर्गम होते हैं।

पतझड़ वाले प्रदेश

दक्खिन, मध्य-हिमालय और ब्रह्मा के जिन मानसूनी भागों में ८० इञ्च से कम, पर ४० इञ्च से अधिक वर्षा होती है, वहां पतझड़ वाले बन मिलते हैं। इन भागों में ऊँचे और मजबूत पेड़ों के लिये काफी पानी बरस जाता है, पर वर्षा की इतनी अधिकता नहीं होती है कि बन दुर्गम हो जावे। ब्रह्मा का सागोन और हिमालय (गोरखपुर, नैपाल आदि के पास) का साल का पेड़ इन्हीं पतझड़ वाले प्रदेशों में उगता है।

कँटीले जंगल

पंजाब, मध्यभारत, काठियावाड़, मध्य ब्रह्मा आदि भागों में ४० इंच से भी कम पानी बरसता है। वर्षा की कमी से पेड़ भली-भांति नहीं उग पाते हैं। पानी की किफायत करने के लिये प्रकृति ने उनका कद नाटा कर दिया है और उन्हें काटों का जामा पहना दिया है
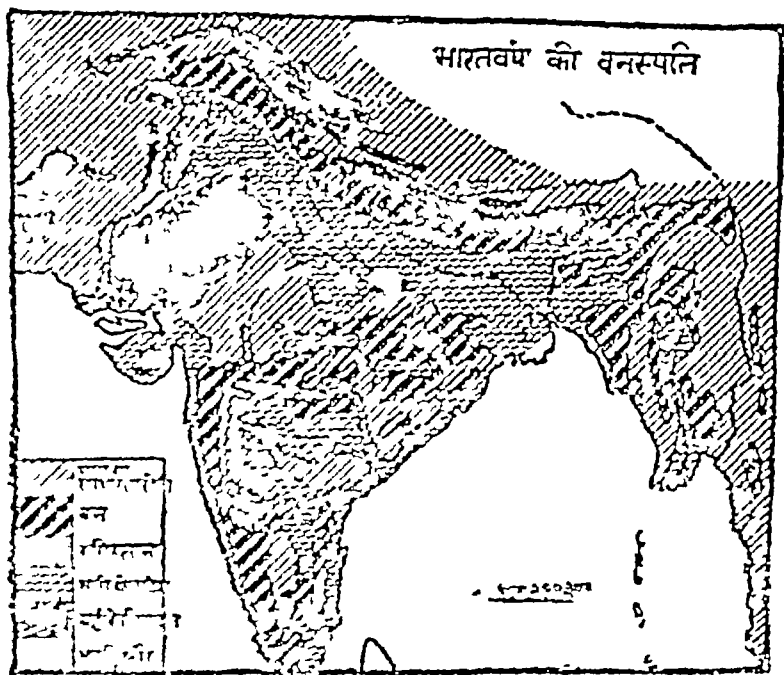
२४—रेगिस्तान में न केवल रेतीला वरन् बर्फीला उजाड़ भी शामिल है।

जंगल में वास्तव में काँटेदार झाड़ियां अधिक हैं। उपयोगी पेड़ों का अभाव है।

घास के प्रदेश

कम वर्षा वाले प्रदेशों में वनों के बीच बीच में घास है।
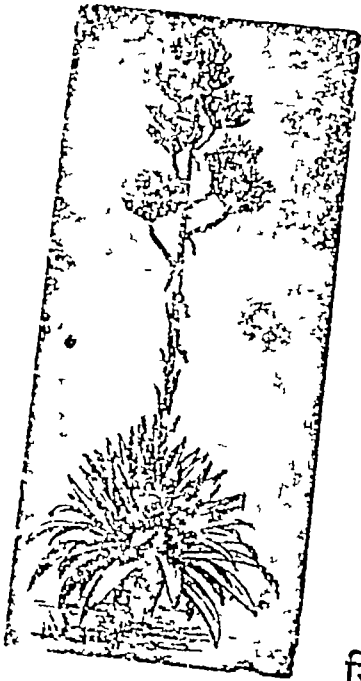
रेगिस्तानी पौधे

पश्चिमी राजपूताना, सिन्ध, बिलोचिस्तान आदि भागों में प्रतिवर्ष १५ इंच से भी कम वर्षा होती है। इसलिये यहां कांटेदार पेड़ और झाड़ियों भी कम है। केवल कहीं कहीं लम्बी जड़ वाले और मोटे गूदेदार तने वाले पौधे मिलते हैं। इनमें पत्तियों के स्थान पर कांटे होते है।

पर्वतीय बनस्पति

पहाड़ों पर ऊँचाई के अनुसार भिन्न-भिन्न भागो में भिन्न-भिन्न प्रकार की बनस्पति

२६ रेगिस्तानी पौधा

हैं। समुद्र-तल से चार पांच हजार फुट की ऊँचाई तक उष्ण प्रदेश की बनस्पति है। इससे अधिक ऊंचाई पर ठंड के कारण देवदारु आदि शीतोष्ण प्रदेश के बन है। उनसे ऊपर ढालों पर घास है। १८,००० फुट से ऊपर सब कहीं शाश्वत हिम है।

गोरन के वन

हिन्दुस्तान और ब्रह्मा के कुछ तटीय भाग ज्वार की बाढ़ में समुद्र के नमकीन पानी में डूब जाते है। इन वनो को लकड़ी जलाने और छाल चमड़ा कमाने के काम आती है। सुन्दर वन में सुन्दरी पेड़ की लकड़ी छोटी छोटी नाव बनाने के काम आता है।

वनों के लाभ

जिन भागों में पेड़ नहीं होते है वहा अधिक वर्षा होने पर जोर की बाढ़ आती है। प्रबल बाढ़ से साथ अच्छी मिट्टी भी खिसकती जाती है ये वन वर्षा के प्रबल वेग को रोक लेते है। उनकी मजबूत जड़ें ढीली मिट्टी को भी जकड़े रहती है। वनों के कारण वर्षा की

पानी छन-छन कर धीरे-धीरे आता है और वर्षा-ऋतु समाप्त होने पर भी पानी मिलता रहता है। बनों में पेड़ों की हरी-हरी पत्तियाँ ग्रीष्म ऋतु के उच्च तापक्रम को थोड़ा कम करके कुछ ठंडक बनाये रखती हैं।
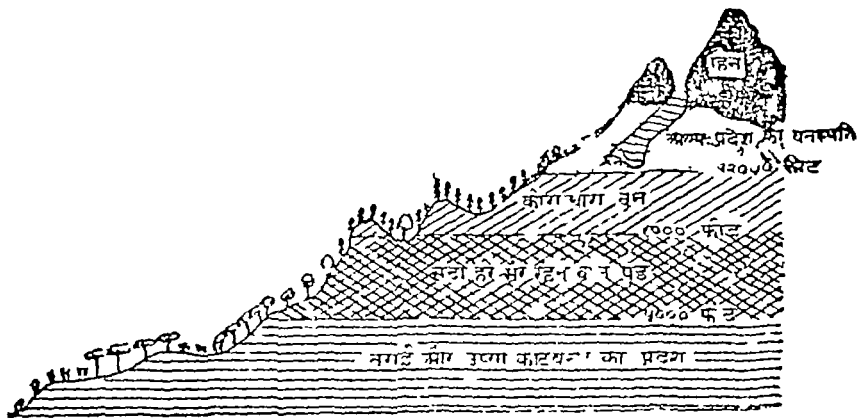
२७—पहाड़ की भिन्न भिन्न ऊँचाई पर वनस्पति-विभाग

इसके अतिरिक्त वनों से घर और सामान बनाने के लिये लकड़ी मिलती है। यहीं से गोंद, तारपीन, तेल, चन्दन और फल भी मिलते हैं। पेंसिल, कागज, दियासलाई आदि बनाने के लिये यहाँ अपार सम्पत्ति है। वनों में ही लाखों ढोर चरते हैं।

पशु

हिन्दुस्तान में कई जाति के अनेक जङ्गली और पालतू पशु हैं। यहां कई जाति के बन्दर पाये जाते हैं। वे प्रायः शाकाहारी होते हैं, और आम, जामुन और गूलर आदि के फल खाते हैं। फलों की फसल समाप्त हो जाने पर वे मुलायम पत्ते और घास के किल्ले खाते हैं। अथवा किसानों की फसलों और शहर के घरों से जो कुछ खाने का सामान चुरा लाते हैं उसी पर निर्वाह करते हैं। लंगूरी बन्दर बड़े

विचित्र होते हैं। वे दूर दूर की छलांग मारते हैं। यदि वे छलांग मारने पर दूसरी ओर न पहुंच सके तो उल्टे लौट जाते हैं। पहले उत्तरी-पश्चिमी हिन्दुस्तान में शेर बहुत थे पर अब वे केवल काठियावाड़ में मिलते हैं। चीते और तेंदुए अब भी हिन्दुस्तान के बहुत से भागों में पाये जाते हैं। वे किसानों के जानवरों को अक्सर खा जाते हैं। भेड़िया, गीदड़ लोमड़ी और वनबिलाव प्रायः सर्वसाधारण हैं। हिमालय के पहाड़ी बनों में भालू बहुत मिलते हैं। पर हाथी सिर्फ आसाम और बरमा के घने बनों में मिलते हैं। तराई में गैंडा मिलता है। हिरण खुले मैदानों या बनों में मिलता है। नदियों में मछली और कछुओं के सिवा मगर और घड़ियाल भी होते हैं। मोर आदि पक्षियों की सम्पत्ति भी अपार है। पालतू जानवरों में गाय, बैल और भैंस अधिक उपयोगी है। घोड़ा और खच्चर भी सर्वसाधारण हैं। पहाड़ी भागों और खुश्क चरागाहों में भेड़ और बकरी बहुत पाली जाती हैं। उत्तर-पश्चिम के खुश्क भागों में ऊँट और गधा बड़े काम का होता है। आसाम, बरमा और लंका के तर भागों में हाथी बड़ा उपयोगी होता है।

नवाँ अध्याय

कृषि

यदि प्रकृति के काम में बाधा न डाली जाती तब तो सारे भारतवर्ष में किसी न किसी तरह के बन प्रदेश का ही साम्राज्य होता। पुराने समय में अब से कहीं अधिक वन प्रदेश था। पर आबादी के बढ़ने से अधिक भोजन की आवश्यकता पड़ी। इसलिये मनुष्यों ने वनों को काट कर खेती के लिये जमीन साफ कर ली। इस समय जलवायु और जमीन के अनुसार भारतवर्ष में तरह तरह की खेती होती है। पर भारतवर्ष की समस्त खेती का क्षेत्रफल प्राय: ६५ करोड़ एकड़ है। खेती ही इस देश का प्रधान पेशा है। प्राय: १० फीसदी लोग खेती की फसलें उगा कर अपना निर्वाह करते हैं। अपने देश की मुख्य फसलें ये हैं —

धान

धान का जन्म-स्थान पूर्वी द्वीप-समूह है। पर अपने देश में अति प्राचीन समय से इसकी खेती है। धान को बहुत पानी, सूर्य की गरमी और चिकनी मिट्टी की आवश्यकता होती है। आरम्भ में पौधे का प्राय. आधा भाग पानी में डूबा रहता है। जहा प्रबल वर्षा की बाढ़ से कुछ दिनों तक जमीन डूबी रहती है अथवा जहा नहरों द्वारा सिंचाई हो जाती है वहीं धान की फसल आसाम, बंगाल, बरमा, बिहार, उड़ीसा,

पूर्वी उत्तर-प्रदेश और मालाबार-तट में खूब उगाई जाता है। गोदावरी आदि नदियों के डेल्टा में सिंचाई को सुगमता २८ धान की पक्कीबाल हो जाने से मद्रास प्रान्त में भी धान अधिक होता है। दूसरे प्रान्तों में धान कम होता है। धान का क्षेत्रफल लगभग ८ करोड़ एकड है। इतना क्षेत्रफल किसी दूसरी फसल से नहीं घिरा हुआ है। धान बोने के लिए कुछ ऊँची मेंड़ बांध कर खेत का पानी घेर लिया जाता है। जोतने के बाद उसमें फी एकड़ एक या डेढ़ मन बीज फेक फेक कर वो दिया जाता है। पर अच्छे धान को पहले क्यारियों में बो देते है। जब पौधा एक बालिस्त ऊंचा हो जाता है तब उसे जड़-समेत सावधानी से उखाड़ कर पहली वर्षा होने पर खेत में चहोर (जमा) दिया जाता है। इस ढङ्ग से बीज कम लगता है। सितम्बर या अक्तूबर में फसल काट कर पैर गांव या खेत के पास ऊची और साफ जगह में पौधों के गट्ठों को डाल देते है फिर डण्डा मार मार कर पौधों के दाने अलग कर लिए जाते हैं अथवा बैलों की दायं चलाकर गाहते है हर एकड़ में पौधे के तिनके तीस-चालीस मन निकलते हैं। पर इसका चारा जानवरों को अच्छा नहीं लगता है। इसलिये प्याल अधिकतर बिछाने या छप्पर छाने के काम आता है। धान को कूट कर और फटक कर भूसी अलग कर ली जाती है। इस प्रकार साफ चावल निकाला जाता है। बड़े-बड़े कारखानों में चावल साफ करने का काम कल से किया जाता है।
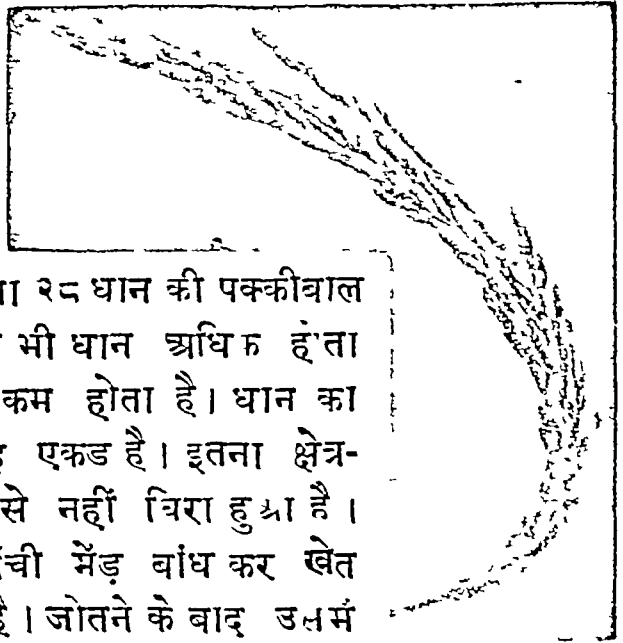
बङ्गाल में सब से अधिक चावल पैदा होता है। पर घनी आबादी होने के कारण सब का सब चावल वहीं खर्च हो जाता है।

बरमा में बहुत सा चावल फालतू बचता है और दिसावर को भेजा जाता है।

गेहूँ

गेहूँ का पौधा प्राय: धान के पौधे के बराबर होता है। गेहूँ को
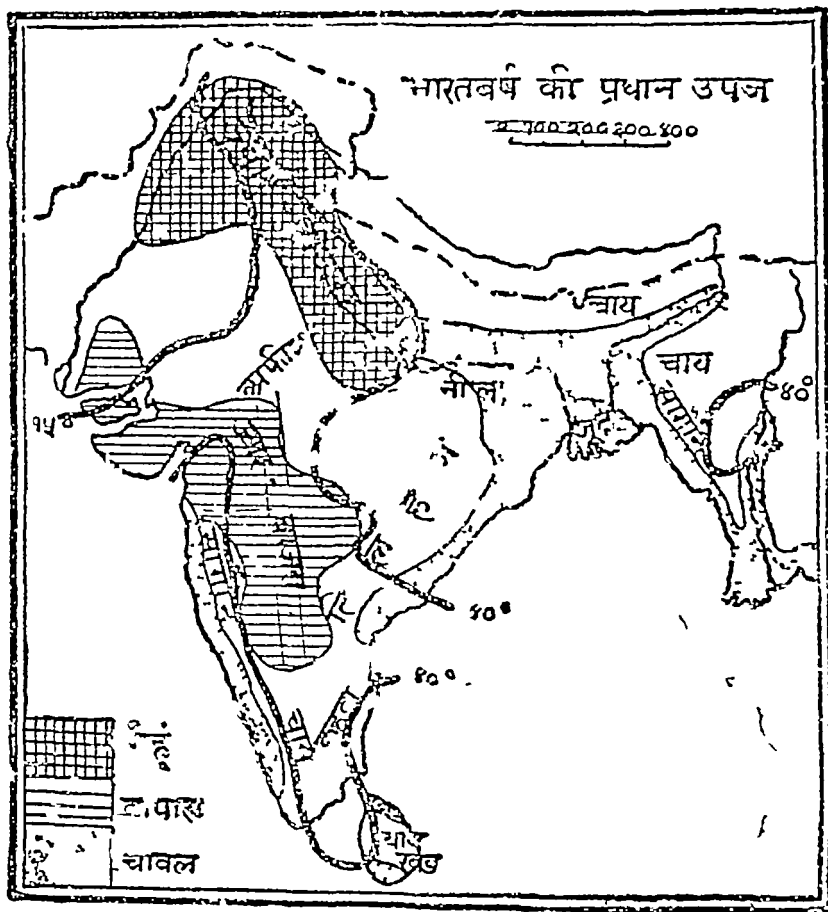
२६—भारतवर्ष की प्रधान फसलें

खुश्क और ठण्डी जलवायु की आवश्यकता होती है। अधिक नमी में यह सड़ जाता है। इसलिये पञ्जाब और उत्तर प्रदेश की कछारी या रेत मिली हुई चिकनी मिट्टी में अच्छा गेहूँ पैदा होता है। गेहूँ को
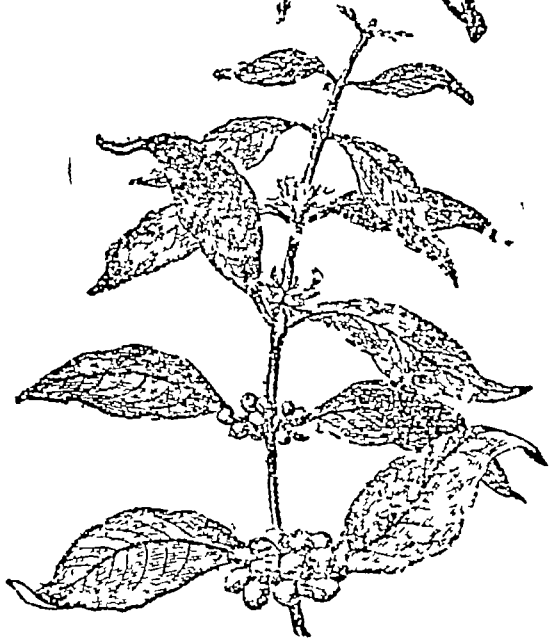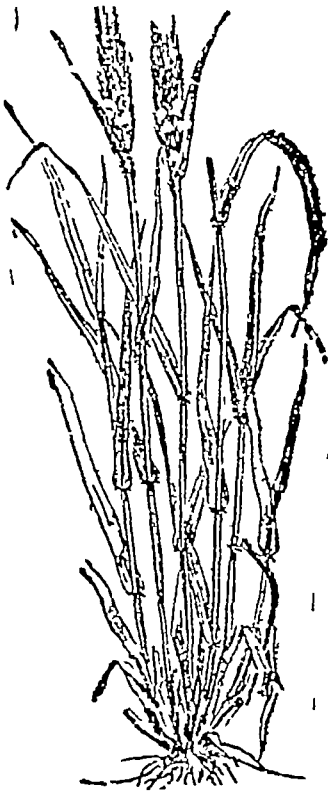
२०—धान, चाय, गेहूँ और क़हवा के पौधे

केवल एक-दो सिंचाई की जरूरत पड़ती है। यह सिंचाई नहर या कुओं से होती है। मध्यभारत और बम्बई की रेगर या काली मिट्टी में सिंचाई की जरूरत नहीं पड़ती है। बरसात के बाद खेत तीन चार बार जोता जाता है। ढेले फोड़ने के लिए पटेला भी चला दिया जाता है। शीतकाल के आरम्भ होने पर बीज बो दिया जाता है। सिंचाई चाहने वाले खेत में क्यारियां बना ली जाती हैं। होली के आस-पास दाना पक जाता है और गरमी पड़ते ही काट लिया जाता है। फिर दांय चलाकर भूसे से गेहूँ को अलग कर लेते हैं।

चावल की अपेक्षा गेहूँ कहीं अधिक पुष्टिकारक भोजन होता है। इसीलिये चावल खाने वाले लोगों से गेहूँ खाने वाले (उत्तर भारत) के लोग अधिक बलवान होते हैं। पर जिस तरह मांड़ निकाला हुआ चावल अधिक लाभदायक नहीं रहता, उसी तरह महीन छना हुआ मैदा भी बलदायक नहीं रहता है।

जौ

जौ के पौधे की जड़ें गेहूँ के पौधे से कम गहरी होती हैं। इसीलिये जौ अधिक खुश्की नहीं सह सकता। जौ अक्सर गेहूँ से पहले पक जाता है। इस लिये उत्तर-प्रदेश के गरीब किसान प्रायः मकई की फसल काट कर उसी खेत में जौ बो देते हैं।

चना, मटर और मसूर अक्सर गेहूँ या जौ के साथ मिलाकर बोये जाते हैं। अधिक नमी की ऋतु में किसान लोग ज्वार या बाजरा को बिना काटे ही खुरपी से जरा सा गढ़ा करके चना गुल देते हैं। ज्वार या बाजरा की फसल कट जाने पर चना तेजी से बढ़ आता है। और गेहूँ के साथ काटा जाता है।

इसी रबी की फसल के साथ तेल के लिये सरसों, दुआ और अलसी के बीज बो दिये जाते हैं। पर ये चीजें गेहूँ से पहले काटी जाती हैं।

मक्का या मकई, मकरा ज्वार और बाजरा की फसलें वर्षा

आरम्भ होते ही जुलाई में बो दी जाती हैं। सबसे पहले मक्का काटी जाती है। अगहन मास तक खरीफ की फसलें कट जाती हैं। इनके साथ ही किसान लोग उर्द, मूँग, और अरहर (दाल के लिये) और तिल (तेल के लिये अथवा खाने के लिये) बो देते हैं। उर्द और
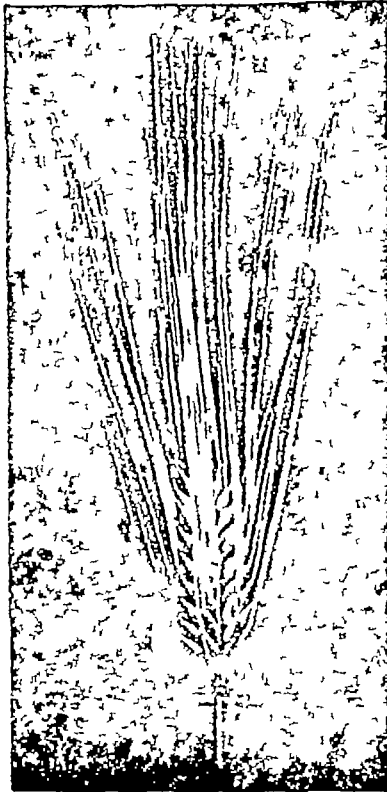
३१—जौ

मूँग को खरीफ की फसल के साथ ही काटते हैं। तिल दो महीने बाद और अरहर को बैसाख में काटते हैं। इस प्रकार अरहर के बड़े दाने को पकने में आठ-दस महीने लगते हैं। मेंड पर अंडी बो दी जाती है। इसको तैयार होने में एक वर्ष लग जाता। इसका तेल कई कामों में आता है। पत्ते रेशम के कीड़ों को खिलाये जाते हैं। पर सर्वोत्तम रेशम शहतूत के पत्ते खिलाने से मिलता है।

ईख

गन्ने को अच्छी जमीन, काफी गरमी और अधिक सिंचाई की आवश्यकता होती है। इसलिये यह अधिकतर (प्राय २,००० वर्ग मील) उत्तर प्रदेश और कुछ (१००० वर्गमील) बङ्गाल और (२००० वर्ग-मील) पञ्जाब में होती है। गन्ना काट-काट कर चैत के महीने में बोया जाता है, इसको तैयार होने मे दस ग्यारह महीने लग जाते हैं। जाड़े के दिनों मे गन्ने को लोहे के कोल्हू में पेर कर रस निकाल लेते हैं। इस रस को बड़े-बड़े कड़ाहों में .औट कर गुड़ बनाते हैं। पर कुछ पहले इस उपज से काम नहीं चलता था। इसीलिये बहुत सी शक्कर जावा, मारीशस आदि बाहरी देशों से मंगाई जाती थी।

कपास

कपास को गर्म और खुश्क जलवायु अच्छी लगती है। हिन्दुस्तान के जिन भागों में ४० इंच से कम पानी बरसता है, उन सभी प्रान्तों में कपास उगती है। सारे हिन्दुस्तान में दो करोड़ एकड़ क्षेत्रफल कपास उगाने के काम आता है। पर दक्खिन की गहरी काली मिट्टी (रेगर) में कपास सब से अधिक होती है। इस उपजाऊ मिट्टी में नमी बहुत दिनों तक बनी रहती है। सिन्ध और गङ्गा के बाहरी मैदान में कपास का पौधा अधिक बड़ा होता है। यहीं सिंचाई करके अधिकतर अमरीकन कपास उगाई जाती है। इस कपास का रेशा देशी कपास के रेशे से बड़ा होता है।

कपास वर्षा के आरम्भ में ही अषाढ़ के महीने में बो दी जाती है। कार्तिक में फूल आते हैं। अगहन या पौष महीने में टेंट इकट्ठे किये जाते हैं। खेतों में अक्सर चार-पाच बार चुनाई होती है। कपास को ओट कर बिनौले अलग कर लिये जाते हैं। धुनने के बाद रुई कात ली जाती है। और धागे से तरह तरह के कपड़े बुने

जाते हैं। पहले बहुत-सी रुई दिसावर भेज दी जाती थी और उसके बदलेमें विलायती कपड़ा मँगाया जाता था। अब अपने देश की ही मिलें कपड़ा तयार करती हैं। कुछ हाथ से बुना जाता है।
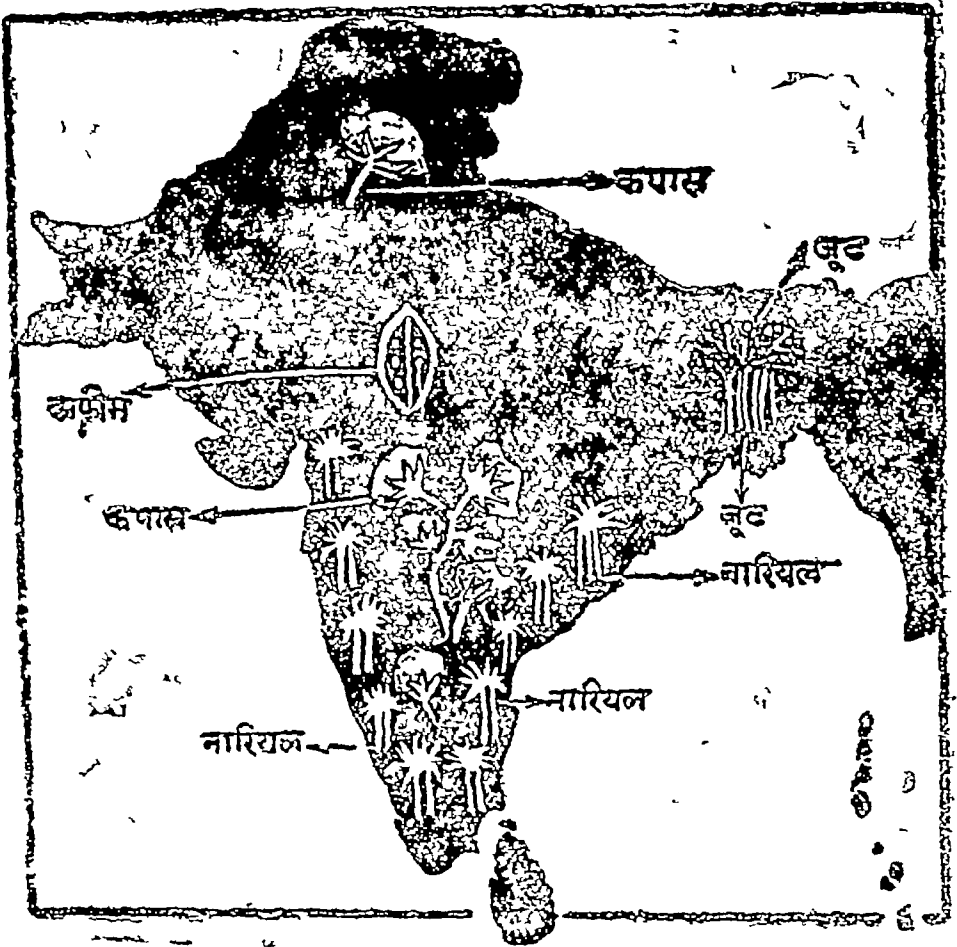
३२—भारतवर्ष की फसलें

जूट या पाट

जूट एक पौधे का रेशा है। जूट के पौधे को उष्णार्द्र (गर्म और तर) जलवायु और उपजाऊ कछारी मिट्टी चाहिये। जूट की फसल जमीन को शीघ्र ही कमजोर कर देती है। इसलिये कछारी मिट्टी पर हर साल बाढ़ के साथ लाई हुई बारीक मिट्टी की तह पड़ जाने की

आवश्यकता होती है। इन कारणों से दुनियां भर में जूट का एक मात्र प्रदेश गङ्गा और ब्रह्मपुत्र की निचली घाटी में, पूर्वी, उत्तरी और दक्षिणी बंगाल और आसाम में स्थित है।

बसन्त ऋतु की वर्षा के बाद जूट के खेत की जोताई आरम्भ हो जाती है। मार्च, अप्रैल या मई महीने में बीज बो दिया जाता है। जुलाई या अगस्त में फल आने से पहले ही फसल कट जाती है।
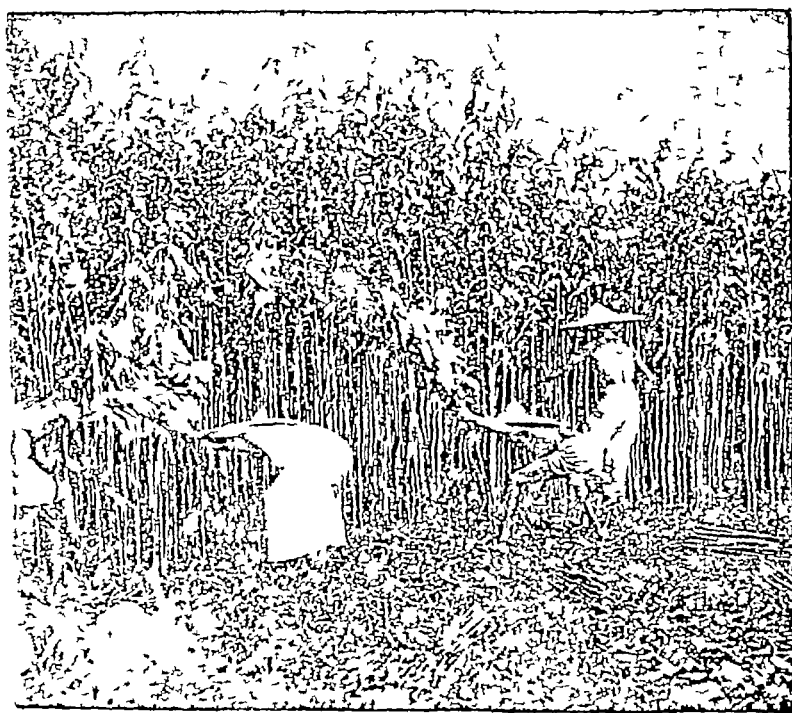
३३--जूट (पाट) की कटाई

पौधों को छोटे-छोटे गट्ठों में बाँध कर पास के तालाब में गाड़ देते हैं। और प्राय २१ दिन तक गाड़े रखते हैं इसके बाद ऊपर की कमजोर छाल बिलकुल सड़ जाती है। बार बार पानी में धोने से भीतर का साफ रेशा निकल आता है। फिर यह रेशा लकड़ी से अलग कर लिया जाता

३४—रेंडी, सरसों जूट और कपास

हैं। छोटे-छोटे सौदागर किसानों से जूट मोल लेकर शहरों के बड़े-बड़े सौदागरो के हाथ बेच देते हैं। वे लोग जूट को कलकत्ते भेज देते हैं। यहा रेशों को कातने और बोरे बुनने के बड़े बड़े कारखाने हैं। पर इन कारखानों में सारा जूट खर्च नहीं होता है। बचे हुये जूट को बड़े-बड़े गट्ठों में बांध कर व्यापारी लोग दिसावर भेज देते हैं। जूट के व्यापार को आरम्भ हुये प्रायः १०० वर्ष हुये हैं। इससे बड़े बड़े व्यापारियों को लाभ अवश्य हुआ है, पर बंगाल के तालाबों का पानी बड़ा मैला बदबूदार हो गया है जिससे मलेरिया का प्रकोप बढ़ता जा रहा है।

विहार और उत्तर प्रदेश में सन, रस्सो आदि घरेलू काम के लिये उगाया जाता है।

नील

यह भी एक छोटा पौधा है और गङ्गा की ही घाटी में उगाया जाता है। पर जब से जर्मनी में बनावटी नीला रङ्ग तैयार होने लगा तब से हिन्दुस्तान में नील की खेती कम हो गई है।

अफीम

यह पोस्ते के पौधे का सूखा हुआ रस है। यह पौधा शीतकाल में बोया जाता है। होली के निकट इनमें सफेद फूल आते हैं। फूल आने के बाद और दाना पडने के पहले किसान लोग दोपहर के बाद बोंडी (कच्चे फल) आकते हैं और दूसरे दिन रस को इकट्ठा कर लेते हैं। अन्त मे अफीम के सरकारी दफ्तर में सब अफीम मोल ले ली जाती है। पहले गङ्गा की मध्य घाटी और मालवा-प्रदेश में अफीम बहुत पैदा की जाती थी। पर जब से चीनो लोगों ने अफीम खाना और हुक्के में रखकर पीना बन्द कर दिया, तब से यहा उसकी खेती बहुत कम हो गई है। किसान लोग पोस्ते के साथ अक्सर धनियाँ, सौंफ और अजवाइन भी बो देते हैं।

तम्बाकू

हिन्दुस्तान में १६०५ ई० में पहले-पहल पुर्तगाली लोगों के द्वारा

३५—अलसी, नील, पोस्ता और तम्बाकू

तम्बाकू का आगमन हुआ। तम्बाकू के पौधे को उपजाऊ जमीन

के साथ साथ काफी गर्मी और पानी की अवश्यकता होती है। इसलिये बङ्गाल, मद्रास, बम्बई, बरमा, पञ्जाब और उत्तर-प्रदेश में इसकी खेती बहुत होती है। तम्बाकू का पौधा जमीन को जल्द कमजोर कर देता है। इसका पानी विशेष कर छोटी उम्र में तन्दुरुस्ती को बिगाड़
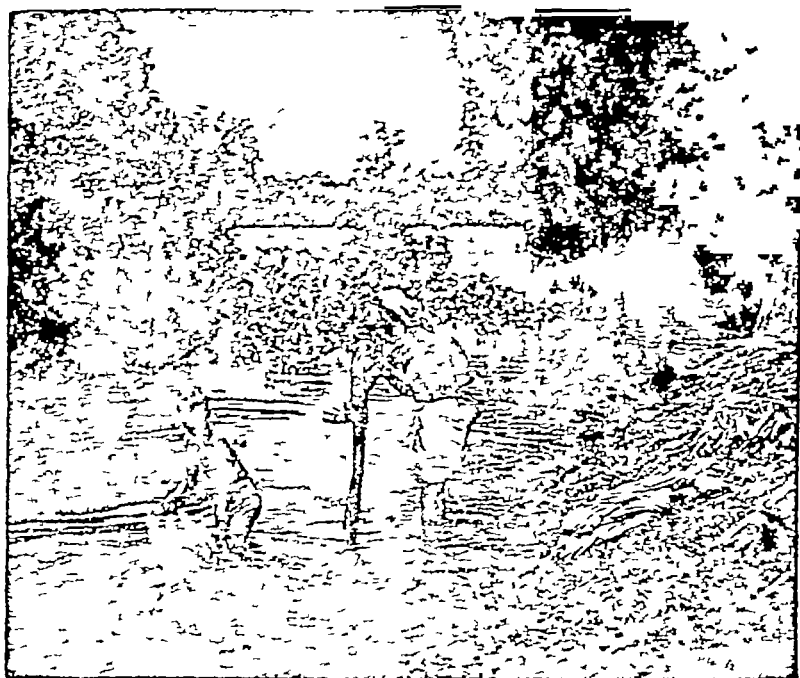
३६–तालावों की अधिकता होने से बङ्गाल में जूट (पाट) धोने के लिये बड़ी सुविधा है।

देता है। फिर भी इसका प्रचार इतना बढ़ रहा है कि देश में पैदा की गई तम्बाकू भी खपत हो जाने के बाद प्रायः २ करोड़ रुपये की तम्बाकू बाहर बाहर से आती है।

चाय

चाय के पौधे को प्रबल वर्षा और तेज धूप चाहिये। लेकिन

इनकी जड़ों में पानी भरा रहने से पौधा बिगड़ जाता है। इसलिये चाय का पौधा आसाम की पहाड़ियों के ढालों तथा दार्जिलिंग और
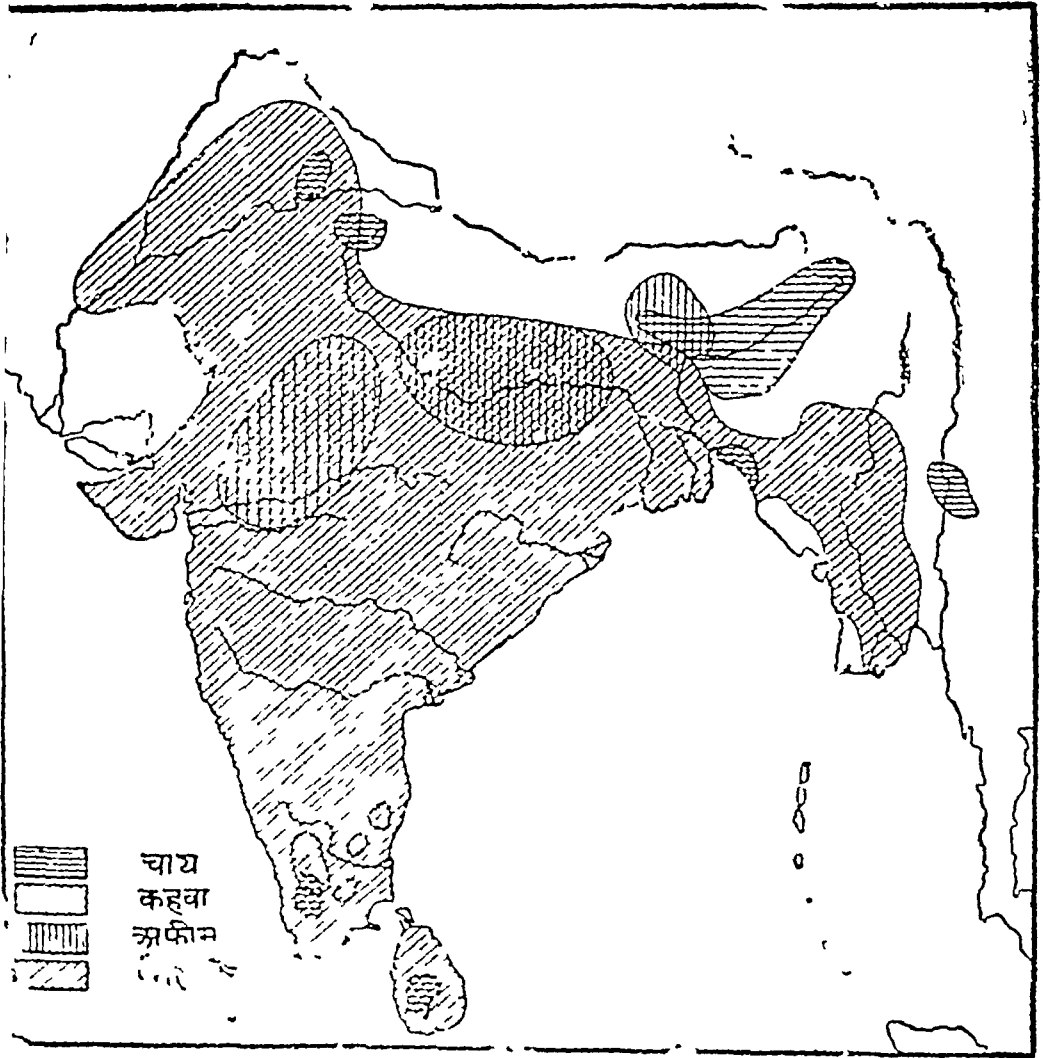
३७—चाय, कहवा, अफीम और तिलहन के प्रधान प्रदेश

देहरादून में हिमालय के ढालों पर खूब उगता है। लङ्काद्वीप और नीलगिरी के ढाल भी चाय के केन्द्र हैं। पत्तियां तोड़ने का काम औरतों और बच्चों से कराया जाता है। पत्तियों को धीमी आंच से सुखाने के बाद मशीनों का प्रयोग होता है।

कहवा

यह पौधा भी पहाड़ी ढालों पर उगता है। यह मानसूनी हवा का वेग नहीं सह सकता है। इसलिय कहवा अधिकतर मैसूर और लंका में हवा से सुरक्षित ढालों पर होता है। पौधे के बीजों को भून कर पीस लिया जाता है और फिर यह पीने के काम आता है।

पान

पान की लता कुछ ऊँची गीली जमीन पर उगाई जाती है, क्योंकि बँधा हुआ पानी इसको हानि पहुंचाता है। लता के सहारे के लिये थोड़ी थोड़ी दूर पर दो ढाई गज ऊंचे पतले खम्भे गाड़ दिये जाते हैं। धूप और आंधी से वचाव के लिये ऊपर छाया कर दी जाती है। एक वार पान का वगीचा ठीक लग जाने पर पन्द्रह वीस वर्ष तक पान (पत्ता) मिलता रहता है।

सुपारी

सुपारी का पेड़ समुद्र तट के पास आसाम और वङ्गाल में उगाया जाता है। पन्द्रह-वीस वर्ष के वाद इसमें फल आने लगता है। सुपारी का पेड़ मार्च में फूलता है, पर सुपारी (फल) दिसम्बर या जनवरी में तोड़ी जाती है। सुपारी का खर्च अधिक होने के कारण हमारे यहां वहुत सी सुपारी मलय प्रायःद्वीप और लङ्का से मगाई जाती है।

नारियल

नारियल का पेड़ सुपारी से कहीं अधिकलम्वा और मोटा होता है। यह भी समुद्र के पास रेतीली जमीन में उगता है। जहां अधिक वर्षा होती है। नारियल को समुद्री नमकीन वायु और तटीय रेतीली मिट्टी विशेष प्रिय है। इसलिये पूर्वी और पश्चिमी तटीय मैदानों और लङ्का में नारियल वहुत होता है। पर तट से अधिक दूर जाने पर नारियल का पेड़ नहीं मिलता है। हरे फल का रस पिया जाता है। पक्के फल को काट कर खोपड़ा या गरी निकाल लेते हैं। जिससे तेल तैयार किया जाता है।

३८—नारियल

३९—केला

मूङ्गफली

मूङ्गफली के पौधे को कुछ कुछ रेतीली भूमि और उच्च तापक्रम और साधारण नमी की आवश्यकता होती है। इसलिये मद्रास, बम्बई, बिहार और ब्रह्मा प्रान्त में विशेष रूप से मूङ्गफली की खेती होती है। फल से तेल निकाला जाता है।

मसाले

लाल मिर्च प्रायः सब कहीं पैदा होती है। मूंगफली की तरह हल्दी एक चौड़ी पत्ती वाले पौधे की जड़ में लगती है। काली मिर्च और इलायची मालाबार की पहाड़ियों के ढालों पर उगाई जाती है। जब गुच्छे हरेहोते हैं तब मिर्च का रंग काला नहीं होता है। सूखने से ऊपरीछिलका सिकुड़ जाता है और उसका रंग काला पड़ जाता है।

फल

हिन्दुस्तान में केला, सेव, अमरूद आदि तरह तरह से फल बहुत होते हैं। पर इनमें आम सर्व प्रसिद्ध है।

४०—मूङ्गफली

तरकारियां

यहां आलू, गोभी, गाजर, लौकी आदि तरकारियां अनेक हैं। पर अच्छी खाद मिलने से शहरों के पास अधिक उगाई जाती है। और मांग अधिक होने से वहीं उनका अच्छा दाम लगता है।

४१—जायफल का पेड़ और फल

सिनकोना

सिनकोना की छाल को कूट कर कुनैन बनाते हैं। सिनकोना के पेड़ का असली घर दक्षिणी अमरीका में एंडीज के ऊँचे ढालों पर है। पर अब से ७० वर्ष पहले नीलगिरी, मैसूर, ट्रावनकोर और दार्जिलिंग में सिनकोना के पौधे लगाये गये। इन्हीं से देश भर के लिये कुनैन तैयार की जाती है।

रबड़ एक पेड़ के रस से तैयार की जाती है। यह पेड़ अत्यन्त गर्म और तर जलवायु में उगता है। इसलिये लङ्का और लोअर (निचले) ब्रह्मा में इसके बगीचे लगाये गये हैं।

४२—काली मिर्च

लाख

यह एक तरह का गोंद है जिसे एक कीड़ा इकट्ठा करता है। छोटा नागपुर और आसाम की जंगली जातियां अधिकतर लाख बाहर भेजती हैं। मिर्जापुर में लाख साफ करने के कई कारखाने हैं।

दसवाँ अध्याय

कला-कौशल

कृषि-प्रधान देश होने पर भी भारतवर्ष सदा से स्वावलम्बी रहा है। पहले आवश्यकतायें कम थीं। जो आवश्यकतायें थीं उनकी पूर्ति यहीं हो जाती थी। प्रत्येक गांव में लुहार खेतों के औजार और अस्त्र शस्त्र बनाता था। बढ़ई लकड़ी का काम बनाता था। कुम्हार घड़े आदि मिट्टी के बर्तन तैयार करता था। चमार मरे जानवरों का चमड़ा निकलता था और जूते, जीन आदि चमड़े का काम बनाता था, जुलाहा या कोरी कपड़ा बुनता था। दर्जी उसे सीता था और आवश्यकता पड़ने पर रंगरेज उसे रंग देता था। सुनार जेवर बनाता था और तेली तेल पेरता था। कहीं कहीं पर ये तथा इसी तरह के दूसरे काम हजारों घराने मिल-जुल कर करते थे जिससे फालतू माल दूसरे देशों को भी पहुंचता था। पर जब से पश्चिमी योरप में बड़े-बड़े कारखाने खुल गये। उनकी सरकारों ने अपने अपने कारखानों को मदद दी, जहाजों और रेलों ने सस्ते किराये पर वह माल हिन्दुस्तान के बाजारों में भरना शुरू कर दिया, तब से यहां के कारीगरी की दशा बड़ी शोचनीय हो गई। स्वाधीनता के आने से इसमें अब कुछ सुधार हुआ है।

बड़े-बड़े शहरों में चतुर कारीगर लोग राजा-महाराजा और धनी लोगों के लिये बढ़िया कारीगरी का काम तैयार करते थे। पत्थर का तराशना, लकड़ी का खरादना, हाथी दांत की पच्ची कारी करना, रेशमी कपड़ों पर सोने, चांदी के तारों से बेल-बूटा बनाना और सूती कपड़ों पर चिकन का काम करना बहुत प्रचलित था। पर पुराने राज्यों के नष्ट होने और लोगों में निर्धनता बढ़ने से भोग-विलास का सामान तैयार करने वाले कारीगर एकदम बेकार हो गये। दिल्ली, आगरे,

बनारस, मथुरा, ग्वालियर, जयपुर, ढाका, अमृतसर, मुरशिदाबाद

४२—कुम्हार की कारीगरी

और श्रीनगर आदि शहरों में अब भी पुरानी कारीगरी के कुछ काम

होते हैं बड़े पैमाने पर सामान तैयार करने वाले कारखाने हिन्दुस्तान भर में १६ हजार से कुछ ही अधिक है। वे सब अभी हाल में खोले

४४—दक्षिण भारत के बढ़ई अपने सीधे-साधे औजारों से बढ़िया कारीगरी की चीजें तैयार करते हैं।

गये हैं। इन सब कारखानों में लगभग ३० लाख मनुष्य लगे हुये है। इन कारखानो में निम्न प्रधान है।

जूट

बंगाल में जूट का घरेलू धन्धा बहुत पुराना है। पर १८८५ ई० में श्री रामपुर के पास रिशरा में पहला मिल खुली। इस काम में बहुत ही अधिक लाभ हुआ। आजकल ३४ लाख एकड़ जमीन जूट उगाने के काम आती है। प्रति एकड़ में औसत से पन्द्रह-बीस मन पाट (जूट, पैदा होता है। जिससे किसान को लगभग २००) मिलते

हैं। ब्रह्मपुत्र का पानी बहुत साफ है। इसलिये इधर के जिलों का जूट सर्वोत्तम होता है। गंगा के प्रदेश में पानी मटीला होने से जूट का रंग कुछ पीला होता है और कम चमकीला होता है। पुर्णिया जिले का बिहारी जूट गंदले पानी में धुलने के कारण बहुत ही घाटिया होता है। हाथ या दबाने वाली मशीनों से दबाकर जूट के रेशे के गट्ठे बांध लिये जाते हैं और हावड़ा को भेज दिये जाते हैं।

अधिक लाभ होने के कारण कलकत्ते से १५ मील उत्तर बंसबरिया नगर से लेकर कलकत्ते से ५ मील दक्षिण शामगंज तक हुगली के किनारे किनारे जूट के ८० बड़े बड़े कारखाने हैं। इन कारखानों में कई लाख मजदूर का काम करते हैं। प्रतिदिन ५ हजार टन पक्का माल (बुना हुआ टाट) तैयार होता है।

इस देश में कारखानों का अड्डा होने के कई कारण हैं :—

समीपवर्ती प्रदेश में कच्चा माल बहुत होता है जो जल और स्थल मार्गों से यहाँ सुगमता से आता है।

(२) गंगा के अपार जल से कारखाने के काम में सहायता मिलती है।

(३) कोयले की खानें पास हैं। विदेश से मशीनें भी आसानी से आ जाती है।

(४) उत्तरी भारत, उड़ीसा और मध्यप्रदेश से लगातार मजदूर मिलते रहते हैं।

इन कारखानों में प्रतिवर्ष ५० करोड रुपये का माल तैयार होता है। पहले जूट के प्राय: सब कारखाने विदेशियों के हाथ में थे, इसलिये लाभ का अधिकतर भाग देश के बाहर चला जाता था।

सूती कपड़ा

सूती कपड़ा बनने का काम आजकल भी देश के बहुत से भागों में होता है। हाथ के करघे से बहुत मोटा खद्दर या गाढ़ा बुना

जाता है। अथवा बहुत बारीक कपड़ा तयार किया जाता है हाथ का बुना हुआ मोटा कपड़ा मिल के कपड़े से अधिक दिन चलता है। इसलिये लोग हाथ के बुने हुये कपड़े को पसन्द करते हैं। असहयोग आन्दोलन के समय से दूसरे पढ़े लिखे देश भक्त हिन्दुस्तानी खद्दर पहनने लगे हैं। इससे गरीब जुलाहों की दशा कुछ हद तक सुधर गई है। ढाका, बनारस, बुढ़ानपुर और राजमहेन्द्री में हाथ से बढ़िया कपड़ा बुना जाता है। कानपुर, बम्बई, अहमदाबाद, शोलापुर, बेलगांव, हुगली, बड़ौदा, इन्दौर, उज्जैन, नागपुर, जबलपुर, मद्रास, बङ्गलौर और हैदराबाद में बड़े-बड़े पुतलीघर घर हैं। इन पुतलीघरों में लगभग ४ लाख मजदूर काम करते हैं। ये सब शहर कपास पैदा करने वाले प्रदेश के पास हैं। नारायणगंज और श्रीरामपुर (कलकत्ते के पास) ऐसे स्थान हैं। जो रुई के प्रदेश से दूर हैं। पर उनमें रुई मगाने की सुविधा है। बम्बई और अहमदाबाद में अनुकूल जलवायु और उपज की सुविधा होने से सारे हिन्दुस्तान के आधे से अधिक कारखाने हैं। प्रायः सभी कारबार की पूंजी और प्रबन्ध हिन्दुस्तानियों के हाथ में है।

रेशम

रेशम बुनने का काम कुछ अधिक धनी लोगों के हाथ में है। ये लोग सगठित भी हैं। गुजरात, आसाम, मैसूर, पंजाब और काश्मीर में रेशम बुनने के प्रधान केन्द्र हैं। हिन्दुस्तान की अपेक्षा ब्रह्मा में अधिक रेशम पहना जाता है। बनारस आदि कई शहरों में रेशम पर सोने-चांदी का काम होता है। मुर्शिदाबाद आदि कुछ शहरों में सूती कपड़ों पर रेशम की कढ़ाई होती है। आजकल नकली विलायती रेशम के आने से देशी कारखानों को बड़ा धक्का पहुँच रहा है। फिर भी अहमदाबाद, बेलगांव, शोलापुर, पूना, धारवार, नासिक. सूरत, काठियावाड़, माडले, प्रोम, अमरावती, चांदा, होशङ्गाबाद, रायपुर, गुजरानवाला, झेलम, जालन्धर, लुधियाना, मुल्तान, पेशावर

रावलपिंडी, बनारस, शाहजहांपुर, बंगलोर, वारङ्गल, औरंगाबाद, श्रीनगर, जम्मू बांकुड़ा, बर्दवान, हुगली, जलपाईगुड़ी, माल्दा मुर्शि
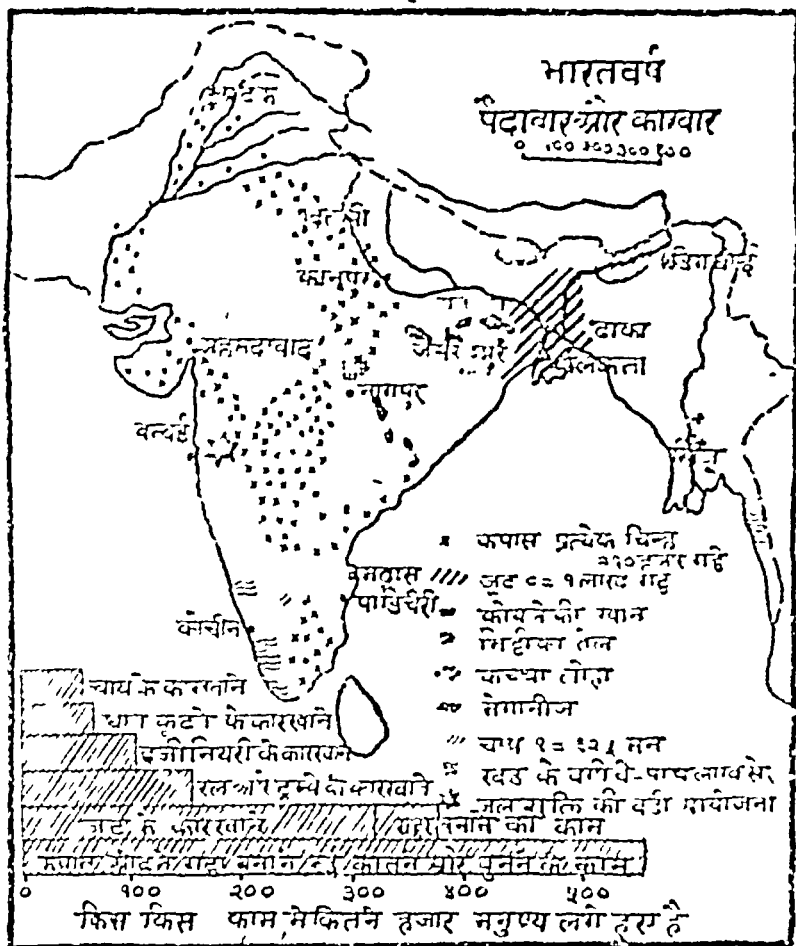
४५—पैदावार और कारबार

दाबाद, राजशाही, अनन्तपुर, बिलारी, कोयम्बटूर, मदुरा, तंजौर

त्रिचनापली, भागलपुर, गया और सम्मलपुर में रेशम के कारखाने चल रहे हैं।

ऊन

ऊनी कपड़ा बहुत थोड़े स्थानों में बुना जाता है। अच्छी ऊन केवल उत्तरी हिन्दुस्तान में और विशेष कर हिमालय के प्रदेश में मिलती है। अधिक गरम भागों में भेड़ के बाल मोटे हो जाते हैं। इसलिये सबसे अच्छे ऊनी शाल-दुशाले श्रीनगर (काश्मीर) अमृतसर लाहौर और मुल्तान आदि शहरों में तयार किये जाते है। मोटे देशी कम्बल गड़रिये लोग बहुत स्थानों में बुन लेते हैं। ऊनी कपड़े बुनने की बड़ी-बड़ी मीलें कानपुर और धारीवाल (अमृतसर के पास) में
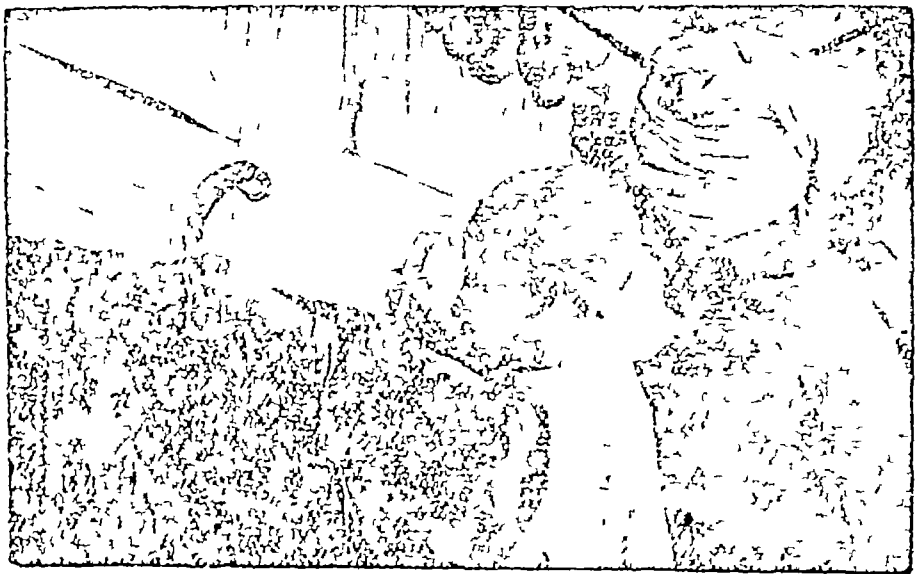
४६—काश्मीरी जुलाहे

हैं। अन्य मिलें लाहौर, अमृतसर, बम्बई, बङ्गलौर और कन्नानोर (मद्रास) में हैं। धारीवाल और कानपुर में ऊन कांगड़ा, कमायूं नैपाल और पूर्वी पञ्जाब की ऊन आसानी से आ जाती है। बम्बई के कारखानों में खानदेश और दक्खिन की ऊन आती है। बङ्गलौर के मिल

के लिये मैसूर राज्य की ऊन काफी होती है। इनमें लगभग ७००० मनुष्य काम करते हैं।

मिट्टी के बरतन

मिट्टी के बरतन प्रायः सब कहीं बनाये जाते हैं, पर अच्छे चिकने और चमकीले बर्तन, चुनार, खुरजा, पेशावर और मुल्तान आदि शहरों में बनते हैं। ग्वालियर, दिल्ली, जबलपुर और कलकत्ते में यह काम बड़े पैमाने पर होता है। इन सब जगहों में कच्चा माल (चिकनी मिट्टी) पड़ोस में ही मिलता है।

धातु का काम

कुम्हार की तरह लुहार भी बहुत से स्थानों में लोहे का काम करता है। बड़े-बड़े शहरों में ताले और ट्रंक बनाये जाते हैं। बराकर (बंगाल) में बड़े पैमाने पर लोहा गलाने का काम होता है। लोहे और फौलाद का सबसे बड़ा कारखाना टाटा आयरन एण्ड स्टील वर्क्स) उड़ीसा और मध्यप्रदेश की सीमा पर जमशेदपुर में होता है। यह नगर कलकत्ते से १५१ मील पश्चिम की ओर ऐसे स्थान पर बसा है जहां कोयला (झरिया से) लोहा, चूना, और मैंगनीज पास ही मिलता है। अच्छे पानी के लिये स्वर्ण रेखा नदी बिल्कुल पास है। मध्यप्रान्त और उड़ीसा से मजदूर बहुत मिल जाते हैं। यही कारण है कि जहां पहले एक छोटा स गाँव था वहां अब ताता महाशय का फौलादी कारखाना एशिया भर में सर्व प्रथम और संसार भर में तीसरा स्थान प्राप्त कर चुका है। प्रति दिन छः लाख टन लोहा साफ होता है। और पटरी चादर आदि चार पाच लाख टन फौलाद का माल तैयार होता है। इस सामान का अधिक भाग देश में खर्च हो जाता है। शेष आधा भाग विदेशों को जाता है।

इस कम्पनी के सहारे से टीन, कनस्टर कांटेदार तार आदि सामान बनाने के लिये जमशेदपुर में दूसरी कम्पनियों स्थापित हो

गई हैं। आसनसोल और कुलटी में लोहे के दो कारखाने और हैं। छोटे-छोटे कारखाने बम्बई, बड़ौदा, हावड़ा, दिल्ली टीटागढ़ आदि कई स्थानों में हैं।

पश्चिमी मैसूर में शिमोगा का कारखाना विशेष प्रसिद्ध है। कोयला न मिलने के कारण यहां का लोहा लकड़ी से साफ किया जाता है। इससे बहुत अच्छा लोहा निकल जाता है। लोहे के कारखानों में हिन्दुस्तान भर में प्राय: ३०००० मनुष्य लगे हुये हैं।

तावे और पीतल के बरतन ठठेरे लोग बहुत से स्थानों पर बनाते हैं। बनारस दिल्ली, पूना और जैपुर में बरतनों पर बढ़िया चित्रकारी की जाती है। मुरादाबाद में बरतनों पर कलई की जाती है। ब्रह्मा में कांसे की बड़ी बड़ी मूर्तियां और घन्टे ढाले जाते हैं। मांडले के पास मिंगन का विशाल घन्टा जगतप्रसिद्ध है।

लकड़ी पर सुन्दर चित्रकारी का काम अधिकतर काश्मीर, नैपाल, ब्रह्मा, पञ्जाब, गुजरात और मैसूर में होता है।

कागज़ का काम

मोटा कागज पुराने समय में भी कुछ स्थानों में बनता था। नये ढङ्ग से कागज बनाने की बड़ी-बड़ी ६ मिलें लखनऊ, जगाधारी, बम्बई, सतरा, चिटगांव, टीटागढ़, पूना राजमहेन्द्री आदि शहरों में स्थापित है। कागज की लुन्दी वैब, सवाई घास, और बांस से बनाई जाती है। सबाई घास साल भर मिलती है और छोटा नागपुर से लेकर हिमालय के तराई प्रदेश तक उगती है। साहबगंज और बेतिया घास के मुख्य केन्द्र हैं। घास के अतिरिक्त पानी और कोयला भी अत्यन्त आवश्यक है। अभी समूचे देश की मांग के लिये काफी कागज नहीं बनता है और बहुत सा (१ लाख टन कागज कनाडा, ग्रेटब्रिटेन आदि से आता है।

मोटर

मोटर का काम दिनों दिन बढ़ रहा है। इसकी मरम्मत के कारखाने प्रायः सभी बड़े शहरों में हैं। कलकत्ता, बम्बई और मद्रास में प्रतिवर्ष प्रायः ३० हजार मोटर तैयार किये जाते हैं। मैसूर में हवाई जहाज तयार करने का काम होता है।

शीशे के कारखाने

शीशे के लिये बालू, सोडा, नमक, सिक्का आदि पदार्थों की आवश्यकता पड़ती है। ये चीजें हिन्दुस्तान के कई भागों में मिलती हैं। आजकल शीशे के बड़े-बड़े कारखाने नैनी (इलाहाबाद) बहजोई (मुरादाबाद) लाहौर, अमृतसर, अम्बाला, बम्बई, बेलगाव, सतारा, हैदराबाद (दक्षिण), जबलपुर और कलकत्ता में है। फिरोजाबाद में चूड़ी बनाने का काम होता है। फिर भी शीशे का बहुत सा माल चेकोस्लोवेकिया, बेलजियम, जापान और अमरीका से आता है।

मकान बनाने का काम

हिन्दुस्तान के बड़े-बड़े शहरों में अधिकतर मकान पत्थर, ईंट और लकड़ी के बने हुये हैं। हिमालय प्रदेश के मकान लकड़ी और पत्थर से बनाये जाते हैं। राजपूताना, दक्षिण पठार में भी पत्थर की अधिकता होने से पत्थर के ही मकान बनते हैं। पर गंगा और सिन्ध के मैदान में ईंट और खपरैल का प्रयोग होता है। इसी से ईंटों के भट्टे, सीमेंट, चूना और लकडी के काम से लाखों मनुष्यों को जीविका मिलती है। शहरों मे ही सोडा, सिगरेट, सिनेमा, फोटोग्राफी, आदि कई तरह का काम बढ़ रहा है।

कोयला आदि खनिज पदार्थों के खोदने में भी तीन लाख से ऊपर मनुष्य काम करते हैं।

ग्यारहवाँ अध्याय

मनुष्य

हिन्दुस्तान की जन-संख्या लगभग ३४ करोड़ है जो समस्त संसार की जन-संख्या का लगभग २० प्रतिशत है। चीन को छोड़ कर संसार के किसी एक देश की जन-संख्या से यह कई गुनी अधिक
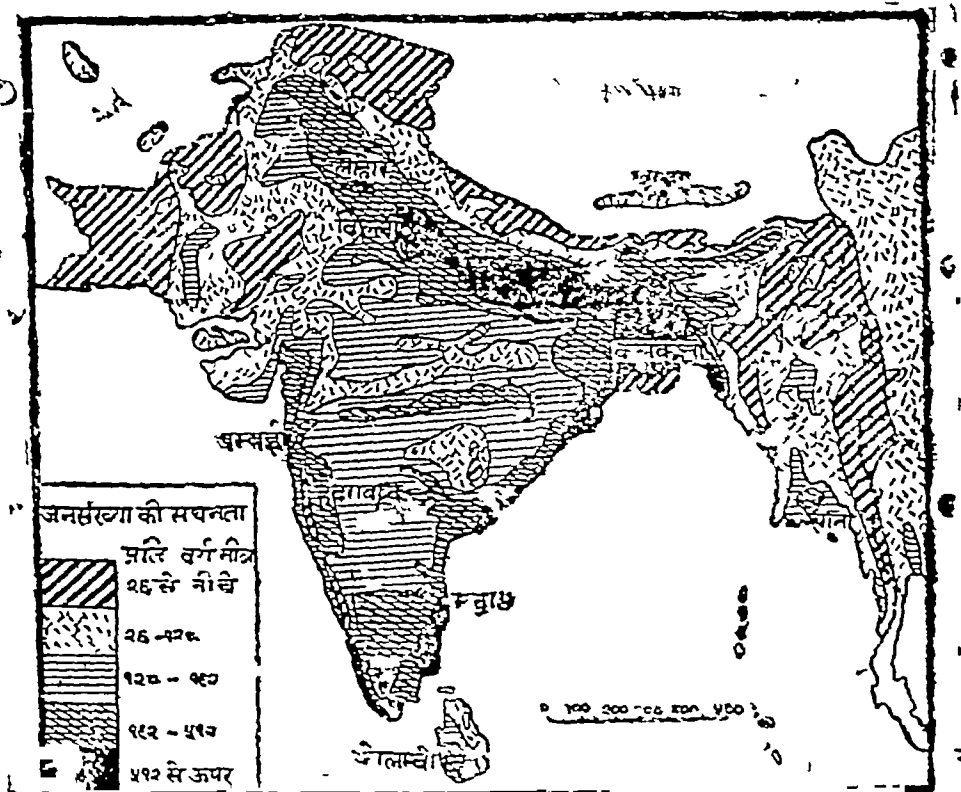
४७—जनसंख्या की सघनता

है। पर यह जन-संख्या सारे हिन्दुस्तान में समान भाग से विभक्त नहीं है। औसत से प्रति वर्गमील में १७८ मनुष्य रहते हैं। थार

रेगिस्तान के खुश्क प्रदेश में और हिमालय पर्वत के हिम-प्रदेश में कई ऐसे भाग हैं जहाँ हजारों वर्गमील में एक भी मनुष्य नहीं रहता है। इसके विपरीत गंगा के मैदान में बड़ी घनी आबादी है। ढाका जिले में औसत से प्रति वर्गमील में ११६० मनुष्य रहते हैं। कलकत्ता शहर में प्रति एकड़ में प्राय: ७० मनुष्य रहते हैं। इसलिये वहां एक वर्गमील की औसत आबादी ४३००० है। पर हिन्दुस्तान एक कृषि-प्रधान देश है। प्राय: ६० फीसदी लोग किसान हैं जो अपने खेतों के पास गावों में रहते हैं। केवल १० फी सदी लोग शहरों और कस्बों में रहते हैं। जिन कछारी मैदानों में अथवा कुछ ऊंचे भाग में जमीन उपजाऊ है और वर्षा अच्छी है अथवा सिंचाई के साधन हैं वहाँ घनी आबादी है। इसके विपरीत जहां सघन बन हैं या जहां पथरीली और रेतीली जमीन है और वर्षा की कमी है, सिंचाई के भी साधन नहीं हैं वहाँ की आबादी बहुत कम है।

उत्तरी हिन्दुस्तान के लोग आर्य हैं। उनका कद लम्बा रंग गोरा और शरीर मजबूत होता है। दक्षिणी हिन्दुस्तान में प्राय: द्राविड़ लोग रहते हैं। इनका कद कुछ छोटा और रंग काला होता है। बरमा आदि पूर्वी भागों के रहने वालों में मंगोल रुधिर की अधिकता है।

धर्म

भारतवर्ष के अधिकांश निवासी (प्राय: ३० करोड़) हिन्दू या आर्य हैं जो वैदिक धर्म के मानने वाले हैं। यह धर्म सबसे अधिक पुराना है। आरम्भ से गुण और कर्म के अनुसार वैदिक धर्मानुयायियों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शूद्र केवल चार वर्ण और ब्रह्मचर्य ग्रहस्थ, वाणप्रस्थ और सन्यास चार आश्रम माने जाते थे। ज्ञान, कर्म और भक्ति द्वारा ईश्वर की उपासना करना प्रत्येक हिन्दू का कर्त्तव्य है हिन्दू धर्म आत्मा को अमर मानता है। जिस तरह मनुष्य पुराने कपड़े को उतार कर नया कपड़ा पहन लेता है, उसी तरह हिन्दू-धर्मानुसार एक शरीर के नष्ट होने पर आत्मा दूसरा शरीर धारण कर लेता

है। जब हिन्दू धर्म जटिल होने लगा, तब अब से ४५०० वर्ष पूर्व महात्मा गौतम बुद्ध ने हिन्दू धर्म से सीधे सादे मूलतत्वों को लेकर उस समय की लोक भाषा पाली या प्राकृत में एक नवीन धर्म का
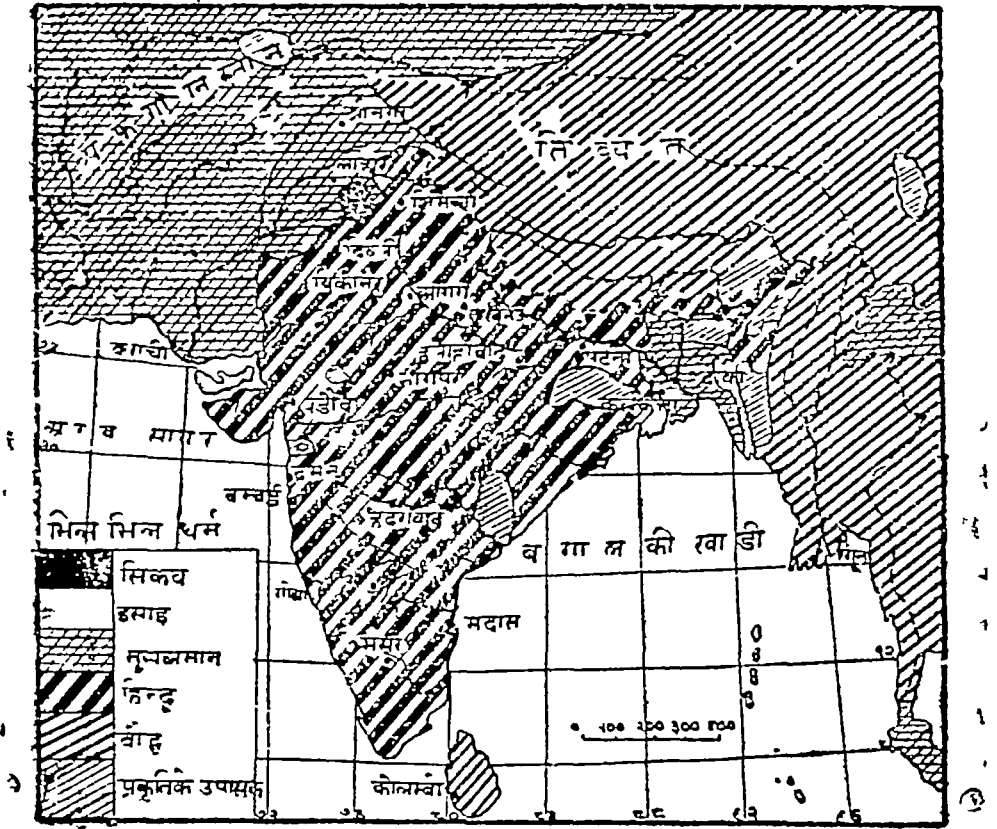
४८—भारतवर्ष के धर्म

प्रचार किया। बौद्ध धर्म में वर्णव्यवस्था नहीं मानी जाती है और अहिंसा पर अधिक जोर दिया जाता है। इस लोकप्रिय धर्म का शीघ्रता से प्रचार हुआ। चीन, जापान आदि देशों में इस समय भी बौद्ध धर्म के मानने वाले और किसी धर्म के मानने वालों से संख्या में बढ़े हुये हैं। पर जिस भारतवर्ष में महात्मा बुद्ध का जन्म दिया वहां बौद्ध धर्म प्रायः लुप्त हो गया। भारतवर्ष में केवल ५ करोड़ १५ लाख बौद्ध हैं जो अधिकतर ब्रह्मा और लंका में बसे हुये हैं। जैन

धर्म प्रायः हिन्दू और बौद्ध धर्म का मिश्रण है। इसके मानने वाले ५० लाख हैं जो अधिकतर पश्चिमी भारत मे फैले हुये हैं।

भारतवर्ष का दूसरा बड़ा धर्म इस्लाम है। इस धर्म पर चलने वाले मुसलमान लोग केवल एक ईश्वर को मानते हैं और मुहम्मद साहब को ईश्वर का रसूल (दूत) समझते हैं। सुन्नी लोग हजरत अबूबकर, उमर और उस्मान के खलीफा या मुहम्मद साहब को वली मानते हैं। पर शिया लोग इस बात से इनकार करते है। शिया लोग चौथे खलीफा अली का बड़ा मान करते हैं और कभी-कभी तो उन्हें ईश्वर तुल्य समझते हैं। हिन्दुस्तानी मुसलमानों में सुन्नी लोगों की प्रधानता है। शिया लोग बहुत ही कम हैं और अधिकतर अवध (लखनऊ) में बसे हुये हैं। सारे हिन्दुस्तान में प्रायः ८ करोड़ मुसलमान हैं। जो अधिकतर उत्तरी-पश्चिमी हिन्दुस्तान पूर्वी और बङ्गालमें बसे हुए हैं। इन्हीं भागों के मुसलमानों ने भारतवर्ष से अलग होकर अपना पाकिस्तानी राज्य बनाया है।

समय के अनुसार हिन्दू धर्म में सुधार करने के लिये गुरु नानक ने सिक्ख धर्म की उत्पत्ति की। दसवें गुरु गोबिन्द सिंह ने सिक्खों को सिंह बना दिया। गुरु गोविन्द सिंह के मत को मानने वाले तम्बाकू नहीं पीते हैं। वे केश कच्छ, कड़ा, कंघा और कृपाण रखते हैं। उनके धर्म ग्रन्थ-साहब में केवल एक ईश्वर का आदेश है। सिक्ख लोग अधिकतर पंजाब में हैं, उनकी संख्या लगभग ४० लाख है।

पारसी—जब फारस पर मुसलमानी हमला हुआ तब बहुत से लोगों ने इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया। लेकिन कुछ लोगों को अपना पुराना धर्म इतना प्रिय था कि उन्होंने अपना घर छोड़ना पसन्द किया पर धर्म छोड़ना स्वीकार न किया। इसलिये ये लोग हिन्दुस्तान में बम्बई के पास आकर बस गये। इनकी संख्या प्रायः १ लाख है।

ईसाई—ये अधिकतर मद्रास प्रान्त में रहते हैं। मलाबार तट पर पुर्तगालियों के अत्याचार से अधिकतर लोग ईसाई हो गये थे। दक्षिण

में अधिकतर रोमन कैथलिक हैं। उत्तरी हिन्दुस्तान में प्राटेस्टेंट ईसाइयों की संख्या बढ़ रही है। सारे हिन्दुस्तान में आजकल प्राय: ४० लाख ईसाई हैं।

प्रकृति के उपासक—किसी विशेष धर्म को न मानने वाले किन्तु भूत-प्रेतों में विश्वास करने वालों की संख्या ८७ लाख है। ये लोग अधिकतर छोटा नागपुर, मध्यप्रदेश, मद्रास और आसाम के पहाड़ी भागों में रहते हैं।

भाषाएँ

हिन्दुस्तान एक बड़ा देश है। बड़े देश में यदि एक भाग में दूसरे भाग को आने जाने की सुविधा न हो, लोग एक दूसरे से आकर न मिलें, उनमें अनिवार्य शिक्षा न हो, तो आरम्भ में एक भाषा होने पर भी चिरकाल में अनेक भाषाएँ हो जाती हैं। समय-समय पर भिन्न-भिन्न भाषा बोलने वाले विदेशी हमला करने वालों के आ जाने से देश की भाषाओं में और भी अधिक भेद हो जाता है। इसी से हिन्दुस्तान में कई भाषाएँ हैं। सतपुड़ा पहाड़ के उत्तर में आर्य भाषाएँ हैं। दक्षिणमें द्रविड़ भाषायें हैं। मागधी आदि प्राकृत भाषाओं से उत्पन्न हुई हैं। सिन्ध के उत्तर-पश्चिम में अरब सागर से ऊपर मकानी और बल्हो दो बलोच भाषाएं हैं। इनमें अरबी और फारसी के अपभ्रंशों की भरमार है। ये भाषायें लिपिबद्ध नहीं हैं। अरब सागर तट पास मकानी भाषा है। इसके में हलमन्द नदी से डेराइस्माइलखां तक बल्हो भाषा है। पर दोनों भाषाओं के बोलने वालों की संख्या दो लाख से कुछ कम ही है। बलोच के उत्तर में सीमा प्रान्त और स्वाधीन अफगानिस्तान की भाषा पश्तो है। पश्तो लिपिबद्ध भाषा है। इसमें कुछ साहित्य भी है। इसके बोलने वालों की संख्या प्राय: १३ लाख है। पश्तो के अधिकांश शब्द हिन्दुस्तानी हैं। इसका व्याकरण भी कुछ-कुछ हिन्दुस्तानी है। पश्तो के उत्तर में हिन्दूकुश के पहाड़ी प्रदेश में पिसाच भाषाएँ हैं जो आर्य भाषा से और भी अधिक समानता रखती हैं।

बलोच भाषा के दक्षिण-पूर्व में सिन्ध नदी की निचली घाटी में सिन्धी भाषा बोली जाती है। पहले इस भाषा की कोई लिपि न थी। गत शताब्दी के मध्य से यह भाषा फारसी लिपिमें लिखी जाने लगी। हिन्दू लोग देवनागरी लिपि का प्रयोग करने लगे हैं। सिन्धी बोलने वालों की संख्या लगभग २५ लाख है। पश्तो के दक्षिण में पश्चिमी पञ्जाबी, हिन्दको या लहंडा भाषा है। इसके बोलने वालों की संख्या भी प्रायः २४ लाख है। इनके उत्तर-पूर्व में काश्मीरी भाषा है जिसे १८ लाख से ऊपर मनुष्य बोलते हैं।

इसके आगे हिन्दी भाषा का विशाल प्रदेश है। इनके उत्तर में पहाड़ी भाषा, दक्षिण में उड़िया और मराठी, पूर्व में बङ्गाली भाषा है। राजस्थानी, पञ्जाबी और बिहारी हिन्दी, केवल बोल-चाल में ठेठ हिन्दी से कुछ भिन्न है। पढ़े लिखे लोग बोल-चाल और लिखने में सब कहीं एक सी ही हिन्दी का प्रयोग करते हैं। सब तरह की हिन्दी देवनागरी लिपि मे लिखी जाती है। अशिक्षित लोगों की बोली में शब्द और व्याकरण के कारण कोई बड़ा भेद नहीं पड़ता है। पर इनके उच्चारण में भारी अन्तर पड़ जाता है। सब प्रकार की हिन्दी बोलने वालों की संख्या प्रायः २० करोड है। हिन्दी समझने वालों की संख्या और भी अधिक है। इसी से हिन्दी को हिन्दुस्तान की राष्ट्र भाषा का स्थान मिला है। हिन्दी का प्राचीन साहित्य अधिक है। नया साहित्य भी बढ़ रहा है।

राजस्थानी के पश्चिम में गुजरात प्रान्त की भाषा गुजराती है। गुजराती भाषा सौराष्ट्री प्राकृत से बिगड़ कर बनी है। इसकी लिपि देवनागरी लिपि से बहुत कुछ मिलती जुलती है। गुजराती भाषा का नया पुराना साहित्य बहुत है। गुजरात के दक्षिण में गोआ तक पश्चिमी घाट, खानदेश और बरार की भाषा मराठी या महाराष्ट्री है। हैदराबाद राज्य के उत्तर-पश्चिम में और मध्यप्रदेश के दक्षिण में भी मराठी भाषा बोली जाती है। मराठी बोलने वालों की संख्या प्रायः

दो करोड़ हैं। इस भाषा का साहित्य बहुत ऊंचा है और देव-नागरी लिपि में लिखा हुआ है।
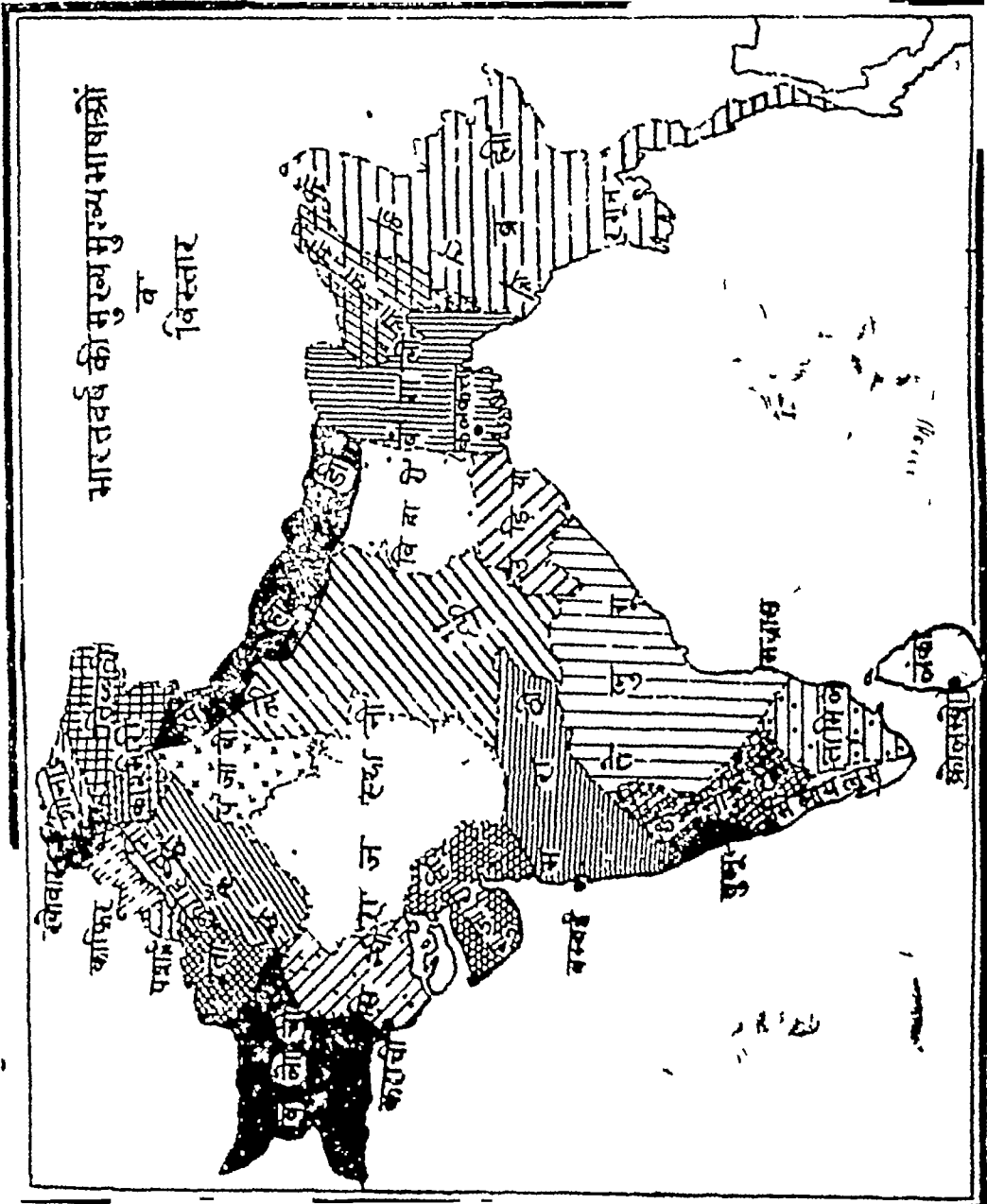
हिन्दी को छोड़ कर बङ्गाली बोलने वालों की संख्या हिन्दुस्तान भर में सबसे अधिक (लगभग साढे चार करोड़) है। इसमें से दो लाख बङ्गाली बङ्गाल प्रान्त के बाहर हिन्दुस्तान के दूसरे प्रान्त में फैले हुये हैं। बङ्ग-साहित्य नवीन होने पर भी बहुत ऊंचा है। बङ्ग लिपि में अक्षर तो देवानागरी के है पर दूसरी तरह से बोले जाते हैं। यदि मराठी की तरह बंगाली भाषा भी देवनागरी लिपि में लिखी जावे तो हिन्दी बोलने वाले भी इसे बहुत कुछ समझ सकें।

ब्रह्मपुत्र की मध्यघाटी और कुछ ऊपरी घाटी में आसामी भाषा बोली जाती है। आसामी लिपि बहुत कुछ बंगाली लिपि से मिलती है। आसामी साहित्य बहुत पुराना है। इसमें इतिहास के अच्छे ग्रन्थ हैं। भाषा बोलने वालों की संख्या लगभग चौदह लाख है।

उड़िया भाषा उड़ीसा तथा पास वाले मद्रास और मध्यप्रदेश के जिलों में बोली जाती है। इसका साहित्य काफी अच्छा है। यह भाषा पहले ताड के पत्तों पर लिखी जाती थी। ये पत्ते सीधी रेखा बनाने से फट फट जाते थे। इसलिये उड़िया लिपि में देवनागरी लिपि की तरह सीधी रेखाओं का अभाव है। इस लिपि में गोलाकार और चन्द्राकार मोड़दार रेखायें बहुत हैं। दक्षिण की जिन जिन भाषाओं के लिखने में इस पत्ती का प्रयोग हुआ है उन सभी भाषाओं की लिपि में मोड़दार रेखाओं की अधिकता है।

द्रविड़ भाषायें

उड़िया भाषा के दक्षिण में मद्रास शहर तक तेलगू भाषा का प्रदेश है। मध्यप्रदेश के दक्षिण सिरे पर और हैदराबाद राज्य के पूर्व में भी तेलगू भाषा बोली जाती है। इस भाषा में विस्तृत साहित्य है। इस भाषा के बोलने वालों की संख्या दो करोड़ से ऊपर है। तेलगू भाषा के दक्षिण में न केवल कुमारी अन्तरीप तक वरन् लंका के उत्तरी भाग (जाफना प्रान्त) में भी तामिल भाषा बोली जाती है। तामिल भाषा बड़ी पुरानी है। इसका साहित्य भी महान् है। इसकी

लिपि तेलगू लिपि की तरह देवनागरी लिपि से भिन्न है। तामिल भाषा-भाषियों की संख्या डेढ़ करोड़ से कुछ ऊपर है। तामिल के पश्चिम में मालाबार तट पर मलयालम भाषा बोली जाती है यह भाषा वास्तव में तामिल की ही नवीन उपशाखा है। इसका साहित्य काफी बढ़ गया है। यह भाषा गन्टा लिपि में लिखी जाती है जिसमें संस्कृत का सभी साहित्य दक्षिण भारत में लिखा गया है। मलयालम-भाषियों की संख्या प्रायः ६० लाख है। कनारी (कन्नड़) भाषा मैसूर राज्य और पास वाले पश्चिमी तटीय बम्बई प्रान्त के दक्षिणी सिरे के प्रदेश में बोली जाती है। कनारी साहित्य बहुत पुराना है। इसके बोलने वालों की संख्या एक करोड़ से कुछ ही ऊपर है।

कनारी और मलयालम भाषाओं के बीच में पश्चिमी तट के कनारी जिले में टूलू भाषा बोली जाती है।

मध्यभारत के पहाड़ी जिलों में गोंड आदि कई तरह की भाषाएँ हैं। पर वे लिपिबद्ध नहीं हैं न उनमें साहित्य ही है।

दक्षिणी-पूर्वी हिमालय तथा ब्रह्मा की भाषाओं पर तिब्बत-चीनी भाषा का गहरा प्रभाव पड़ा है। ब्रह्मी भाषा में इतिहास और नाटक सम्बन्धी साहित्य बहुत है। यहां का धर्म-साहित्य बौद्ध साहित्य पाली भाषा में है। पहाड़ी भाषा लिपिबद्ध नहीं है उसमें किसी तरह का साहित्य नहीं है।

बारहवाँ अध्याय

भारतवर्ष के प्राकृतिक प्रदेश

किसी देश के राजनैतिक विभाग अक्सर बदलते रहते हैं। पर उसके प्राकृतिक प्रदेशों में परिवर्तन नहीं होता है। जिन भागों की ऊँचाइ, भूरचना, जमीन और जलवायु एक सी होती है वे सब एक ही प्राकृतिक प्रदेश में शामिल किये जाते हैं। इस समानता के कारण इनकी वनस्पति, उपज और भाषा भी एक सी होती है। भारतवर्ष में निम्नलिखित प्राकृतिक प्रदेश हैं :—

१—पश्चिमी तट

पश्चिमी घाट का सपाट ढाल पश्चिम की ओर है। इसके नीचे टूटा-फूटा निचला तटीय मैदान है। दक्षिणी-पश्चिमी मानसून के दिनों में इस ओर प्रबल वर्षा होती है। ढालों पर सागौन के वन हैं। मैदान में धान की खेती होती है। गोआ के दक्षिण में वर्षा कुछ अधिक होती है। धान के अतिरिक्त मसाले भी उगाये जाते हैं। औसत आबादी प्रति वर्गमील में ३०० है यहां के लोग अधिकतर मलयालम भाषा बोलते हैं। गोआ के ऊपर उत्तरी भाग की भाषा मराठी है।

२—पूर्वी तट

यह तट अधिक खुश्क है। पूर्वी घाट की टूटी-फूटी और नीची पहाड़ियों पर सघन वन कम हैं। तटीय मैदान अधिक चौड़ा है। चावल ही यहां की प्रधान फसल है। कृष्णा नदी से बङ्गाल तक उत्तरी सरकार में तटीय मैदान कुछ तङ्ग है। अधिकांश वर्षा जून से अक्तूबर तक होती है। इसके उत्तरी भाग में उड़िया और दक्षिणी भाग में तेलगू बोली जाती है। औसत से प्रति वर्गमील में पांच छः सौ मनुष्य रहते हैं। कृष्णा नदी के दक्षिण में (कर्नाटक में) लौटती हुई उत्तरी-

पूर्वी मानसून से नवम्बर और दिसम्बर के महीनों में थोड़ी सी वर्षा हो जाती है। इसलिये धान के खेतों के लिये सिंचाई की जरूरत पड़ती है। इस भाग की भाषा तामिल है।

दक्खिन-प्रदेश--इस प्रदेश में बम्बई और मद्रास प्रान्तों के पठार तथा मैसूर और हैदराबाद के राज्य शामिल हैं। इस प्रदेश में
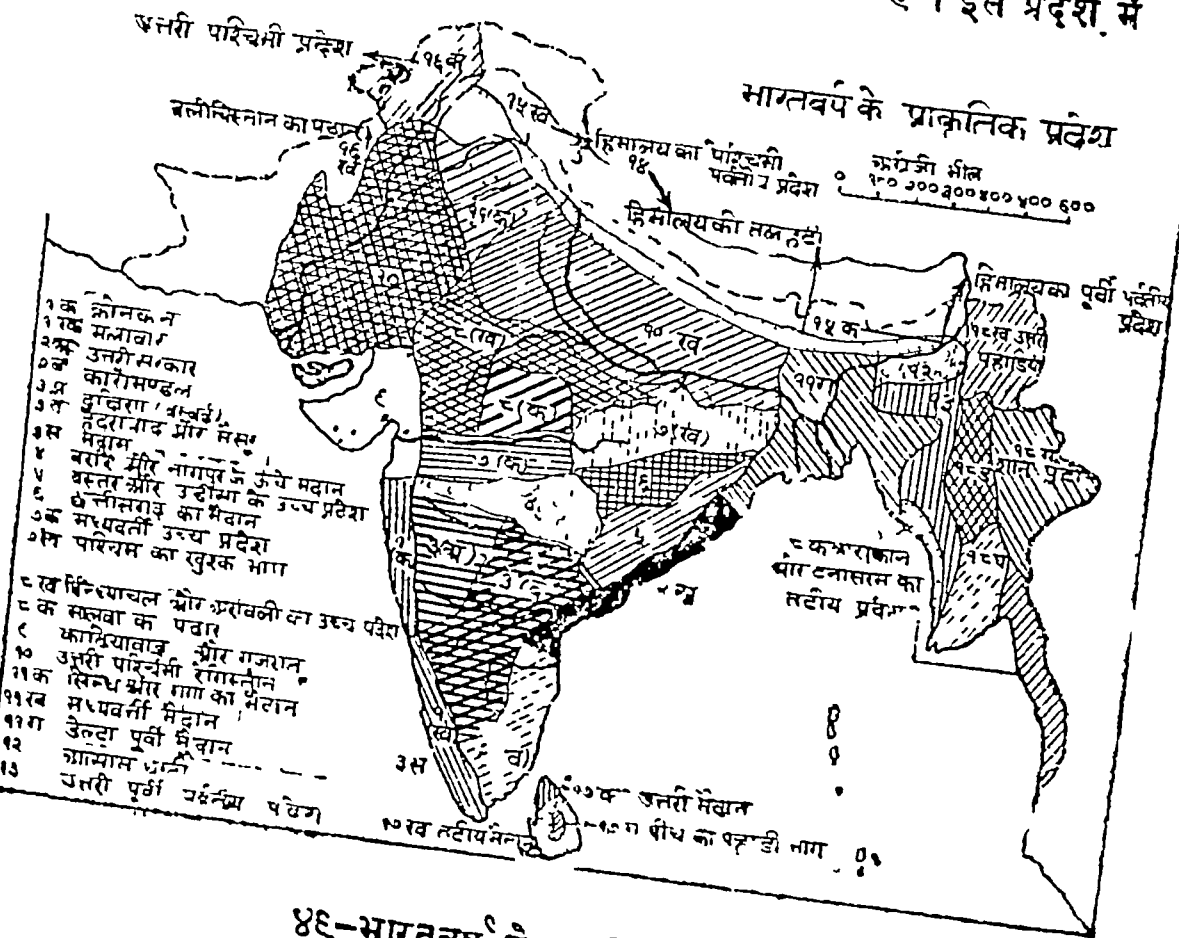
४९--भारतवर्ष के प्राकृतिक प्रदेश

प्रतिवर्ष ४० इंच से कम ही वर्षा होती है। यहां की आबादी हिन्दुस्तान की औसत आबादी १७० से भी कम है। दक्खिन का दक्षिणी भाग अधिक ऊंचा और कम आबाद है। यहां अधिकतर घास के

खुले हुये मैदान हैं। मैसूर के दक्षिण में नीलगिरी की उच्च पहाड़ियां हैं मैसूर का जमीन दानदार चट्टानों के घिसने से बनी है। यहां तालाबों से सिचाई होती है और धान उगाया जाता है। अधिक उत्तर-पश्चिम में लावा का ऊंचा उपजाऊ और खुश्क प्रदेश है। यहाँ की काली मिट्टी कपास और ज्वार बाजरा के लिये बड़ी अच्छी है। इस महाराष्ट्र प्रदेश की आबादी काफी घनी है।

४-बरार और नागपुर के ऊंचे मैदान—ये मैदान पूर्ण, वर्धा बैनगंगा की चौडी घाटियों से बने हैं। ये मैदान सतपुरा तथा महादेव पवत और दक्खिन के पठार के बीच मे स्थित हैं। इनका पश्चिमी भाग खुश्क है। पर पूर्वी भाग में ४० इंच से अधिक वर्षा होती है। यहीं बन भी है। इसके पश्चिमी भाग में कपास और पूर्वी भाग में चावल की फसल होता है। पश्चिमी भाग में मराठी और पूर्वी भाग में तेलगू भाषा बोली जाती है। पूर्वी खानदेश और नगपुर को छोड़ कर आबादी कहीं भी घनी नहीं है।

५-बस्तर और उड़ीसा के उच्च प्रदेश—यह प्रदेश पुरानी चट्टानों के बने हैं। अधिकतर जमीन समुद्रतल से डेढ़ हजार फुट ऊंची है। कहीं-कहीं ३,००० फुट से भी अधिक ऊंची है। महानदी ने इस प्रदेश को दो भागों में बांट दिया है। साल भर में औसत वर्षा लगभग ५० इंच होती है। अधिकतर प्रदेश बनों से ढका है। इधर होकर कोई रेल नहीं निकलती है। अच्छी सड़कों का भी प्रायः अभाव है। इस प्रदेश की औसत आबादी कहीं-कहीं प्रति मील में १६ से भी कम है। यहा अधिकतर मूल निवासी रहते हैं जो पुराने ढङ्ग से खेती करते हैं।

६-छत्तीस गढ का मैदान—यह प्रदेश अधिकतर महानदी की ऊपरी घाटी से बना है। इसमें महानदी की मध्य घाटी या सम्भल पुर का मैदान भी शामिल है। बङ्गाल नागपुर रेलवे यहीं से होकर हावडा को गई है। यहा प्रायः ५० इंच वार्षिक वर्षा होती है। जिन

भागों में साल आदि का बन साफ़ कर लिया गया है वहाँ चावल उगाया जाता है।

७—**मध्यवर्ती उच्च प्रदेश**—यह प्रदेश सतपुरा की प्रधान श्रेणी से आरम्भ होकर छोटा नागपुर के पठार तक चला गया है और समुद्र-तल से प्राय: दो तीन हज़ार फुट ऊँचा है इसके पश्चिमी खुश्क भाग में लावा की धरती है और पूर्वी भाग की जमीन पुरानी चट्टानों के घिसने से बनी है जहाँ साल में ४० इञ्च से अधिक वर्षा होती है। इस प्रदेश में आबादी प्राय: १०० मनुष्य प्रति वर्ग मील है।

८—**विन्ध्य और अरावली का उच्च प्रदेश**—नर्मदा और सोन नदियों के उत्तर में मध्य भारत का पठार है। विन्ध्याचल इस प्रदेश की प्रधान पर्वतश्रेणी है। सोन नदी के उत्तर में कैमूर श्रेणी है। अरावली पर्वत इसकी उत्तरी-पश्चिमी सीमा बनाता है। उत्तर-पूर्व की ओर क्रमशः नीचा होता-होता यह पठार गंगा के मैदान में मिल गया है। यह प्रदेश अधिकतर खुश्क और उजाड़ है। पर मालवा पठार अधिक ऊँचा और उपजाऊ है। वहाँ की जलवायु भी अच्छी है। गेहूँ अफीम और कपास की खेती बहुत होती है। वर्षा २० और ४० इञ्च के बीच में होती है। औसत आबादी प्रति वर्गमील में प्राय: १२० से कम है।

९—काठियावाड़ और गुजरात

यह कछारी मैदान ताप्ती नदी के किनारे से लेकर थार रेगिस्तान तक चला गया है। इस मैदान के समुद्री तट पर नमकीन दलदल है। काठियावाड़ अधिक खुश्क और उजाड़ है। इस प्रदेश के केवल दक्षिणी भाग में हर साल ४० इञ्च से अधिक वर्षा होता है। दूसरे भागों में ४० और २० इञ्च के बीच में वर्षा होती है। बड़े पेड़ों का अभाव* है। और जंगलों में प्राय: खुश्क और कांटेदार झाड़ियां तथा बबूल होते हैं। कपास और ज्वार-बाजरा यहां की प्रधान फसलें हैं।

---

*जब द्वारका के लिये रेल नहीं बनी थी तब लेखक ने इस प्रदेश में पैदल

१०—उत्तरी-पश्चिमी रेगिस्तान

गुजरात और अरावली के उत्तर में पश्चिमी राजस्थान, सिन्ध और दक्षिणी-पश्चिमी पञ्जाब का अत्यन्त खुश्क प्रदेश है। यहीं प्रधान पाकिस्तान है। इस प्रदेश में वर्षा बहुत ही कम और अनिश्चित है। पर जमीन प्रायः समतल और उपजाऊ है। जहां कहीं सिंचाई के साधन हैं वहा फसलें उगती हैं। यहाँ प्राकृतिक वनस्पति बबूल, रामबांस और दूसरी छोटी-छोटी खुश्क और कांटेदार झाड़ियां हैं। कहीं कहीं ऊँट, बकरी और भेड़ों के झुण्ड मिलते हैं। इस प्रदेश की जन-संख्या प्रति वर्गमील में सब कहीं १०० से कम है। जैसलमेर में प्रति वर्गमील में केवल ४ मनुष्य रहते हैं।

११—सिन्ध और गङ्गा का मैदान

यह मैदान जलवायु के अनुसार तीन भागों बँटा हुआ है :—

(क) **पश्चिमी मैदान**—यह झेलम नदी के पश्चिमी किनारे वाले पहाडी प्रदेश से लेकर यमुना नदी के किनारे तक फैला हुआ है। इस प्रदेश के अर्द्ध रेगिस्तानी चपटे मैदान में सरदी के दिनों में कड़ी ठड पड़ती है। रात को पाला गिरता है। इसी ठड को ऋतु में थोड़ा पानी बरसता है। पर यह पानी गेहूँ, चना, तिलहन और बाजरा

यात्रा की थी। एक गांव से कुछ दूर चलने पर पानी बरसने लगा। दूसरा गांव ७ मील की दूरी पर था। कटीले रामबांस को छोड़ कर इस मार्ग में कोई ऐसा पेड़ न था जहा वर्षा से बचाव होता। पानी पड़ने से जमीन बहुत ही अधिक फिसलनी हो गई थी। फिसलने से बचने के लिये पैर जोर से जमाना पड़ता था। पर जोर से पैर रखते ही कोई न कोई मजबूत कांटा चुभ जाता था। जामनगर पहुँचते पहुंचते एक-एक पैर में सत्रह-सत्रह कांटे चुभ कर टूट गये थे।

की भी फ़सलों के लिये काफी नहीं होता है। इसलिये खेती की ३ करोड़ एकड़ ज़मीन में से प्राय: डेढ़ करोड़ जमीन सींची जाती है। सिंचाई की सुविधा होने से ही इस प्रदेश की आबादी (प्रति वर्गमील में ३०० बढ़ गई है। इसका अधिकांश भाग पाकिस्तान में स्थित है।

(ख) मध्यवर्ती मैदान—यह पञ्जाब और बङ्गाल के बीच में स्थित है। इस समतल मैदान का पश्चिमी भाग पञ्जाब से और पूर्वी भाग बङ्गाल से मिलता जुलता है। यहां गंगा और यमुना की नहरों से सिंचाई होती है। बिहार में ४० इंच से ऊपर वर्षा होती है और हवा इतनी नमी रखती है कि गेहूँ के स्थान पर धान की फ़सल होती है। पूर्व की ओर जन-संख्या बढ़ती जाती है। पश्चिमी भाग की औसत आबादी प्रति वर्गमील में ५०० है, पूर्वी भाग में ७०० है।

(ग) डेल्टा या पूर्वी मैदान—इस प्रदेश में अधिकतर बङ्गाल और आसाम की घाटी शामिल है। आर्द्र (गीले) और निचले प्रदेश के धरातल को नदियां प्राय: सदा बनाती और बिगाड़ती रहती हैं। इस प्रदेश का तापक्रम (हवा का) बहुत ऊँचा है। यहां पाला कभी नहीं पड़ता है। सुन्दर बन को छोड़कर और सब भाग धान की खेती के लिए साफ कर लिये गये हैं। सारे हिन्दुस्तान का आधा चावल यहां होता है। ब्रह्मपुत्र के पूर्व में जूट अधिक होता है। प्रति वर्गमील में औसत आबादी ६४० है, किसी जिले में एक हजार से भी अधिक है।

१२—आसाम की घाटी

आसाम की पहाड़ियों और हिमालय के बीच में ब्रह्मपुत्र की घाटी का देश गंगा के डेल्टा से ही मिलता जुलता है। यह प्रदेश डेल्टा से कुछ कम गरम है, पर गीला (आर्द्र) अधिक है। शीतकाल में यहां घना कुहरा रहता है। बहुत सा भाग बन से ढका है। इसी से आबादी कम है। पर जैसे-जैसे बन साफ हो रहा है। वैसे-वैसे आबादी बढ़ती

जाती है। पश्चिमी भागमें औसत आबादी प्रति वर्गमील में प्राय: १०० है, पर पूर्व में १०० से कम है।

१३–उत्तरी-पूर्वी पर्वतीय प्रदेश—यह प्रदेश आसाम घाटी के दक्षिण पूर्व में स्थित है। इसमें गारो, खासी और जयन्तिया तथा पूर्वी सीमान्त की पटकोई नागा, मनीपुर और लूशाई पहाड़ियां शामिल हैं। ब्रह्मा की चीन पहाड़िया भी इस प्रदेश में शामिल हैं। इस प्रदेश मे प्रबल वर्षा होती है। पहाड़िया सघन वनों से ढकी हुई हैं। २५.० फुट से अधिक ऊँचाई पर देवदारु के पेड़ हैं। कई पहाड़ियों की चोटियों पर घास के खुले हुये मैदान हैं। यहा के पहाड़ी लोग वन को जलाकर खेती के लिए जमीन साफ कर लेते हैं। दो चार फसल उगाने के बाद जब उपज कम होने लगती है तो वे वन के दूसरे भाग को जला कर इसी प्रकार खेती करते हैं। इस प्रकार की चलाताऊ खेती को झूम कहते हैं। इस झूम की खेती से आबादी कहीं भी अधिक नहीं है। अधिकांश प्रदेश में प्रति वर्गमील में पचास से कम मनुष्य रहते हैं।

१४ हिमालय की तलहटी—हिमालय पर्वत और खुश्क मैदान के बीच में तलहटी का प्रदेश सिन्ध नदी से आसाम तक चला गया है। गङ्गा नदी इसको दो भागों में बांटती है।

(क) जिस स्थान पर गंगा पहाड़ से बाहर निकलती है, उस स्थान से आसाम तक तलहटी का प्रदेश प्राय: तीस चालीस मील चौड़ा है। पहाड़ के पास होने से इस प्रदेश की वर्षा पास वाले मैदान से सब कहीं अधिक है। तापक्रम कुछ कम है। दलदल से भरी हुई भूमि घास से ढकी है। पश्चिम की ओर भावर के पथरीले प्रदेश में साल का वन है। जन संख्या सब कहीं प्रति वर्गमील में तीन सौ से अधिक है।

(ख) गंगा से पश्चिम की ओर सिन्ध नदी तक तलहटी कुछ अधिक खुश्क है। यहा तराई का अभाव है। भू-रचना के अनुसार साल्ट रेंज (नमक की पहाड़) और अधिक पश्चिम का पहाड़ी

भाग कुछ भिन्न है। पश्चिमी तलहटी अधिक उपजाऊ है। दलदली तराई न होने से यहां पहाड़ के ढालों तक लोग बस गये हैं। औसत आबादी प्रति वर्गमील में सब कही तीन सौ से अधिक है।

१५-हिमालय का प्रदेश—यह भी दो भागों में बंटा है:—

(क) पूर्वी हिमालय में आसाम से नैपाल की पश्चिली सीमा तक सब कहीं दक्षिणी-पश्चिमी मानसून से प्रबल वर्षा होती है। दार्जिलिंग में १०९ इञ्च वर्षा होती है। ६,५०० फुट की ऊँचाई तक पहाड़ी ढाल उष्ण प्रदेश के वन से ढँके हुये हैं। ६,५०० फुट से ११,५०० फुट तक अधिक ऊपर अल्पायन (वृक्ष रहित वर्फीले प्रदेश) का कटिबन्ध है। जन संख्या बहुत कम है।

(ख) पश्चिमी हिमालय में जटिल पर्वतमालायें हैं। इसी में काश्मीर राज्य शामिल है। इस ओर वर्षा कम है। तापक्रम भी नीचा है। इसलिये १,००० फुट की ऊंचाई पर ही शीतोष्ण प्रदेश की वनस्पति आरम्भ हो जाती है। दूसरे वनस्पति-कटिबन्ध भी कम ऊँचाई पर आरम्भ होते हैं, जनसंख्या और भी कम है।

१६—उत्तरीप-श्चिमी पर्वतीय प्रदेश—कुर्रम घाटी इस प्रदेश को दो भागों में बांटती है:—यह पाकिस्तान का अंग है।

(क) कुर्रम घाटी के उत्तर का प्रदेश हिमालय ही का सिलसिला है। वर्षा कम होती है। यह वर्षा प्राय: सर्दी के दिनों में होती है। इस प्रदेश की वनस्पति पश्चिमी हिमालय की वनस्पति के ही समान है। पेशावर जिले को छोड़ कर जनसख्या प्रति वर्गमील में कहीं भी १०० से अधिक नहीं है।

(ख) कुर्रम घाटी से दक्षिण में बिलोचिस्तान पठार के अतिरिक्त सुलेमान पर्वत का कुछ भाग शामिल है। सब का सब प्रदेश बहुत ही खुश्क है। शीतकाल की तूफानी वर्षा का भी यहां अभाव है। ऊँचे पर्वतों को छोड़कर ठीक ठीक वन कहीं नहीं है। जनसंख्या बहुत ही कम है। बिलोचिस्तान के पश्चिम में औसत से प्रति वर्गमील

में केवल एक मनुष्य रहता है। केवल क्वेटा—पिशीन के अच्छे भागों में प्रति वर्गमील की आबादी २३ है।

१७—लङ्का के प्राकृतिक प्रदेश—(क) लंका का उत्तरी मैदान यह वास्तव में दक्षिणी भारत का ही अंग है। यह मैदान चपटा और खुश्क है। इस भाग की मिट्टी में चूना अधिक है। यहां मेहनती तामिल किसान रहते हैं।

(ख) तटीय मैदान--यह नीचा और समशीतोष्ण है। वर्षा अच्छी होती है। पूर्वी भाग में अधिकतर वर्षा शीतकाल में होती है। दक्षिण-पश्चिमी भाग में ग्रीष्म काल में वर्षा होती है।

(ग) मध्यवर्ती पहाड़ - यह पुरानी चट्टानों के बने हैं। प्रबल वर्षा होने के कारण वे घने बनों से ढके हुए हैं। बन को साफ करके चाय रबड़ और नारियल के बगीचे लगाये गये हैं। इस भाग की आबादी भी घनी है।

ब्रह्मा के प्राकृतिक प्रदेश—(क) अराकान और टनासरम का तटीय प्रदेश यह बहुत ही तर (आर्द्र) पहाड़ी और कम आबाद है।

(ख) उत्तरी पहाड़ियाँ—यहां भी बहुत वर्षा होती है। सघन बन अधिक है। और आबादी कम है।

(ग) शान प्लेटो—यह पठार पुरानी चट्टानों का बना हुआ है। पानी काफी बरसता है। आबादी कम है।

(घ) इरावदी की निचली घाटी—इरावदी का कछारी मैदान बड़ा उपजाऊ है। प्रबल वर्षा होनेसे मैदान में धान की खेती होती है। पहाड़ियों के ढालों पर सघन बन है। मैदान में कुछ घनी आबादी है।

(ङ) मध्यवर्ती खुश्क प्रदेश—मांडले के आस-पास चारों ओर प्रायः १०० मील की दूरी तक मैदान है। सिंचाई द्वारा खेती होती है। जमीन प्रायः उपजाऊ है। जलवायु अच्छी होने से आबादी भी घनी है।

भारतवर्ष के राजनैतिक विभाग

१५ अगस्त, १९४७ ई० में स्वाधीन होने के पूर्व मुस्लिम लीग की नीति के फलस्वरूप भारतवर्ष का विभाजन किया गया। सिन्ध बलोचिस्तान, पश्चिमी पञ्जाब और सीमा प्रान्त पाकिस्तान में शामिल किये गये। पूर्वी बंगाल में पूर्वी पाकिस्तान बना। बहावलपुर और पश्चिमी पञ्जाब के छोटे मुसलमानी राज्य पाकिस्तान से मिला लिये गये। काश्मीर के बहु सख्यक मुसलमान पाकिस्तान से अलग रहे। अतः यहां पाकिस्तानी आक्रमण हुये। काठियावाड़ के छोटे से जूनागढ़ के नवाब ने पाकिस्तान का साथ देना चाहा। पर प्रजा विरुद्ध थी। अतः नवाब को गद्दी छोड़ कर पाकिस्तान जाना पड़ा। दक्षिण में हैदराबाद के बड़े राज्य के निजाम ने भारत से पृथक रह कर पाकिस्तान का साथ देना चाहा। निजाम के इस्लामी रज़ाकारों ने बहुसंख्यक हिन्दुओं पर मार काट मचा कर निज़ाम का राज्य दृढ़ रखने का पूरा प्रयत्न किया। अन्त में भारतीय सरकार को शान्ति और सुव्यवस्था रखने के लिये सेना भेजनी पड़ी। अन्त में दूसरे राज्यों की तरह उसे भारतीय संघ में सम्मिलित होना पड़ा।

भारतवर्ष के शेष राज्यों ने भारतीय सघ में सम्मिलित होकर अपूर्व देश भक्ति और दूरदर्शिता का परिचय दिया। कुछ राज्य अपने समीपवर्ती प्रान्तों में मिल गये। कुछ राज्यों ने मिलकर अपने स्वतन्त्र प्रान्त बनाये।

सक्षेप मे भारतवर्ष में निम्न ४ राजनैतिक अग हैं :—

भारतीय प्रधान प्रान्त—अ

नाम	क्षेत्रफल	जनसंख्या	राजधानी
आसाम	५४,०८४	६०,४३,७०७	शीलांग
पश्चिमी बङ्गाल	२६,४७६	२,४७,८६,६८३	कलकत्ता
विहार	७०,३६८	४,०२,२५,६४७	पटना
बम्बई	१,११,४३३	३,५६,५५,१८३	बम्बई
मध्य प्रदेश	१,३०,३२३	२,१३,२७,८६८	नागपुर
मद्रास	१,२७,७६०	५,६६,५२,३३२	मद्रास
उड़ीसा	६०,१३६	१ ४६ ४५ ६४६	कटक
पूर्वी पञ्जाव	३७,३७८	१,२६,३७,६६५	जलन्धर
उत्तर प्रदेश	१,१२,५२३,	६,३२,८०,२५५	लखनऊ

राजप्रमुख के अधीनस्थ व राज्य

नाम	क्षेत्रफल	जनसंख्या	राजधानी
सौराष्ट्र	२१,०६२	४१,३६,००५	राजकोट
मध्यभारत	४६,७१०	७६,४१,६४२	ग्वालियर-इन्दौर
पेप्सू	१० ६६६	३४,६८,६३१	पटियाला
राजस्थान	१,२८,४२४	१,५२,६७,६७१	जैपुर
ट्रावनकार कोचीन	९१५५	९२,६५,१५७	त्रिवेन्दुरम
हैदराबाद	८२,२५८	१,८६,५२,६६४	हैदराबाद
मैसूर	२९४५८	६०,७१ ६७८	मैसूर

चीफ कमिश्नर के अधीरस राज्य

नाम	क्षेत्रफल	जनसंख्या	राजधानी
हिमाचल प्रदेश	१०,६००	९,८६,४३७	शिमला
विलासपुर	४५३	१,२७,५६६	विलासपुर
कच्छ	८४६१	५,६७,८२५	भुज
भूपाल	६,९२१	८,३८,१०७	भूपाल
त्रिपुरा	४,०४६	६४९ ९३०	अगरतला
मनीपुर	८,६२०	५,७९ ०५८	इम्फाल
दिल्ली	५७४	१७,४३,९९२	दिल्ली
अजमेर	२४००	६९२,५०६	अजमेर
कुर्ग	१५९३	२,२६,२५५	कुर्ग (मरकरा)
विन्ध्यप्रदेश	२४,६१०	३५,९७,४३१	रीवां

तेरहवाँ अध्याय

हिमालय-प्रदेश के राजनैतिक बिभाग

हिमालय अथवा हिन्दुस्तान के उत्तरी पर्वतीय प्रदेश में कई छोटे छोटे राज्य शामिल हैं। उत्तरी-पश्चिमी सिरे पर काश्मीर और जम्मू राज्य है। काश्मीर के दक्षिण-पूर्व में चम्ब रियासत है जो पञ्जाब के कांगड़ा जिले में उत्तर में स्थित है। कांगड़ा जिले के पूर्व में हिमाचल प्रदेश (शिमला रियासतें) है। इनके पूर्व में टेहरी और गढ़वाल का जिला है। अधिक पूर्व में कमायूं कमिश्नरी के गढ़वाल, देहरादून अलमोड़ा और नैनीताल के जिले हैं। इनके आगे ५०० मील तक नैपाल का राज्य फैला हुआ है। नैपाल के पूर्व में बगाल प्रान्त का दार्जिलिंग जिला है। दार्जिलिंग के उत्तर में शिकम राज्य है। शिकम से आगे तिब्बत प्रदेश की तंग चुम्बी-घाटी शिकम राज्य को भूटान से अलग करती है। भूटान के पूर्व में आका, डफला, मीरी और अभोर नाम की भयानक और पहाड़ी जातियों का प्रदेश है।

काश्मीर

काश्मीर (क्षेत्रफल ८४,००० वर्ग मील, जन संख्या ३६ लाख) का राज्य प्रायः आयाताकार है। उत्तर से दक्षिण तक इसकी अधिक से अधिक चौड़ाई ३८० मील और पूर्व से पश्चिम तक सब से अधिक लम्बाई ५०० मील है। यह प्रदेश ७२ और ८० अंश पूर्वी देशान्तर और ३२ और ३७ अंश उत्तरी अक्षांश के बीच में स्थित है। काश्मीर राज्य के उत्तर में चीनी तुर्किस्तान, पूर्व में तिब्बत, पश्चिम में उत्तरी-पश्चिमी सीमा प्रान्त और दक्षिण में पञ्जाब से घिरा हुआ है।

काश्मीर देश अपनी प्राकृतिक सुन्दरता के लिए जगत् प्रसिद्ध है। काश्मीर का अधिकतर भाग पहाड़ी है। इस प्रदेश में हिमालय की प्रधान श्रेणियों के अतिरिक्त उत्तर-पूर्व की ओर तिब्बत का पठार भी शामिल है। बीच में बर्फीली चोटियाँ और उपजाऊ घाटियाँ हैं। हिमालय के पूर्वी भागों में प्रधान श्रेणियाँ बहुत ही पास-पास हैं।
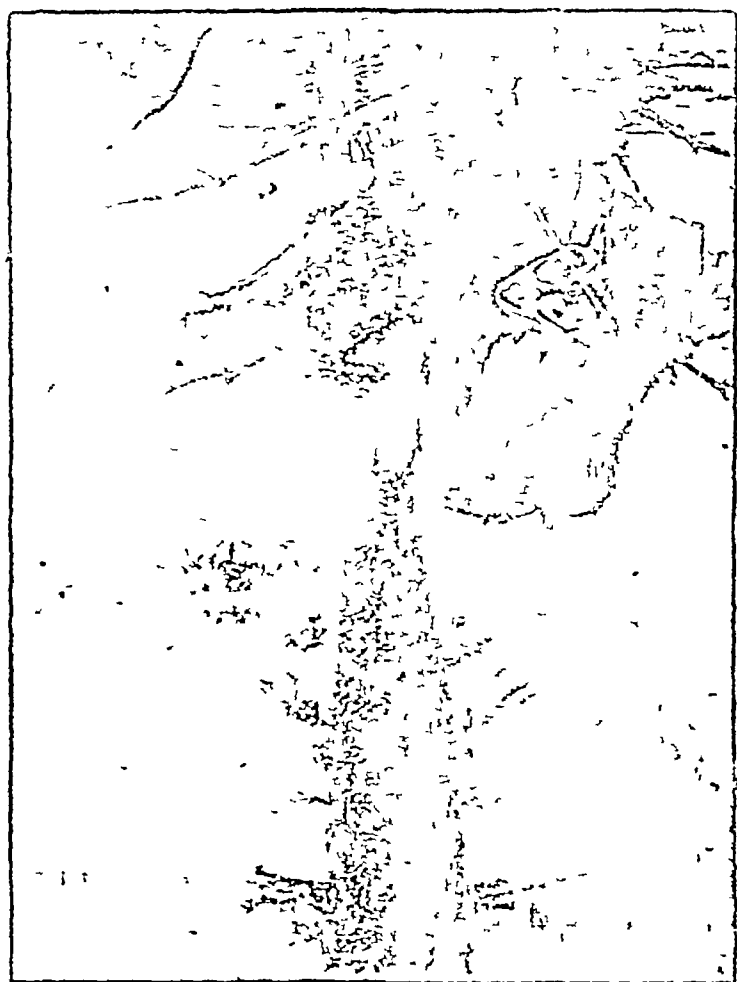
५१—काश्मीर का एक दृश्य

सोलहवाँ अध्याय

बङ्गाल प्रदेश

बङ्गाल प्रदेश (८०२७७ वर्गमील जनसंख्या ४ करोड़ ६० लाख) उत्तर में शिकम और भूटान, पूर्व में आसाम और बरमा, पश्चिम में बिहार उड़ीसा और दक्षिण में बङ्गाल की खाड़ी से घिरा हुआ है। कर्क रेखा इस प्रदेश को दो विषम भागों में विभाजित करती है। छोटा और आयाताकार भाग इस रेखा के दक्षिण में रह जाता है। बड़ा त्रिभुजाकार भाग इस रेखा के ऊपर स्थित है। बङ्गाल प्रदेश का सबसे बड़ा भाग गंगा और ब्रह्मपुत्र की निचली घाटियों और डेल्टा से बना हुआ है। इस प्रदेश की प्रायः सभी भूमि नदियों की लाई हुई बारीक कछारी मिट्टी या कांप की बनी है। दक्षिणी भाग नदियों की असंख्य धाराओं से कटा फटा है। उत्तर में दार्जिलिंग का जिला हिमालय के दक्षिणी ढाल पर स्थित है। इसके नीचे जलपाईगुड़ी के जिले में तराई का प्रदेश है। प्रदेश के दक्षिण-पूर्व में चिटगांव और त्रिपुरा में भी पहाड़ियां हैं। पश्चिम की ओर मिदनापुर बर्दवान बीरभूमि और बाकुडा जिलों के पश्चिमी भाग छोटा नागपुर पठार के ही रूपान्तर हैं। इस प्रकार प्रदेश का सबसे बड़ा भाग प्रायः सब का सब बहुत ही नीचा और उपजाऊ है। हजारों वर्गमील में पहाड़ या पत्थर का नाम नहीं है। भारत के स्वाधीन होने पर बङ्गाल दो भागों में बांटा गया। पश्चिमी बङ्गाल भारतीय संघ का अंग बना रहा। पूर्वी बङ्गाल में पूर्वी पाकिस्तान बना। समूचा बङ्गाल निम्न प्राकृतिक भागों में बांटा ज सकता है।

१—उत्तरी बङ्गाल—यह भाग वास्तव में गङ्गा और ब्रह्मपुत्र का द्वाबा है। हिमालय से निकलने वाली अनेक छोटी छोटी नदियां

प्रदेश में बहकर गङ्गा से मिल जाती हैं। वर्षा ऋतु में यही छोटी नदियां फैल कर भयानक रूप धारण कर लेती हैं। बाढ़ के दिनों में वे अक्सर
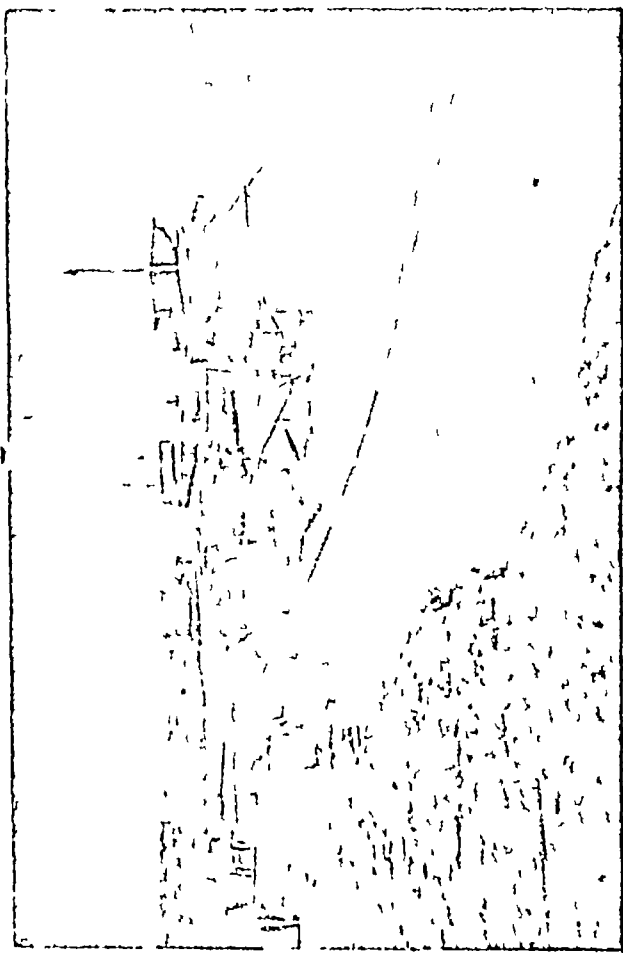
६४—गोवालन्दो—स्टीमर घाट और गांव

अपने मार्ग बदल कर अनेक गावों को काट डालती हैं। साधारण बाढ़ में भी बहुत से गांव छोटे छोटे द्वीप बन जाते हैं। खुश्क ऋतु में इन नदियों में बहुत ही कम पानी रहता है। अधिकांश प्रदेश में धान और पाट (जूट) होता है। कुछ भागों (बैरिद) मे जङ्गल और झाड़ियां हैं।

२ - पुराना डेल्टा-इस प्रदेश में मध्यवर्ती और पश्चिमी बङ्गाल
मिल है। गत चार पांच सदियों में कांप के लगातार जमा होने से
र की जमीन कुछ ऊँची हो गई, इससे गङ्गा और ब्रह्मापुत्र नदियों

६५-दार्जिलिंग का बोटेनिकल गार्डेन

का विशाल डेल्टा धीरे-धीरे पश्चिम से पूर्व की ओर मुड़ गया है।
गङ्गा का पानी जिन धाराओं द्वारा मध्य बङ्गाल में होकर समुद्र में
पहुँचता था उनमें गङ्गा का पानी आना बन्द हो गया अथवा बहुत ही
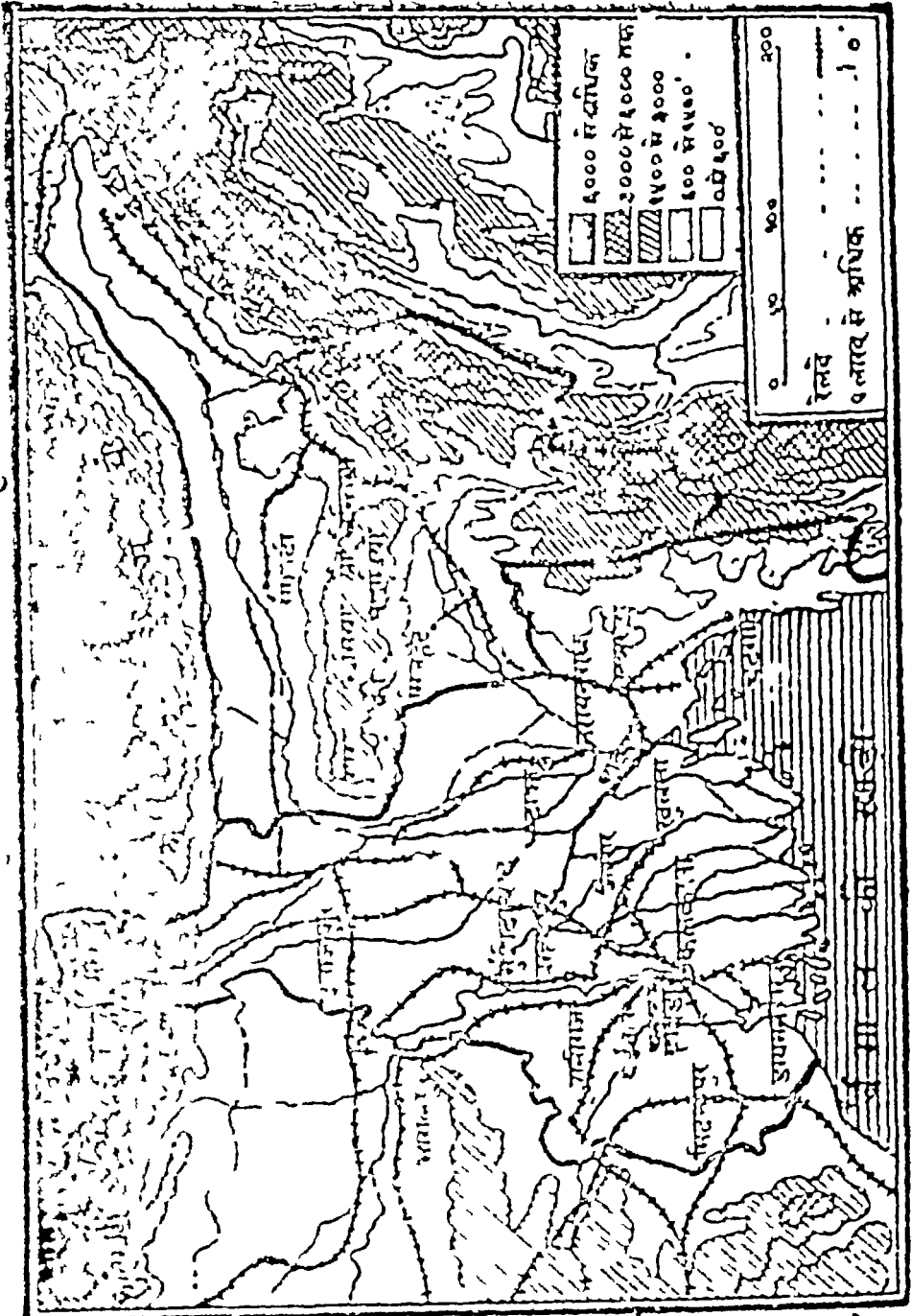
खुलना
मिदनापुर
0 50 100 200
रेलवे
१ लाख से अधिक

थोड़ा आने लगा*। इसलिये वे पुरानी धारायें प्रायः नष्ट हो गईं। उनके स्थान पर बड़े बड़े दलदल या झीलें बन गई। इन दलदलों का बहुत सा प्रदेश सुखा लिया गया और धान उगाने के काम आने
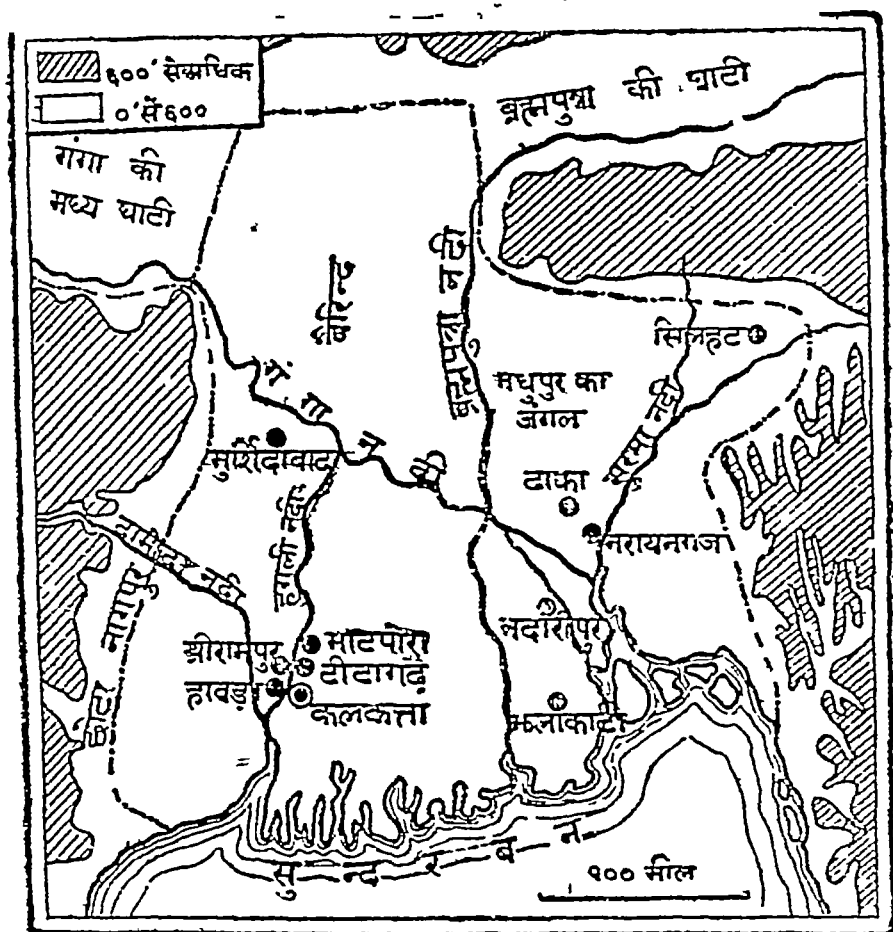
६७—गंगा का डेल्टा

लगा। धुर दक्षिण में समुद्र तट से प्रायः तोस चालीस मील भीतर की ओर तक अब भी दलदल से घिरा हुआ वन है। इस बन में सुन्दरी नाम के पेड़ों की अधिकता है। इसलिये यह सुन्दर वन कहलाता है।

---

*दूसरे कारण के लिये जियालोजी आफ इण्डिया देखो

इस दलदली वन में असंख्य छोटी-छोटी धारायें हैं। पर उनके किनारे की ऊँचाई एक हाथ से भी कम है। इसलिये जब समुद्र से (प्राय: दो तीन गज) ऊँचा ज्वार आता है। तब यह प्रदेश समुद्र जल से डूब जाता है। इस समय सुन्दर वन की धाराओं में विशाल मगर रहते हैं। खुश्क भागों में जङ्गली सुअर, हिरण और चीते रहते हैं।
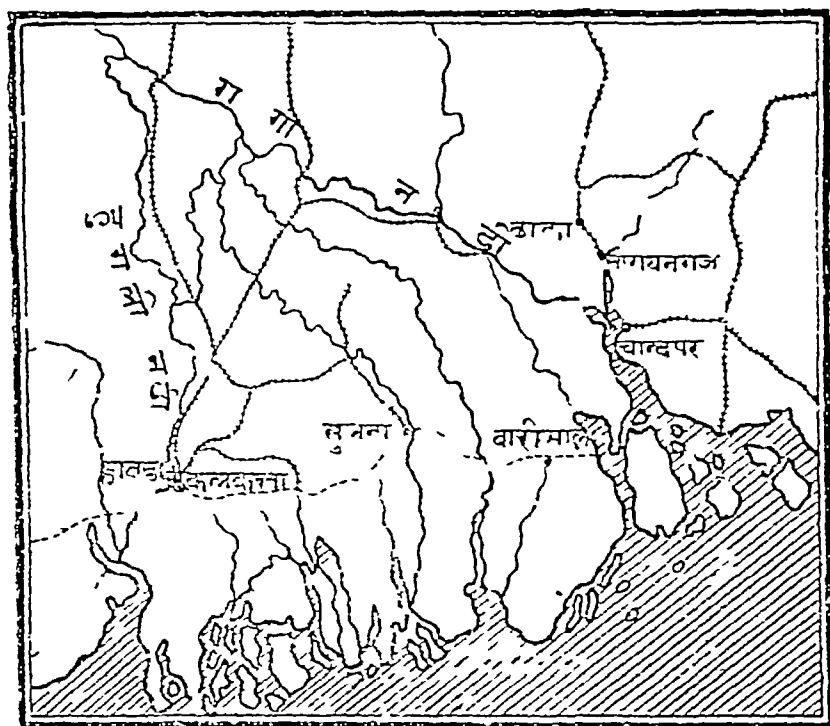
६८—गंगा नदी का दृश्य

पहले जब यह भाग कुछ अधिक ऊँचा था। यहां खूब खेती होती थी और मनुष्य रहते थे। इस सारे डेल्टा में पक्के मकानों, तालाबों मन्दिरों, मसजिदों और भग्नावशेष मिलते हैं। सत गुम्बज नाम का यहां एक विशाल भवन था। इस भवन में ७७ गुम्बज थे। इसके चारों

और मेहराबदार २६ दरवाजे थे। भीतर की ओर प्रायः ४५ गज लम्बा और ३२ गज चौड़ा कमरा था। अनुमान किया जाता है कि जब से गंगा ने पूर्व की ओर ब्रह्मपुत्र के संगम के लिये मुड़ना आरम्भ किया तभी से यह प्रदेश दब गया। सम्भव है कि आगे चलकर फिर यह प्रदेश पहले की तरह उन्नत हो जावे।

डेल्टा के पश्चिम में दामोदर आदि नदियां छोटा नागपुर पठार से पानी लाती हैं। पठार की ओर भूमि क्रमशः ऊँची होती जाती है। पर जमीन कड़ी और वीरान है। इसमें कांटेदार झाड़ियां अधिक हैं। बङ्गाल के पश्चिमी भाग में ही छोटा नागपुर पठार का सिरा है। इसी सिरे पर रानीगञ्ज, आसनसोल और झरिया में पश्चिमी बङ्गाल की लोहे और कोयले की प्रसिद्ध खानें हैं। भारतवर्ष का प्रायः ६० फी सदी कोयला इन्हीं खानों से आता है।

३—पूर्वी डेल्टा और सुरमा घाटी—इस ओर विशाल नदिया अपनी कांप लाकर तेजी से डेल्टा बनाने का काम कर रही हैं। बाढ़ के दिनों में इस प्रदेश के गांव छोटे छोटे द्वीप बन जाते हैं। बिना नाव की सहायता के एक गांव से दूसरे गांव का जाना असम्भव हो जाता है। इसलिये इस प्रदेश में गाड़ियों की जगह नावें बहुत चलती हैं। बाढ़ के दिनों में इधर के लोग एक गांव से दूसरे गांव को, और कभी-कभी अपने घर से दूसरे घर को नाव पर जाते हैं। पर बाढ़ कम होने पर हर साल इस प्रदेश में बारीक और उपजाऊ कांप की नई तह बिछ जाती है। इसी से यहां धान और पाट (जूट) बहुत होता है।

गंगा और ब्रह्मपुत्र के संगम से उत्तर और पूर्व की ओर मधुपुर के टीले घास और बन से ढके हैं। मधुपुर का बन समुद्र-तल से केवल ४० फुट ऊँचा है। पर वह गंगा की ओर अधिक आगे पूर्व

१-प्राचीन इतिहास (रघुदिग्विजय) में इस बात का उल्लेख है कि अङ्गदेश (बङ्गाल) के सिपाही नावों पर चढ़कर लड़ा करते थे।

की ओर मुडने से रोकता है। इसके पूर्व में सुरमा की उपजाऊ घाटी है जो वास्तव में नवीन डेल्टा का अ ग है।

जलवायु—कर्क रेखा वङ्गाल प्रान्त को दो भागों में वांटती है। पर उत्तरी भाग की जलवायु शीतोष्ण कटिवन्ध की सी नहीं है। दार्जिलिंग के पहाड़ी जिले को छोड़ कर समस्त वङ्गाल में कटिबन्ध की जलवायु पाई जाती है। यह प्रान्त मौसमी हवाओं के रास्ते में स्थित है। इसलिये यहां वर्षा खूव होती है। सव कहीं ५० इञ्च के ऊपर ही वर्षा होती है। वर्षा की मात्रा पश्चिम से पूर्व की ओर बढ़ती जाती है। इस प्रकार सिलहट जिले में १५० इञ्च वर्षा होती है। कभी कभी वङ्गाल की खाड़ी के चक्रवात यहां आ जाते हैं। और निचले भागों में बहुत क्षति पहुँचाते हैं। वङ्गाल प्रान्त समुद्र के पास है। यहां वर्षा अधिक होती है हिमालय और पठार आदि दूसरे भागों का वहुत सा जल इस प्रान्त में होकर समुद्र में पहुँचता है। इन कारणों से वङ्गाल की हवा आर्द्र (नम) रहती है। आर्द्र (नम) हवा स्वास्थ्य के लिये अच्छी नहीं होती है, पर वह तापक्रम में कोई भारी अन्तर नहीं पड़ने देती है। यही कारण है कि वङ्गाल में शीत-काल में भी मामूली गरमी रहती है। औसत तापक्रम ६० अंश फारेन हाइट से अधिक ही रहता है। कलकत्ते में रहने वालों को शीतकाल में आग तापने या अधिक गरम कपड़ों की आवश्यकता नहीं होती है। गरमी की ऋतु में यहां विकराल गरमी भी नहीं पड़ने पाती है। वङ्गाल के प्रत्येक भाग में ग्रीष्म का औसत तापक्रम ८६ अंश फारेन हाइट से कम ही रहता है। दार्जिलिंग का तापक्रम ऊँचाई के कारण प्रान्त भर में कम रहता है। एक शब्द में वङ्गाल की जलवायु उष्णार्द्र कही जा सकती है।

उपज—उष्णार्द्र जलवायु और उपजाऊ भूमि होने के कारण वङ्गाल-प्रान्त सदा हरा-भरा रहता है। वर्षा के बाद समतल मैदान

हरियाली का समुद्र बन जाता। जहां तक दृष्टि पहुँचती है, वहां तक धान या पाट के खेत लहलहाते नजर आते हैं। थोड़ी थोड़ी दूर पर केला, कटहल, आम, सुपारी आदि के बगीचों के बीच के बसे हुये गांव द्वीप के समान दिखाई देते हैं। तालावों और दलदलों में भी कमल आदि के पौधे रहते हैं। ग्रीष्म ऋतु में जब दूसरे प्रान्त झुलसने लगते हैं और उनमें धूल उड़ने लगती है, उन दिनों में भी बङ्गाल प्रान्त मे हरियाली का सर्वत्र अभाव नहीं होता है।

मनुष्य—उपजाऊ होने के कारण यह प्रान्त बहुत ही घना बसा है। प्रति वर्गमील में प्रायः ६०० मनुष्य रहते हैं। इस प्रान्त के रहने वालों में प्रायः ५२ फी सदी सुन्नी मुसलमान थे। लोग अधिकतर पूर्वी बङ्गाल में रहते हैं। प्रायः ४५ फी सदी निवासी हिन्दू हैं। शेष दो फीसदी मूल निवासी और ईसाई आदि हैं। इस प्रान्त में ६५ फीसदी लोगों की भाषा बङ्गाली है। लगभग ४ फीसदी लोग हिन्दी बोलते हैं। शेष १ फीसदी में दक्षिण-पश्चिम की ओर उड़िया भाषा और दार्जिलिंग की ओर नैपाली बोलने वाले हैं। इस प्रान्त के अधिकतर लोग धान या पाट की खेती में लगे हुये हैं। उन्हें अपने खेतो के पास अलग घरों में या छोटे छोटे गावों में रहना पड़ता है। इसलिये बङ्गाल में प्रायः ६३ फी सदी लोग गावों में रहते हैं। ७ फी सदी लोग शहरों में रहते हैं। इसलिये ५०,००० से अधिक की जन-संख्या वाले शहर बङ्गाल में केवल सात हैं। कुछ शहर पुराने हैं। ये शहर या तो किसी समय में राजधानी थे अब उनमें हाट बाजार लगता है। पर इस तरह के शहर प्रायः घट रहे हैं। नये कारबार और व्यापार वाले शहर धान या जूट की मिलों के पास बढ़ गये हैं।

कलकत्ता—यह शहर (जन-संख्या प्रायः २० लाख हिन्दुस्तान भर में सबसे बड़ा है। पर अब से प्रायः ढाई सौ वर्ष पहले यह एक बहुत ही छोटा गांव था। १६८६ ई० में जब हिन्दुस्तान में अंग्रेजी

राज्य न था और अँग्रेज लोग हिन्दुस्तान प्रजा की हैसियत से रहते थे) अँग्रेजी सौदागरी ने मरहठों के डर से यहीं बसने में अपनी खैरियत समझी। यह नगर समुद्र से प्रायः ७० मील ऊपर हुगली नदी के बाएं किनारे पर स्थित है। हुगली नदी गंगा की सब से बड़ी और सबसे अधिक पश्चिमी शाखा है, यह गहरी इतनी है कि बड़े से बड़े जहाज यहां तक आ सकते हैं। इस विशाल और गहरी नदी को पार करके कलकत्ते पर चढ़ाई करना मरहठा लोगों के लिये आसान न था। १७५० की साजिश के बाद जब अंग्रेज लोग इस नगर और आस पास के प्रदेश के मालिक बन गये तब उन्होंने वहां फोर्ट विलियम किला बनवाया। १७७२ ई० में कलकत्ता शहर बङ्गाल की राजधानी बना। फिर जैसे हिन्दुस्तान में अँग्रेजी राज्य बढ़ा वैसे वैसे कलकत्ते की भी वृद्धि हुई। यहां विश्वविद्यालय, हाईकोर्ट आदि तरह तरह की आलीशान इमारतें बनी। १९१२ ई० से हिन्दुस्तान की राजधानी दिल्ली हो गई। पर इससे कलकत्ते के कारबार और व्यापारिक महत्व में कोई अन्तर न पड़ा। कलकत्ता न केवल हिन्दुस्तान का वरन् एशिया का सबसे बड़ा व्यापारिक केन्द्र है। इस शहर के पीछे उत्तरी-पश्चिमी सीमा प्रान्त और आसाम की पहाड़ियों के सिरे तक प्रायः समतल, सघन और उपजाऊ देश है। इस प्रदेश में सस्ते दामों में आसानी से रेलें, सड़कें और नहरें बनाई जा सकती हैं। गंगा के डेल्टा और मध्य घाटी की असंख्य नदियां स्वाभाविक जल मार्ग बनाती हैं। इसलिये गङ्गा की घनी घाटी की अपार उपज कलकत्ता से ही दिसावर को जाती है। भिन्न भिन्न विदेशों से आने वाला पक्का माल भी कलकत्ते में ही उतारा जाता है और यहां गङ्गा की घाटी में वितरण होता है। कलकत्ता का बन्दरगाह हुगली के किनारे पांच मील तक फैला हुआ है। खिदरपुर में डाक (या जहाजी घाट) है। यहां तक समुद्र से जहाज बराबर आया जाया करते हैं। पर हुगली नदी में कांप लगातार जमा होती रहती है। इसलिये नदी

को साफ रखना पड़ता है। जहाज को लाने और ले जाने के लिये शिक्षित और अनुभवी मल्लाह भेजे जाते हैं। इसमें व्यापारिक
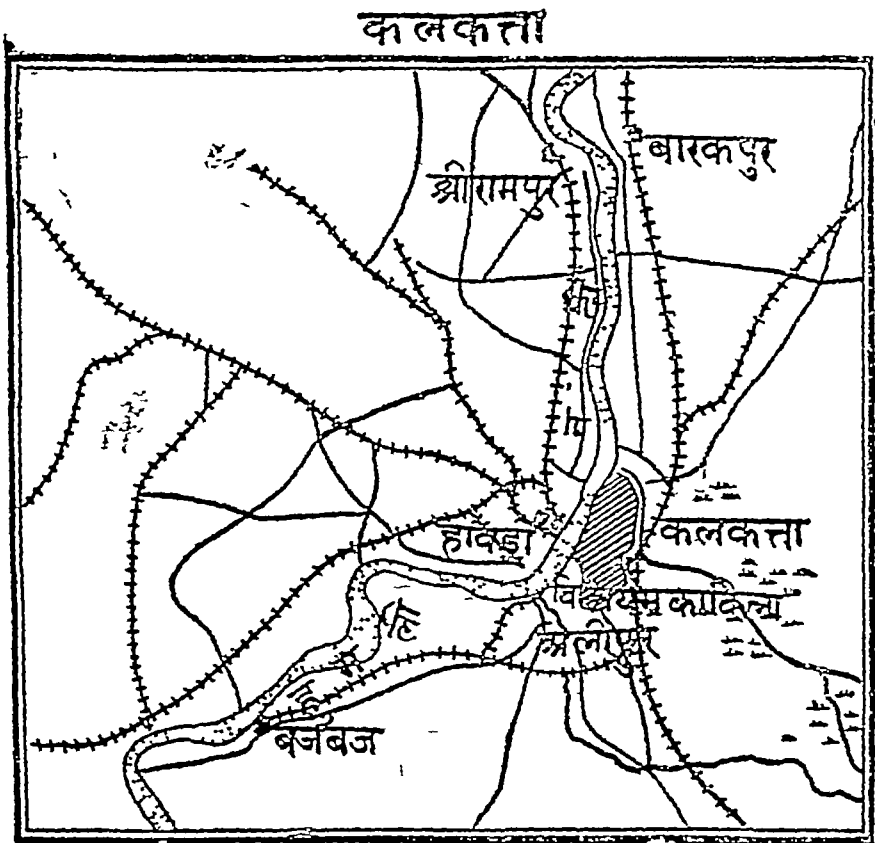
६६—इस नक्शे के स्केल में एक इञ्च=१६ मील

दृष्टि से असुविधा अवश्य है। पर सैनिक दृष्टि से लाभ यह है कि यदि कोई विदेशी दुश्मन अपने जहाजों से कलकत्ता पर हमला करना

चाहे तो उस के जहाज वीच में ही हुगली की तली से टकरा कर नष्ट हो जावें।❀
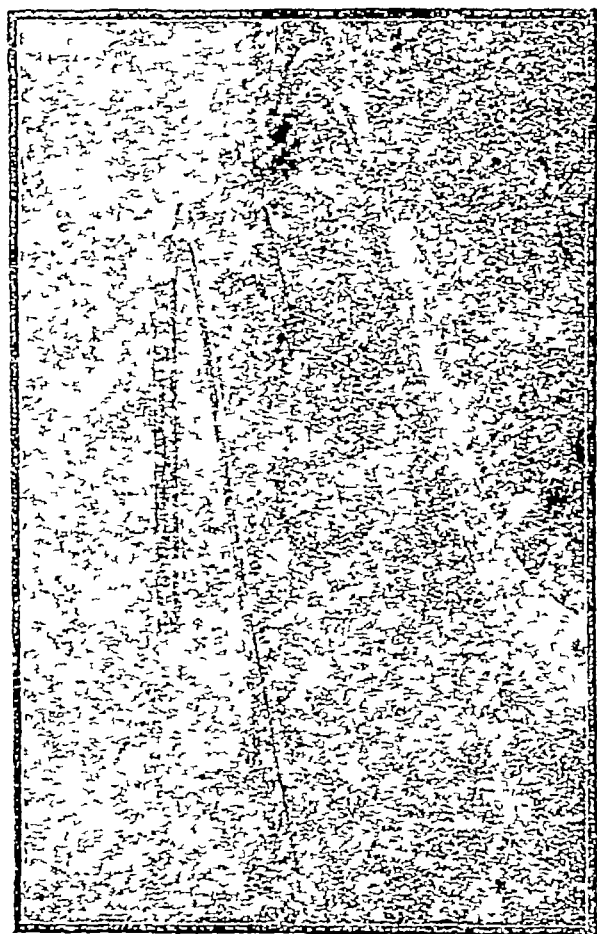
७०—दार्जिलिंग की पहाड़ी रेलवे का एक मोड़।

व्यापार के अतिरिक्त कलकत्ते में कारवार की सुविधा है। इसके

❀१९१४ की बड़ी लड़ाई के दिनों में जर्मनी के एमडन नामी जंगी जहाज़ ने मद्रास पर गोलावारी की। पर कलकत्ता सुरक्षित रहा।

आस पास बहुत सा पाट (जूट) और चावल होता है। पास में रानीगञ्ज से लोहा और कोयला मिल जाता है। पृष्ठ प्रदेश में धनी आबादी होने से असंख्य सस्ते मजदूर मिल जाते हैं। इसलिये कलकत्ते में हुगली के किनारे किनारे मीलों तक बड़े बड़े कारखाने हैं जिनमें बोरियां बोरी का कपड़ा, रस्सी, सूती, कपड़ा कागज मशीनें आदि चीजें तयार होती है। पास ही अलीपुर और काशीपुर में बन्दूकों का कारखाना है। हुगली के दाहिने किनारे पर हावड़ा शहर है। यह रेलों का अन्तिक स्टेशन है। यहां भी कई कारखाने हैं। दोनों शहरों के बीच में मजबूत पुल है जो भारतवर्ष के प्रसिद्ध पुलों में एक है हुगली के ही किनारे पर भाटपाड़ा, टीटागढ़ और श्रीरामपुर में जूट की मिलें हैं। टीटागढ़ में कागज भी बनता है।

पश्चिमी बंगाल में रानीगञ्ज और आसनसोल कोयले की खानों और रेलों के लिये प्रसिद्ध केन्द्र हैं।

दार्जिलिंग—यह शहर समुद्र-तल से प्रायः ८,००० फुट की ऊंचाई पर पहाड़ी लाईन का अन्तिम स्टेशन और बङ्गाल प्रान्त की ग्रीष्म ऋतु की राजधानी है। यहां से हिमालय कीं सर्वोच्च चोटियों का उत्तम दृश्य दिखाई देता है। निचले ढालों पर चाय के बगीचे हैं।

सत्रहवाँ अध्याय

विहार—उड़ीसा*

विहार-उड़ीसा (प्राय: १,१२,००० वर्गमील, जनसंख्या ५ करोड़ २३ हजार) प्रान्त उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में बंगाल की खाड़ी तक चला गया है। यह प्रान्त) सन् १९१२ ई० में बनाया गया। इस प्रान्त के ऊपरी भाग में विहार अथवा गंगा की मध्य घाटी, बीच में छोटा नागपुर का पठार है इसके दक्षिण में उड़ीसा अर्थात् महानदी के डेल्टा है। इसके उत्तर में नैपाल राज्य और उत्तरी-पूर्वी सिर पर दार्जिलिंग जिला है। इसके पश्चिम में उत्तर-प्रदेश और मध्य प्रान्त पूर्व में बंगाल और दक्षिण में बंगाल की खाड़ी और मद्रास प्रान्त का उत्तरी पूर्वी सिरा है।

विहार का प्रदेश गंगा और गंगा की सहायक नदियों के द्वारा लाई हुई बारीक मिट्टी (कांप) से बना है। केवल दक्षिण विहार में कुछ पठार है। छपरा जिले के पास गंगा नदी उत्तर-प्रदेश से विहार प्रान्त में

---

*सन् १९३५ से उड़ीसा एक अलग प्रान्त बना गया है।

)भारतीय प्रान्तीय विभागों में यह औरों की अपेक्षा नया है। पर भारतवर्ष के प्राचीन इतिहास में इस प्रान्त का उल्लेख है। सीता जी के पिता राजा जनक का मिथला राज्य यहीं था। श्रीकृष्ण जी के विरोधी जरासन्ध का मगध देश यही महात्मा बुद्ध के बाद सम्राट अशोक के शासन काल में इस प्रान्त भर में बौद्ध संघ या "विहार" स्थापित हो गये। शायद इसीसे आगे चलकर प्रान्त का नाम विहार पड़ गया।

१५०० से अधिक
६०० १५०० तक
० से ६०० तक
रेलवे
नगर जिनका आबादी एक लाख से अधिक
मुजफ्फरपुर
दरभंगा
पटना
गया
भागलपुर
कटिहार
बुद्ध गया
हजारीबाग
रानीगंज
रांची
पुरुलिया
जमशेदपुर
हावड़ा
कलकत्ता
बालासोर
बंगाल की खाड़ी
कटक
महानदी का मुहाना
पुरी (जगन्नाथ)
अंग्रेजी मील
० ५० १०० २००

७१—बिहार और उड़ीसा
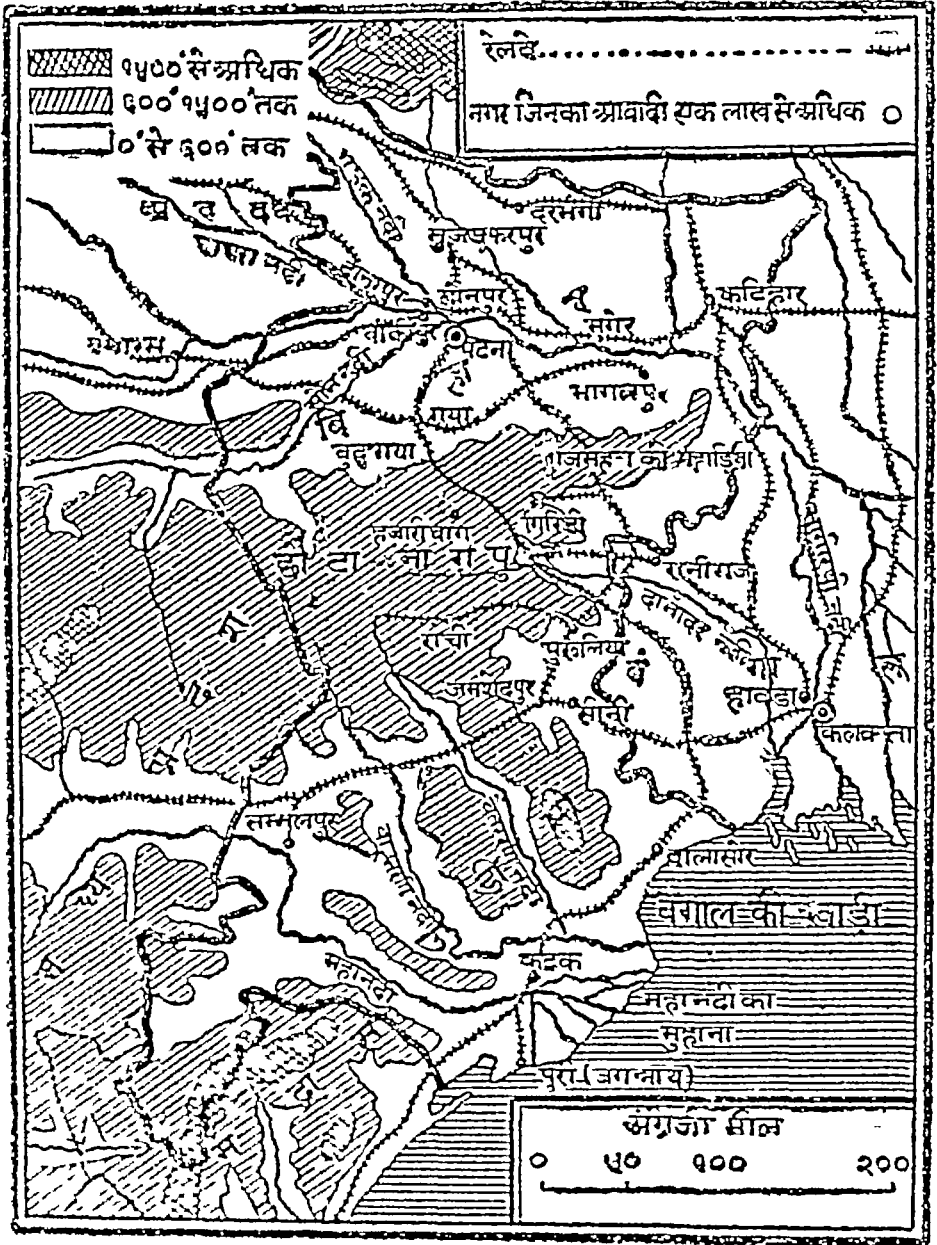
प्रवेश करती है। बिहार के उपजाऊ और कछारी मैदान को दो भागों में बाटती हुई गंगा नदी पूर्व की ओर बढ़ती है। बिहार प्रदेश छोड़ते समय राजमहल की पहाड़ियों ने पूर्व की ओर बढ़ कर गंगा को दक्षिण-पूर्व की ओर मोड़ दिया है। बिहार का कछारी मैदान सब कहीं समुद्र-तल से ३०० फुट से कम ही नीचा है। इतना नीचा होने पर भी इसका ढाल गङ्गा के उत्तर में दक्षिण-पूर्व की ओर है। इसलिये न केवल हिमालय का वरन् दक्षिणी पठार का पानी भी गगा नदी में बह आता है। आरम्भ में छपरा के पास घाघरा या सरयू नदी गङ्गा में उत्तरी किनारे पर मिलती है। इस संगम से कुछ और आगे दानापुर के पास सोन नदी मध्य भारत का पानी गङ्गा (दक्षिणी किनारे पर) में मिला देती है। कुछ ही मील और आगे गंडक नदी हिमालय का जल गङ्गा में छोड़ देती है। इसके बाद मुंगेर के नीचे बूढ़ी गंडक और बाघमती हिमालय से चल कर गङ्गा में मिलती हैं। भागलपुर के नीचे हिमालय की कोसी नदी गङ्गा में मिलती है। इस प्रकार बिहार प्रदेश थोड़ी-थोड़ी दूर पर नदियों से गुँथा हुआ है। लेकिन दक्षिणी सिरे को छोड़ कर इस विशाल उपजाऊ मैदान में पत्थर या पहाड़ का नाम नहीं है।

जलवायु—बिहार-प्रदेश में उत्तर प्रदेश की अपेक्षा अधिक पानी बरसता है। पर बंगाल की अपेक्षा में यहां कम वर्षा होती है। साल भर में औसत से प्रायः ७२ इञ्च पानी बरसता है। हिमालय के पास उत्तरी भाग में ७२ इञ्च और कभी-कभी ८० इञ्च तक पानी बरस जाता है। दक्षिणी भाग में गया जिले के आस-पास ६० इञ्च से अधिक पानी नहीं बरसता है। कभी-कभी इस ओर की वर्षा ४० इञ्च होती है। इसी से दक्षिण बिहार में सिचाई की आवश्यकता पड़ती है। यह वर्षा ग्रीष्म ऋतु की मानसून के आने पर होती है। यहा का औसत तापक्रम ६० और ९० अन्श के बीच में रहता है। इस प्रकार यहां का शीतकाल बङ्गाल से अधिक ठंडा होता है। इसो

प्रकार यहां का शीतकाल बंगाल से अधिक ठंडा होता है। इसी प्रकार यहां ग्रीष्म ऋतु में भी बंगाल से अधिक गरमी होती है। पर उत्तर प्रदेश की अपेक्षा यहां की दोनों ऋतुयें मृदुल होती हैं। इस प्रदेश में जमीन इतनी उपजाऊ है और वर्षा इतनी काफी है कि ७५ फी सदी जमीन खेती के काम आती है। उपजाऊ प्रदेश में प्राचीन बन का अभाव हो गया है। यहां की प्रधान फसल चावल और मक्का है। कुछ-कुछ गेहूँ, जौ और चना होता है। पर ज्वार बाजरा और कपास कम है। सरसों आदि तिलहन भी काफी है। पहले यहां नील भी बहुत होता था। पर जर्मनों में सस्ते कृत्रिम नीले रंग के तैयार जाने से इस फसल को बहुत धक्का पहुँचा। निलहे गोरों के अत्याचार से इस ओर नील की खेती प्रायः बिल्कुल नष्ट हो गई। पहले यहां अफीम भी (पोस्ते से) बहुत होती थी। पर जब से चीन ने अफीम का खाना कम कर दिया तब से यहां अफीम का उगना भी बन्द हो गया।

मनुष्य–बिहारी लोग बहुत ही सीधे सादे और परिश्रमी होते हैं। बिहार की भाषा सब कहीं हिन्दी है, मानों बिहार ने बंगाल की ओर पीठ फेर कर अपना मुँह सदा के लिये उत्तर प्रदेश के सामने कर लिया है। बिहार के अधिकतर लोग खेती में लगे हुये हैं। यहां की आबादी बहुत घनी है। सब लोगों को काफी जमीन या काम नहीं मिलता है। इसलिये खेती से फुरसत पाने पर चार-पांच महीने के लिये यहां के किसान कलकत्ते की मिलों में मजदूरी करने चले जाते है। फसल कटने के समय में फिर घर लौट आते हैं। प्रधान पेशा खेती होने के कारण प्रायः ९० फी सदी लोग गांवों में रहते हैं। बड़े बड़े शहर कम हैं।

नगर–पटना शहर बिहार प्रदेश की राजधानी और प्रदेश भर में सबसे बड़ा शहर है। गंगा नदी के दाहिने किनारे पर उपजाऊ मैदान के मध्य में स्थल मार्गों का केन्द्र होने से पटना शहर

की स्थिति राजधानी होने के लिये अनुकूल रही है। इसी से पुराने समय में पटना शहर (पाटलीपुत्र) न केवल इसी प्रदेश वरन् एक बड़े साम्राज्य की राजधानी था। आजकल पुराना शहर एक छोटा नगर रह गया है। नया शहर जिसे बांकीपुर भी कहते हैं बढ़ रहा है। यहां ई० आई० आर० का जंक्शन, सरकारी इमारतें और बाजार आदि हैं। चावल आदि व्यापार की चीजें भी यहां इकट्ठी की जाती हैं।

पटना के दक्षिण में फल्गू नदी के किनारे गया शहर हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ स्थान है। यह शहर मुगलसराय और कलकत्ता के बीच में सीधी रेलवे लाइन पर स्थित है। और रेल द्वारा पटना शहर से भी जुड़ा हुआ है। उसके पास ही एक हवाई स्टेशन भी बन गया है। यहां से ६ मील की दूरी पर बुद्ध गया नाम का प्रसिद्ध बौद्ध मन्दिर है। पूर्वी सिरे पर गंगा के दक्षिणी किनारे पर मुंगेर और भागलपुर नगर है। मुंगेर में पहले एक मजबूत किला था और यहां शस्त्र बनते थे। यहां पेनिन्सुला टुबेको कम्पनी ने दुनिया भर में एक बहुत बड़ा सिगरेट का कारखाना खोला था। इसीसे मुंगेर के आस-पास तम्बाकू की खेती भी बढ़ने लगी है। जमालपुर में रेलगाड़ियों की मरम्मत के लिये ईस्ट इण्डियन रेलवे ने एक बड़ा कारखाना खोल रक्खा है। गङ्गा के उत्तर में छपरा, मुजफ्फरपुर और दरभङ्गा प्रसिद्ध शहर हैं। दरभङ्गा जिले में पूसा का प्रसिद्ध कृषि-कालेज* था। पर १५ जनवरी सन् १९३४ के भूकम्प ने उत्तरी बिहार के नगरों को बहुत कुछ उजाड़ दिया।

गङ्गा और गंडक के संगम पर सोनपुर नगर दुनिया भर के सब से बड़े प्लेटफार्म (अवध तिरहुत रेलवे की) और हरिहर क्षेत्र के मेले के लिये प्रसिद्ध है। यह मेला कार्तिक पूर्णिमा को होता है और एक महीने

---

*अब यह कृषि-अनुसन्धान संस्था दिल्ली पहुँच गई है।

तक रहता है। यहां हाथी आदि बड़ी से बड़ी और छोटी से छोटी प्रायः सभी चीजें विकने आती है।

छोटा नागपुर उस विशाल पठार का पूर्वी भाग है जो खम्भात (खम्भे) की खाड़ी से आरम्भ होकर मध्य प्रदेश को पार करता है। छोटा नागपुर में यह सब पहाड़ी प्रदेश शामिल है, जो विहार के दक्षिण ओर वर्दवान कमिश्नरी के पश्चिम में मध्य प्रदेश और रीवां राज्य तक फैला हुआ है। छोटा नागपुर पठार में कोई बड़ा पहाड़ नहीं है। पर यह पठार समुद्र-तल से प्रायः २,००० फुट ऊंचा है। जगह जगह पर नदियों ने इसे बहुत गहरा काट दिया है। पठार के धरातल से कई स्थानों में चपटी चोटी वाली पहाड़ियां पठार के धरातल से २,००० फुट ऊंची हैं। राजमहल की पहाड़ियां उस कोण को घेरे हुये हैं। जो विहार के मैदान और गङ्गा डेल्टा के बीच में बन गया है। इस पठार में सबसे ऊंची (४,४०६ फुट) चोटी पारसनाथ की है। यहां जैनियों के महात्मा पारसनाथ का मन्दिर होने से तीर्थ स्थान भी है।

छोटा नागपुर में साल भर में औसत से ५० इञ्च पानी बरसता है। ऊंचाई के कारण यहां का तापक्रम विहारी मैदान से नीचा रहता है। अधिकांश प्रदेश साल आदि पेड़ों के बनों से ढका है। बनों में लकड़ी के अतिरिक्त लाख[*] छुटाने का काम बहुत होता है। मानभूमि पलामू, रांची और गया लाख के मुख्य केन्द्र हैं। पठार के चपटे भागों में चरागाह या कांटेदार झाड़ियां हैं। घाटियों के ढालों पर सीढ़ी (जीने) के आकार में धान के खेत बने हुये हैं। हैं। घाटियों की जमीन पठार के बारीक कणों से बनी है। इसलिये यह बहुत उपजाऊ है। पर पहाड़ी टीलों की जमीन इतनी अच्छी नहीं है। इन टीलों पर मकई, ज्वार, बाजरा आदि की फसल होती है। इस पठार में खेती के लिये उपजाऊ जमीन अधिक नहीं है। पर यहां मूल्यवान खनिज बहुत हैं। उत्तर की ओर हजारी बाग (कोडर्मा) में अभ्रक की खान

---

[*] लाख से स्याही, वार्निश आदि बहुत सी चीजे बनती हैं।

निचली घाटी और डेल्टा का देश है। वैसे सुवर्णरेखा, बैतरणी आदि छोटी नदियां यहां बहुत हैं। नदियों का पाट कम चौड़ा है इसी से वर्षा ऋतु में अक्सर बाढ़ दूर तक फैल जाती है। समुद्र तट पर आरम्भ में रेतीले टीले और गोरन के दलदल है। इनके पीछे धान के उपजाऊ खेत हैं। अधिक भीतर की ओर बनाच्छादित पहाड़ियां हैं। इन पहाड़ियों के बीच बीच में उपजाऊ घाटियां स्थित हैं। इस प्रदेश की जलवायु उत्तरी सरकार से मिलती जुलती है। औसत तापक्रम प्रायः ८१ अंश फारेनहाइट है। वार्षिक वर्षा का औसत प्रायः ५७ इञ्च है। पर यहां वर्षा बहुत ही अनिश्चित है। इस लिये कभी यहां के लोगों को बाढ़ से और कभी अकाल से पीड़ा उठानी पड़ती है। यहां की उपज धान है। कुछ भागों में पाट (जूट) भी होता है। भीतर की ओर बिकराल बन है। जिनमें हाथी आदि सभी तरह के जङ्गली जानवर पाये जाते हैं। इस विभाग में देशी रियासतें कई (१७) थीं इनमें मयूर भंज की रियासत सब से अधिक बड़ी है। ये उड़ीसा प्रान्त में मिल गई हैं। यहां के लोगों की भाषा उड़िया है। आबादी घनी नहीं है। बड़े शहर कम हैं।

कटक—यह शहर महानदी के किनारे ऐसे स्थान पर बसा है। जहां इसमें कठजोड़ी (एक छोटी नदी) मिली है। बाढ़ के दिनों में यह छोटी नदी महानदी से भी अधिक भयानक होती है। इसलिये इसके किनारे ऊंचा बांध बना है। यह नगर उड़ीसा के प्रदेश की राजधानी और उड़ीसा की नहरों का केन्द्र है। यहां सोने और चान्दी के बेल बूटे का काम होता है।

पुरी—कटक से ५७ मील दक्षिण की ओर मद्रास प्रदेश की सीमा के पास पुरी या जगन्नाथ पुरी है। यहां पर जगन्नाथ जी का प्रसिद्ध प्राचीन मन्दिर है जिसका दर्शन करने के लिये हर साल एक लाख से ऊपर यात्री आते है। यहां की जलवायु अच्छी है। इसलिये (कुछ) लोग यहीं स्वास्थ्य सुधारने को आते हैं।

बालासोर—यहां इस समय एक छोटा बन्दरगाह रह गया है। पर पहले यहां अंग्रेजी, डच और फ्रान्सीसी लोगों की कोठियां थी।

सम्भलपुर—यह महादनी के किनारे ऐसे स्थान पर बसा है जहां तक नावें आ सकती हैं।

अठारहवाँ अध्याय

उत्तर प्रदेश*

उत्तर प्रदेश (१,१२,५६२ वर्गमील, जनसंख्या लगभग ६ करोड़) उत्तरी भारत के मध्य में स्थित है। इस प्रदेश के उत्तर में प्राय १७,००० वर्गमील पहाड़ है। दक्षिण में कुछ पठार है। शेष (८०,००० वर्गमील) गङ्गा और उसकी सहायक नदियों का उपजाऊ मैदान है। इस मैदान की लम्बाई प्राय. ४८० मील और चौड़ाई १६० मील है। लेकिन उत्तर प्रदेश की अधिक से अधिक लम्बाई ५०० मील और चौड़ाई ३०० मील है। यह प्रदेश प्राय ३१ उत्तरी अक्षांश और २३.५१ उत्तरी अक्षांश के बीच में स्थित है। इस प्रकार कर्क रेखा प्रदेश से कुछ ही दूर दक्षिण की ओर छूट जाती है। इस प्रदेश के उत्तर में काली और यमुना नदियों के बीच का पहाड़ी प्रदेश (कमायूं की कमिश्नरी) तिब्बत से घिरा हुआ है। इस से आगे सारदा या काली और गंडक नदियों के बीच में तराई का जङ्गली दलदल नैपाल के पहाड़ी राज्य को उत्तर प्रदेश के मैदान से अलग करता है। पश्चिम की ओर दिल्ली से प्राय. ६० मील नीचे तक अथवा मथुरा से ३० मील ऊपर तक यमुना नदी प्राकृतिक सीमा बनाती है। और पञ्जाब प्रदेश को उत्तर प्रदेश से अलग करती है। इसके आगे उत्तर प्रदेश और राजस्थान की भरतपुर आदि रियासतों के बीच में कोई प्राकृतिक सीमा नहीं है। मथुरा से आगे यमुना नदी दक्षिण-पूर्व की ओर मुड़ती है। इसके दोनों ओर उत्तर प्रदेश के जिले हैं। इसकी सहायक चम्बल नदी कुछ दूर (लगभग ५० मील) तक ग्वालियर

---

*इसका विस्तृत वर्णन इसी नाम की पुस्तक में अलग से पढ़िये

राज्य और उत्तर प्रदेश के बीच में प्राकृतिक सीमा बनाती है। चम्बल के संगम से गङ्गा के संगम (इलाहाबाद) तक यमुना नदी और आगे चलकर चुनार तक गङ्गा नदी केवल मैदान और पठार को अलग
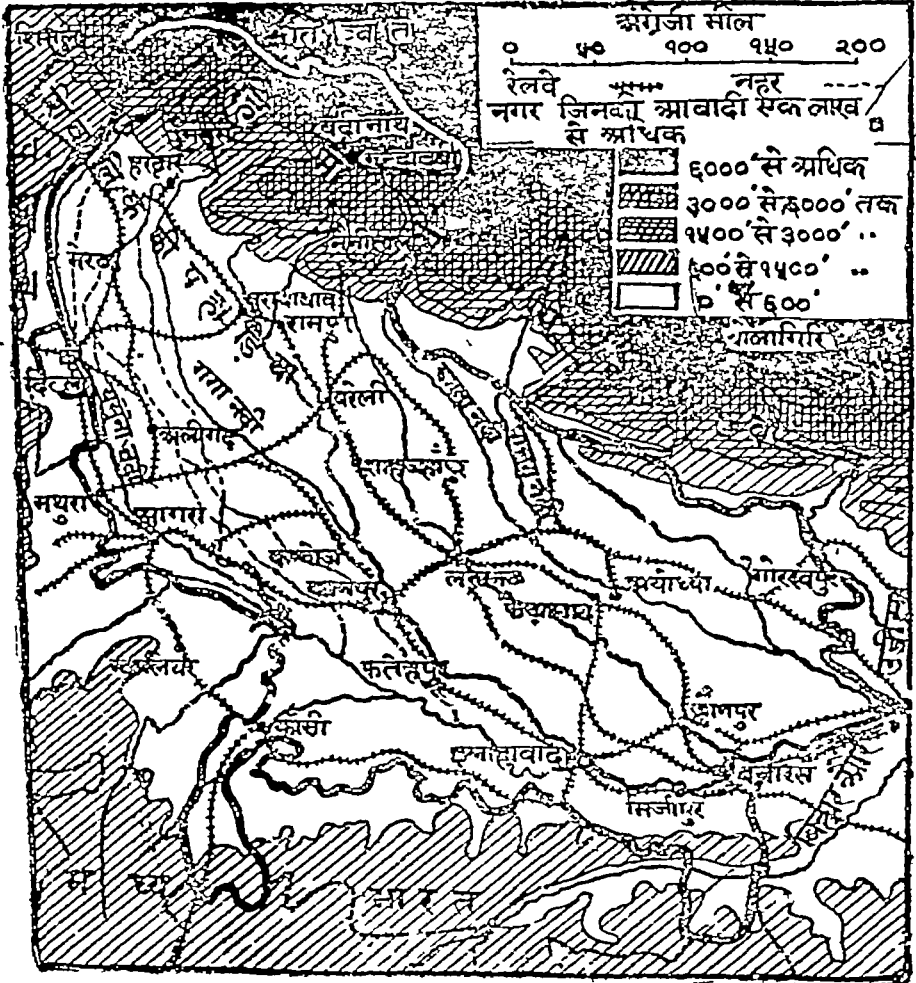
७२—उत्तर प्रदेश के नगर और मार्ग

करती है। हमीरपुर, झांसी, जालौन और बांदा के जिले पठार में स्थित होने पर भी उत्तर प्रदेश में शामिल हैं। गङ्गा के दक्षिण में मिर्जापुर का जिला और भी अधिक पहाड़ी है। कुछ दूर तक बेतवा

नदी फिर एक बार ग्वालियर और उत्तर प्रदेश (झांसी जिले) के वीच में प्राकृतिक सीमा वनाती है। झांसी के दक्षिण में मध्य प्रदेश का सागर जिला है। इसके आगे विन्ध्य प्रदेश के पन्ना, रीवां आदि भाग उत्तर प्रदेश की दक्षिणी (राजनैतिक) सीमा वनाते हैं। केवल कुछ मील तक उत्तर प्रदेश के दक्षिणी-पूर्वी सिरे पर छोटा नागपुर है। पूर्व की ओर सव कहीं विहार प्रदेश है। उस ओर प्राकृतिक सीमा का प्राय: अभाव है। संगम से पहले केवल कुछ मील तक घाघरा और गङ्गा नदियां प्राकृतिक सीमा वनाती हैं और वलिया जिले को विहार के छपरा और आरा जिलों से अलग करती हैं।

उत्तर प्रदेश निम्न प्रधान प्राकृतिक भागों में वटा हुआ है —

१-**हिमालय का पर्वतीय प्रदेश**—इस प्रदेश में टेहरी, गढ़वाल अल्मोड़ा नैनीताल तथा देहरादून के जिले शामिल हैं। नैनीताल जिले की टोंस (यमुना की सहायक) और सारदा के वीच में इस प्रदेश की चौड़ाई १८० मील और क्षेत्रफल ७५०० वर्गमील है। इस प्रदेश सव से वाहरी (दक्षिणी) भाग में मैदान से मिली हुई सिवालिक की अधिक से अधिक ऊँचाई समुद्र तल से केवल २,००० फुट है। जव हम रुड़की से हरद्वार को जाते हैं। तो हमारे मार्ग में सिवालिक की पहाड़ी पड़ती है। सिवालिक के आगे दून नाम की चपटी घाटियां हैं, जो सिवालिक की पहाड़ियों को हिमालय की सवसे वाहरी श्रेणी से अलग करती हैं। दून का प्रधान नगर देहरादून है। यहीं सव प्रसिद्ध फारेस्ट कालेज और मिलिटरी कालेज है। समीपवर्ती मैदान की अपेक्षा सिवालिक और दून में वर्षा अधिक है। पर तापक्रम में कोई विशेष अन्तर नहीं है। इसलिये घाटियों के अनुकूल ढालों पर मैदान की उपज है। दूसरे भागों की वनस्पति उष्ण कटिवन्ध से मिलती है। पर वाहरी श्रेणी पर चढ़ते ही अन्तर मालूम पड़ने लगता है। यह वाहरी श्रेणी

दून के ऊपर एकदम ऊँची खड़ी हुई है। आठ दस मील की यात्रा में हम समुद्रतल से पांच छः हजार फुट ऊंचे चढ़ जाते हैं। उष्ण कटिबन्ध की वनस्पति पीछे छूट जाती है। इसमें सुई के समान पत्तीवाले ऊँचे ऊंचे देवदारू के पेड़ विशेष उल्लेनीय है। यहां ग्रीष्म ऋतु में भी इतना कम तापक्रम रहता है कि गरम कपड़े पहनने पड़ते हैं। इधर लोग रात को जून के महीने में भी दरवाजा बन्द करके घरों के अन्दर सोते हैं। और आग तापते हैं। पहाड़ी धाराओं का पानी इतना ठंडा रहता है कि कोई अलग बरफ इस्तेमाल करने का नाम भी नहीं लेता है। मानसून के दिनों मे यहां प्रबल वर्षा होती है। सरदी के दिनों बरफ पड़ती है। इधर बन बहुत हैं। पर उपजाऊ जमीन के प्रायः अभाव से खेती कम होती है। पहाड़ी ढालों पर यहां के छोटे छोटे खेत जीने के समान दिखाई देते हैं। खेतों में बड़ा परिश्रम करना पड़ता है। फिर भी उनमें पत्थरों के टुकड़े भरे रहते हैं। इस से इधर आबादी कम है। पर लंधौर, मंसूरी, नैनीताल, चकराता, रानीखेत आदि स्थानों में मैदान के धनी लोग गरमी विताने के लिये आ जाते हैं। टेहरी और अलमोड़ा पुराने नगर हैं। बाहरी श्रेणी को पार करने के बाद हिमालय की प्रधान श्रेणी मिलती है। इसी के विशाल हिमागरों में गङ्गा और यमुना के स्रोत हैं। इसकी औसत ऊँचाई २०,००० फुट है। त्रिशूल और नन्दादेवी आदि चोटियों की ऊँचाई २२ हजार से २६ हजार फुट तक हे। यहां सदा बरफ बनी रहती है।

वनस्पति का प्रायः अभाव है। इसी से स्थाई आबादी का भी प्रायः अभाव हे। यात्री लोग केवल ग्रीष्म ऋतु में आते हैं। समस्त पहाड़ी प्रदेश का ढाल उत्तर-पूर्व से दक्षिण की ओर है।

२–तराई या हिमालय की तलहटी—पर्वतीय प्रदेश के नीचे तराई की पतली पेटी है। इस नीचे के प्रदेश की जमीन बड़ी उपजाऊ है। इसी से यहां पानी और दलदल की अधिकता है। इसीसे

गङ्गा का पश्चिमी मैदान—उत्तर प्रदेश का आधे से अधिक भाग उस बारीक मिट्टी से बना है जिसे गंगा और उसकी सहायक नदियों ने अपनी बाढ़ के साथ लाकर यहां बिछा दिया है। यह काम लाखों वर्षों से हो रहा है। इसलिये काँप की तहें बहुत मोटी हो गई हैं। मैदान के सारे प्रदेश में पत्थर या पहाड़ का नाम नहीं है। ढाल कम होने के कारण यहां नदियां बहुत धीरे धीरे बहती हैं। इससे ये सिंचाई करने और नाव चलाने के लिये बड़ी उपयोगी हो गई हैं। अधिक ऊँचा नीचा न होने पर भी मैदान बिलकुल समतल नहीं है। इसका ढाल प्राय: दक्षिण-पूर्व की ओर है। लेकिन उत्तर-पूर्व से दक्षिण की ओर ढाल इतना अधिक नहीं है, जितना कि पश्चिम से पूर्व की ओर है। इसलिये मैदान की नदियां प्राय: पूर्व की ओर बहती हैं। अगर हम उत्तर प्रदेश के किसी दक्षिणी स्थान से उत्तरी स्थान को जावें तो हमको थोड़ी-थोड़ी दूर पर कई समान्तर नदियां पार करनी पड़ेगी। इनके द्वाबा की ऊँचाई में कोई भारी अन्तर नहीं है। पर द्वाबा की ऊँची 'बांगर' भूमि और नदी के आस-पास वाली 'खादर' जमीन में बड़ा अन्तर है। बांगर भूमि को नदी ने बहुत पहले बनाया था। आरम्भ में बांगर भूमि नदी तल से अधिक ऊँची न थी। और बाढ़ आने पर पानी में डूब जाती थी। पर लाखों वर्ष बहने के बाद नदी ने इस जमीन को खोद कर अपनी तली नीची कर ली। इसलिये अब नदी की बाढ़ का पानी भी बांगर भूमि पर नहीं पहुंच पाता है। इसलिये अब बांगर के खेतों में कुयें या नहर से सिंचाई होती है। खादर की नीची जमीन अधिक

उपजाऊ नहीं है। कहीं कहीं इतनी बालू होती है कि इसमें खेती नहीं
हो सकती है। पर वह जमीन नदी की वर्तमान धारा से दूर नहीं
होती है और दो ऊंचे किनारों के बीच घिरी होती है। इसलिये बाढ़
आने पर खादर की जमीन प्रायः हर साल नदी के पानी से डूब जाती
है। बाढ़ के घट जाने पर इसमें खेती होती है और अलग सिंचाई
की जरूरत नहीं पड़ती है। इस जमीन में अक्सर एक ही फसल होती
है। खादर के कुछ भागों में केवल घास होती है, जहां ढोर चरते हैं।

अगर हम हवाई जहाज या किसी अधिक ऊंचे स्थान से मैदान पर
नजर डालें तो यह सब का सब मैदान खेतों, बागों और छोटे-
छोटे गांवों से ढका हुआ दिखाई देगा। जलवायु और उपज के
अनुसार यह मैदान दो भागों में बांटा जा सकता है। इलाहाबाद के
पश्चिम में ४० इंच से कम वर्षा होती है। इसके दक्षिण-पश्चिम में
कुछ भाग ऐसे हैं जहां वर्षा के अभाव से उनके ऊपर रेत हो गया है।
इसलिये इलाहाबाद के पश्चिम में उत्तर-प्रदेश के मैदान को सींचने
के लिये बड़ी बड़ी नहरें निकाली गई हैं। पूर्वी यमुना नहर बादशाही
बाग (जिला सहारनपुर) और दिल्ली के बीच यमुना के बायें किनारे
की ओर सहारनपुर, मुजफ्फरपुर नगर और मेरठ जिलों में सिंचाई के
काम आती है। दिल्ली के नीचे दाहिने किनारे के प्रदेश में आगरा
नहर से सिंचाई होती है। गंगा और यमुना के द्वारा के सबसे बड़े
भाग की सिंचाई हरिद्वार से निकलने वाली ऊपरी गंगा नहर और
नरोरा से निकलने वाली निचली गंगा नहर के द्वारा होती है। हाल
में रुहेलखंड और अवध के जिलों को सींचने के लिये ब्रह्मदेव और
लखनऊ के बीच में सारदा निकाली गई है। जिन भागों में नहर का
पानी नहीं पहुंचता है वहां कुओं से सिंचाई होती है। इससे किसान
अधिकतर गेहूं, जौ, मटर, चना, तम्बाकू, आलू, ईख और कपास
उगाते हैं। निर्जल जमीन में मकई ज्वार और बाजरा होता है।
अधिक सजल कछारी भागों में चावल भी होता है। इलाहाबाद के

पूर्व में सब कहीं ४० इंच से अधिक वर्षा होती है। इसलिये इस ओर सिंचाई की बहुत कम आवश्यकता है। हवा भी बहुत नम है। इस ओर गेहूँ की अपेक्षा चावल अधिक होता है।

इस प्रदेश की जनसंख्या बहुत कम है। प्रति वर्गमील में प्रायः ३०० मनुष्य रहते हैं। बनारस जिले में प्रति वर्गमील में १,००० से अधिक मनुष्य रहते हैं। पश्चिम की ओर जन-संख्या कम है। यदि नहरों द्वारा सिंचाई का प्रबन्ध न होता तो उस ओर जन-संख्या और भी कम होती। यहां ८७ फी सदी हिन्दू, ११ फी सदी मुसलमान और २ फी सदी ईसाई आदि अन्य मतावलम्बी लोग रहते हैं। यहां के लोगों की भाषा हिन्दी या हिन्दुस्तानी (उर्दू मिली हुई हिन्दी) है। लोगों का प्रधान पेशा खेती है। इसलिये अधिकतर लोग छोटे-छोटे गांवों में रहते हैं। पत्थर का अभाव होने से वे अपने कच्चे घर मिट्टी से बनाते हैं। इसी से प्रायः हर गांव में एक, दो या अधिक तालाब मिलते हैं जिनसे मलेरिया भी फैलती है। इस प्रदेश ने भारत के इतिहास पर गहरा प्रभाव डाला गया है। अति प्राचीन समय में यह मध्य देश नाम से प्रसिद्ध था। यहां बहुत से प्राचीन और नवीन शहर हैं। प्रायः सभी बड़े शहर गङ्गा या गंगा की किसी सहायक नदी के किनारे बसे हैं। हरद्वार, फरुखाबाद, कन्नौज, कानपुर, इलाहाबाद, (प्रयाग), मिर्जापुर, बनारस (काशी), गाजीपुर और बलिया गंगा के किनारे हैं। मथुरा, आगरा, इटावा, काल्पी और हमीरपुर यमुना के किनारे हैं। मुरादाबाद और बरेली रामगंगा के किनारे हैं। गोमती के किनारे लखनऊ, सुल्तानपुर और जौनपुर या यमदग्निपुर नगर हैं। फैजाबाद और अयोध्या सरयू के किनारे और गोरखपुर राप्ती के किनारे बसा है। गंगा और यमुना के द्वाबा में नदी तट से दूर बसे हुये प्रसिद्ध शहर सहारनपुर, मेरठ और अलीगढ़ हैं।

बनारस—(काशी) यह शहर गंगा के बायें किनारे पर ऐसे स्थान पर बसा है जहां गंगा उत्तर की ओर मुड़ती है। इससे चन्द्राकार शहर

के मन्दिरों, घाटों और घरों पर सूर्योदय की किरणें सामने आती हैं। यह शहर प्राचीन समय से हिन्दू सभ्यता का केन्द्र रहा है। यहीं हिन्दू विश्वविद्यालय बना है। पास ही सारनाथ में बौद्ध भग्नावशेष हैं। बना-
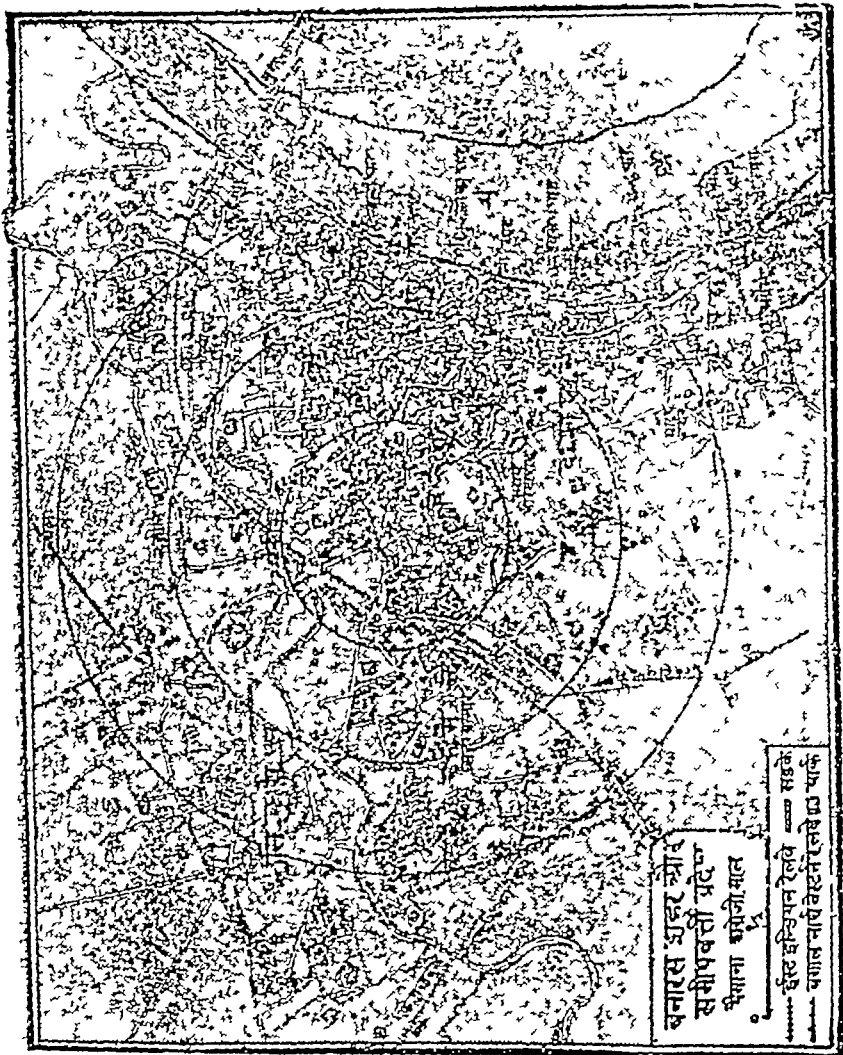
७३—बनारस की स्थिति

रस रेशमी कपड़े, शाल, (किमखाब) और पीतल के बरतनों के लिये प्रसिद्ध है। यहां मखमली कपड़े पर सोने और चांदी के तार का काम भी अच्छा होता है।

इलाहाबाद—(प्रयाग) ५६ गङ्गा और यमुना के संगम पर एक दूसरा तीर्थ स्थान है। सगम के पास ही यहां का प्रसिद्ध किला है। इलाहाबाद की स्थिति न केवल उत्तर प्रदेश में वरन् प्रायः सारे हिन्दुस्तान में केन्द्र-वर्ती है। यहां कई रेलवे लाईनो का जङ्कशन और विद्या का केन्द्र है। पास ही बमरौली में हवाई जहाज का स्टेशन बना है। यमुना के उस पार नैनी में शक्कर और शीशे का कारखाना है। छेउकी में फौजी डिपो है।
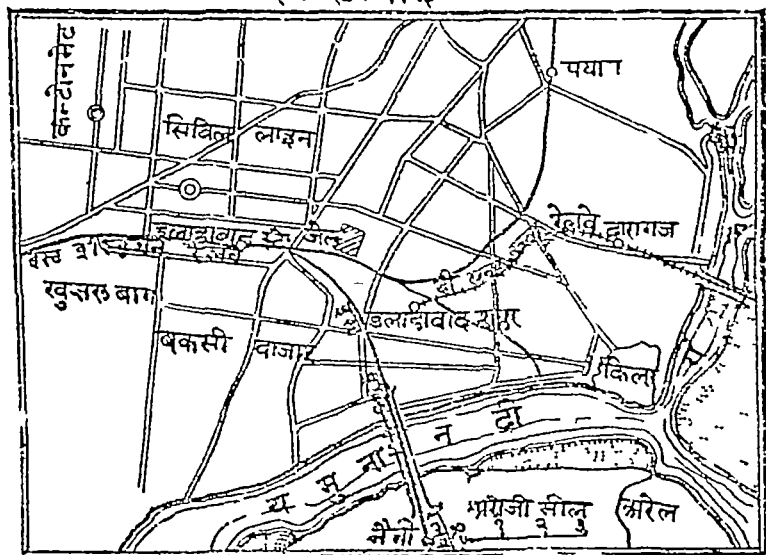
७४—इलाहाबाद शहर की स्थिति

कानपुर—यह गंगा के दाहिने किनारे पर एक नया, पर बहुत ही उन्नतिशील नगर है। उपजाऊ मैदान के मध्य में स्थित होने और कई रेलो का जङ्कशन होने से यहा कच्चा माल सुभीते से आ सकता है। ईस्ट इण्डियन रेलवे के मार्ग में रानी गंज का कोयला और विदेशी मशीनें भी सुगमता से आ जाती है। इसी से यहा कपास, ऊन और चमड़े के बड़े बड़े कारखाने है। फौजी डिपो भी है।

लखनऊ—यह शहर गोमती नदी के दाहिने किनारे पर कुछ ऊँची जमीन पर वसा है। पहले यहां अवध के नवावों की राजधानी थी। अब कुछ दिनों से यह शहर उत्तर प्रदेश की प्राय: राजधानी वन रहा है। पुरानी इमारतें वहुत अच्छी नहीं हैं। पर नई सरकारी इमारतों
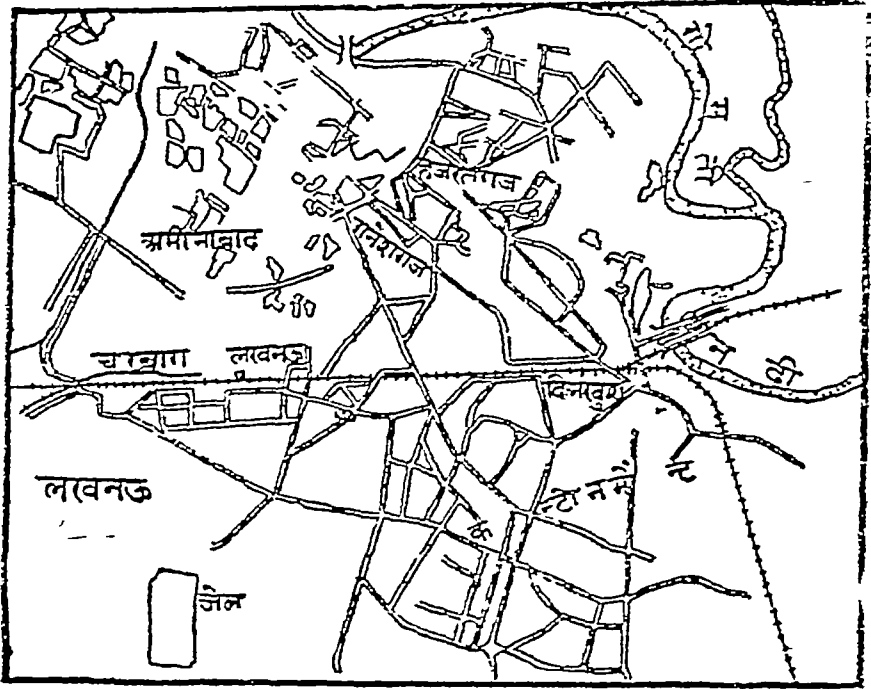
७५—लखनऊ शहर की स्थिति

और सड़कों पर वहुत खर्च किया जा रहा है। पुरानी दस्तकारी में चिकन का काम अव भी अच्छा होता है। तराई की सवाई और दैव घास से यहां की मिलों में कागज वनाया जाता है। यहां पर कई रेलवे लाइनें मिलती हैं।

आगरा—यह यमुना के दाहिने किनारे पर रेगिस्तान और कछारी मैदान के संगम पर वसा है। यह नगर कई वर्षो तक शक्तिशाली मुगल साम्राज्य की राजधानी रहा। इसलिये यहां ताजमहल, मोती मस्जिद आदि कई जगत्प्रसिद्ध इमारतें हैं। आजकल भी यहां संगमरमर

कानपुर
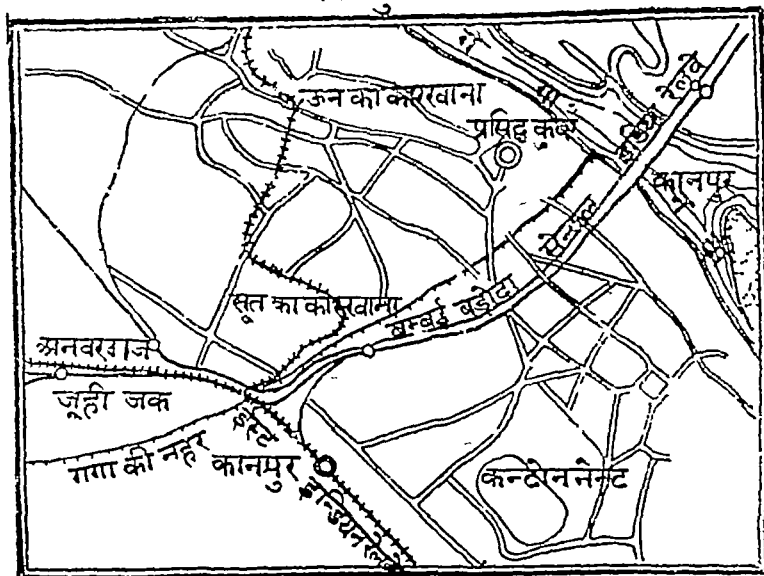
७६—कानपुर शहर की स्थिति
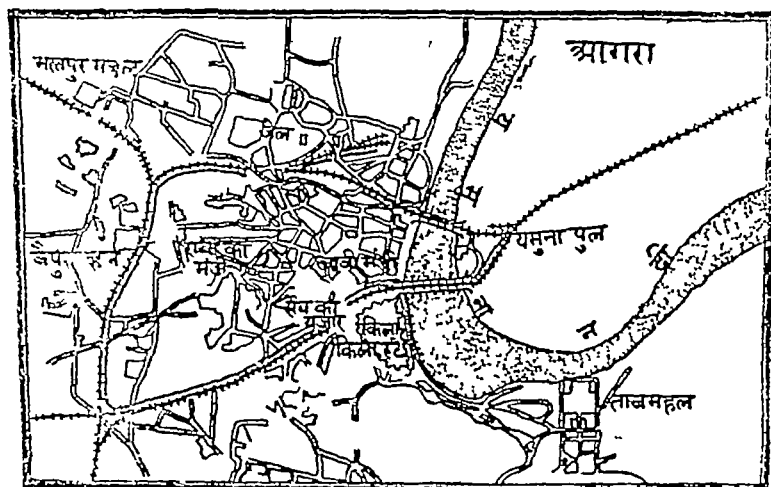
७७—आगरा शहर की स्थिति

और दरी का अच्छा काम होता है। पास ही दयालबाग में फाउन्टेनपेन आदि आधुनिक आवश्यकता की चीजे बनने लगी हैं।
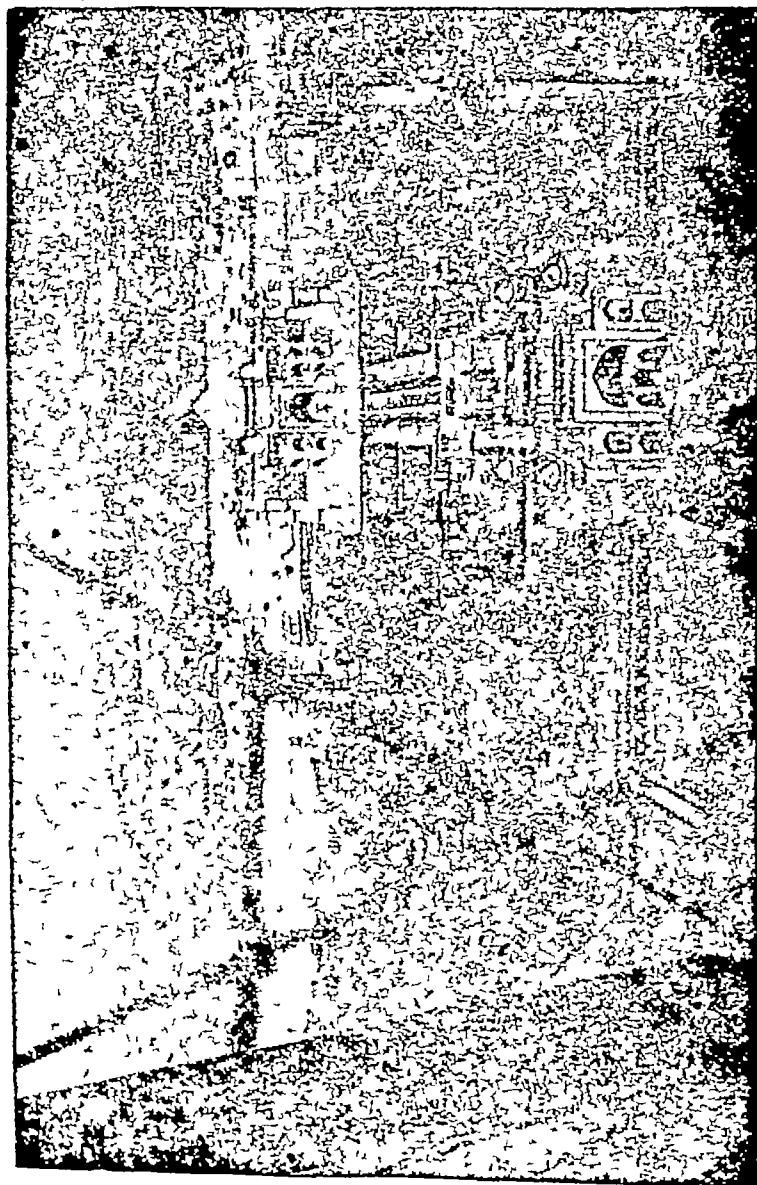
७८—हवाई जहाज से ताजमहल का दृश्य

दूसरे शहर—मुरादाबाद पीतल और कलई के बरतनों के लिये प्रसिद्ध है। फरुखाबाद में परदे अच्छे छपते हैं। बरेली में मेज,

उत्तर प्रदेश के उद्योग धन्धे—हमारा प्रान्त कृषि-प्रधान है। इसी से हमारे प्रान्त की कांग्रेस-सरकार ने किसानों की दशा सुधारने की ओर पूरा ध्यान दिया है। किसानों को अच्छे बीज देने के लिये जगह-जगह पर प्रबन्ध किया गया है। कई जगह (बुलन्दशहर, नैनी, शाहजहांपुर आदि में) माडल फार्म खुले हुये हैं। फिर भी हमारे प्रान्त की खेती में बहुत सुधार की आवश्यकता है। प्रान्त की जन-संख्या धीरे धीरे बढ़ रही है। यदि इसी अनुपात से हमारी खेती की उपज न बढ़ी तो यहां के लोगों को भयानक स्थिति का सामना करना पड़ेगा। खेतों की उपज बढ़ाने के साथ साथ इस प्रान्त में कला-कौशल बढ़ाने की भी आवश्यकता है। इससे बहुत से कारीगरों को काम मिल सकेगा और बहुत सा रुपया जो इस समय विदेश चला जाता है यहीं ठहरेगा और इससे प्रान्त की सम्पत्ति बढ़ेगी।

बड़े पैमाने के कारखाने हमारे प्रान्त में बहुत कम हैं। कारखानों के लिये प्रान्त के मैदानी भाग के प्रायः मध्य में कानपुर नगर की स्थिति गंगा तट पर बहुत ही अनुकूल है। यहां रेल-मार्ग से मशीन और बाहर (बङ्गाल) से कोयला आ जाता है। चमड़े के कारखानों के लिये दक्षिणी पठारी भाग (बांदा, हमीरपुर, झांसी) और पश्चिमी भाग से चमड़ा आ जाता है। ऊनी कारखानों के लिये पहाड़ी भाग से ऊन आती है। सूती कारखानों के लिये कपास भी पड़ोस में मिल जाती है। शक्कर के कारखानों के लिये गन्ना पड़ोस में उगता है। गुड़ उत्तरी जिलों से आता है। कागज का कारखाना लखनऊ में है। यहां उत्तर के तराई प्रदेश से घास आती है। गोमती का पानी इस काम के लिये बड़ा उपयोगी है।

अफीम का सरकारी कारखाना गाजीपुर में है। सारे उत्तर प्रदेश की अफीम और पोस्ते की पत्तियां यहां आती हैं। अन्दर की गोदाम में २५,००० मन अफीम की पत्तियां और २४ लाख अफीम के सकोरे आ सकते हैं। सबसे भीतर के भाग में अफीम के १० हजार घड़े

रक्खे जा सकते हैं। यहां सब अफीम जांची जाती है और उसकी टिकियों पर मुहर लगाई जाती है।

उझानी, रामपुर, हरदोई और हाथरस में सूती कपड़ा बुनने और कपास ओटने के कारखाने हैं। पश्चिमी भाग में रुहेलखण्ड और अवध के उतरी भाग में मैदान की जमीन और जलवायु गन्ने की उपज के लिये अच्छी है। बहुत से स्थानों में गन्ना पेरने और गुड़ बनाने का काम पुराने खंडसारी ढंग से होता है। इसको उन्नत करने के लिये मुरदाबाद के बिलारा नगर में प्रयोग हो रहा है। मेरठ मुजफ्फरनगर, पीलीभीति, खीरी, बस्ती और कानपुर में शक्कर बनाने के कारखाने हैं। नैनी और झूसी (इलाहाबाद में) भी कारखाना रहा है।

घरेलू धन्धे उत्तर प्रदेश के बहुत स्थानों में हैं। गावों में बनी हुई चीजों को बेचने के लिये उत्तर प्रदेश की सरकार के हर जिले में स्टोर खोलने का निश्चय किया है। कारीगरी की थोड़ी बहुत चीजें प्रायः हर जिले में बनती हैं। लेकिन पहाड़ी भाग में बांस की टोकरी, लकड़ी की छड़ी और डंडे बनाने की सुविधा है। यहां मोम, राल आदि इकट्ठा करने की सुविधा है। देहरादून के फारेस्ट कालेज में वन सम्बन्धी सभी चीजों का एक सग्रहालय है। पहाड़ी भाग में अच्छी ऊन मिलने से ऊनी कपड़े और कम्बल भी बुने जाते हैं। पठारी भाग की भेड़ों की ऊन कुछ मोटी होती है। इसी से यहां के कम्बल कुछ मोटे होते हैं। बांदा के पड़ोस में केन नदी की तली में कुछ ऐसे पत्थर मिलते हैं जिनके भीतर पत्ती और प्रानी के निशान रहते हैं। इनको काट कर बढ़िया बटन और दूसरी चीजे बनाई जाती हैं। पठारी प्रदेश में ही मकान बनाने का पत्थर निकालने, पत्थर की गिट्टी तोड़ने और चक्की, कूँड़ी, प्याले आदि बनाने का काम होता है। इससे खिलौने (ताजमहल के नमूने, केलेडर) बनते हैं। कांच का काम कई स्थानों में होता है। बहजोई (मुरादाबाद) में लालटीन की चिमनी, गिलास

आदि कई चीजें बनती है। फीरोजाबाद में कांच की चूड़ियां बनती हैं। जलेसर एटा (एटा) की मिल में ब्लाक (बड़ा शीशा) बनता है। नैनी का (शीशे का) कारखाना शीशियां बनाता है। सोरों के पास फादिर वारी गांव में कच्ची गङ्गाजली बनती हैं। चूड़ियां बनाने का काम मनिहार लोग कई स्थानों में करते हैं।

पश्चिम के जिन जिलों में लोनी मिट्टी मिलती है वहीं लोनिया लोग इसे इकट्ठा करके 'शोरा बनाते हैं। जुलाहे लोग जगह जगह पर (गाढ़ा या गजी) मोटा कपड़ा बुनते हैं। लेकिन सूत कातने की प्रथा प्राय: उठ जाने से जुलाहे लोग प्राय: बाहर का सूत मोल ले लेते हैं। मेरठ, हापुड़, अकबरपुर में अखिल भारतवर्षीय चर्खा संघ की ओर से हाथ के कते हुये सूत से खद्दर तैयार किया जाता है। ठठेरे लोग कई स्थानों में पीतल और कांस के बर्तन बनाते हैं। हाथरस, मुरादाबाद फर्रुखाबाद और मिर्ज़ापुर में यह काम बड़े पैमाने पर होता है। मुरादाबाद में पीतल के बर्तनों पर सफेद कलई भी होती है। लोहे का थोड़ा बहुत काम प्राय: सभी गांवों में होता है। गदर के पहले जब सरकार की ओर से हथियार रखने की मनाही नहीं थी, जगह जगह पर तलवार बन्दूक और भाला बनाने का का काम होता था, आज-कल खुरपी, हँसिया और हल का फाल पीटने और तेज करने का काम कई स्थानों में होता है। मेरठ में कैंची, अलीगढ़ में ताले, हाथरस में चाकू छूरे, दिलग्राम (हरदोई) में सरौते औ गुप्ती बनाने का काम होता है।

मशीनों के युग के पहले अपने प्रदेश में पुस्तकें भोज पत्र (पहाड़ी पेड़ की रेशेदार छाल) और हाथ के बने हुये कागज पर लिखी जाती थीं। मशीन के बने हुये सस्ते कागज की भरमार से हाथ का बना हुआ मोटा मजबूत लेकिन कुछ महगा कागज न टिक सका। इस समय कालपी, मथुरा और कागजी सराय (सम्भलपुर) में हाथ से कागज बनाने का काम होता है। चमड़े का काम भी उत्तर प्रदेश के कई स्थानों में होता है। गाय, बैल, भैंस आदि जानवर

सब कही पाले जाते हैं। कुछ अपनी मौत से मर जाते हैं, कुछ जानवर गोश्त के लिये मारे जाते हैं। उनके चमड़े से जूता, मोट (पानी खीचने का मशक) आदि कई चीजें वनती हैं। सहारनपुर में इसके ट्रंक, बन्दूक रखने का खोल और गोली रखने की पेटी बनाई जाती है। आगरे (दयालवाग) मे जूते अच्छे वनाये जाते हैं। मिर्जापुर में ऊँट के चमड़े से तेल रखने की शीशी और कुप्पिया वनाई जाती हैं। अपने प्रदेश की मिट्टी अच्छी है। इससे कुम्हार लोग घड़े, सुराही, प्याले और हाड़ी आदि वनाते हैं। वड़े वड़े शहरों और कस्वों के पास ईंट वनाने के भट्टे हैं। पूर्वी भाग मे वर्षा की अधिकता होने से घरों की छतें ढालू रक्खी जाती हैं। इनको छाने के लिये कई स्थानों में खपरैल वनाये जाते हैं। चुनार के पास मिट्टी इतनी अच्छी है और यहा के कारीगर इस प्रकार का लेप लगाते हैं कि यहां के वने हुये मिट्टी के वर्तन घी, अचार आदि रखने के लिये वड़े अच्छे रहते हैं। इनका रंग कुछ काला रहता है। लेकिन उनमें पानी नहीं भिदता है। इत्र, सुगन्धित तेल और गुलावजल वनाने का काम कन्नौज, जौनपुर और गाजीपुर में होता है।

थोड़ा वहुत लकड़ी का काम प्रदेश भर में होता है। लेकिन सहारनपुर, नगीना और नजीवावाद में लकड़ी की नक्काशी का का काम वहुत होता है। वरेली में लकड़ी इतनी अच्छी और सस्ती मिल जाती है कि कारीगर तागा, कुर्सी, मेज, आलमारी और दूसरी चीजें वनाते हैं। यहीं दियासलाई का भी कारखाना खुला था। अमरोहा के बढ़ई वैलगाड़िया वनाते हैं। इन्हें वे गढ़मुक्तेश्वर के मेले में बेचते हैं।

चिकन और गोटे का काम लखनऊ और वनारस में अच्छा होता है। वनारस, मऊआयमा (इलाहावाद) और शाहजहांपुर में रेशम वुनने का काम होता है। फरुखावाद के साध लोग

परदों पर बेल-बूटे सहित इतनी बढ़िया छपाई करते हैं कि इनके बनाये हुये परदे योरुप और अमरीका में बिकने जाते हैं।

मुजफ्फरनगर और मेरठ जिले के कई गांवों में गड़रिये लोग बढ़िया कम्बल बनाते हैं। मोटे कम्बल बहुत स्थानों में बनते हैं। मिर्जापुर की बनी हुई कालीन दूर दूर बिकने जाती है।

अलीगढ़ में फेल्ट की टोपियां बनाई जाती हैं। इनके लिये ऊन बाहर से आती है। रुड़की में टोप बनाये जाते हैं। इनको हल्का रखने के लिये इनके भीतर ज्वार का भुसा भर दिया जाता है।

सहारनपुर और रुड़की में लोहे के तौलने के बाट बेलेन्स और फाटक बनते हैं। पीतल की मूर्तियां मथुरा में अच्छी बनती है। लकड़ी की कंघियां कई जगह बनती हैं। भैंस के सींग की कंघिया सम्भल (मुरादाबाद) में बनती हैं। रंगाई और बुनाई का काम सिखाने के लिये कानपुर और बनारस में स्कूल हैं। जेलों में कैदियों को दरी, निवाड़, चटाई आदि बुनने का काम सिखाने का प्रवन्ध है। उनकी बनी हुई चीजें बड़ी अच्छी और मजबूत रहती हैं।

हमारे प्रदेश के मैदान का पूर्वी भाग नीचा है। यह अक्सर बाढ़ से पीड़ित रहता है। पश्चिमी भाग अधिक ऊंचा और खुश्क है। इसमें सिंचाई की जरूरत पड़ती है। यहां सिंचाई की नई नहरें हैं। इनमें गङ्गा नहर से बहादुराबाद से पास बिजली तैयार करने का प्रवन्ध है। यह बिजली तार द्वारा दूर दूर तक पहुंचाई जाती है। इसके पश्चिमी भागों में ट्यूब वेल खोदने और उनसे पानी खींचने का काम लिया जाता है। और भी कई स्थानों में बिजली तैयार की जाती है। यदि बिजली अधिक सस्ती हो गई तो प्रदेश में कई प्रकार के कारवार खुल जाने की आशा है, प्रान्तीय सरकार ने कारबार में लगाने के लिये कई कामों को सीखने के लिये छात्रवृत्तियां देने और काम सीखे हुये लोगों को छोटे मोटे कारवार चलाने के लिये धन से सहायता देने का प्रवन्ध किया है।

उन्नीसवाँ अध्याय

पूर्वी पंजाब

जब साम्प्रदायिकता के आधार पर भारत का विभाजन हुआ, तभी उसी पर आधार पंजाब के भी दो खंड कर दिये गये। पूर्वी पंजाब में मुसलमान अल्प संख्या में थे। हिन्दुओं की इस भाग में प्रधानता थी। अतः यह प्रदेश भारतीय संघ में सम्मिलित हुआ। इस नवीन प्रदेश में निम्न जिले शामिल हैं:—

कर्नाल, रोहतक, गुरगांव, हिसार, फीरोजपुर, अम्बाला, लुधियाना, जालन्धर, अमृतसर, होशियारपुर, गुरदासपुर और कांगड़ा। इसी में पटियाला और पूर्वी पंजाब की रियासतें शामिल हैं।

विभाजन के पूर्व जो स्थिति अखंड भारत में सीमा प्रान्त की थी। वही स्थिति इस समय पूर्वी पंजाब की है। उसी की ओर से लूट मार और छोटी मोटी मुठभेड़ के समाचार प्रायः आते रहते हैं। लगभग २०० मील तक पूर्वी पंजाब की कृत्रिम सीमा पश्चिमी पंजाब को छूती है। यहां कोई प्राकृतिक विभाजन नहीं है। दोनों ओर एक से ही गांव और खेत हैं। फीरोजपुर जिले में कुछ दूर तक सतलज नदी सीमा बनाती है। फिर यह सीमा उत्तर प्रदेश की ओर बढ़ती हुई रावी तट का अनुसरण करती है। अन्त में रावी नदी भारतीय भूमि में प्रवेश करती है और पाकिस्तानी सीमा उत्तर की ओर मुड़ कर काश्मीर के साथ साथ चलती है। पूरा पंजाब शेष और भारतीय राज्य से घिरा है। इसके उत्तर में काश्मीर राज्य और हिमालय प्रदेश, पूर्व में उत्तर प्रदेश, दक्षिण में राजस्थान के बीकानेर और जयपुर

के राज्य हैं। इस प्रदेश का ऊँचा भाग उत्तर में हिमालय की ओर है। दक्षिण की ओर भूमि क्रमशः नीची होती गई है। प्रदेश के बीच में सिन्ध और गङ्गा का जलविभाजक है। एक ओर का वर्षा-जल यमुना नदी में पहुँच कर गङ्गा और बङ्गाल की खाड़ी में जाता है। दूसरी ओर का वर्षा जल सतलज में पहुँचता है। यहां से वह फिर सिन्ध नदी के द्वारा अरब सागर में जाता है। इस प्रदेश का केवल थोड़ा सा भाग पहाड़ी है। शेष बड़ा भाग उपजाऊ बारीक मिट्टी का बना है। इस नवीन प्रदेश की सबसे बड़ी नदी सतलज या वेदकालीन शतुद्रु है। सतलज नदी हिमालय पहाड़ से उतर कर प्रदेश के प्रायः मध्य में बहती हुई पाकिस्तान की सीमा पर पहुँचती है। अन्त में यह पाकिस्तान की नदी हो जाती है। प्रदेश की दूसरी नदी का शेष मार्ग पूर्वी पंजाब में ही समाप्त हो जाता है। रावी नदी लगभग १०० मील तक पाकिस्तान और पूर्वी पंजाब के बीच में सीमा बनाती है। चनाब नदी केवल कुछ दूर तक कांगड़ा के पहाड़ी जिले में बहकर काश्मीर में चली जाती है। अन्त में यह पाकिस्तान की नदी हो जाती है। इस प्रकार पूर्वी पंजाब, पंचनद या पांच नदियों का देश नहीं रहा। प्राचीन समय की सरस्वती या घग्घर नदी केवल वर्षाऋतु में बहती है। शेष महीनो में सूखी पड़ी रहती है।

जलवायु—पूर्वी पंजाब की जलवायु कुछ अन्शों में पश्चिमी उत्तर प्रदेश के समान है। दिन और रात के तापक्रम में भारी अन्तर रहता है। सरदी की ऋतु ठंडी और गरमी की ऋतु अधिक गरम होती है।

पहाड़ से प्रायः १०० मील की दूरी तक काफी (२५ से ३० इञ्च तक) पानी बरस जाता है। अधिकतर वर्षा दक्षिणी-पश्चिमी मानसून से होती है। जनवरी और फरवरी मास में भूमध्य सागर की ओर से आने वाले तूफान कुछ वर्षा कर देते हैं। पहाड़ से अधिक

री पर हिसार और (फीरोजपुर) फाजिल्का जिलों में बहुत कम वर्षा होती है।
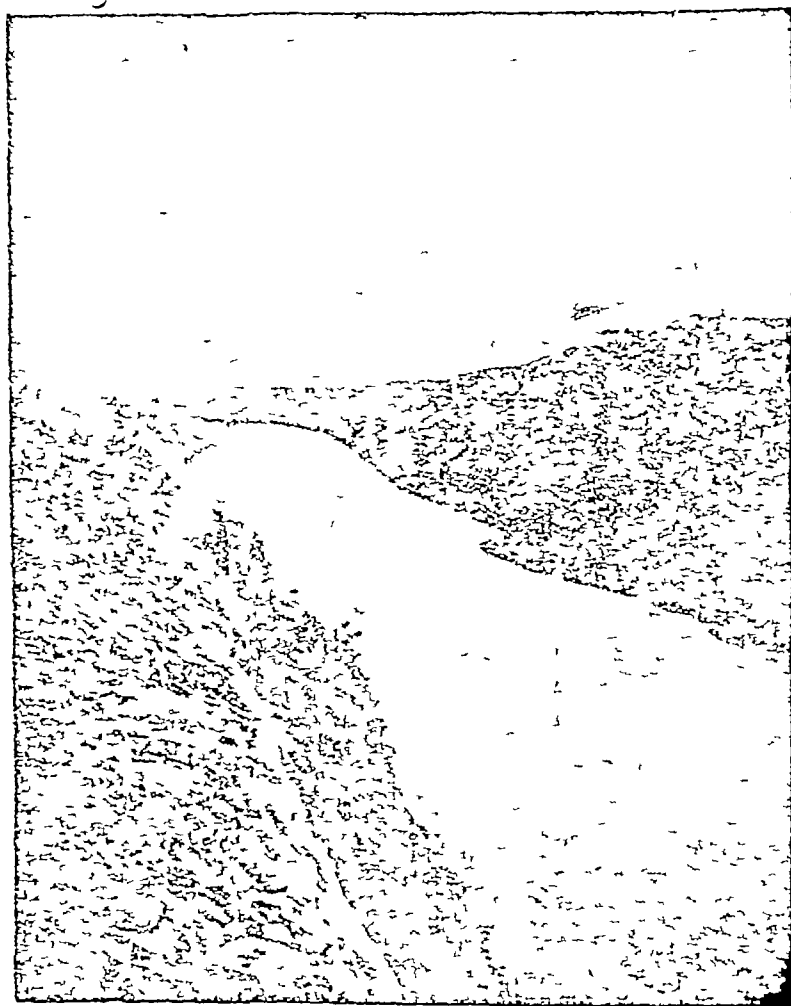
७६—मगलाघाट के ऊपर भेलम-नहर

नहरें—उत्तरी भाग के समीपवर्ती भागों में पर्याप्त वर्षा हो जाने से सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती है। शेष भाग में नदियों

और कुओं से तथा बीच वाले द्वाबा (मंझा) में नहरों से सिंचाई होती है।
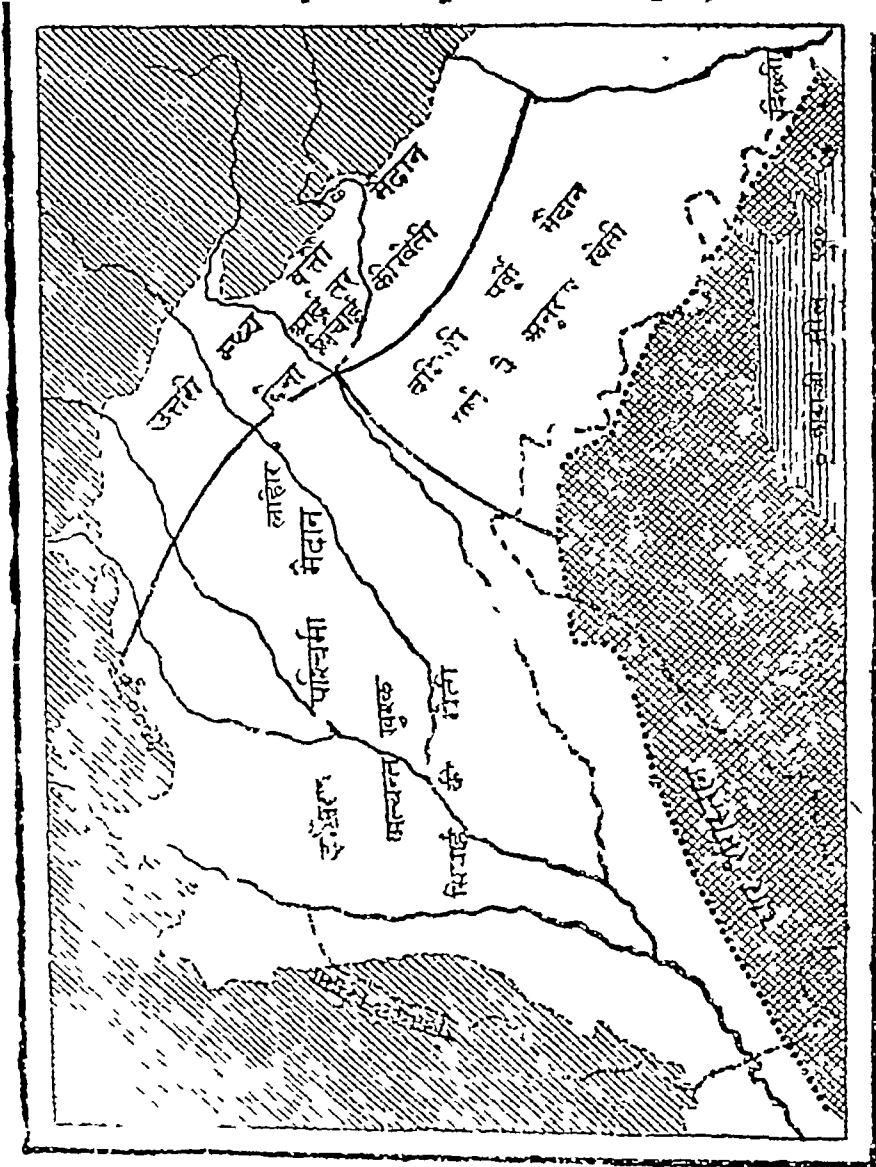
८०—पञ्जाब के प्राकृतिक विभाग

बारी अथवा व्यास और रावी नदियों के द्वाब में अपर बारी द्वाब और लोअर बारी द्वाब नहरें हैं। सतलज के दक्षिण-पूर्व में सरहिन्द

नहर से सिंचाई होती है। अधिक पूर्व की ओर यमुना नदी के पश्चिम में पश्चिमी यमुना से सिंचाई होती है। इन बड़ी बड़ी स्थायी नहरों के के अतिरिक्त बाढ़ के दिनों में छोटी छोटी अस्थायी नहरों से सिंचाई हो जाती है।

उपज—पंजाब के जिन पहाडी भागों में खेती नहीं होती है, वहां वन है। जहा दक्षिण-पश्चिम की ओर वर्षा कम होती है और सिंचाई की सुविधा नहीं है। वहा रेगिस्तान है। कुछ अच्छे भागों में ढोर पाले जाते है, पूर्वी पंजाब की खुश्क जलवायु गेहूँ के लिये बडी अच्छी है। गेहूँ यहा की प्रधान उपज है। वैसे यहा गन्ना, कपास, जौं, चना, ज्वार, बाजरा, मकई आदि कई फसलें होती है।

मनुष्य—पजाबी लोग डील डौल में लम्बे और मजबूत होते हैं। यहा पाकिस्तानी लूट मार और हत्याकाड होने से सीमा प्रदेश और पश्चिमी पजाब से प्राय. सभी हिन्दू और सिक्ख आ गये। फिर कुछ शरणार्थी भारत के दूसरे भागों में भेज दिये गये।

अधिकतर लोग खेती करते है। कुछ लोग रूई कातने और कपड़ा बुनने का काम करते हैं। हाथ से कपड़ा बुनने का काम प्रायः सब गांवों में होता है। कहीं कहीं कम्बल बुने जाते हैं। अमृतसर और लुधियाना में रेशमी कपड़े और शाल बुनने का काम होता है।

अमृतसर नगर—यह लाहौर से ३६ मील पूर्व की ओर सिक्खों का पवित्र तीर्थ है। सरोवर से घिरा हुआ सिक्ख स्वर्ण मन्दिर बड़ा सुहावना है। रुई, रेशम और शाल-दुशाला तैयार करने का काम होता है। इस नगर में स्थित जलिया वाला बाग के हत्याकांड ने १९२०

ई० में असहयोग आन्दोलन को देश भर में फैला दिया था। आजकल यह सीमा प्रान्तीय नगर हो जाने से इसका सैनिक महत्व बढ़ गया है।

अम्बाला—यह नया नगर अपने व्यापार के लिये प्रसिद्ध है। यहां वैज्ञानिक यन्त्र स्कूल के काम लिये बनते हैं।

जालन्धर—यह मार्गों का केन्द्र होने से इसका व्यापार बढ़ गया है। यहां शिक्षा भी बढ़ रही है। यह पूर्वी पंजाब का प्रधान नगर है। इसके पड़ोस में लुधियाना दूसरा बड़ा नगर है।

स्यालकोट—लाहौर के उत्तर में काश्मीर की सीमा पर स्यालकोट व्यापार और शिल्प का केन्द्र है। खेल का सामान बन कर यहां से दूर को जाता था। यहीं बाबा नानक की समाधि है। अब यह पाकिस्तान का अंग है।

पहाड़ी ढालों पर शिमला, कसौली, धर्मशाला, डलहंजी और मरी शहर गर्मियों में विशेष रूप से आबाद हो जाते हैं।

शिमला नगर—ग्रीष्म में न केवल पंजाब प्रदेश की वरन् भारत सरकार की राजधानी रहती है।

पहाड़ी भाग में छोटी छोटी २० रियासतें सतलज के पूर्व में और चम्बा आदि रियासतें सतलज के पश्चिम में स्थित हैं।

दक्षिण में पटियाला, नाभा, झींद और फरीदकोट की रियासतें अधिक बड़ी हैं।

दिल्ली—दिल्ली (जन-संख्या प्रायः ६ लाख) हिन्दुस्तान की राजधानी है। आजकल यह नगर और जिला (जन-संख्या ७ लाख ८० हजार क्षेत्रफल ४५० वर्गमील) पंजाब से अलग है। दिल्ली शहर की स्थिति बड़े महत्व की है। यहां कई स्थलमार्ग मिलते हैं। यहीं से करांची, पेशावर, मुरादाबाद, कलकत्ता और बम्बई को रेलवे

को बनाने और सजाने में ब्रिटिश सरकार ने करोड़ों रुपये खर्च किये थे।
काउन्सिल आफ स्टेट, एसेम्बिली (राष्ट्रपति) के विशाल भवन देखने
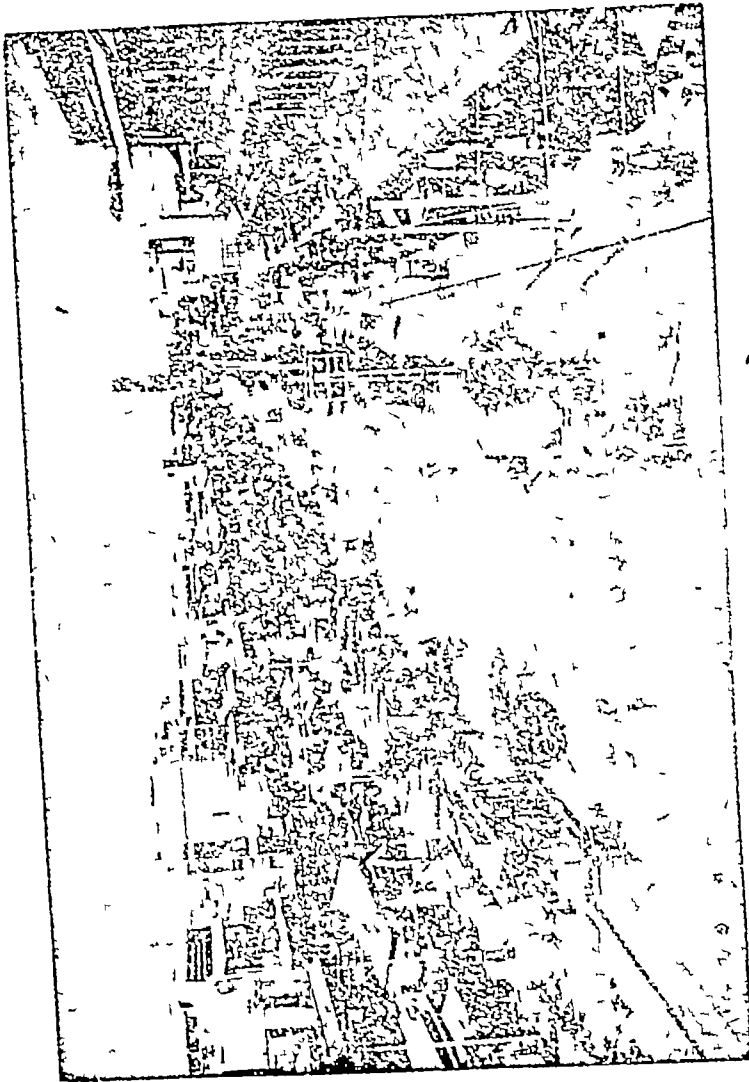
५८—दिल्ली का चान्दनी चौक

योग्य हैं। नई दिल्ली में ही एरोड्रोम (हवाई जहाज का स्टेशन)
है। यहां हवाई जहाज प्रति दिन प्रमुख नगरों को छूटते रहते हैं।
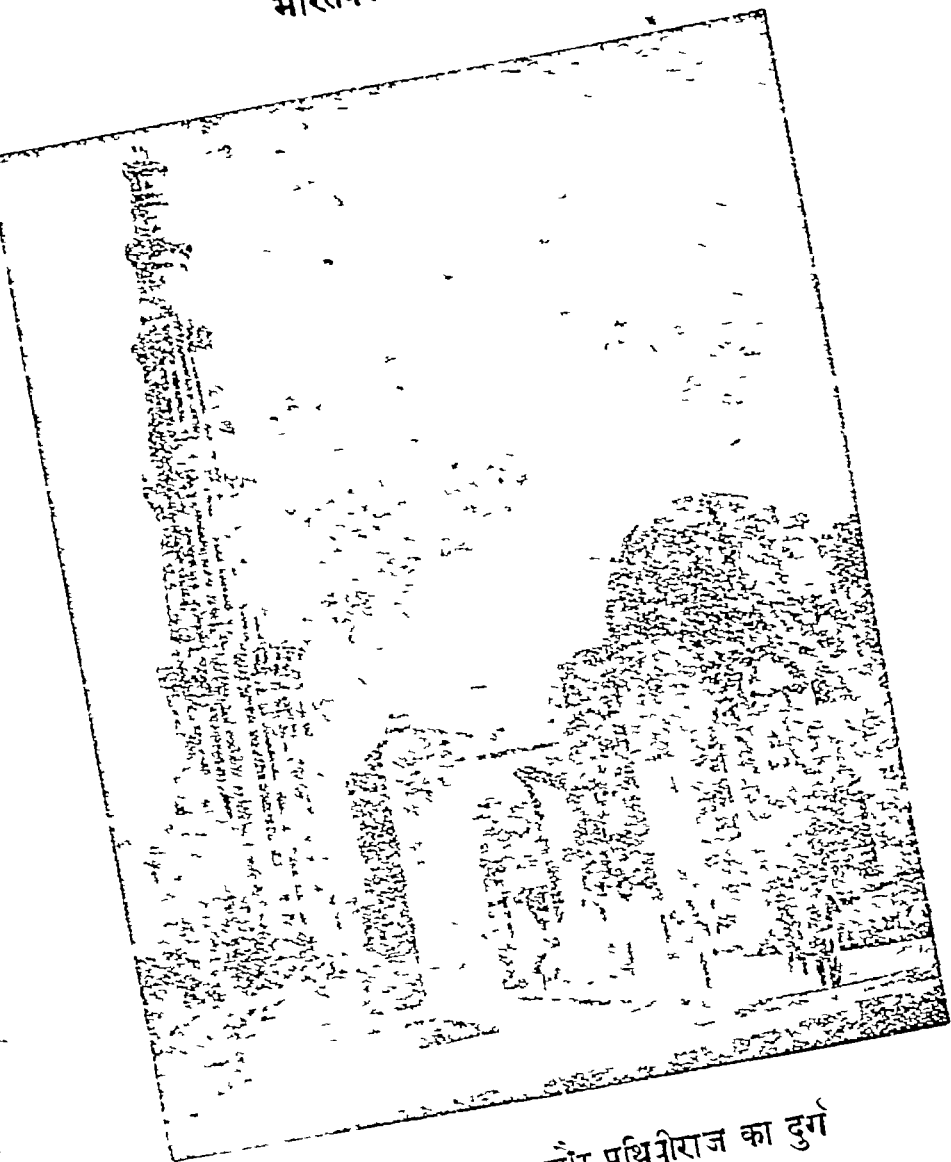
८:—कुतुब मीनार और पृथिवीराज का दुर्ग

बीसवाँ अध्याय

बम्बई प्रान्त

राजनैतिक दृष्टि से सिन्ध पाकिस्तान का अंग है। काठियावाड़ की ४४६ रियासतों ने मिलकर सौराष्ट्र बनाया है।

बम्बई प्रदेश (क्षेत्रफल १,५,२,००० वर्गमील, जन-संख्या ३ करोड़) हिन्दुस्तान भर में ब्रह्मा को छोड़ कर सबसे बड़ा प्रदेश है। यह प्रदेश उत्तर में सिन्ध प्रदेश (२८°५३ अक्षांश) से लेकर दक्षिण में कनारा जिले (१२°५३ अक्षांश तक १०२६ मील लम्बा, है। इसका सबसे अधिक पश्चिमी स्थान मुँज अन्तरीप ६६°४० पूर्वी देशान्तर में और सबसे अधिक पूर्वी स्थान ७६° ३० पूर्वी देशान्तर में स्थित है। पर इसका आकार ऐसा विषम है कि इसकी चौड़ाई कहीं भी २०० मील से अधिक नहीं है। सिन्ध प्रदेश के उत्तर में बिलोचिस्तान, उत्तर-पूर्व में पंजाब और राजपूताना है। बम्बई के पूर्व में मध्य भारत की रियासतें मध्य-प्रदेश, बरार और हैदराबाद की रियासतें हैं। बम्बई प्रदेश के दक्षिण में मैसूर राज्य और मद्रास का दक्षिणी कनारा जिला है। बम्बई प्रदेश के पश्चिम में सब कहीं (अरब) समुद्र है। नये शासन विधान के अनुसार सिन्ध पाकिस्तान का प्रदेश बन गया है।

बम्बई प्रदेश में तीन प्राकृतिक प्रदेश हैं:—

१—कच्छ, काठियावाड़, बड़ौदा और गुजरात।

२—पश्चिमी तट का आर्द्र प्रदेश जो पश्चिमी घाट और समुद्र के बीच में स्थित है।

३—दक्षिणी लावा या काली मिट्टी का प्रदेश जो पठार का ही अंग है।
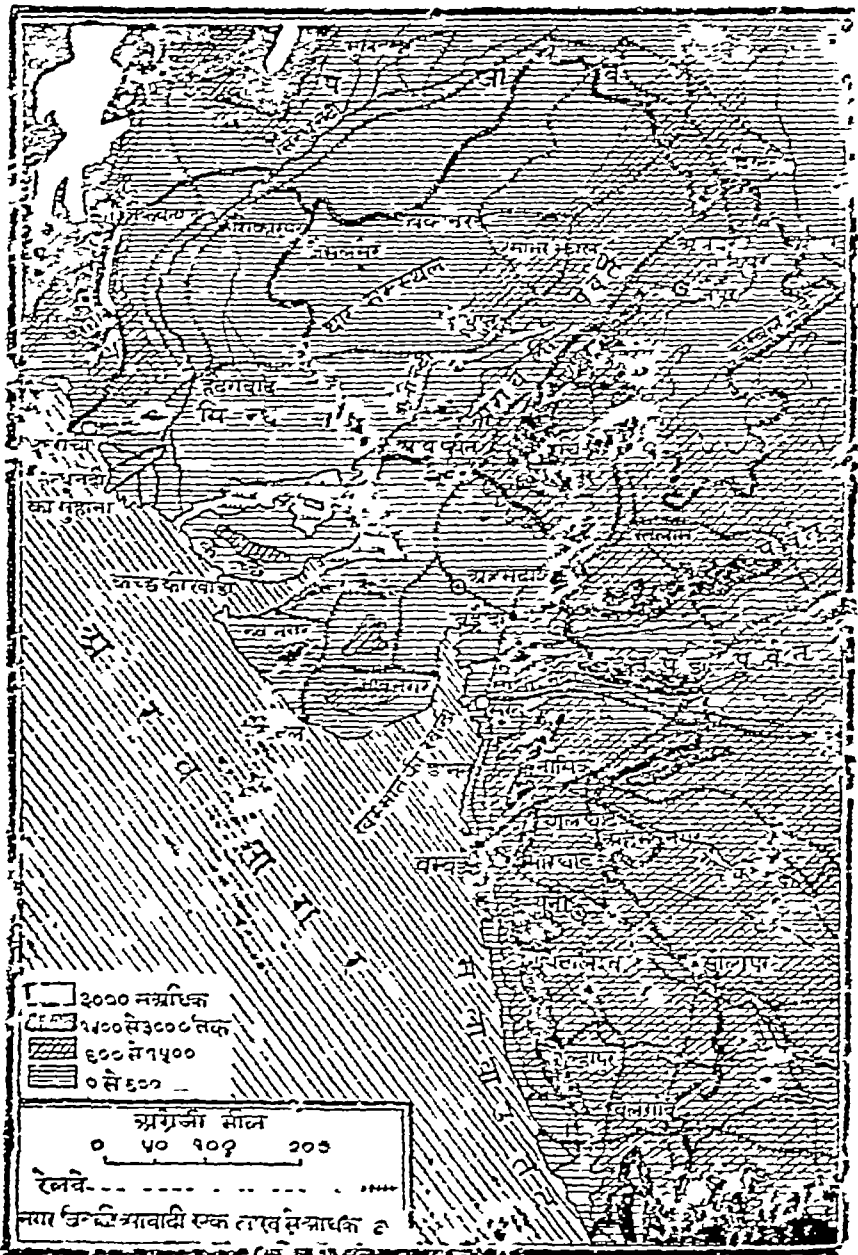
८४—सिन्ध, बम्बई प्रान्त और राजस्थान

कच्छ

सिन्ध प्रदेश के दक्षिण (८००० वर्गमील) में कच्छ प्राय: द्वीप है। यह तीन ओर रन के नमकीन रेगिस्तान से घिरा है। यह रन अप्रैल से अक्टूबर तक वर्षा ऋतु में एक दो हाथ पानी से घिर जाता है। और दिनों में खुश्क नमकीन उजाड़ हो जाता है। प्राय: सब का सब कच्छ प्राय: द्वीप वृक्ष रहित उजाड़ है। अधिकतर प्रदेश नीचा है। कहीं कहीं रेतीले अथवा पथरीले टीले हैं। भीतर की ओर कुछ सजल भागों में खेती होती है। भुज नगर यहां की राजधानी है।

*काठियावाड़

काठियावाड़ का खुश्क प्राय:द्वीप कुछ अच्छा है। पहले यह प्रदेश छोटी छोटी रियासतों में बटा था। अब इनसे सौराष्ट्र प्रदेश बन गया है। उपजाऊ भागों में गांव हैं। ज्वार, बाजरा, कपास मुख्य उपज हैं। जहां सिंचाई की सुविधा है वहां गेहूं उगाया जाता है। इसके बहुत से भागों में ऊसर भूमि है। दक्षिण-पश्चिम की ओर कुछ नग्न और कुछ वृक्षों से ढकी हुई पहाड़ियां हैं। जूनागढ़ के पास गिरिनार पर्वत पर सुन्दर मन्दिर बने हैं। पोरबन्दर के पास मकान बनाने योग्य चूने का पत्थर निकलता है। समुद्र तट के पास अक्सर स्थानों में

---

*इसका प्राचीन नाम सुराष्ट्र या सौराष्ट्र है। जब से काठी लोग यहां आकर बसे, तब से इसका नाम काठियावाड़ पड़ गया है।

नमक के ढेर पड़े हुये हैं। काठियावाड़ कई छोटे छोटे देशी राज्यों में बँटा हुआ था। इसमें भावनगर, धनगोधरा गोन्दाल, जूनागढ़ और नवानगर या जामनगर मुख्य थे।

गुजरात

गुजरात की जमीन भी प्रायः समतल है। उत्तरी भाग की जमीन रेतीली है। पानी भी कम बरसता है। लेकिन दक्षिण की ओर बढ़ने पर अच्छी जमीन मिलती है। नर्मदा के आस-पास सर्वोत्तम जमीन है। इधर पानी भी खूब बरसता है इसलिये दक्षिणी गुजरात में चावल, ईख, कपास आदि सभी फसलें होती हैं।

नगर

अहमदाबाद—साबरमती नदी के किनारे गुजरात के प्रायः मध्य भाग में स्थित है। इसी केन्द्रवर्ती स्थिति के कारण अहमदाबाद शहर पुराने समय से गुजरात की राजधानी रहा है। कपास उगाने वाले प्रदेश के बीच में होने से यहां सूत कातने और कपड़ा बुनने के कई कारखाने हैं। कपड़े के अतिरिक्त यहां चमड़े और कागज का भी काम होता है। नदी के दूसरे किनारे पर एक रम्य स्थान पर महात्मा गांधी जी का सत्याग्रह आश्रम था जो अब हरिजन आश्रम हो गया है।

सूरत—यह नगर ताप्ती नदी के मुहाने के पास स्थित है। अब से प्रायः दो सौ वर्ष पहले यह नगर हिन्दुस्तान का एक प्रधान बन्दरगाह था

लेकिन नदी ने मिट्टी लाकर मुहाने को उथला बना दिया है। इसलिये जैसे जैसे बम्बई की बढ़ती हुई, वैसे सूरत का महत्व घटता गया।

बड़ौदा—यह शहर बड़ौदा राज्य की राजधानी है यहां भी रुई के कारखाने हैं।

यह तीनों ही नगर बम्बई से आरम्भ होने वाली बी० बी० एण्ड सी० आई० रेल के स्टेशन हैं। अहमदाबाद से रेलवे की एक शाखा काठियावाड़ को गई है।

पश्चिमी तटीय प्रदेश

यह तटीय मैदान पश्चिमी घाट और अरब सागर के बीच में स्थित है। उत्तर में नर्मदा और ताप्ती नदियों के मुहाने तथा दक्षिण में ट्रावनकोर के पास यह मैदान अधिक चौड़ा है। इस समतल तट पर केवल एक ही अच्छा द्वीप है जिस पर बम्बई शहर बसा है। शेष तट कुछ भी कटा फटा नहीं है।

पश्चिमी घाट उत्तर में ताप्ती घाटी के पास से आरम्भ होते हैं। पूना के उत्तर में वे बहुत नीचे और टूटे-फूटे हैं। पूना के दक्षिण में बेलगांव के पास तक पश्चिमी घाट बहुत ऊंचा है। इस ओर वे टूटे फूटे भी हैं बेलगांव के अक्षांश के नीचे पश्चिमी घाट में एक द्वार है। जहां होकर एक रेल गोवा को गई है। इस द्वार के आगे नीलगिरि तक पश्चिमी घाट और भी अधिक ऊंचे हो गये हैं। इस प्रकार पश्चिमी घाट और अरब सागर के बीच तटीय मैदान की चौड़ाई केवल तीस या चालीस मील है। यह मैदान अक्सर बारीक मिट्टी

से बना है। इसलिये यह प्रदेश अत्यन्त उपजाऊ है। दक्षिणी पश्चिमी मौसमी हवाओं के सीधे मार्ग में स्थित होने के कारण यहां प्रबल वर्षा

८८—विक्टोरिया टर्मिनस स्टेशन
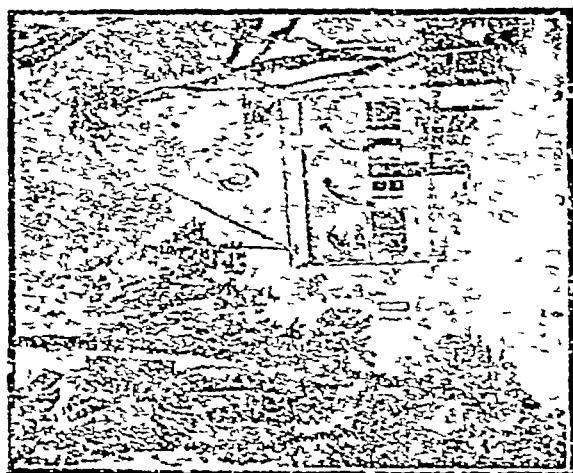
८९—बम्बई का मेडिकल कालेज

होती है। वर्षा की मात्रा उत्तर से दक्षिण की ओर क्रमशः बढ़ती जाती है। इसी प्रकार समतल मैदान की अपेक्षा पहाड़ के पश्चिमी ढालों पर अधिक वर्षा होती है।

जमीन की बनावट और जलवायु के अनुसार तटीय प्रदेश तीन भागों में बांटा जा सकता है :—
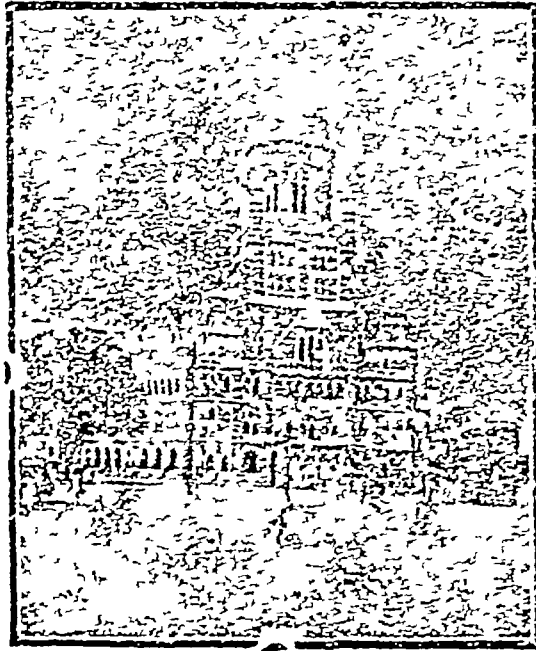
८७—म्युनिसिपल कारपोरेशन की इमारत

१—समुद्र-तट के बिलकुल पास यहां अक्सर रेतीले टीले हैं। इनके कहीं कहीं गोरन के दलदल हैं। पर अधिकतर भागों में नारियल के बगीचे हैं। इन्हीं बगीचों के बीच में थोड़ी थोड़ी दूर पर सुन्दर गांव हैं। गांवों के घर अक्सर नारियल के ही पत्तों से छाये जाते हैं।

२—तट से कुछ भीतर की ओर समतल भूमि है। यहां चावल की खेती है बीच बीच में नारियल, सुपारी आदि के पेड़ हैं। कहीं कहीं पश्चिमी घाट से निकलने वाली छोटी' तेज नदियों से समुद्र तट के रेतीले टीलों की रुकावट के कारण अनूप (लेगून) बना दिये हैं। इन अनूपों में छोटी नावें चला करती हैं, इधर उधर सामान ले जाती हैं। इधर के गांव हिन्दुस्तान के और गांवों से भिन्न हैं।

प्रत्येक घर में नारियल का बगीचा है और एक घर दूसरे से दूर है। यह प्रदेश काली मिर्च और दूसरे मसालों के लिये प्रसिद्ध है।
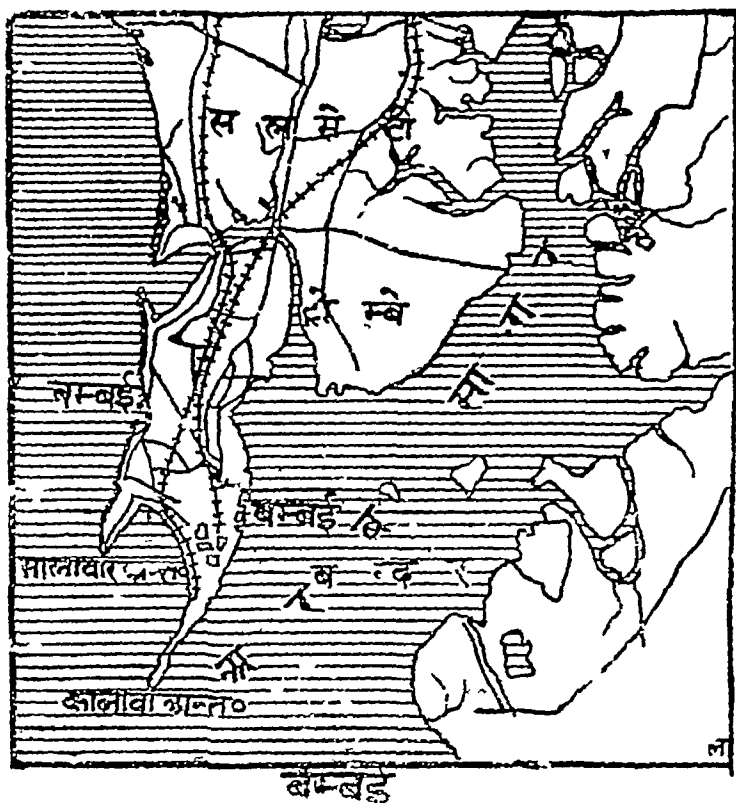
८८—बम्बई और समीपवर्ती प्रदेश

३—इधर से सपाट पहाड़ी ढाल तरह तरह के पेड़ों से ढके हुये हैं। इसमें सागौन (टीक) के पेड़ अत्यन्त मूल्यवान हैं । पेड़ काट कर तेज पहाड़ी नदियों में डाल दिये जाते हैं और किसी अनुकूल स्थान पर निकाल लिये जाते हैं। ये छोटी छोटी तेज नदियां नावों के चलने योग्य नहीं हैं। पर इनसे बिजली बनाई जा सकती है।

उपजाऊ होने से पश्चिमी तट अत्यन्त बना बसा हुआ है। पर अधिकतर आबादी छोटे छोटे गाँवों में बसी हुई है। बड़े बड़े शहर कम हैं।
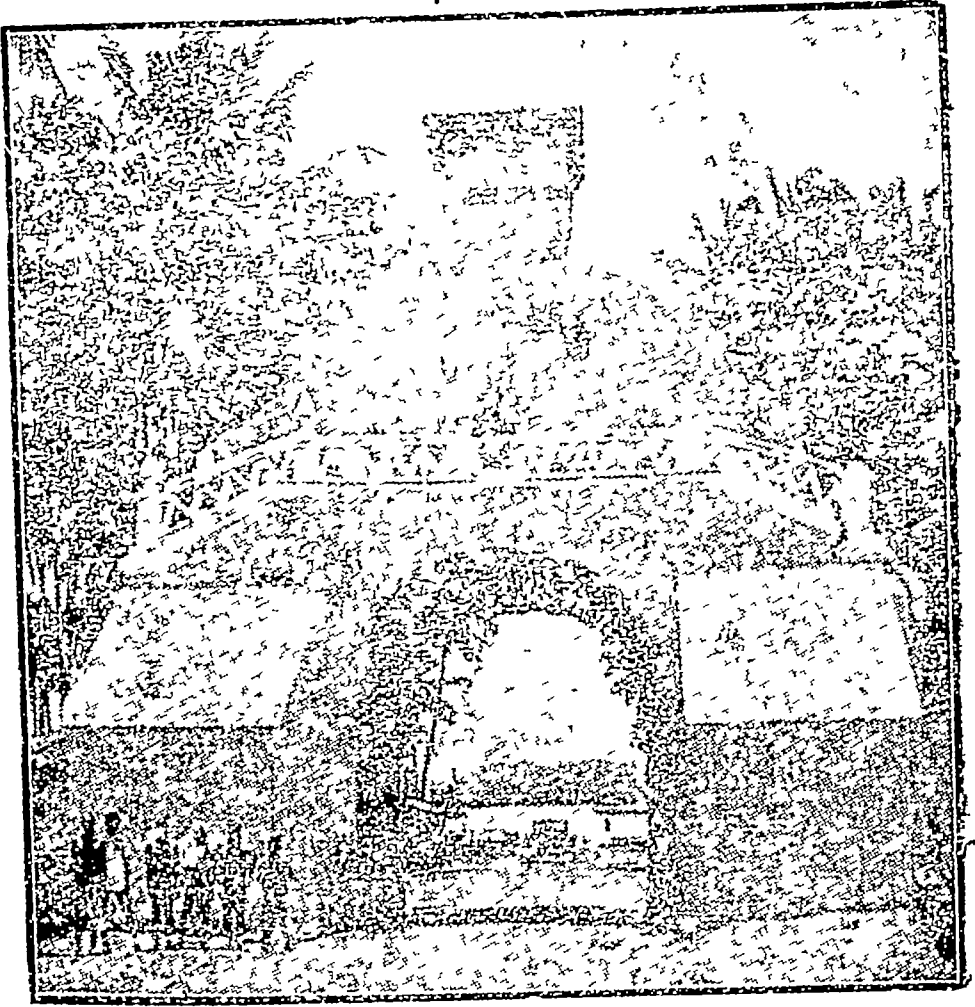
८६—गोआ नगर का एक दृश्य

बम्बई इस ओर सब से बड़ा और सारे हिन्दुस्तान में दूसरे नम्बर का शहर है। शहर इसी नाम के द्वीप पर बसा है। इसकी आबादी १५ लाख से ऊपर है। स्थल से घिरी हुई खाड़ी ने यहाँ के बन्दरगाह को अत्यन्त सुरक्षित बना दिया है। बम्बई से भीतर की ओर बढ़ने पर मार्ग में पश्चिमी घाट पड़ते हैं। वे इतने नीचे और कटे फटे हैं

कि उनमें होकर सुगम मार्ग बना लिये गये हैं। बम्बई शहर रेल द्वारा दिल्ली, इलाहाबाद, कलकत्ता और मद्रास आदि सभी प्रसिद्ध शहरों से जुड़ा हुआ है। इसलिये बम्बई को अक्सर हिन्दुस्तान का प्रवेश द्वार (गेट) कहते हैं। बम्बई के पृष्ट प्रदेश में रुई बहुत होती है। शहर की तर जलवायु कपड़ा बुनने के लिये बड़ी अच्छी है। इसलिये बम्बई में कपडे बुनने की कई मिलें हैं। ये मिलें बिजली के जोर से चलती हैं। यह बिजली पश्चिमी घाट के अनुकूल स्थानों में तैयार होती है। और तार द्वारा बम्बई भेज दी जाती है। इससे बम्बई के आस पास के नगरों को बिजली के जोर से चलने वाली इलेक्ट्रिक रेलें छूटा करती हैं।

पश्चिमी तट पर बम्बई के बाद दूसरा उत्तम बन्दरगाह मोरम-गोआ है। यह शहर और इसके पीछे का देश पुर्तगाल वालों के अधिकार में है।

पठार—तटीय प्रदेश के भीतर पठार का प्रदेश हिन्दुस्तान में सब से अधिक पुराना भाग है। करोड़ों वर्ष पहले यहाँ से इतना लावा निकला कि उसने २ लाख वर्गमील के प्रदेश को बिलकुल ढक लिया। लावा के पहले देश का कैसा दृश्य था, इसका पता लगाना भी कठिन हो गया है। केवल कुछ ही स्थानों पर नर्मदा आदि नदियों ने लावा की गहरी तहों को काट कर नीचे की कड़ी और पुरानी तहों को प्रकट किया है। बम्बई प्रदेश के पठार की अधिकतर जमीन इसी लावा की काली मिट्टी से बनी है। दक्षिण की ओर की जमीन कुछ लाल है।

इस पठार की औसत ऊँचाई डेढ़ हजार फुट है। पर पश्चिमी भाग पठार के धरातल से प्रायः एक हजार फुट अधिक ऊँचा है। इस लिये जब दक्षिणी-पश्चिमी हवाएँ पहाड़ से उतर कर इधर आती हैं तो वे बहुत कम पानी बरसाती हैं। इस ओर सब कहीं साल में ४० इञ्च से कम ही पानी बरसता है। कुछ मध्यवर्ती गांवों में २० इञ्च से भी कम पानी बरसता है। समुद्र से दूर होने के कारण इस ओर ग्रीष्म में अधिक गरम और शीतकाल में अधिक ठंड पड़ती है। यदि इस पश्चिम घाट की चोटी पर चढ़ कर अरब सागर की ओर मुंह करें तो सब कहीं

हरा-भरा दृश्य दिखाई देता है। पर यदि हम पूर्व की ओर मुंह फेर लें तो सब कहीं प्रायः खुष्क प्रदेश नजर आता है।

काली जमीन में नमी रखने की शक्ति अधिक होती है। इसी लिये उत्तर की अपेक्षा दक्षिण की लाल भूमि में तालाब से सिंचाई का अधिक प्रबन्ध है।

यहां की जमीन उपजाऊ है। इसलिये खुश्क होने पर भी प्रायः ७० फी सदी जमीन खेतों के काम आती है। ७ फी सदी जमीन बनों से ढकी है। यहां की प्रधान फसल कपास है। ज्वार, बाजरा भी बहुत होता है। इधर लोगों का यही मुख्य भोजन है। परन्तु तटीय प्रदेश का मुख्य भोजन चावल है। गेहूँ मूंगफली और (कहीं कहीं) ईख की भी खेती होती है।

तटीय प्रदेश की अपेक्षा इस ओर बहुत कम आबादी है। प्रति वर्ग मील में केवल १२५ मनुष्य रहते हैं। इस प्रदेश के लोगों की भाषा मराठी है।

पश्चिमी घाट के सिरे के पास बम्बई से ८० मील दक्षिण पूर्व की ओर पूना शहर बसा है। यह शहर पश्चिमी घाट के दर्रों का नियन्त्रण करता है। शहर विशाल मरहठा साम्राज्य की राजधानी रह चुका है। पर १८७९ की आग में पेशवा का महल जल गया अब भी शहर शिक्षा का केन्द्र है। १,००० फुट की ऊँचाई पर बसे होने से गरमी की ऋतु में यहां बम्बई से कुछ अधिक ठंडक रहती है। यही हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा मेट्योरालोजिकल आफिस है।

पूना से दक्षिण-पूर्व में दूसरा बड़ा नगर शोलापुर है। यहां रुई के कई कारखाने हैं।

अधिक दक्षिण में बड़ा नगर बेलगांव है। यहां भी सूती कपड़ों के कारखाने हैं।

नासिक नगर बम्बई से उत्तर-पूर्व की ओर गोदावरी के निकास के पास बसा है। यहां के घरों में लकड़ी का सुन्दर काम है।

इक्कीसवाँ अध्याय

मद्रास

मद्रास प्रदेश (१,४२,८८० वर्गमील जन-संख्या ४ करोड़ ७२ लाख) का समुद्र-तट बङ्गाल की खाड़ी की ओर १,२००० मील लम्बा है। अरब सागर की ओर मद्रास प्रदेश के समुद्र-तट की लम्बाई केवल ४५० मील है। इस प्रकार यह प्रदेश पूर्व की ओर ८ अक्षांश से १४ उत्तरी अक्षांश तक फैला हुआ है। इसकी अधिक से अधिक लम्बाई १००० मील और बड़ी से बड़ी चौड़ाई ३८० मील है। इसके उत्तर की ओर प्रदेश उड़ीसा, मध्य प्रदेश, हैदराबाद के राज्य और बम्बई प्रदेश है। शेष सब ओर समुद्र है। यदि चिल्का झील से एक रेखा कृष्णा और तुङ्गभद्रा नदियों को छूती हुई पश्चिमी-तट के उस पार अरब सागर तक खींची जावे तो इस रेखा के दक्षिण में सारा मद्रास प्रदेश मैसूर और कुर्ग आ जायगा।

मद्रास प्रदेश, में निम्न प्राकृतिक प्रदेश सम्मिलित हैं:—

(१) मालाबार अथवा अरब सागर के किनारे वाला पश्चिमी तट

(२) कर्नाटक

(३) उत्तरी सरकार

(४) दक्खिन का पठार

(१) मद्रास का पश्चिमी तट प्राय: बम्बई के ही पश्चिमी तट से मिलता है। पहाड़ी सपाट ढालों पर वन हैं। समस्त प्रदेश के $\frac{1}{8}$ भाग में वन है। तट के पास रेतीले टीलों पर नारियल के पेड़ हैं। रेतीले टीलों के पीछे समतल कछारी मैदान हैं। यहां पश्चिमी घाट से आने वाली छोटी नदियों ने उथले अनूप बना दिये हैं। यह अनूप

नहरों द्वारा एक दूसरे से तथा समुद्र से जुड़े हुये हैं। इस प्रकार इस ओर सैकड़ों मीलों तक नावें चल सकती हैं। यह प्रदेश अत्यन्त उपजाऊ है। यहां दक्षिणी पश्चिमी मानसून से वर्षा होती है।
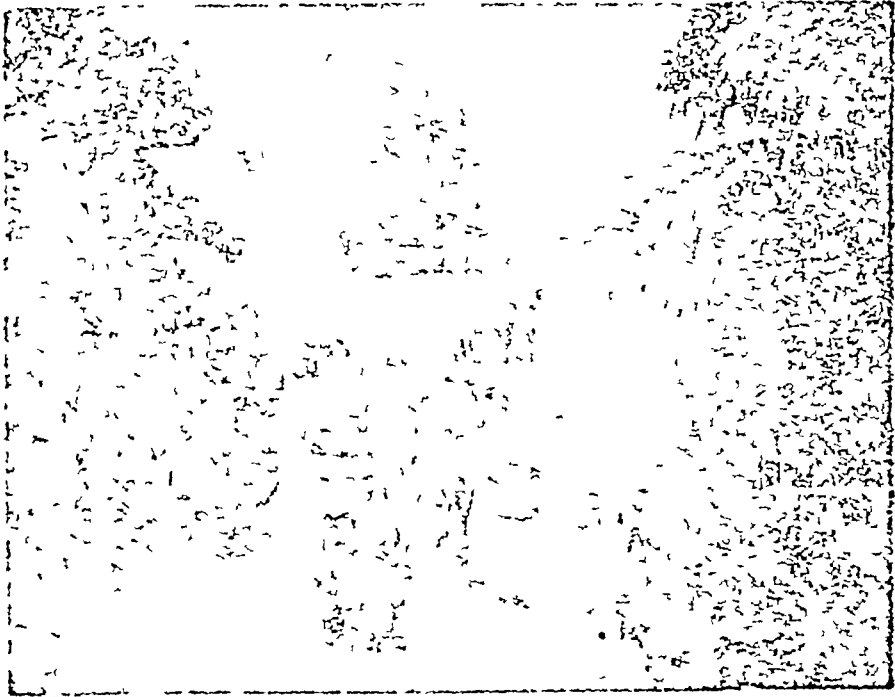
९०—मालाबार-तट के एक गांव के बोझा ढोने वाले

अनूपों (लेगून) के किनारों पर नारियल के पेड़ लगे हैं। खेतों में धान उगाया जाता है। जहां तहां सुपारी और काली मिर्च के बगीचे हैं। इस उपज को बाहर भेजने के लिये अभी तक इस ओर कोई बड़ा बन्दरगाह न था। हाल में कोचीन, ट्रावनकोर और मद्रास सरकार की सम्मति से कोचीन बन्दरगाह को गहरा करके अच्छा बन्दरगाह बनाया गया है। पहले बन्दरगाह के मुहाने पर बालू और मिट्टी की रुकावट थी। अब उसमें प्रायः दो मील लम्बी, ४०० फुट चौड़ी और २५ फुट गहरी नहर खोद दी गई है। इसमें होकर बड़े से बड़े जहाज भीतर जा सकेंगे। यह प्रदेश अत्यन्त घना बसा है। ट्रावनकोर में

प्रति वर्गमील में १२०० मनुष्य रहते हैं। अधिकतर आबादी छोटे-छोटे गांवों में रहती है। केवल तट के पास कुछ नगर हैं।

त्रिवेन्दुरम शहर ट्रावनकोर राज्य की राजधानी है और रेल द्वारा मद्रास से जुड़ा हुआ है। एलपी और क्विलन नगर भी ट्रावनकोर राज्य में ही स्थित हैं। यह चटाई और रस्सी बनाने के लिये प्रसिद्ध हैं।

कालीकट पुर्तगालियो आने से पहले एक बढ़ा-चढ़ा हुआ नगर था और मसाले के व्यापार के लिये प्रसिद्ध था। इस समय भी यह नगर मद्रास प्रदेश के बडे नगरो में गिना जाता है। यहा नारियल की गरी से तेल पेरने का काम बहुत होता। कोचीन शहर (बन्दरगाह की नई योजना के अनुसार) इस ओर सबसे बडा नगर हो रहा है। मंगलोर एक साधारण नगर है और पालघाट होकर जानेवाली रेल द्वारा मद्रास से जुड़ा है।

कर्नाटक—मद्रास प्रदेश का कर्नाटक प्रदेश कुमारी अन्तरीप से मद्रास शहर के उत्तर में प्राय· १५ उत्तरी अक्षांश तक चला गया है। समुद्र-तट से भीतर की ओर कार्डमम पहाड़ नीलगिरि और पूर्वी घाट इसकी सीमा बनाते हैं। समुद्र-तट के पास चौड़ा मैदान है। भीतर की ओर पर्वतीय प्रदेश है। इस प्रदेश में पश्चिमी घाट की रुकावट के कारण दक्षिणी-पश्चिमी हवाओं से ग्रीष्म ऋतु में पानी नहीं बरस पाता है। पर जब शीतकाल से उत्तरी-पूर्वी मानसून लौट कर इस तट पर टकराती है तो अक्टूबर, नवम्बर के महीनो में ४० इञ्च से ऊपर वर्षा हो जाती है। पर जैसे जैसे वह हवा तट से भीतर की ओर बढ़ती है वैसे वैसे इसकी भाप कम होती जाती है। इसी से भीतर की ओर पहाड़ी भाग में कम पानी बरसता है। इस भाग में वर्षा की कमी है। लेकिन जमीन उपजाऊ है, इसलिये कर्नाटक प्रदेश प्रबन्ध किया गया है। पेरियर, प्राजेक्ट सिंचाई की विचित्र योजना है। पहले पेरियर नदी (ट्रावनकोर में) पश्चिमी घाट की प्रचुर वर्षा अरब

६१—मद्रास प्रान्त तथा हैदराबाद और मैसूर

सागर के बहा ले जाती थी। फिर पश्चिम की ओर पेरियर की घाटी में एक बड़ा बाध बना दिया गया। इस से ऊपरी घाटी एक विशाल
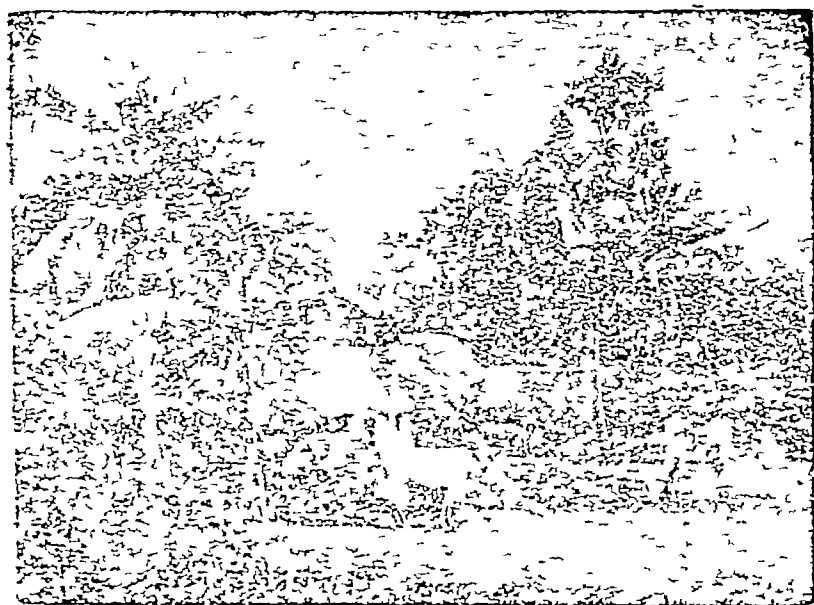
९२—दक्षिणी भारत के एक गाव का दृश्य

झील बन गई। फिर पश्चिमी घाट में सुरग बनाई गई। इस सुरग द्वारा पश्चिमी घाट का पानी मद्रास प्रदेश की ओर लाया गया। अब यह पानी मैडूर (मदुरा) के आस पास हजारो एकड समतल भूमि को सींचने में खर्च होता है। अर्काट के दक्षिण और मद्रास शहर के पश्चिम में पाडनी, पालार और चैयर नाम की छोटी छोटी नदियों से सिचाई होती है। पर सिचाई का सबसे बडा प्रबन्ध कावेरी डेल्टा में है। यहां सैकड़ों वर्षो से सिंचाई का काम होता है। यहां लगभग १० लाख एकड़ जमीन सींची जाती है।

तटीय मैदान की प्रधान फसल चावल है। कपास, मूंगफली, ईख और तम्बाकू भी बहुत होती है। ऊचे भागो में जहा सिचाई की सुविधा

हां है वहां ज्वार और बाजरा उगाया जाता है। अधिक ऊंचे ढालों
र वन है। टीक (साल) और चन्दन के पेड़ अत्यन्त मूल्यवान हैं।

६३—लङ्का और मद्रास के बीच वाले उथले समुद्र में मोती निकाले जाते हैं

साल के सर्वोत्तम वन कोयम्बटूर में और नीलगिरि के ढालों पर हैं। वेलूर जिले में बहुत सा अभ्रक निकाला जाता है। समुद्र-तट से नमक मिलता है। समुद्र से ही मछली और मोती निकालने का काम भी कई स्थानों में होता है।

इस प्रदेश की भाषा की तामिल है और आबादी सब कहीं घनी है। प्राय. प्रति वर्गमील में ४०० मनुष्य रहते हैं।

नगर मद्रास—(जन संख्या ५ लाख) शहर हिन्दुस्तान में तीसरे नम्बर का शहर है। पर यह शहर कलकत्ता या बम्बई से अधिक खुला हुआ है। यहा से बम्बई, कालीकट, तूतीकोरन और कलकत्ता को रेलवे लाइने गई हैं। बकिंघम नहर मद्रास के कृष्णा-डेल्टा और विजयवादा से मिलती है। मद्रास का बन्दरगाह कृत्रिम है। इसका पृष्ट प्रदेश भी-अधिक घनी नहीं है। इसलिये यहा का विदेशी व्यापार अधिक बढ़ा चढ़ा नहीं है। यहा से दिसावर को चमड़ा अधिक जाता है। चमड़े का काम भी यहां अधिक होता है। कुछ रुई के भी कारखाने हैं। मद्रास से दक्षिण में पाण्डिचेरी बन्दरगाह फ्रांसीसियों के अधिकार में है। तूतीकोरन और धनुष्कोटि (रामेश्वरी द्वीप) से लङ्का को जहाज जाया करते हैं।

वैगाई नदी के किनारे मदुरा एक बहुत पुराना नगर है। यह शहर कपड़ा रंगने, साफा बुनने और पीतल के बर्तन बनाने के लिये प्रसिद्ध हैं। त्रिचनापल्ली और तंजोर भी भीतर की ओर प्राचीन ऐतिहासिक नगर है।

उत्तरी सरकार—यह प्रदेश नेलोर शहर के पास से आरम्भ हो कर उड़ीसा तक चला गया है। इस प्रदेश के बीच में कृष्णा और गोदावरी के विशाल डेल्टा है। पश्चिम की ओर पूर्वी घाट की पहाड़ियां हैं। उत्तर की ओर महानदी के डेल्टा ने बढ़ते-बढ़ते चिल्का झील को समुद्र से अलग कर दिया है। नदियों की कांप से बनी हुई जमीन उप-

जाऊ है। पुरानी पहाड़ियां अक्सर नंगी और वीरान है। पर किसी किसी पहाड़ी की पुरानी और कड़ी चट्टानों से मूल्यवान खनिज मिलते हैं। विजिगापट्टम के पास बहुत सा मैंगनीज निकलता है।
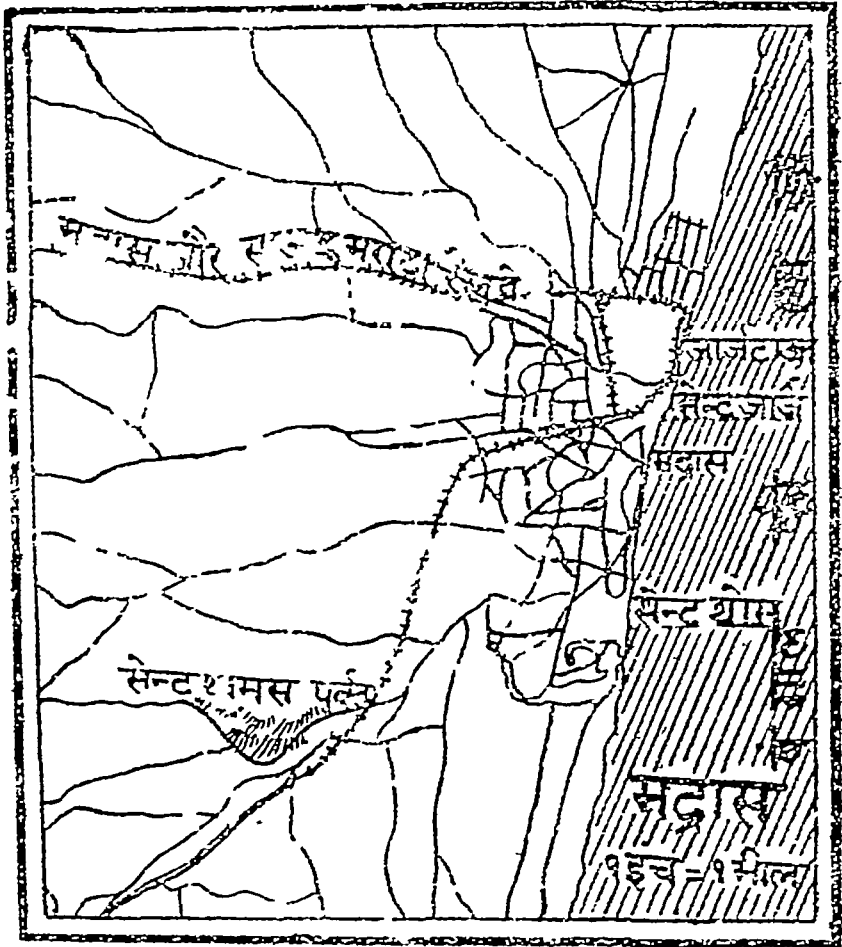
६४—मद्रास नगर की स्थिति

जलवायु—उत्तरी सरकार में करनाटक से अधिक वर्षा होती है। यह वर्षा दक्षिणी-पश्चिमी मानसून के चलने पर ग्रीष्म ऋतु में होती है।

उपज—इस प्रदेश की प्रधान फसल चावल है। दक्षिण की ओर वर्षा की कमी के कारण ज्वार-बाजरा अधिक होता है और चावल कम होता है। उत्तर की ओर वर्षा की मात्रा बढ़ने से चावल अधिक और ज्वार बाजरा कम होता है। यहां तक कि उड़ीसा की सीमा के पास केवल चावल ही होता है। ज्वार और बाजरा का प्रायः अभाव है। कृष्णा और गोदावरी के डेल्टा में सिंचाई का प्रबन्ध है। इसलिये यहां पर वर्षा कम होने पर भी चावल ही उगाया जाता है। कुछ उजाड़ पहाड़ियों और चरागाहों को छोड़ कर प्रायः शेष सारी जमीन खेती के काम आती है। यह एक धनी प्रदेश है। प्रति वर्गमील में प्राय. ३५० मनुष्य रहते है। यहां के रहने वाले तेलिगू भाषा बोलते हैं।

कर्नाटक के तट की तरह उत्तरी सरकार के तट पर भी प्राकृतिक बन्दरगाहों का अभाव है। रेत और उथले पानी के कारण बड़े-बड़े जहाजों को छोटे-छोटे बन्दरगाहों से एक दो मील की दूरी पर ठहरना पड़ता है। इस ओर विजिगापट्टम का बन्दरगाह कुछ सुरक्षित है। इसे सुधारने का काम हाल में समाप्त हुआ। कोकोनाडा बन्दरगाह का पृष्ठ प्रदेश बहुत धनी है। गोपालपुर, कलिंगपट्टम्, विमलीपट्टम और मछलीपट्टम दूसरे छोटे-छोटे बन्दरगाह हैं जिनमें कुछ तटीय व्यापार होता है। मद्रास प्रदेश के बिलारी, कनूल, कडापा और अनन्तपुर जिले मैसूर और हैदराबाद राज्यों के बीच में स्थित है और दक्खिन-पठार-प्रदेश के अंग हैं।
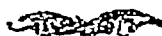
बाईसवाँ अध्याय

मध्यप्रदेश या महाकौशल

मध्य-प्रदेश वा महाकौशल (१,३३००० वर्गमील जन-संख्या १ करोड़ ७० लाख) उत्तर में, इन्दौर, भूपाल, बुन्देलखंड आदि मध्य-भारत की रियासतों से घिरा है, इसके उत्तर-पूर्व में छोटा नागपुर, दक्षिण में मद्रास प्रदेश और हैदराबाद, पश्चिम में बम्बई प्रदेश है। उत्तर से दक्षिण तक इसकी अधिक से अधिक चौड़ाई ४२२ मील और पूर्व से पश्चिम तक लम्बाई ५७६ मील है।

इस प्रदेश का प्राकृतिक दृश्य बड़ा ही मनोहर है। वनाच्छादित पहाड़ प्रायः प्रत्येक स्थान से दृष्टिगोचर होते हैं। वे कहीं कुछ दूर हैं कहीं पास हैं। ऊँची जमीन और प्रबल वर्षा होने के कारण यहां से कई नदियां निकलती हैं। नर्मदा और ताप्ती पश्चिम की ओर बहती हैं। वर्धा नदी दक्षिण-पूर्व की ओर वेनगङ्गा और इन्द्रावती दक्षिण की ओर बहती हैं।

इस प्रकार इस प्रदेश को कई भागों में बांट सकते हैं:—

(१) उत्तर में विन्ध्याचल का पर्वतीय प्रदेश है, जो गङ्गा के मैदान की ओर ढालू हो गया है। विन्ध्या-पर्वत इस प्रदेश को एक सिरे से दूसरे सिरे को पार करता हुआ गङ्गा के तट (चुनार) तक चला गया है। यह पर्वत छोटी-छोटी पर्वत श्रेणियों में बंट गया है। उनके नाम भी भिन्न हैं यह मध्य प्रदेश में भानेर और आगे चलकर बुन्देलखंड में कैमूर नाम से प्रसिद्ध है। भानेर श्रेणी नर्मदा की ओर एकदम सपाट है। पर गंगा की ओर क्रमशः से ढालू है।

(२) इस प्रदेश के नीचे नर्मदा की तंग घाटी है। यह घाटी समुद्र तट से १,००० फुट ऊंची है। मध्य भाग में यह लगभग २० मील

चौड़ी और २०० मील लम्बी है। पर्वतीय प्रदेश में इसकी चौड़ाई बहुत कम हो गई है। कुछ स्थानों में यह प्रपात बनाती है।

(३) सतपुड़ा पर्वत के पठार की ऊंचाई आस पास के मैदान से २,००० फुट है। पठार की चौड़ाई ५० मील तक है। विन्ध्या-
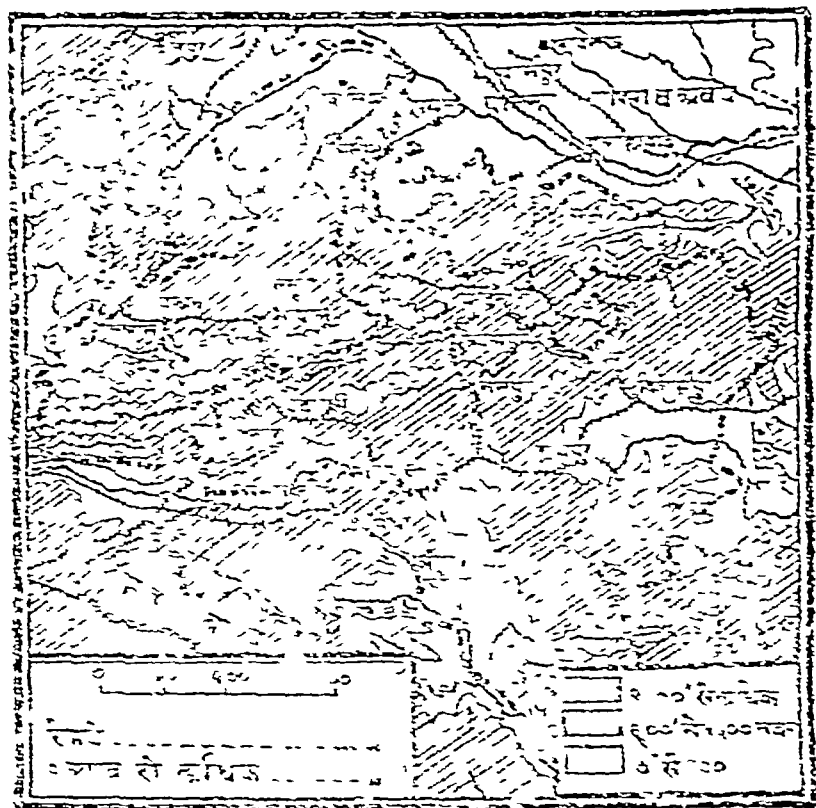
६५—मध्य-प्रदेश और मध्यभारत

के समान सतपुड़ा पर्वत भी मध्यप्रदेश के उत्तरी भाग को पार करता हुआ छोटा नागपुर के पठार में मिल गया है। इसकी मध्यवर्ती महादेव और पूर्वी श्रेणी मैकल कहलाती है। यह पहाड़ियां दक्षिण की ओर एकदम ढालू हैं। उत्तर की ओर वे क्रमशः ढालू होती गई हैं।

महादेव पर्वत पर ही लगभग ४,००० फुट की ऊँचाई पर पचमढ़ी नगर स्थित है। मैकल पर्वत की सर्वोच्च चोटी (अमर कंटक ३,५०० फुट) ऊंची है।

(४) नागपुर का विशाल और ऊंचा मैदान मध्य-प्रदेश में बीच में स्थित है। इसका ढाल दक्षिण में वर्धा और वानगङ्गा की घाटियों की ओर है। पूर्व में इसका ढाल छत्तीसगढ़ी मैदान में महानदी की घाटी ओर हो गया हैं।

(५) दक्षिणी कोने में गोदावरी में बायें किनारे पर ऊँचा नीचा जंगली प्रदेश है। यहीं वस्तर का देशी राज्य था।

(६) वर्धा नदी के पश्चिम में (सतपुड़ा की) ग्वालीगढ़ और दक्षिण में अजन्ता पर्वत-श्रेणी तथा पेनगङ्गा से घिरा हुआ बरार का उपजाऊ प्रदेश हैं।

जलवायु

ऊँचाई के कारण मध्य प्रदेश का तापक्रम अधिक विकराल नहीं होने पाता है। वैसे वहां कभी कभी (पचमढ़ी में) ३० अन्श फारेनहाइट से (दक्षिण की ओर चांदा में) ११६ अन्श फारेनहाइट तक तापक्रम देखा गया है। यहां की औसत वार्षिक वर्षा प्रायः ५० इञ्च है। इसी से यहां की पहाड़ियां अक्सर घास या घन से ढकी हुई दिखाई देती हैं। पर इन पहाड़ियों ने प्रदेश की ⅔ जमीन घेर रक्खी है। केवल ⅓ जमीन खेती के लिये अनुकूल है। घाटियों में उपजाऊ काली मिट्टी है। यहां कपास और धान की खेती होती है। खुश्क भागों में ज्वार, बाजरा, दाल, तिलहन और गेहूँ होता है। छत्तीसगढ़ के उपजाऊ मैदान में धान और गेहूँ बहुत होता है। बरार का प्रदेश कपास के लिये सर्व प्रसिद्ध है।

इस प्रदेश की अधिकतर भूमि बन और पर्वत से घरी होने के कारण जन-संख्या कम है। बरार और नागपुर की ओर मराठी भाषा बोली जाती है। शेष भागों की प्रधान भाषा हिन्दी है। पूर्व की ओर

कुछ लोग उड़िया बोलते हैं। पहाड़ी जातियों की भाषा गोंड है। अधिकतर लोग गांवों में रहते हैं। शहर कम है। लगभग १ लाख की आबादी वाले केवल दो शहर (नागपुर और जबलपुर) है।

जबलपुर

इस शहर की स्थिति बड़े महत्व की है। यह शहर नर्मदा की ऊपरी घाटी में सतपुड़ा से उत्तर की ओर समुद्र-तल से १,३४० फुट की ऊँचाई पर बसा है। यह स्थान ऐसा है जहां से उत्तर की ओर गंगा की घाटी में इलाहाबाद को, दक्षिण की ओर नागपुर और (चत्तीसगढ़ मैदान में) बिलासपुर को सुगम मार्ग गये हैं। पश्चिम की ओर नर्मदा के किनारे किनारे और भी अधिक अच्छा मार्ग गया है। बम्बई से छिउकी, (इलाहाबाद) होकर कलकत्ता जाने वाली रेल इसी रास्ते से जाती है।

जबलपुर में (पास ही अच्छी चिकनी मिट्टी मिलने से) खपरैल और मिट्टी के बरतन अच्छे बनते हैं। जबलपुर के पास ही नर्मदा प्रपात और संगमरमर की खानें हैं।

नागपुर

यह शहर सतपुड़ा के दक्षिण में एक विशाल मैदान के मध्य में स्थित है। पहले यह शहर भोंसला राज्य की राजधानी था। आजकल यह वर्त्तमान मध्य-प्रदेश की राजधानी है। कपास के प्रदेश में स्थित होने से यहां कई पुतलीघर हैं। यह नगर बम्बई से कलकत्ता को जाने वाले सीधे रेल-मार्ग पर स्थित है।

नागपुर से १८० मील पूर्व उपजाऊ छत्तीसगढ़ मैदान के बीच में सबसे बड़ा नगर रायपुर है। खण्डवा शहर नया है। यहां पर ग्रेट इण्डियन पेनिन्सुला रेलवे और अजमेर से आने वाली बम्बे बड़ोदा और सेन्टल इण्डियन रेलवे का जङ्क्शन है।

बरार प्रदेश में अमरावती शहर कपास का केन्द्र है, और रेल द्वारा दूसरे स्थानों से जुड़ा हुआ है।

हैदराबाद

हैदराबाद का राज्य (८२,०२० वर्गमील, जन-संख्या एक करोड़ ७० लाख) हिन्दुस्तान के देशी राज्यों में सब से बड़ा और धनी है। पर भारतवर्ष में स्वाधीनता का आरम्भ होते ही इस राज्य में अराजकता बढ़ गई। यहां के निजाम अपनी हिन्दू प्रजा को उत्तरदायी शासन अधिकार न देकर बाहरी मुसलमानों और बाहर से मँगाये हुये शस्त्रों के बल पर अपना निरंकुश शासन बनाये रखना चाहते थे। उसके रजा कार लूट मार करने में अग्रसर रहे। चार दिन की पुलिस कार्यवाही के बन्द यह फिर भारत का अंग बन गया।

उत्तर में इस राज्य को पैनगंगा नदी बरार से और पर्णाहिता तथा गोदावरी मध्य-प्रदेश से अलग करती है। दक्षिण में तुगभद्रा, कृष्णानदियां और पूर्वी घाट की कुछ पहाड़ियां हैदराबाद को मद्रास प्रदेश से अलग करती हैं। पश्चिम में यह राज्य बम्बई प्रदेश से घिरा हुआ है। यह सब का सब राज्य पठार पर स्थित है। इसकी औसत ऊंचाई १,२५० फुट है। पर पृथवी का ढाल उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर है। पश्चिमी भाग या मराठवाड़ा में लावा की काली मिट्टी है और लोगों की भाषा मराठी है। पूर्वी भाग या तेलिङ्गना की जमीन कड़ी चट्टानों के घिसने से बनी है। इस ओर के लोगों की भाषा तेलिगू है।

जलवायु

पठार के मध्य में स्थित होने से यहां वर्षा कम होती है। वर्ष भर की वर्षा का औसत प्राय: ३० इञ्च है। अधिकतर वर्षा ग्रीष्म ऋतु में होती है। ऊँचाई के कारण ताप-क्रम अधिक नहीं हो पाता है औसत ताप-क्रम ८० अन्श फारेनहाइट रहता है।

उपज

रेगर या काली मिट्टी में पश्चिम की ओर कपास होती है। नदियों की सजल घाटियों में अथवा तालावों द्वारा सींचे जाने वाले भागों में चावल होता है। ज्वार और बाजरा खुश्क भागों में बिना सिंचाई के

होता है। कहीं कहीं गेहूँ भी होता है। हैदराबाद राज्य में ही कोयले की सबसे अधिक दक्षिणी खान सिंगरेनी में स्थित है। यह नगर विजयवादा जङ्कशन के पास है। इसी कोयले से प्रायः समस्त दक्षिणी भारत का काम चलता है।

६६—अजन्ता की प्रसिद्ध गुफा।

नगर—हैदराबाद शहर (जनसंख्या ५ लाख) कृष्णा की एक सहायक (मूसी) नदी पर राज्य के प्रायः मध्य में बसा है। इस छोटी सी पहाड़ी नदी पर तीन चौड़े पुल बने हुये हैं, जो हिन्दू मुहल्लों को प्रधान नगर से मिलाते हैं। पहले मुख्य नगर में रुहेला, अरबी और पठान लोगों की प्रधानता थी।

हैदराबाद के पास ही कुछ अधिक (५० गज) ऊँची जमीन पर सिकन्दराबाद है। यहां दक्षिणी भारत भर में सबसे बड़ी छावनी है। हैदराबाद से ६ मील की दूरी पर गोलकुण्डा है। यहां पहले राजधानी थी, लेकिन आजकल यहां सरकारी कारखाना और जेल है। गुलवर्गा बीदर, (मजीरा नदी पर) औरंगाबाद दौलताबाद या देवगिरि, वारंगल पुरानी राजधानियां हैं। राज्य के उत्तरी-पश्चिमी कोने पर अलोरा में अति प्राचीन हिन्दू और अजन्ता में बौद्ध शिला-मन्दिर है। इस राज्य की आमदनी लगभग साढ़े सात करोड़ रुपये है।

मैसूर—मैसूर राज्य (२९,५०० वर्गमील, जनसंख्या ७८ लाख) चारों ओर मद्रास प्रदेश से घिरा हुआ है। यह राज्य दो प्राकृतिक भागों में बँटा हुआ है। पश्चिम की ओर मालनद या पहाड़ी प्रदेश है। पूर्व की ओर मैदान है। मालनद में बनाच्छादित पर्वत बड़े ही सुन्दर हैं। पश्चिमी घाट की ओर प्रवल वर्षा होती है। पर मध्य में प्रति वर्ष २० इञ्च से अधिक पानी नहीं बरसता है। शीतकाल का अल्प तापक्रम ५१ और ग्रीष्म का तापक्रम ९१ अन्श फारेनहाइट रहता है। उत्तरी मैदान की काली मिट्टी में कपास और ज्वार बाजरा की फसलें होती हैं। दक्षिण-पश्चिम में सिंचाई की सुविधा के कारण चावल और ईख उगाई जाती है। लगभग ५० हजार एकड़ जमीन में शहतूत के पेड़ लगे हुये हैं। इनकी पत्तियां रेशम के कीड़ों को खिलाई जाती है। सोने की खानों को छोड़ कर मैसूर राज्य को सबसे अधिक लाभ रेशम के कारवार से होता है। चन्दन के पेड़ों से भी लाभ होता है। मैसूर और बङ्गलौर में चन्दन का तेल निकालने के लिये कारखाने बन गये हैं।

मैसूर राज्य में शिवसमुद्रम् द्वीप के पास कावेरी नदी ३८० फुट ऊँचा प्रपात बनाती है। इसकी बिजली से १०० मील की दूरी पर कोलार की खानों में सोना निकाला जाता है। इसी बिजली से मैसूर और बंगलौर शहरों में रोशनी होती है। इसी राज्य में बिजली की

मांग बढ़ रही है। जरसोपा प्रपात की बिजली भद्रावती में लकड़ी का कोयला बनाने, लकड़ी की शराब तैयार करने और लोहा साफ करने के काम आवेगी। हाल में कृष्णराजासागर नाम का विशाल ताल बना है। इससे सवा लाख एकड़ जमीन सींची जायगी और बिजली भी तैयार होगी। सिचाई का इससे भी अधिक बड़ा बांध मेट्टूर है।

मैसूर राज्य की आबादी बहुत घनी नहीं है। प्रति वर्गमील में केवल २०० मनुष्य रहते हैं। दक्षिण-पश्चिम के लोग कनारी भाषा बोलते हैं। शेष लोगों की भाषा तेलिगू है। बङ्गलौर शहर समुद्र-तल से ३,००० फुट ऊँचाई पर बसा है। यहा की जलवायु बड़ी अच्छी है, यहां अङ्गरेजी छावनी थी। छावनी की जमीन अङ्गरेजी राज्य में गिनी जाती थी। मैसूर शहर राज्य की राजधानी है। इन दोनों शहरों में रेशम और चन्दन के कारखाने हैं।

कोलार के आस पास खानों से सोना निकलता है।

श्रीरंगपट्टम (सिरिंगापट्टम) कावेरी के एक द्वीप पर बसा है। यहां हैदरअली की राजधानी थी।

कुर्ग

यह प्रदेश (१,५८२ वर्गमील, जन-सख्या २ लाख) मैसूर के दक्षिण-पश्चिम में पश्चिमी घाट के ढालों पर स्थित है। १८३० से कुर्ग अंगरेजी राज्य में आ गया था। यहां साल में प्रायः १३० इञ्च से वर्षा होती है। इसलिये यह जिला अधिकतर वन से ढका है। यहा के लोग किसान हैं। धान की खेती के सिवा यहां कहवा और चाय भी होती है। इस जिले का प्रवन्ध मैसूर के रेजीडेण्ट के हाथ में रहा है जो बंगलोर में रहता है। पर सहायक (कमिश्नर) मरकरा में रहता है, जो कुर्ग की राजधानी है।

तेईसवाँ अध्याय

मध्यभारत

मध्यभारत (७८,०० वर्गमील, जनसंख्या सवा करोड़) में ही १,६०० फुट ऊँचा मालवा-पठार शामिल है। इस पठार का क्षेत्रफल प्रायः ३५,००० वर्गमील है। ग्वालियर के उत्तर-पूर्व में बुन्देलखंड का
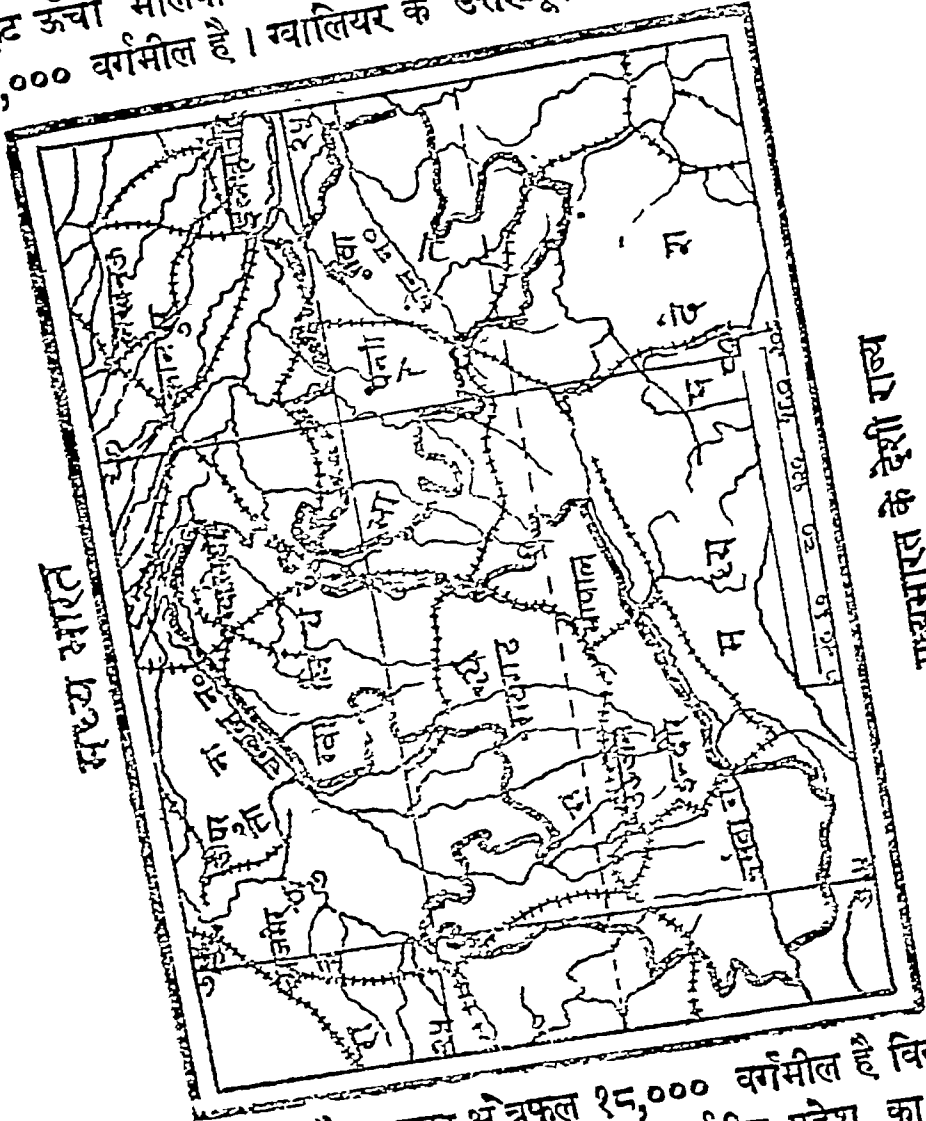
७३—मध्यभारत के देशी राज्य

प्रदेश कुछ नीचा है। इसका क्षेत्रफल १८,००० वर्गमील है विन्ध्या और सतपुड़ा श्रेणियों के समीप मध्यभारत के पर्वतीय प्रदेश का क्षेत्रफल

प्राय: २५,००० वर्गमील है। उत्तर-प्रदेश की झांसी कमिश्नरी ने मध्य भारत को दो भागो में बांट दिया है। इन दोनों में पश्चिमी भाग अधिक बड़ा है। पर दोनो का ढाल उत्तर या उत्तर-पूर्व की ओर है। यहा प्राय. सब पानी चम्बल, सिन्ध, बेतवा और केन नदियों द्वारा यमुना में बह जाता है। टोंस और सोन नदिया सीधी गगा नदी में मिलती हैं। मध्य भारत के केवल १०० मील में नर्मदा अपना पानी पश्चिम की ओर बहाती है। इस प्रदेश में केवल ३० या ४० इञ्च पानी बरसता है। इसलिये यहां की नदियों में अधिक पानी नहीं रहता है। पर पठारी भूमि होने के कारण वर्षा का अधिक पानी नदियों में बह आता है। इससे यहा की नदियों के अचानक बाढ़ आती है। जिस नदी में ग्रीष्म ऋतु में डुबकी लगाने भर को पानी नहीं रहता है, वही नदी वर्षा-ऋतु में उमड़ कर भयानक रूप धारण कर लेती है।

पहले मध्य भारत में १४८ रियासतें शामिल थीं। इनमें ग्वालियर इन्दौर, भोपाल, धार, देवास, ओरछा, दतिया और रीवां प्रधान थीं। १८ मई १९४८ को मध्य भारत या मालवा यूनियन का उद्घाटन हुआ इनमें ग्वालियर, इन्दौर और मध्य भारत की अन्य छोटी रियासतें शामिल हैं। इसका क्षेत्रफल ४५००० वर्गमील जन-सख्या ७२ लाख और वार्षिक आय ८ करोड़ है।

ग्वालियर राज्य (२६,००० वर्गमील, जन-संख्या २५ लाख) मध्य-भारत में सबसे बड़ा और धनी है। सिन्धिया महाराज राज्य प्रमुख हैं। ग्वालियर शहर अब मध्य भारतसघ की शीत कालीन राजधानी है। यह नगर बम्बई से दिल्ली जाने वाली जी० आई० पी० रेलवे का एक प्रधान स्टेशन है। यहा का प्रसिद्ध पहाड़ी किला डेढ़ मील लम्बा और ६४ फुट ऊंचा है। पुराना शहर किले के पास है। नया शहर लश्कर कहलाता है और पुराने शहर से दो मील दक्षिण की ओर है।

उज्जैन (या अवन्ती) शहर सिप्रा नदी के किनारे एक तीर्थ स्थान और ग्वालियर राज्य के मालवा जिले की राजधानी है।
ग्वालियर राज्य में खेती के अतिरिक्त कपास ओटने का काम सब कहीं होता है। चन्देरी में सुन्दर मलमल बनती है। चमड़े का काम कई जगह होता है।

इन्दौर—यह (९,६७० वर्गमील, जन-संख्या १६,१८,०००) राज्य कई अलग अलग टुकड़ों में बंटा हुआ। सबसे बड़ा भाग नर्मदा के दक्षिण में स्थित है। सबसे बड़ा नगर इन्दौर है। यह मध्य

भारत संघ की ग्रीष्म कालीन राजधानी है। अजमेर से खंडवा जाने वाली लाइन पर यह एक बड़ा स्टेशन और व्यापारिक केन्द्र है। यहां कपास ओटने और कपड़ा बुनने की कई मिलें हैं।

इन्दौर के पास ही मऊ में मध्य भारत की सबसे बड़ी छावनी है।

भूपाल—यह (७,००० वर्गमील, जन-संख्या ७,३०,०००) राज्य हैदराबाद के बाद सबसे बड़ा मुसलमानी राज्य था। भूपाल शहर ही इस राज्य की राजधानी है। यह शहर जी० आई० पी० की प्रधान लाइन का एक बड़ा स्टेशन है। यहां से बी० बी० एण्ड सी० आइ० रेलवे की एक शाखा उज्जैन को गई है। राज्य का शासन प्रबन्ध भारत सरकार के हाथ में है।

धार—इस (१,७०० वर्ग मील, जन-संख्या लगभग २ लाख ४३ हजार) राज्य की राजधानी भी धार नगर है। यह नगर इन्दौर के पश्चिम में विन्ध्याचल पठार के उत्तरी भाग में स्थित है।

देवास—यह राज्य (८५० वर्गमील, जन-संख्या १ लाख) और इसी नाम की राजधानी इन्दौर के दक्षिण में स्थित है।

ओरछा और दतिया—ओरछा (२,००० वर्गमील, जन-संख्या ३ लाख २० हजार) दतिया (६१२ वर्गमील जन-संख्या ५६ लाख) राज्य बुन्देलखंड (विन्ध्य प्रदेश) में स्थित है। ओरछा की राजधानी टीकमगढ़ और दतिया की राजधानी दतिया शहर है।

पन्ना—यह (३५० वर्गमील, जन- संख्या दो लाख राज्य हीरा की खानों के लिये प्रसिद्ध था। पन्ना शहर राज्य की राजधानी है।

रीवां—(१३,००० वर्गमील, जन-संख्या १६ लाख) राज्य बघेल खंड (विन्ध्य-प्रदेश) में शामिल है। इस राज्य में खनिज पदार्थ बहुत हैं। उमरिया में कोयला निकलता है। रीवां शहर कैमूर पर्वत के उत्तर में इसी राज्य की राजधानी है। दूसरा बड़ा शहर सतना है जो जबलपुर से इलाहाबाद आने वाली लाइन पर एक बड़ा स्टेशन है। यहां से रीवां को मोटर आते जाते हैं। ४ अप्रैल १९४८ को रीवां राज्य और बुन्देल-खंड के राज्यों ने मिलकर विन्ध्य-प्रदेश का निर्माण किया। इस संघ का क्षेत्रफल २४,६०० वर्गमील जन-संख्या ३६ लाख और वार्षिक आय ढाई करोड़ है।

चौबीसवाँ अध्याय

राजस्थान (राजपूताना)

राजस्थान प्रदेश का(२,८८,८७७ वर्गमील, जन-संख्या १ करोड़ बारह लाख ३३ हजार) मध्य भारत के पठार और सिन्ध गङ्गा के मैदान के बीच मेस्थित है। कर्करेखा राजस्थान के बहुत ही छोटे दक्षिणी सिरे को काटती है। तीस उत्तरी अक्षांश रेखा राजस्थान के उत्तरी सिरे को छूती हुई जाती है। इस प्रकार उत्तर से दक्षिण तक राजस्थान की लम्बाई ५८० मील है। अरावली पर्वत ने राजस्थान के प्राय. वर्गाकार प्रदेश को दो विषम भागों में बांट दिया। अरावली के उत्तर-पश्चिम मे राजस्थान का भाग स्थित है। यह प्रदेश थार रेगिस्तान का ही अंग है। दूसरा भाग अधिक ऊँचा और अधिक उपजाऊ है। इस प्रदेश मे कई देशी राज्य शामिल हैं। केवल बीच में अजमेर मेरवाड़ा का मरुद्वीप का छोटा प्रदेश है।

अरावली पर्वत आबू की (५,६५६ फुट ऊँची) चोटी से आरम्भ होकर दिल्ली तक चले गये है। अजमेर तक इनकी अटूट श्रेणी प्रायः ५००० फुट ऊची है। पश्चिम की ओर इनका उतार एक दम ढालू है। पर पूर्व की ओर वे क्रमश ढालू हो गये हैं। इस ओर कुछ वर्षा होने से ये पेड़ो से भी ढके है। पर जयपुर से दिल्ली तक अरावली का केवल ढाचा रह गया है। दो दो या तीन-तीन मील की दूरी पर रेतीले मैदान के ऊपर छोटे-छोटे पहाड़ी टीले उठे हुये हैं। वर्षा की कमी से वे प्राय:बिल्कुल नग्न है।

अरावली के पश्चिम में बिल्कुल रेतीला उजाड़ है। जगह-जगह पर चार-पांच सौ फुट ऊचे रेतीले या पथरीले टीले है। जैसलमेर और जोधपुर के पास दो तीन सौ फुट ऊँची पहाड़ियां है। वर्षा का प्रायः अभाव होने से इस ओर नदी भी नहीं है। यहा की एक मात्र लूनी (या नम-

कीन,) नदी में कभी कभी कुछ नमकीन पानी रहता है। पीने का पानी बहुत गहरे कुओं से मिलता है। इधर का धरातल भी अक्सर रेतीला और नमकीन है। कुछ ही अच्छे भागों में कांटेदार झाड़ियां और छोटे पेड़ हैं। जहां कुछ पानी मिलता है और ज्वार या बाजरा उगाने की सुविधा है, वहां गांव बसे हुये हैं। जब कुएं का पानी खाली हो जाता है या समाप्त हो जाता है तभी गांव भी उजड़ जाता है। इधर के लोग अधिकतर, भेड़, बकरी और ऊंट पालते हैं। कहीं कहीं (जैसे बीकानेर में) ऊनी कम्बल तैयार किये जाते हैं। इसलिये इधर आबादी भी बहुत कम है। जैसलमेर राज्य (१६००० वर्गमील जन-संख्या ७६,०००) में प्रति वर्गमील में केवल ४ मनुष्य रहते हैं। इसी से बहुत दूर तक रेल या अच्छी सड़क का भी नाम नहीं है। जैसलमेर की अपेक्षा बीकानेर (२३,३१६ वर्गमील, जन संख्या ६,३६,२००) और जोधपुर (३५,००० वर्गमील जन-संख्या २२ लाख का हाल कुछ अच्छा है। बीकानेर के उत्तरी भाग में कुछ दूर तक एक नहर भी लाई गई है। नहर का पानी कहीं तली ही न सोख जावे, इसलिये नहर की तली और दीवारें सीमेंन्ट लगाकर पक्की बनाई गई हैं। बीकानेर और जोधपुर रेलों से भी जुड़े हुये हैं। इधर की रेल-यात्रा बड़ी बिकराल है। स्टेशनों पर पेड़ों या फुलवारी का नाम नहीं है। पीने भर को काफी पानी नहीं मिलता है। जूठे बर्तन बालू से मलकर पोछ लिये जाते हैं। वे पानी से नहीं धोये जाते हैं। अरावली के पूर्व में जमीन ऊँची है और वर्षा भी अधिक होती है। यह पूर्वी भाग दक्षिण की ओर अधिक ऊंचा और उपजाऊ है। अधिक दक्षिणी भाग मालवा पठार का ही अंग है। इस ओर पहाड़ी भागों में बन हैं। मैदान में चरागाह और खेत है। यहां रबी और खरीफ दोनों ही फसलें होती हैं। दक्षिणी भाग में उदयपुर या मेवाड़ (१२६६४ वर्गमील, जनसंख्या १६ लाख) का राज्य है। इसके पास ही हल्दी घाटी का ऐतिहासिक युद्ध-क्षेत्र और चित्तौड़ का प्रसिद्ध किला है। यहां की प्रधान नदी बानास है। बानास और चम्बल के बीच में कोटा, बूंदी, टोंक, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, झालावार, किशनगढ़, प्रतापगढ़, शाहपुरा राज्यों ने उदयपुर राज्य के साथ मिल कर राजस्थान का संघ बनाया। इस संघ का क्षेत्रफल २८८,

८५७७ वर्गमील, जन-संख्या ४३ लाख और वार्षिक आय ३ करोड़ १७ लाख है। उदयपुर के राना राजप्रमुख हैं। उत्तर की अलवर (३१४० वर्गमील, जनसंख्या ७ लाख) भरतपुर (११८३ वर्गमील, जनसंख्या ५ लाख) (धौलपुर ११५५ वर्गमील जन-संख्या २४०,०००) और करौली (१२४० वर्गमील, जन-संख्या डेढ़ लाख) राज्य ने मिलकर मत्स्य संघ बनाया था। फिर यह संघ और जैपुर राज्य (१५५८० वर्गमील जन संख्या २६ लाख) राजस्थान में मिल गया। २७ अक्टूबर १८४७ को काश्मीर भारतीय संघ में शामिल हुआ।

भारतीय रियासतों का एकीकरण

पहले १४ नवम्बर को हैदराबाद से समझौता हुआ। पर यहां रजाकारों ने ऐसा उपद्रव मचाया कि विवश होकर भारतीय सरकार ने यहां सेना भेजकर शान्ति स्थापित की।

उड़ीसा की २५ छोटी छोटी रियासतें १६४८ में उड़ीसा प्रदेश में शामिल हो गईं। इनका क्षेत्रफल १८,००० वर्गमील जन-संख्या ३० लाख वार्षिक आय ८० लाख रुपये हैं।

छत्तीसगढ़ के १४ राज्य १ फरवरी १६४८ को मध्य प्रदेश में शामिल हो गये। इनका क्षेत्रफल ३८,००० वर्गमील था। १ फरवरी को मकराई रियासत मध्य-प्रदेश में शामिल हो गई।

१५ फरवरी को काठियावाड़ की ४४६ रियासतों की यूनियन से सौराष्ट्र का निर्माण हुआ। २२ फरवरी को बङ्गनपल्ली मद्रास प्रदेश में शामिल हो गई।

२३ फरवरी को लोहारू पूर्वी पंजाब में शामिल हुआ। २७ फरवरी को जूनागढ़ ने मतगणना द्वारा भारतीय संघ में शामिल होने का निश्चय किया। ३ मार्च को पुदुकोटा मद्रास प्रदेश में शामिल हुआ। ८ मार्च को दक्षिण भारत की १६ रियसतों का प्रबन्ध बम्बई सरकार ने अपने हाथ में लिया। १७ मार्च १६४८ में मत्स्य यूनियन का उद्घाटन हुआ इसमें अलवर, भरतपुर, धौलपुर और करौली राज्य सम्मिलित हुये इसका क्षेत्रफल ७६०० वर्गमील, जनसंख्या १८ लाख और वार्षिक आय दो करोड़ है। ४ अप्रैल को विन्ध्य प्रदेश यूनियन का उद्घाटन हुआ। इसमें रीवां राज्य और बुन्देलखंड के २४ छोटे राज्य शामिल हैं।

इसका क्षेत्रफल ४६२० वर्गमील, जनसंख्या ३७ लाख और वार्षिक आय ढाई करोड़ है।

१ अप्रैल को हिमालय प्रदेश की २४ रियासतों की यूनियन का हिमाञ्चल नाम का संघ बना। इसका क्षेत्रफल ११,००० वर्गमील और जनसंख्या दस लाख है।

१८ अप्रैल को राजस्थान यूनियन का निर्माण हुआ। इस यूनियन में कोटा, बांसवाड़ा, बूंदी, डूंगरपुर, झालावाड़, किशनगढ़, परताबगढ़, शाहपुरा, टोंक और उदयपुर के राज्य शामिल हुये। उदयपुर के राना राजप्रमुख और कोटा नरेश उप राजप्रमुख चुने गये। राजस्थान यूनियन का क्षेत्रफल २९,९७७ वर्गमील जनसंख्या ४२,६०,००० और वार्षिक आय ३ करोड़ १७ लाख रुपये है। आगे चलकर शेष राज्य भी मिल गये।

२८ मई को मालवा यूनियन अथवा मध्य भारत का उद्घाटन हुआ इसमें ग्वालियर, इन्दौर और मध्य भारत की अन्य छोटी रियासतें शामिल हैं। इसका क्षेत्रफल ४,००० वर्गमील, जनसंख्या ७२ लाख और वार्षिक आय ८ करोड़ है। ग्वालियर नरेश राजप्रमुख और इन्दौर नरेश उप राज प्रमुख हैं। ग्वालियर नगर शीतकालीन और इन्दौर ग्रीष्मकालीन राजधानी बनी।

१० जून को गुजरत की (१८) बंसदा बरिया, खंभात, छोटा उदय पुर, धर्मपुर जौहर, बलासीनेर, लूनावारा, राजपीपला सोचितसंत ईडर राधनपुर, विजयनगर, पालनपुर, जुम्बू गोध्रा और सिरोही रियासतें बम्बई प्रदेश में शामिल हुईं। सरायकेला और खरस्वान रियासतें बिहार प्रदेश में शामिल हुईं। बड़ौदा अलग उत्तरदाई राज्य रहा।

१५ जुलाई को पटियाला कपूर्थला, नाभा. फरीदकोट, झींद, मलेर कटोला, नालगढ़ और कल्सिया राज्यों का संघ (यूनियन) बना। महा राज पटियाला आजन्म राजप्रमुख हुये। कपूर्थला नरेश उप राजप्रमुख हुये। इसके पश्चात् सुन्दर (मद्रास) बनारस, रामपुर (उत्तर-प्रदेश में जैसलमेर राजस्थान में, शामिल हुये। कूचबिहार, त्रिपुरा, मनीपुर, खासी झीपहाड़ी रियासतें (आसाम) सम्मिलित हो गईं।

पचीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा*

बरमा या ब्रह्मा का देश स्वतंत्र राज्य (२,६२,००० वर्गमील, जन-संख्या १ करोड़ ४७ लाख) बंगाल की खाड़ी के उत्तर-पूर्व की ओर प्रायः १० और २८ अक्षांशों और ९२ और १०२ पूर्वी देशांतरों के बीच में स्थित है। इस प्रकार उत्तर से दक्षिण तक ब्रह्मा की बड़ी से बड़ी लम्बाई १,२४६ मील और पूर्व से पश्चिम तक अधिक से अधिक चौड़ाई ५७५ मील है। पर ब्रह्मा की आबादी एक तिहाई से भी कम है।

ब्रह्मपुत्र-घाटी के पूर्व में हिमालय की पूर्वी पर्वत-श्रेणियां दक्षिण की ओर मुड़ जाती हैं। उत्तर-पूर्व में सबका सब प्रदेश पहाड़ी है। आगे चलकर अराकानयोमा, पीगूयोमा और टनासरमयोमा तीन पर्वत श्रेणियां स्पष्ट हो गई हैं। इनके बीच में इरावदी, सीटांग और सालवीन नदियां की घाटिया घिरी हैं।

ब्रह्मा का विशाल देश निम्न प्राकृतिक भागों में बांटा जा सकता है।

१—अराकान और टनासरम का तटीय प्रदेश।

२—डेल्टा प्रदेश।

३—मध्यवर्ती शुष्क प्रदेश।

४—शान-राज्य का पठार।

५—उत्तरी-पश्चिमी पर्वतीय प्रदेश।

---

*१९३५ में ब्रह्मा देश भारतवर्ष का एक प्रांत था।

बरमी भाषा में 'योमा' शब्द का अर्थ पर्वत है।

(१) अराकान का तटीय प्रदेश अराकानयोमा और समुद्र के बीच में स्थित है। इसी प्रकार टनासरमयोमा और समुद्र के बीच में टनासरम का तटीय प्रदेश स्थित है। अराकान का तटीय प्रदेश उत्तर में अधिक चौड़ा है। दक्षिण में बहुत तंग हो गया है। मध्य में कालादान नदी का डेल्टा है। डेल्टा के पास ही अक्याब नगर स्थित है। अधिक आगे समुद्र ने तट को ऐसा काट दिया है कि समरी और चेदूबा आदि द्वीप प्रधान स्थल से पृथक हो गये हैं। इस प्रदेश की मुलायम चट्टानों में पहले मिट्टी का तेल बहुत था, लेकिन बार-बार भूचाल आने से यहां की प्रस्तरीभूत चट्टानें इतनी मुड़ गईं। कि उनका अधिकांश तेल निकल गया। केवल कहीं-कहीं भीतरी गरमी से प्राकृतिक गैस ऊपर उबल पड़ती है। और अपने साथ कीचड़ ले आती है। इस तट पर अक्सर कीचड़ के ज्वालामुखी पर्वत मिलते हैं। कहीं कहीं इन्हीं कीचड़ के ज्वालामुखी पर्वतों से पहाड़ बन गये हैं। इधर का तट कटा फटा अवश्य है, पर इस तट के पास जहाजों को भीतरी चट्टानों से टकरा जाने का डर रहता है। तटीय मैदान बहुत ही तंग और कम आबाद है। पीछे की ओर अराकान की पहाड़ी दीवार इस प्रदेश को ब्रह्मा के और भागों से अलग करती है। इसलिये अक्याब को छोड़ कर अराकान तट पर और कोई अच्छा बन्दरगाह नहीं है।

अराकान-तट के नीचे इरावदी डेल्टा के दक्षिण में टनासरम है। टनासरमयोमा और समुद्र-तट के बीच का तटीय प्रदेश ब्रह्मा के अन्तर्गत है। इस टनासरम के पूर्व में स्याम का स्वधीन राज्य है। अराकान तट की भांति टनासरम तट भी उत्तर की ओर अधिक चौड़ा और दक्षिण की ओर तंग है। दक्षिण की ओर प्रधान स्थल के बहुत कट जाने से मरगुई द्वीप-समूह बन गया है। उत्तर के चौड़े और उपजाऊ भाग में साल्वीन नदी के मुहाने पर इस प्रदेश का सबसे बड़ा बन्दरगाह और शहर मौलमीन हैं। अराकान की अपेक्षा टनासरम की चट्टानें अधिक पुरानी और कड़ी हैं। इन कड़ी चट्टानों में टीन और टंगस्टन या
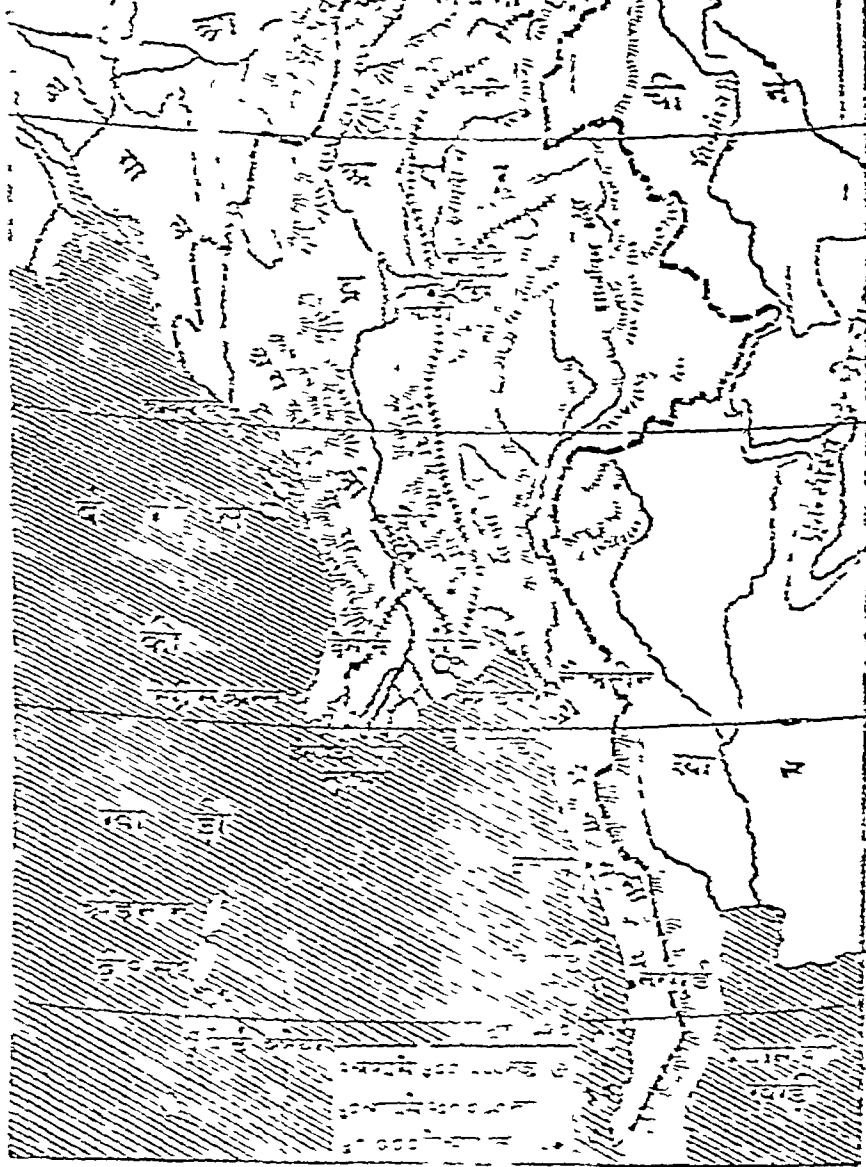
वुल्फरैम (मशीन के काम के लिये नया फोलाद बनाने के लिये टंगस्टन लोहे में मिलाया जाता है,) बहुत मिलती है। टीन को दिसावर भेजने का सब से बड़ा केन्द्र टेवाया है।

अराकान और टनासरम के तट की जलवायु बहुत ही उष्णार्द्र है। सब कहीं ८० इञ्च से अधिक वर्षा होती है। वर्षा की मात्रा दक्षिण की ओर अधिक हो जाती है। टनासरम के दक्षिणी भागों में प्रायः २०० इञ्च वर्षा होती है। कभी कभी प्रबल वर्षा के कारण बोये हुये खेतों के बीज तक बह जाते हैं और बेचारे किसानों को अपने खेत दुबारा बोने पड़ते हैं। तापक्रम प्रायः सदा ऊंचा रहता है। पर भूमध्य रेखा के अधिक पास होने से टनासरम तट पर वार्षिक तापक्रम भेद केवल आठ या दस (फारेनहाइट) अंश रहता है। उत्तर में अराकान तट पर १५ अंश रहता है।

प्रबल वर्षा होने से सघन बन बहुत हैं। जंगली पौधे इतनी तेजी से उगते हैं कि किसानों को अपना खेत साफ रखने में बड़ा परिश्रम करना पड़ता है। यहां की प्रधान उपज धान है। तरह तरह की तरकारी और फल भी बहुत होते हैं। तट के पास समुद्र में मछली मारने का काम सब कहीं अधिक होता है। मरगुई द्वीप समूह के आस-पास मोती भी निकाले जाते हैं।

डेल्टा-प्रदेश

ब्रह्मा के डेल्टा प्रदेश में निचली इरावदी-घाटी और डेल्टा के अतिरिक्त सीटांग-घाटी पीगू योमा का प्रदेश शामिल हैं। इरावदी की निचली घाटी और डेल्टा बहुत ही उपजाऊ कांप (कछारी मिटी) से बना है। यहां पहाड़ी का नाम नहीं है। सीटांग नदी की तंग घाटी और छोटा डेल्टा भी बारीक कांप का बना होने से बहुत ही समतल और उपजाऊ है। सीटांग और इरावदी की घाटियों के बीच में पीगू

योमा (पर्वत) प्रायः २००० फुट ऊँचा है। यह पर्वत भी नई चटानों से बने हैं जो बहुत कड़ी नहीं है।

जलवायु

इस प्रदेश की जलवायु उष्णार्द्र है। यहां का तापक्रम प्रायः तटीय प्रदेश के समान वर्ष भर ऊँचा बना रहता है। शीतकाल और ग्रीष्म ऋतु के तापक्रम का भेद भी अधिक नहीं होता है। इस प्रदेश में प्राय: साल भर में सब कहीं ५० इञ्च से ऊपर वर्षा होती है। वर्षा की मात्रा दक्षिण में अधिक (प्रायः १०० इञ्च) है। पीगूयोमा और सीटाग घाटी में वर्षा और भी अधिक होती है। ऊपर उत्तर को ओर यह वर्षा क्रमशः कम होती जाती है।

उपज

प्रबल वर्षा और उच्च तापक्रम ने यहां के कछारी प्रदेश को और भी अधिक उपजाऊ बना लिया है। बाढ़ के बाद बङ्गाल की तरह यह प्रदेश घास के हरे भरे खेतों का एक विशाल समुद्र बन जाता है। जहां तक नजर जाती है खेती में हरियाली ही नजर आती है। पर बङ्गाल की तरह यहां आबादी घनी नहीं है। गाव बहुत दूर-दूर हैं। समस्त ब्रह्मा की उपज का प्रायः ३।४ धान अकेले डेल्टा प्रदेश में होता है। आबादी कम होने के कारण बहुत सा चावल दिसावर जाता है। धान के अतिरिक्त यहां तम्बाकू, मकई आदि और भी कई चीजें पैदा होती है। पीगूयोमा प्राय: घने बन से ढका है। केवल कहीं कहीं (साफ किये हुये स्थान में करेन लोगों के गाव हैं। वहां के बनों में टीक (सागौन) के वन बड़े काम के हैं। यों तो टीक के पेड़ उत्तरी पर्वत प्रदेश में और भी अधिक हैं। पर पीगूयोमा की लकड़ी बड़ी आसानी से दिसावर को भेजी जा सकती है। बढ़ती हुई मांग के कारण यहां के (टीक के) पेड़ बहुत पहले ही नष्ट हो गये होते। लेकिन सरकार ने यहां के टीक-बन को सुरक्षित घोषित कर दिया। इस घोषणा के अनु-

सार केवल बड़े पेड़ सरकारी आज्ञा से काटे जा सकते हैं। इससे यहां के पेड़ों की रक्षा हो गई। टीक के पेड़ काटने के बाद बड़े-बड़े लट्ठे हाथी, भैंसों या बैलों के द्वारा किसी बड़े नाले में डाल दिये जाते हैं। वर्षा होने पर जब ये नाले उमड़ चलते हैं तो पश्चिमी ढाल की लकड़ी रंगून द्वारा आरा चलाने वाले कारखानों में पहुँचती है। दिसावर जाने वाली चीजों में चावल और मिट्टी के तेल के बाद तीसरा स्थान टीक या सागौन की लकड़ी का ही है।

नगर

पीगूयोमा के वनों में करेन लोगों के छोटे-छोटे गांवों को छोड़ कर कोई बड़ा नगर नहीं है। सीटांग नदी छोटी है। इसमें बड़े-बड़े स्टीमर नहीं चल सकते हैं। इसलिये नदी-तट के नगर बहुत प्रसिद्ध नहीं हैं। लेकिन रंगून से मांडले जाने वाली रेल आरम्भ में सीटांग के ही मार्ग से जाती है। इस घाटी से पीगू और टौंगू आदि जो नगर इस रेल के पास हैं वे ही अधिक प्रसिद्ध हैं। पीगू नगर से एक शाखा लाइन मौलमीन को गई है। अधिक बड़े नगर इरावदी घाटी में स्थित हैं। प्रोम नगर इरावदी के किनारे ऐसे भाग में स्थित है जहां ब्रह्मा का आर्द्र प्रदेश समाप्त होता है और खुश्क प्रदेश आरम्भ होता है। इस लिये इन दोनों प्रदेशों की उपज का विनिमय* यहां होता है। इससे यह नगर व्यापार का केन्द्र हो गया है। प्रोम नगर इरावदी नदी का एक प्रधान स्टीमर-स्टेशन है। स्टीमर द्वारा यहां से रंगून पहुँचने में प्रायः चार दिन लगते हैं। इसलिये ऊपरी भाग से आने वाले मुसाफिर और आवश्यक सामान यहां रेल पर सवार होकर रंगून जाते हैं। यहां से रेल द्वारा रंगून पहुँचने में केवल १२ घंटे लगते हैं।

---

*अदल-बदल

रंगून नगर इरावदी की उपशाखा रंगून नदी पर ब्रह्मा का सबसे बड़ा बन्दरगाह है। यहां रंगून नदी काफी गहरी है। ज्वार भाटा भी कुछ ऊँचा आता है। इसलिये यहा बड़े-बड़े जहाज आसानी से आकर सुरक्षित रह सकते हैं। रंगून नगर की स्थिति बड़े महत्व की है। यहीं पीगूयोमा नीचा होकर प्रायः समाप्त हो गया है। पीगूयोमा के जिस टीले पर वहा का जगतप्रसिद्ध श्वेडेन पगोडा या बुद्ध भगवान का
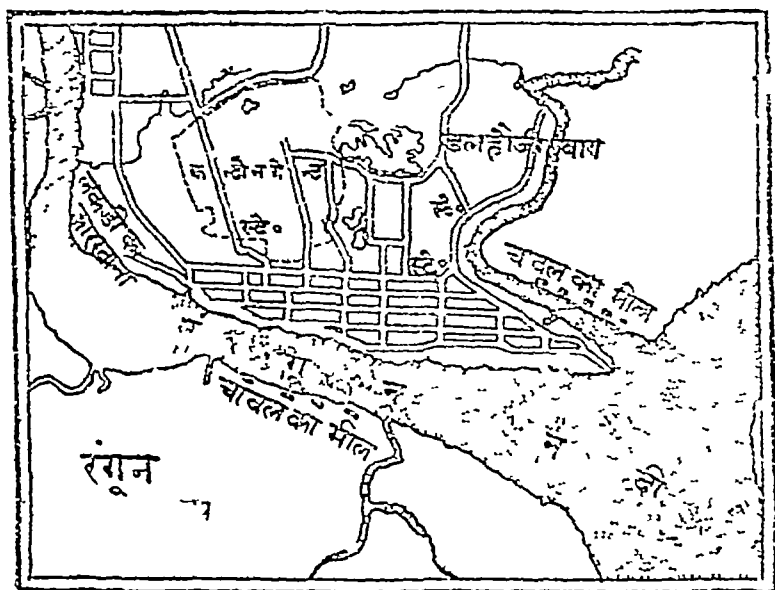
६६—रंगून शहर की स्थिति

स्वर्ण मन्दिर बना है उसकी ऊचाई केवल तीस पैंतीस गज ऊंचा है। इसलिये रंगून शहर से न केवल इरावदी की घाटी में वरन् सीटांग घाटी में भी जल और स्थल मार्गों से पहुँचना सुगम है। इरावदी के मुहाने से ७०० मील दूर वाले नगरों तक स्टीमर जाते हैं। रेलें और भी दूर भिन्न-भिन्न भागों को गई हैं इस प्रकार रंगून बन्दरगाह का पृष्ठ प्रदेश बहुत ही विस्तृत हो गया है। ब्रह्मा का यह प्रदेश बहुत ही घनी है। यनांजाऊं और मिजू का मिट्टी का तेल विशेष नावों और नलों द्वारा वहां आता है

यहां (सीरियम में) वह साफ किया जाता है और उससे पेट्रोल मोटर
में जलने का तेल, मोमवत्ती और जलाने का तेल तैयार होता है। इसी
साफ हालत में मिट्टी का तेल दिसावर भेजा जाता है। अपर ब्रह्मा
और पीगूयोमा के सागौन के लट्ठे भी नदी में वहाकर यहां लाये
जाते हैं। और आरा चलाने की वड़ी-वड़ी मिलों में चीरे जाते हैं।
फिर यह सागौन की लकड़ी दिसावर भेजी जाती है। डेल्टा प्रदेश के
अपार धान से दिसावर भेजने के लिये यहां की मिलों में (कूट कर)
चावल तैयार किया जाता है। चावल, तेल और लकड़ी ब्रह्मा की प्रधान
दिसावरी चीजें है। इनके अतिरिक्त थोड़ी-थोड़ी मात्रा में यहां से
सीसा (नमटू की खानों का) कपास, तिलहन आदि कई चीजें दिसा-
वर को भेजी भ्राती है। वाहर का पक्का माल (कपड़े, मशीनें आदि)
प्रायः सव माल यहीं आकर ब्रह्मा के भिन्न-भिन्न भागों में भेजा जाता
है। डेल्टा का दूसरा वन्दरगाह वसीन है। यहां भी समुद्री जहाज पहुँच
सकते हैं।

मध्यवर्ती खुश्क प्रदेश

डेल्टा-प्रदेश के उत्तर में इरावदी की मध्य-घाटी पश्चिम की ओर
अराकानयोमा से और पूर्व की ओर शान रियासतों के पठार से घिरी
हुई है। ब्रह्मा के इस प्रदेश की जमीन तो अच्छी है। लेकिन पहाड़ों
की आड़ में स्थित होने से यहां वर्षा कम होती है। इस प्रदेश में साल
भर में प्रायः २० और ४० इंच के वीच में वर्षा होती है। भीतर की
ओर समुद्र से अधिक दूरी पर स्थित होने के कारण यहां शीतकाल और
ग्रीष्म-ऋतु के तापक्रम में भी काफी अन्तर रहता है। ब्रह्मा का यह
खुश्क प्रदेश वहुत सी वातों में उत्तर-प्रदेश के पश्चिमी भागों से
मिलता जुलता है। मांडले के आस-पास का प्रदेश मेरठ के प्रदेश
की याद दिलाता है। प्राचीन समय से वरमी लोग इस प्रदेश को सींचने
के लिये तालावों और नहरों के खोदने का प्रवन्ध करते रहे हैं। हाल में
कई पुरानी नहरें सुधारी गई हैं और नई नहरें खोदी गई हैं।

उपज

बरमी लोगों का प्रधान भोजन चावल है। इसलिये धान खुश्क प्रदेश में भी होता है। धान के अतिरिक्त यहा ज्वार, बाजरा, तिल, मटर मूंगफली, मक्ई, कपास और तम्बाकू आदि की खेती होती है।

इस खुश्क प्रदेश की मुलायम चट्टानों में मिट्टी का तेल बहुत है। पहले कुआ खोदने से ही अक्सर मिट्टी का तेल निकल आता था। आजकल ३,०० फुट तक मशीन द्वारा खुदाई करनी पड़ती है। इरावदी के दोनों किनारों पर इस खुश्क प्रदेश में खुदाई की मशीन दूर से दिखाई देती है। यनाजाऊ, भिजू, यनाजात और सिनबू मिट्टी के तेल के प्रधान केन्द्र है। "बरमा आयल कम्पनी" ने तेल भेजने के लिये रंगून तक ३०० मील लम्बा नल [पाइप] लगाया है। दूसरी कम्पनिया अपना तेल टंकीनुमा नावो में रंगून के कारखानों में साफ होने के लिये पहुँचती है।

ब्रह्मा का खुश्क प्रदेश धनी होने के अतिरिक्त बहुत ही स्वास्थ्य-कर है। इसी से माडले, अमरपुरा, आवा और पगान नगर प्राचीन समय में ब्रह्मा की राजधानी बने। सन नगरों में मांडले सबसे अधिक प्रसिद्ध है। माडले शहर इरावदी के किनारे देश के प्रायः मध्य में स्थित है। यहा से ब्रह्मा के सभी भागों को सुगम मार्ग गये है। इरावदी नदी उत्तर की ओर भामो और मिचीना को, दक्षिण की ओर रंगून को माडले से मिलाती है। मिंगे नदी मांडले के पास ही इरावदी से मिलती है और उत्तर-पूर्व की ओर मिंगे नदी शान पठार में होकर कुनलाग घाट (साल्वीन नदी के किनारे के लिये मार्ग बनाती है। उत्तर-पूर्व की ओर चिंडविन नदी वनाच्छादित पर्वतीय प्रदेश में मार्ग खोलती है। माडले के पास ही सीटांग घाटी का उत्तरी सिरा है। आजकल प्रायः इन सब भागो में रेल खुल गई है। शान-प्रदेश में मिंगे घाटी के रास्ते से एक रेल मांडले से लाशियों को गई है। उत्तर की ओर मिचीना जाने वाली रेल आरम्भ
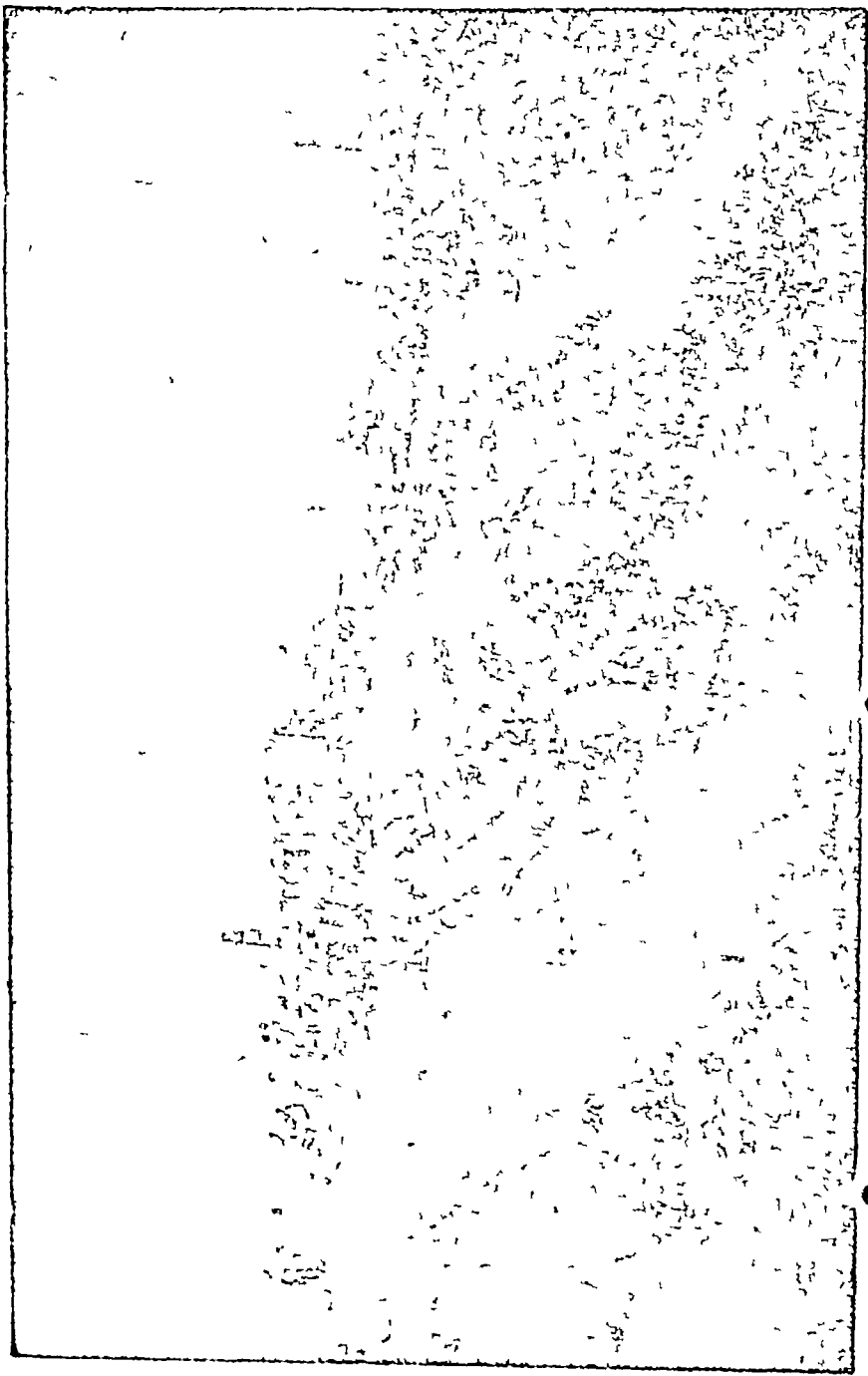
१००—तेल प्रदेश का एक साधारण दृश्य

से मू-घाटी का अनुसरण करती है। उत्तर-पश्चिम में चिंडविन नदी की ओर माडले (सगाईं) से एक रेल मनीवा और वुदालिन को गई है सीटांग घाटी की रेल मांडले को रंगून से मिलाती है। १८८५ ई० से मांडले नगर वरमा की राजधानी नहीं रहा। समुद्री मार्ग से ब्रह्मा में घुसने वाले अंगरेजों के लिये ऐसे स्थान मे राजधानी वनाना अधिक अनुकूल था जहाँ वे अपने जहाजों से सहायता पहुँचा सकते थे या जहा से सकट के समय जहाजों पर चढ़कर भाग सकते थे। इसलिये उन्हों ने रगून में राजधानी वनाई। पर जव उनके पैर जम गये और १८८५ ई० में ब्रह्मा के राजा थीवा के कैद हो जाने पर अपर ब्रह्मा भी अँगरेजी राज में मिला लिया गया उस समय भी रंगून शहर इस वढ़े हुये राज्य की राजधानी वना रहा। लेकिन मांडले शहर अपनी अच्छी स्थिति के कारण इस समय भी व्यापार का केन्द्र है। हाल में इरावदी नदी के ऊपर आवा पुल वन जाने से मांडले की उपयोगिता और भी अधिक वढ़ गई है। यहा लकड़ी चीरने के कई वड़े-वड़े कारखानें हैं। पास ही अमरपुरा में रेशम वनाने का काम होता है। यहा से प्रायः १० मील की दूरी पर मिगे में वरमा रेलवे का सवसे वड़ा कारखाना है। वरमा की गाड़िया यहा वनाई जाती है। यहा उनकी मरम्मत होती है। माडले के दक्षिण में इरावदी के किनारे मिजान नगर भी स्टीमर का घाट और व्यापार का केन्द्र है। पास के प्रदेश की रुई से सूती सामान वनाने के लिये यहा एक वड़ा कारखाना खुल गया है।

शान-राज्यों का पठार

इस पठार की ऊँचाई समुद्र-तट से प्राय तीन चार हजार फुट है। इस उच्च प्रदेश की पश्चिमी सीमा प्रायः आधी दूर तक सीटांग घाटी से वनी हुई है। जहां सीटांग घाटी समाप्त होती है वहां से आगे वाले भागों तक इरावदी की घाटी इस (पश्चिमी) सीमा को पूरी करती है। इस पश्चिमी सीमा और साल्वीन- नदी के वीच में पठार का सवसे वड़ा भाग स्थित है, शेष छोटा पर अधिक ऊँचा त्रिभुजाकार

१०१—बरमी फुट-बाल
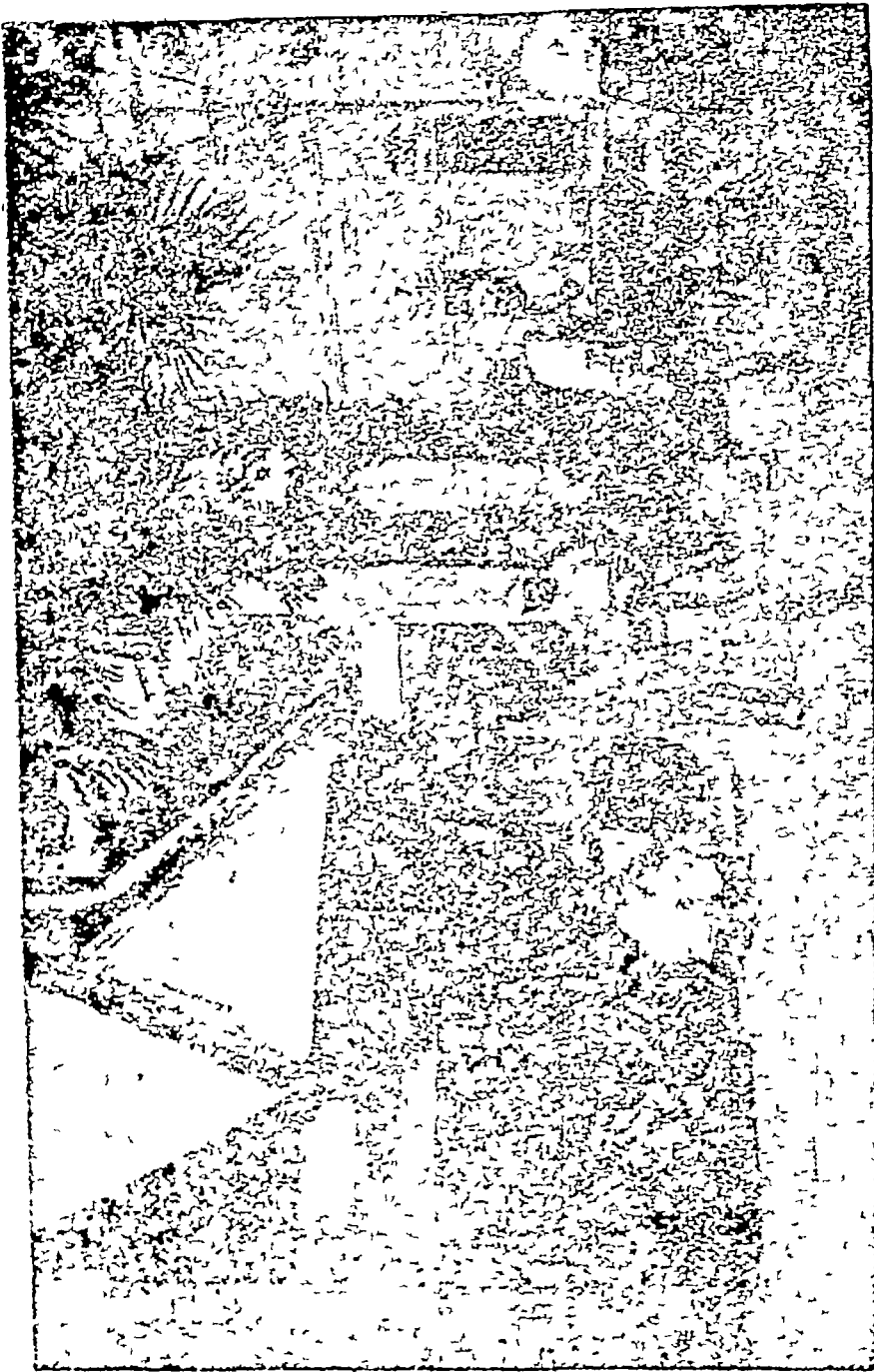
भाग सालवीन नदी के पर्व में उत्तर की ओर चीन से और दक्षिण की ओर स्याम राज्य से घिरा हुआ है। इस प्रदेश में अधिकतर चूने की पहाड़ियां हैं। इनके घिसने से जो जमीन बनी है, वह अधिकतर छिद्रयुक्त है। अधिकांश पठार कर्क रेखा के दक्षिण में स्थित है। लेकिन ऊंचाई के कारण यहां का तापक्रम अधिक ऊंचा नहीं होने पाता है। मेमियो का तापक्रम ग्रीष्म-ऋतु में काफी नीचा रहता है। इसी से मैदान में रहने वाले धनी लोग गरमी के दिनों में यहां चले आते हैं। ऊँचाई के कारण यहां भी वर्षा खूब होती है।

पर छिद्रयुक्त मिट्टी होने से केवल निचले भागों में धान, मकई, आलू तरकारी आदि की खेती होती है। कहीं कहीं गेहूँ भी होता है। ऊपरी भागों में बांस आदि के वन हैं। अथवा घास है। इसी से इस ओर शान लोग गाय, बैल और भैंस बहुत पालते हैं। कुछ ढालों में चाय और शहतूत के पेड़ हैं। रेशम के कीड़ों को शहतूत की पत्तियां खिला कर यहां बहुत सा रेशम तयार किया जाता है। वनों में लाख इकट्ठा की जाती है। दक्षिण की ओर सागौन के भी मूल्यवान वन हैं।

लाशियो के उत्तर-पश्चिम में वीरान पहाड़ियों के बीच में नमटू गांव के पास बाडविन में चांदी और सीसे की खानें हैं। इसी से यह शान प्रदेश में सबसे अधिक धनी है।

मांडले के उत्तर-पश्चिम में इरावदी से प्रायः ६० मील की दूरी पर मोगो में लाल (मणी) की खानें हैं। कालाके पास लोइआन में कोयला पाया जाता है।

जन-संख्या और नगर

इस प्रदेश की आबादी बहुत कम है। यहां बरमी लोगों का प्रायः अभाव है। यहां उत्तर की ओर कछिन, मध्य के विशाल भाग में शान जाति और दक्षिण की ओर करेन जाति के लोग हैं। श्वेली और मिंगे नदियां यहां से चीन के लिये मार्ग बनाती हैं। श्वेली के मार्ग में प्रान्तीय

१०२—एक शान स्त्री
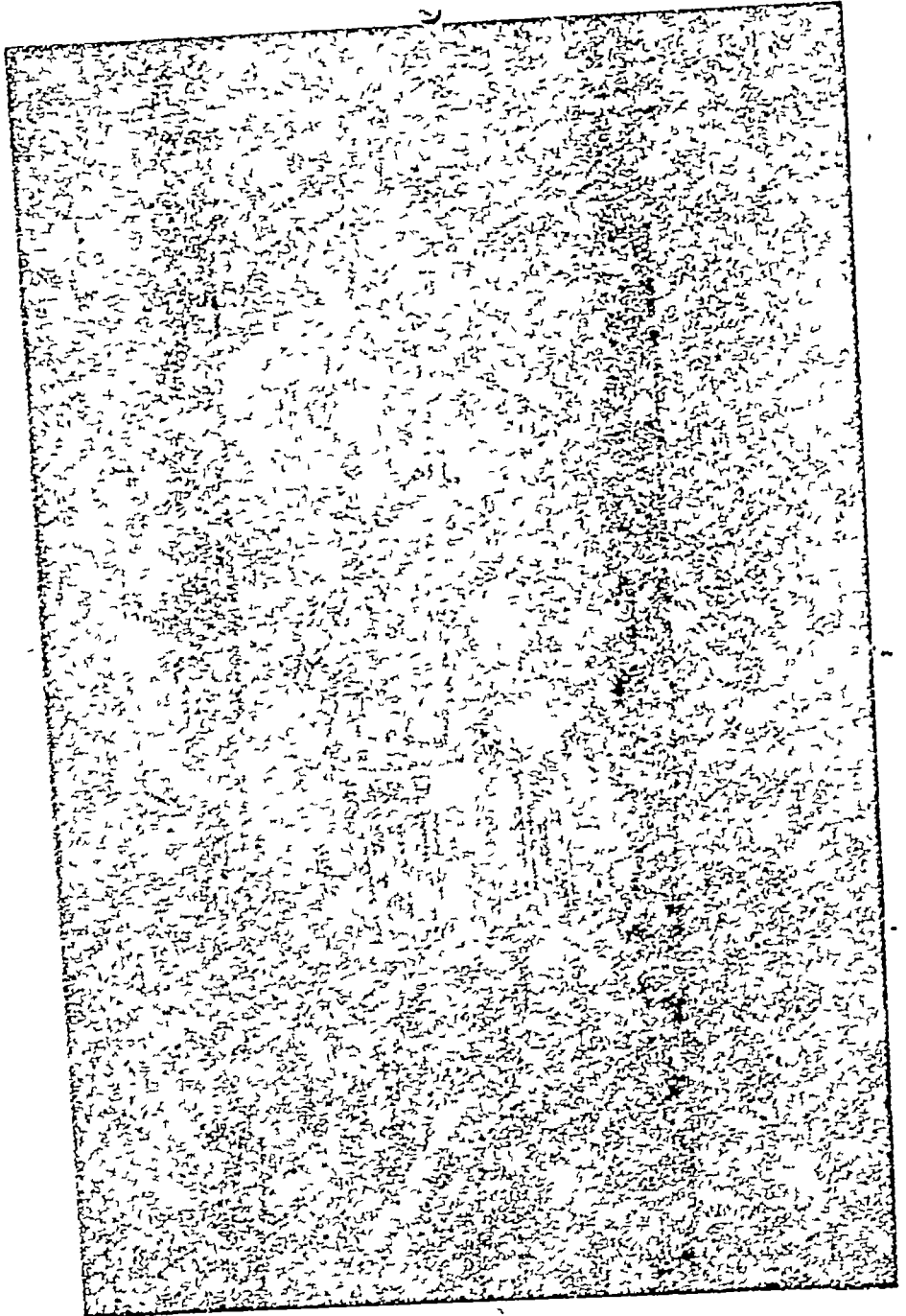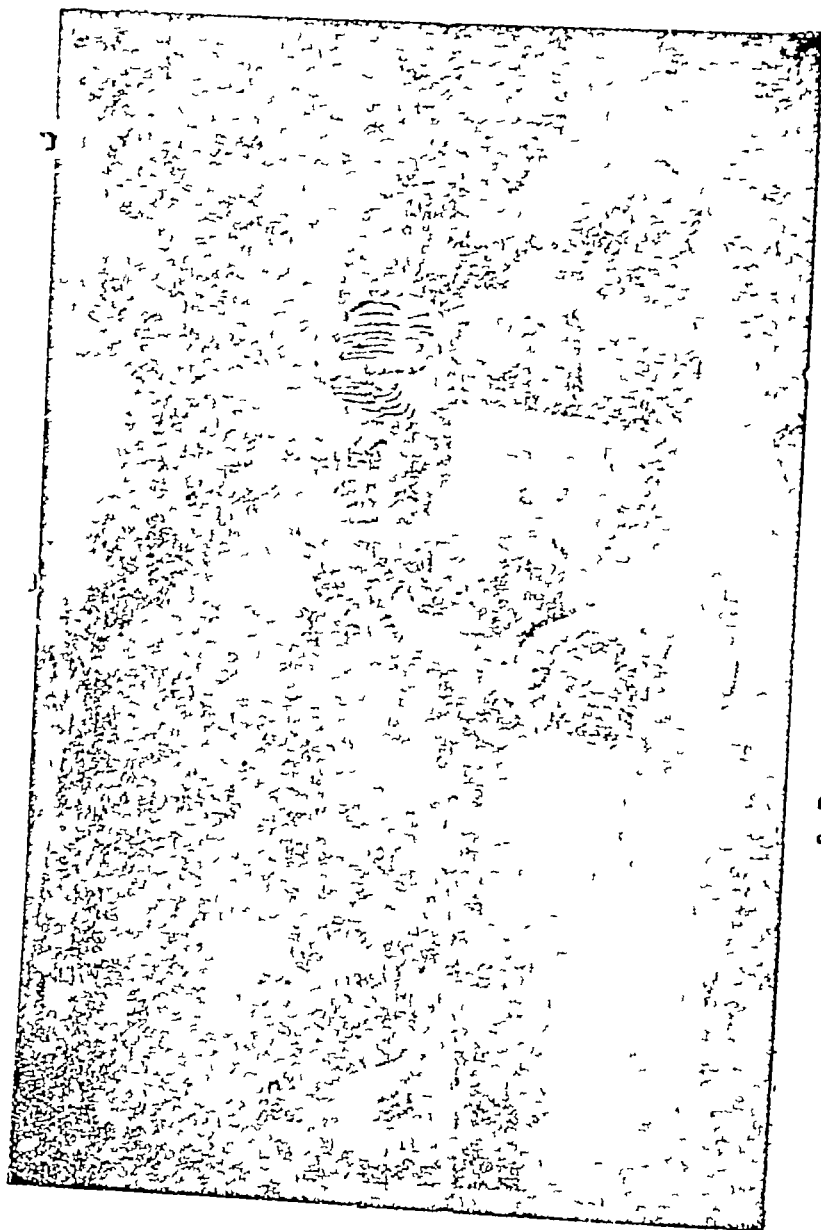
१०३—ब्रह्मा का एक साधारण परिवार

२०४-ब्रह्मा के भिक्षु लोग
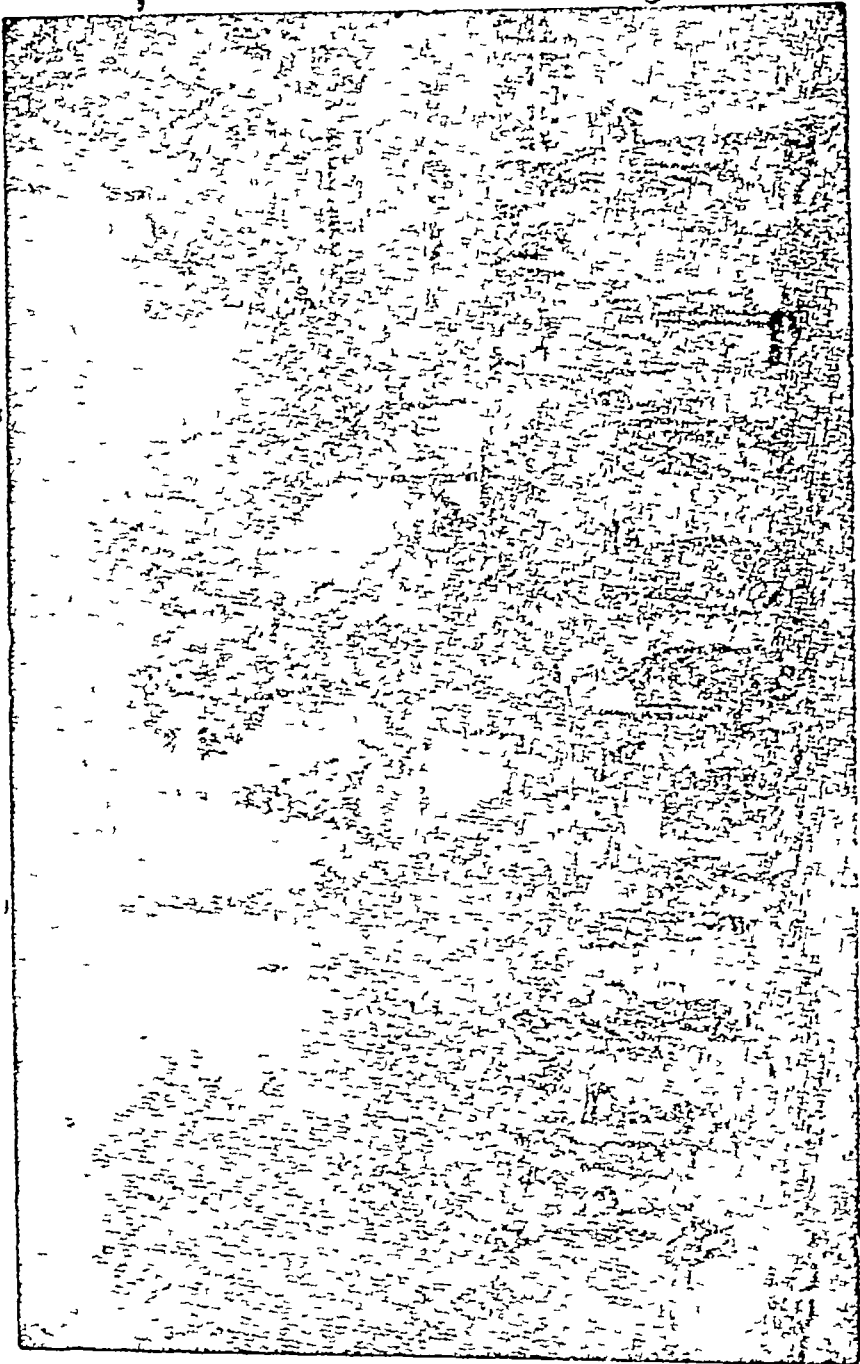
सीमा पर नमखन नगर बस गया है। पर भामो सीमा-प्रदेश का सबसे बड़ा नगर और व्यापारिक केन्द्र है। यहा इरावदी का स्टीमर-मार्ग समाप्त होता है और चीन के लिये स्थल-मार्ग आरम्भ होता है।

मिंगे घाटी में सीपा नगर पहले बहुत प्रसिद्ध था, पर जब से रेलवे लाशियो तक बढ़ा दी गई तब से सीपा का महत्व घट गया है।

उत्तर-पश्चिमी पर्वतीय प्रदेश

ब्रह्मा का उत्तर-पश्चिमी प्रदेश दक्षिण की ओर ढालू हो गया है। इरावदी और उसकी सहायक छिंडविन नदिया यहीं से निकल कर दक्षिण की ओर बहती है। प्रबल वर्षा होने से यह प्रदेश घने वनों से ढका हुआ है। इसके कुछ भागों का अब तक ठीक ठीक पता नहीं लगा है। इस प्रदेश में शान लोग कम हैं। यहां अधिक कछिन लोगों की बस्तिया हैं। इस प्रदेश का अन्तिम रेलवे स्टेशन मिचीना है। यहा इरावदी की चौड़ाई केवल १०० गज रह जाती है। यह नगर बहुत ही छोटा है। मिचीना से प्राय: ३०० मील उत्तर में पुटाओ नगर तक खच्चरों के द्वारा व्यापार होता है। पहले हुकाङ्ग घाटी के मार्ग से आसाम-बङ्गाल रेलवे को ब्रह्मा की (मिचीना-मांडले) रेलवे से जोड़ने का प्रस्ताव था। इस मार्ग में केवल एक पहाड़ी ऐसी थी जो ४,००० ऊँची थी। इसमें सुरंग बनाया जा सकता था। पर देश इतना निर्जन और जगली था कि इस से रेलवे को लाभ की कोई आशा न थी। इसलिये ब्रह्मा को हिन्दुस्तान से रेल द्वारा जोड़ने का प्रस्ताव स्थगित कर दिया था। अब तो ब्रह्मा देश को हिंदुस्तान से अलग ही कर दिया गया है।

छब्बीसवाँ अध्याय

अंडमान और निकोबार

अंडमान (२,५०८ वर्गमील) निकोबार (३६५ वर्गमील) द्वीप समूह कलकत्ता से ७८० मील दक्षिण की ओर और रंगून से ३६० मील पश्चिम की ओर स्थित है। ये द्वीप समूह उस निमग्न पर्वत-श्रेणी की बची हुई चोटियां हैं जो किसी समय अराकान योमा को सुमात्रा द्वीप की मध्यवर्ती पर्वत-श्रेणी से मिलाती थी। आराकान की तरह इन द्वीप समूहों में भी पहाड़ियां उत्तर से दक्षिण को गई हैं। इनकी चट्टानें भी एक सी हैं। पहाड़ियां अधिक ऊँची नहीं है। सब से ऊंची चोटी केवल २,४०० फुट ऊंची है।

भूमध्य रेखा के पास स्थित होने से इन द्वीपों की जलवायु बहुत उष्णार्द्र है। वर्षा प्रायः १५० इञ्च होती है। तापक्रम सदा ऊंचा रहता है। इसलिये ये द्वीप समूह सघन वनों से ढके हैं। सघन वनस्पति के किनारे तक चली आई है। पर निकोबार द्वीप के कुछ भाग इतनी मोटी चिकनी मिट्टी के बने हैं कि उसमें घास तो होती है लेकिन पेड़ नहीं उगते हैं। अंडमान और निकोबार द्वीपों के बहुत से भाग चावल, केला आदि उष्ण कटिबन्ध की उपज के लिये अनुकूल हैं। इन द्वीपो समूहों का कटा-फटा तट बन्दरगाहों के लिये बहुत अच्छा है। बङ्गाल की खाड़ी के तूफानों से सताये हुए जहाज अक्सर यहां शरण लेते हैं। अंडमान का सर्वोत्तम बन्दरगाह पोर्ट ब्लेअर है जो दक्षिणी द्वीप में पूर्व की ओर स्थित है। हिन्दुस्तान के आजन्म कैदियों या बहुत लम्बी सजा वाले कैदियों को रखने के लिये १८८५ ई० में अंगरेजों ने इन द्वीप पर अधिकार कर लिया था। कैद की अवधि पूरी हो जाने पर कुछ स्वतन्त्र कैदी यहीं रहने लगे। हाल में भी मोपला विद्रोहियों को यहां बसाने का प्रयत्न किया गया। पर सारी आबादी २६००० से अधिक से नहीं है इसमें प्रायः २,००० मूल निवासी असभ्य हब्शी हैं जिनकी संख्या घटती चली जा रही है। १६३२ ई० में यहां ७६७२ आजन्म कैदी थे। अब यहां राजनैतिक कैदियों का रखना बन्द कर दिया गया है। इन द्वीप-समूहों का प्रबन्ध यहां के चीफ कमिश्नर के हाथ है। अब यह द्वीप स्वतन्त्र भारत के अङ्ग हैं।

सत्ताईसवाँ अध्याय

लङ्का

लंकाद्वीप (२५,०७० वर्गमील, जनसंख्या ४५ लाख) दक्षिण भारत के दक्षिण-पूर्व की ओर हिन्द-महासागर में ५—५० और ६—५० उत्तर अक्षांशों के बीच में स्थित है। उत्तर से दक्षिण तक इसकी बड़ी से बड़ी लम्बाई १७० मील है और पश्चिम से पूर्व तक अधिक से अधिक चौड़ाई १४० मील है ८० पूर्वी देशान्तर रेखा लंका के केवल पश्चिमी तट को काटती हुई गुजरती है। ८२ देशान्तर लंका के पूर्व तट से बिलकुल (लगभग आठ-दस मील) अलग है। द्वीप का आकार एक ऐसे लम्बे आम से मिलता है जिसका डन्ठल तोड़ दिया गया हो और जिसका सिरा ऊपर (भारत) की ओर कर दिया गया हो।

दक्षिण भारत (करनाटक) और उत्तरी लङ्का की चट्टानें, जमीन जलवायु और वनस्पति आदि में विलक्षण समानता है। तंग और उथली पाक-प्रणाली (पाक-जलसंयोजक) भी यही सिद्ध करती है कि प्राचीन समय में लङ्का द्वीप भारतवर्ष का ही अंग था।

लङ्का की बनावट सीधी सादी है। लङ्का के प्रायः मध्य में कुछ दूर दक्षिण को हटा हुआ एक पर्वत-समूह है। दक्खिन के पठार की भांति लङ्का के पहाड़ भी बहुत कड़ी चट्टानों से बने हैं। अति प्राचीन होने से वे बहुत घिस गये हैं। सब से बड़ी चोटी पिदुरतलगला केवल ८,२६६ फुट ऊँची है। दक्षिण में कुछ कम ऊंचाई (७,२५२ फुट) पर अधिक प्रसिद्ध चोटी रामपद या बुद्धपद या आदम की चोटी कहलाती है। इस मध्यवर्ती पर्वत समूह से चारों ओर को ढाल है पर दक्षिण की ओर समुद्र-तट पास है। इसलिये उत्तर की अपेक्षा दक्षिण की ओर ढाल भी अधिक सपाट है पहाड़ों की ऊँचाई कम होने से यहां बरफ कभी
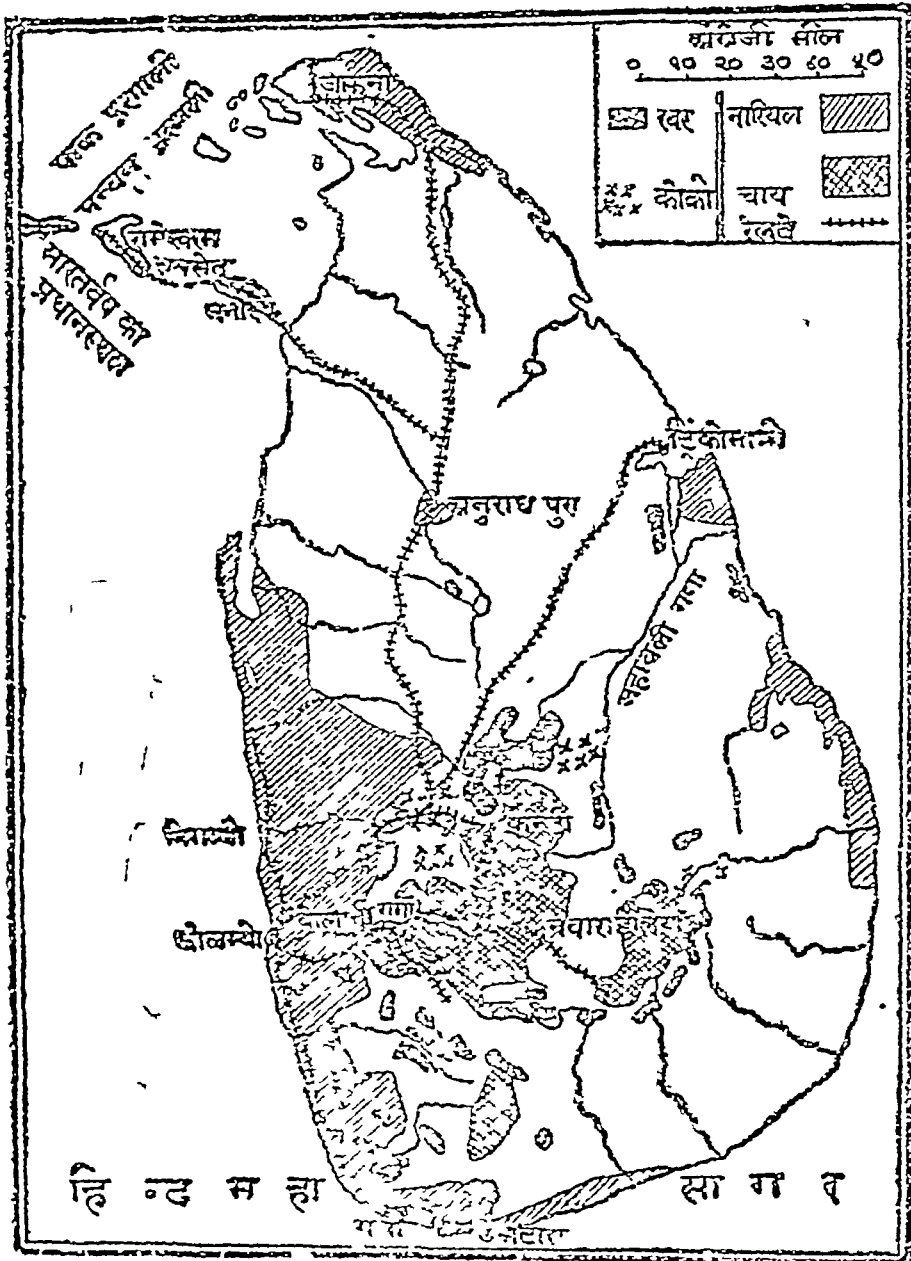
१०५—लङ्का-उपज, भाग और नगर

नहीं पड़ती है। पर पानी काफी बरसता है। लेकिन द्वीप का सर्वोच्च भाग प्रायः मध्य में स्थित है। इसलिये यहा की बरसाती नदियों को बहुत दूर तक बहने का अवसर नहीं मिलता है। यहा की सबसे बड़ी नदी महावली गगा केवल १४३ मील लम्बी है। यह नदी पिदुरतलगला से निकल कर कैंडी होती हुई उत्तर-पूर्व की ओर ट्रिकोमाली त्रिकोण मलय की खाड़ी में गिरती है। केलानी गंगा ठीक पश्चिम की ओर बहती है। इसका मार्ग ऐसे प्रदेश में स्थित है जहा दोनों ऋतुओं में पानी बरसता है। इसलिये यह नदी कभी नहीं सूखती है पर लङ्का की नदिया इतनी छोटी और उथली है कि उनमें नावें नहीं चल सकती है।

मध्यवर्ती पठार के चारों ओर ढालू मैदान है। इसकी ऊँचाई कहीं भी १,००० फुट से अधिक नहीं है। वास्तव में यह मैदान भी उन्हीं चट्टानों का बना है, जिनसे लङ्का का पठार बना है। पर मैदान में ये चट्टानें लाल मुलायम मिट्टी की मोटी तहों के नीचे दब गई है। उत्तर की ओर जाफना का चौड़ा मैदान समुद्र-तल से कहीं भी दो तीन सौ फुट से अधिक ऊचा नहीं है। इधर की जमीन में चूना अधिक है। इसका रग प्राय पीला है। केवल कहीं-कहीं इसके ऊपर लाल मिट्टी की पतली तह बिछी हुई है। तट के पास जमीन सब कहीं नीची है। पर तट बहुत ही कम कटा फटा है और अक्सर गोरन या मैग्रूव से ढका है। मालाबार-तट की तरह यहा भी समुद्री लहरों ने तट के पास रेत इकठा करके अनेक अनूप (लेगून) बना दिये है। कई स्थानों पर ये अनूप नहरों द्वारा जोड़ दिये गये है।

जलवायु

लङ्का से भूमध्य रेखा प्रायः तीन चार सौ मील दक्षिण की ओर रह जाती है। इसलिये यहा के दिन रात प्रायः साल भर बराबर होते है। समुद्र भी सब कहीं पास है। इसलिये लङ्का की शीत ऋतु और ग्रीष्म-ऋतु में कोई विशेष अन्तर नहीं होता है। यहा की ग्रीष्म-ऋतु

उत्तरी भारत की तरह विकराल नहीं होता है। यहां जाड़े के दिनों में भी काफी गरमी पड़ती है। नुवाराएलिया और कैंडी आदि कुछ पहाड़ी स्थानों को छोड़ कर यहां के लोग दिसम्बर और जनवरी महीने में भी दोपहर को छाता लगाते हैं। नारियल के रस या शरबत में बरफ डाल कर पीते हैं। और रात को चादर या और कोई मामूली कपड़े ओढ़ कर बरामदे में सोते हैं। नुवाराएलिया यहां का सब से अधिक ठंडा नगर है। पर यहां की शीतकाल में इलाहाबाद के मुकाबले में बहुत कम सरदी पड़ती है। लङ्का में दिन और रात के तापक्रम में बहुत कम अन्तर रहता है। पर शीतकाल और ग्रीष्म ऋतु के तापक्रम में इससे भी कम अन्तर पड़ता है। उदाहरण के लिये कोलम्बो का तापक्रम अत्यन्त ठंडे (जनवरी) महीने में ८० अंश फारेनहाइट होता है। अत्यन्त गरम (मई) महीने का तापक्रम ८४ं फारेन हाइट अधिक नहीं होता है। इस प्रकार वार्षिक तापक्रम भेद (दिन और रात के तापक्रम का भेद) दस या बारह अंश फारेनहाइट होता है।

लंकाद्वीप मानसून या मौसमी हवाओं के ठीक रास्ते में स्थित है। इसलिये इस द्वीप के पश्चिमी भाग में मई से सितम्बर मास तक वर्षा होती है। मैदान की अपेक्षा पहाड़ी के पश्चिमी ढालों पर अधिक वर्षा होती है। उत्तर की ओर किसी पहाड़ के न होने से और दक्षिण पूर्व की ओर मध्यवर्ती पहाड़ों की आड़ पर जाने से बहुत ही कम वर्षा होती है। उत्तर-पूर्व मानसून के अवसर पर प्रायः नवम्बर से फरवरी मास तक लङ्का के दक्षिण-पूर्वी और उत्तरी भाग में विशेष वर्षा होती है। इस ऋतु में पश्चिमी भाग को छोड़ कर प्रायः समस्त द्वीप में वर्षा होती है। केवल उत्तरी-पश्चिमी सिरे और दक्षिण-पश्चिम में साल भर में ५० इञ्च से कम पानी बरसता है। शेष भागों में प्रबल वर्षा होती है। केवल पहाड़ी प्रदेश में कहीं कहीं २०० इञ्च से भी अधिक वर्षा होती है।

वनस्पति

सदा ऊँचा तापक्रम रहने और प्रबल वर्षा होने के कारण इस समय भी लङ्का का प्रायः ३।५ भाग सघन बनों से घिरा हुआ है। जिनमें हाथी, बन्दर, चीता और जङ्गली जानवर विचरते हैं। दक्षिण पश्चिम की ओर ऊचे पहाड़ी ढालों के बन को साफ कर चाय के बगीचे लगाये गये है। अधिक नीचे ढालों में रबड़ के पेड़ लगाये गये है। अधिक नीचे ढालों में रबड़ के पेड़ लगाये गये है। मैदान में तथा कुछ ऊचे भागों में समुद्र से थोड़ी दूर पर नारियल के बगीचे हैं। अनुकूल भागों में दारचीनी मसाले के खेत हैं। धान की खेती सजल भागो में प्रायः सब कहीं होती है। पर लङ्का की जमीन बहुत उपजाऊ नहीं है। कुछ खुश्क भागो मे सिचाई का भी ठीक प्रबन्ध नहीं हुआ है। इससे इस समय में भी प्रायः ३।५ भागों में खेती होती है। शेष २।५ भाग बेकार पड़ा है।

मनुष्य

लङ्का के अधिकांश निवासी सिहाली लोग हैं। ये लोग अशोक के समय में यहां बौद्ध धर्म का प्रचार करने आये और यहां के लोगों में हिल-मिल गये ये लोग सिहाली भाषा बोलते है। जो सस्कृत से मिलती जुलती है। उत्तर के जाफना प्रान्त में अधिकाश लोग तामिल है जो समय समय पर दक्षिण-भारत से आकर यहाँ बस गये है। इनके अतिरिक्त यहा कुछ मूर लोग हे जो पुराने अरबी सौदागरो की सन्तान है। कुछ वर्गर योरुपीय वर्णसकर और कुछ शुद्ध योरुपीय लोग भी हें। सघन वनों के दुर्गम भागों में वहा के प्राचीन मूल निवासी वेद्दा लोग रहते है। वहा के लोगो का प्रधान पेशा खेती है। तटीय प्रदेश मे मछली मारने वाले बहुत रहते है। रत्नपुरा के आस-पास पठार मे कुछ लोग खानों मे भी काम करते है। खानो से कुछ मणि और पेन्सिल का सुरमा निकलता है। चाय और रबड़ के बगीचों के मालिक अधिकतर योरुपीय है। इन बगीचों में दक्षिण भारत

के प्राय: तामिल मजदूर काम करते हैं। द्वीप की आवादी घनी नहीं है। यह आवादी अधिकतर केला और नारियल के बगीचों से घिरे हुये छोटे गांवों में रहती है। इस द्वीप के प्राय: हर एक घर में एक छोटा सा बगीचा है। बड़े शहर कम हैं।

१०६—लंका का एक परिवार

लङ्का की राजधानी और सबसे बड़ा नगर कोलम्बो है। यह नगर केलानी गङ्गा के मुहाने पर पश्चिमी तट के प्राय: दक्षिणी भाग में बसा हुआ है। यहां पर तट कुछ मुड़ता है। इसलिये दक्षिणी, पश्चिमी मानसून से यहां के बन्दरगाह की कुछ रक्षा हो जाती है। इस बन्दरगाह को पूर्ण रूप से सुरक्षित करने के लिये एक लम्बी चौड़ी दीवार बनानी पड़ी है। बन्दरगाह कुछ गहरा भी कर दिया गया है। इसलिये अब कोलम्बो न केवल लङ्काद्वीप का ही सबसे बड़ा बन्दरगाह है। वरन् वह कई समुद्री मार्गों का जङ्क्शन (संगम) हो गया है। योरुप से जितने जहाज स्वेज के मार्ग से कलकत्ता, सिंगापुर, चीन जापान या आस्ट्रेलिया को जाते हैं। वे सब यहां ठहर कर और

कोयला* लेकर जाते हैं। यहां से दक्षिण पूर्व अफ्रीका और दक्षिणी भारत और रंगून को भी व्यापारी जहाज आते जाते रहते हैं। कोलम्बो का पृष्ठ-प्रदेश (पीछे का देश) बड़ा उपजाऊ है। कोलम्बो शहर रेल द्वारा उत्तर में तलेमनार और जाफना से, मध्य में कैंडी और नुवारा एलिया से पूर्व की ओर त्रिकोमाली से दक्षिण की ओर गाल से जुड़ा हुआ है। इसके अतिरिक्त कोलम्बो से देश के बड़े बड़े शहरों को सुन्दर पक्की सड़कें गई हैं। इसलिये तटीय प्रदेश का नारियल और दक्षिणी पश्चिमी भीतरी भाग की रबड़ और चाय कोलम्बो बन्दरगाह से ही दिसावर भेजी जाती है। मशीन, कपड़े आदि आवश्यक विदेशी चीजें भी कोलम्बो बन्दरगाह से लङ्का के भिन्न-भिन्न भागों में पहुंचती हैं। कोलम्बो शहर की आबादी प्रायः ढाई लाख है। पर शहर बहुत ही खुला हुआ है। यहां अजायबघर आदि कई देखने योग्य चीजें हैं।

कैंडी नगर पहाड़ी प्रदेश में कोलम्बो से ७२ मील की दूरी पर बहुत ही ऊँचा नीचा बसा है। लङ्का की पुरानी राजधानी यहीं थी। कैंडी का दलदमालगा या बुद्ध भगवान के दांत का मन्दिर बहुत प्रसिद्ध है। यहीं लङ्का के कला-कौशल के समान का सुन्दर संग्रह है। कैंडी से प्रायः तीन मील की दूरी पर पेरडेनिया का बोटेनिकल गार्डन केवल लङ्का में नहीं वरन् पूर्वी देशों में सर्वोत्तम है।

नुवाराएलिया प्रसिद्ध पहाड़ी स्टेशन है। और छोटी लाइन (नैरोगेज) द्वारा कैंडी से मिला हुआ है। कैंडी से उत्तर की ओर अनुराजपुर में विचित्र प्राचीन (बौद्ध) भग्नावशेष हैं। अनुराज के धुर-उत्तर की ओर जाफना को रेल गई है। उत्तर-पश्चिम की ओर एक

---

*लङ्का में कोयला नहीं होता है। इसलिये कुछ जहाज ग्रेटब्रिटेन नेटाल और कलकत्ता से कोयला लाकर यहां जमा करते हैं। जैसे रेल का इञ्जन अपनी लम्बी यात्रा में अनुकूल स्टेशनों पर कोयला लेता है वैसे ही जहाज का इञ्जन भी जगह जगह पर कोयला लेता है।

शाखा तलेमनार को गई है। तलेमनार से धनुष्कोटि को (भारतवर्ष के

भारतवर्ष और लंका के बीच में चलने वाली रेलवे
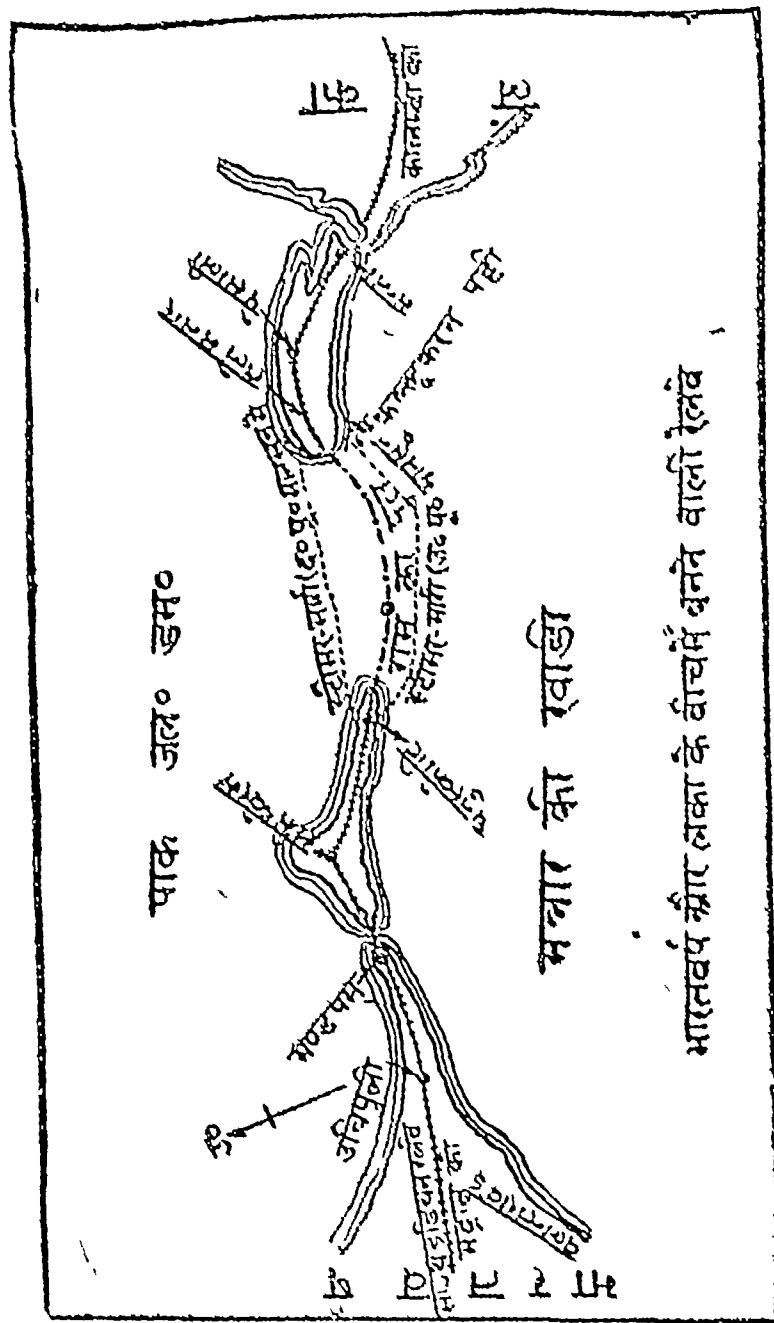
१०८—दक्षिणी-पश्चिमी मानसून के दिनों में स्टीमर मार्ग पूर्व की ओर होता है। उत्तरी-पूर्वी मानसून के चलने पर स्टीमर का मार्ग पश्चिम की ओर हो जाता है। ऋतु के अनुसार मार्ग से स्टीमर हवा के मुँह से बच जाता है।

लिये) प्रतिदिन स्टीमर छूटा करते हैं। धनुष्कोटि स्टेशन रामेश्वर द्वीप

ट्रिन्कोमाली—(त्रिकोणमलय) लङ्का के उत्तरी-पूर्वी तट पर लङ्का का सर्वोत्तम प्राकृतिक बन्दरगाह है। उसकी विशाल गहरी खाड़ी में जहाज बिल्कुल सुरक्षित रह सकते हैं। पर इसका पृष्ठ प्रदेश उपजाऊ नहीं है। इसलिये ट्रिन्कोमाली एक छोटा नगर रह गया। हाल में यह नगर रेल द्वारा कोलम्बो से मिला दिया गया है।

१८०२ ई० में लङ्का द्वीप मद्रास प्रान्त में शामिल था। फिर यह अलग कर दिया गया। तब से लङ्का द्वीप ब्रिटेन का शाही उपनिवेश (क्राउन कालोनी) बन गया। अब यह देश भी स्वाधीन हो गया है।

मालद्वीप—ये द्वीप-समूह लङ्का के दक्षिण पश्चिम में ४०० मील की दूरी पर भूमध्य रेखा के बिल्कुल पास स्थित हैं। ये द्वीप नारियल के पेड़ों से ढके हुये हैं जिनसे सुन्दर रस्सी बनाई जाती है। यहाँ के निवासी (प्राय. ७० मील) सिंहाली लोगों से मिलते जुलते हैं। पर आजकल वे इस्लाम धर्म को मानते हैं। ये लोग मछली मारने, नाव और रस्सी बनाने का काम करते हैं। नाम मात्र की इन द्वीपों का मालिक यहाँ का सुल्तान है। पर वास्तव में ये द्वीप लङ्का की सरकार के आधीन हैं। लङ्का द्वीप या लकद्वीप समूह मालद्वीप से २०० मील है। उत्तर की ओर १० और १४ उत्तरी अक्षांशों के बीच में स्थित हैं। इन मूँगे के द्वीपों का शासन भारत सरकार के हाथ में है।

अट्ठाईसवाँ अध्याय

पश्चिमी पाकिस्तान

पाकिस्तान का नया राज्य भारत को स्वाधीनता मिलने पर भारत का ही विच्छेद कर के बनाया गया। पाकिस्तान का राज्य साम्प्रदायिकता के आधार पर बना। जहां जहां मुसलमान बहुत संख्या में थे वे भाग पाकिस्तान में सम्मिलित कर दिये गये। पाकिस्तान के दो खंड हैं। पश्चिमी पाकिस्तान में सिन्ध, बिलोचिस्तान, सीमाप्रान्त और पश्चिमी पंजाब शामिल हैं। इन के पड़ोस की मुसलमानी रियासतें भी पाकिस्तान में शामिल हैं। इनमें बहावलपुर, खैरपुर, कलात, खारन, लासबेला, मकरान, चित्राल, दीरस्वात प्रमुख हैं।

पूर्वी पाकिस्तान में पूर्वी बङ्गाल शामिल है। स्थल-मार्ग से पूर्वी पाकिस्तान पश्चिमी पाकिस्तान से १२०० मील दूर है। दोनों पाकिस्तानी भागों का क्षेत्रफल २,३६,००० वर्गमील और जन संख्या ६ करोड़ है। पश्चिमी पाकिस्तान उत्तर और पश्चिम में ईरान और अफगानिस्तान से घिरा हुआ है। इसके दक्षिण में अरबसागर, उत्तर में काश्मीर, पूर्व में पूर्वी पञ्जाब, विशाल राजस्थान और सौराष्ट्र हैं।
पूर्वी पाकिस्तान के दक्षिण में बङ्गाल की खाड़ी, पूर्व मे बरमा और शेष ओर भारतवर्ष है।

बिलोचिस्तान

यह पाकिस्तानी प्रान्त फारस, अफगानिस्तान, सिन्ध और अरबसागर से घिरा हुआ है। मध्यवर्ती बिलोचिस्तान में पहाड़ियां उत्तर से दक्षिण को गई हैं। मुज्ञ अन्तरीप के निकट समुद्र के पास वे बिल्कुल छिप गई हैं। यह पहाड़ियां सुलेमान पर्वत की शाखायें हैं जो इस प्रदेश में रीढ़ के समान स्थित हैं। पश्चिमी बिलोचिस्तान में पहाड़ियां बहुत हैं। मध्य-श्रेणी से निकलने के बाद वे समुद्र तट के समानान्तर चलती हैं। अन्त में वे या तो समुद्र में लुप्त हो जाती हैं या दक्षिण फारस के मैदान में नष्ट हो जाती हैं अथवा फारस के पहाड़ों से मिल जाती हैं। पूर्वी बिलोचिस्तान में (जो हरनोई घाटी में पूर्व में स्थित है) पहाड़ियों की गति पश्चिम-पूर्व को है। अन्त में वे कुछ उत्तर की ओर मुड़ कर सुलेमान की प्रधान श्रेणी से मिल गई हैं।

इस प्रदेश को हम चार भागों में बांट सकते हैं:—

(१) उत्तर-पूर्व में विशाल कच्छी या कछारी मैदान है।

यहां वर्षा का प्राय: अभाव है और साल में ८ महीने खूब गर्मी पड़ती है। पर जहां तहां पहाड़ी धाराओं के पास यह प्रदेश अत्यन्त उपजाऊ है। समीपवर्ती पहाड़ी में फिरकों की बस्तियां भी हैं। कच्छ गन्दाब पुरानी राजधानी है।

(२) इस विशाल कच्छी मैदान के पश्चिम में पहाड़ी देश है। पठार में वरुही फिरके रहते हैं। क्वेटा के उत्तर पूर्व में जरउन नाम सर्वोच्च चोटी समुद्र-तल से १२,००० फुट ऊंची है। शाल या क्वेटा ५,६००० फुट ऊँची है।

*क्वेटा का पुराना नाम शालकोट है।

कलात की ऊंची घाटी (६,८०० फुट) पर खान का अधिकार है। लास-बेला समुद्र-तट पर निचला मैदान है।

बरुही पठार की पर्वत श्रेणियाँ जगह जगह पर टूटी हुई हैं। इन्हीं में होकर कुछ पहाड़ी धाराओं ने अपना मार्ग निकाला है। इस प्रकार बरुही पठार इन दर्रों के द्वारा कछारी मैदान से अलग हो गया है। उत्तर में बोलन दर्रा ६० मील लम्बा और क्वेटा और पिशीन के लिये रास्ता बनाता है। दक्षिण में मूला दर्रा ८० मील लम्बा है। और कलात और खारान के लिये रास्ता खोलता है। दोनों रास्ते तंग पथरीली घाटियों में स्थित हैं। पर अब उनमें तोप गाड़ियों के चलने योग्य सड़क बना दी गई हैं।

(३) बरुही पठार के पश्चिम में बलोच पठार है। समुद्र-तट से साठ सत्तर मील तक जमीन धीरे धीरे ऊंची होती जाती है। इसकी ऊंचाई प्रायः ५०० फुट है। पर अधिक आगे बढ़ने पर एक दम डेढ़ दो हजार फुट की चढ़ाई है। यहीं पहाड़ियां हलमन्द के प्रवाह-प्रदेश और अरब सागर के बीच में जल विभाजक बनाती हैं। बलोच पठार के पहाड़ बरुही पठार के पहाड़ों से कम ऊंचे हैं। बलोच पठार का सबसे ऊंचा पहाड़ स्याह कोह है जो केवल ७,००० फुट ऊंचा है। इसी प्रदेश में समुद्र तट और प्रथम पर्वत-श्रेणी के बीच मकरान स्थित हैं। 'मकरान' शब्द माहेखुरान शब्द से बना है। जिसका अर्थ मच्छी खोर है। यहां ऐसे भग्नावशेष मिलते हैं। जो इसके शानदार भूत काल की सूचना देते हैं। पर इस समय यह खुश्क उजाड़ और रोग ग्रस्त प्रदेश है। भीतर की ओर कई लम्बी और तंग पहाड़ियां हैं। जिनके बीच बीच में विस्तृत घाटियां हैं। पर ये घाटियां अधिकतर रेतीली और उजाड़ हैं। केवल पहली घाटी कुछ हरी भरी है जहां छुहारों के बगीचे, गांव और किले हैं। सिन्ध और फारस के बीच में यह एक प्राकृतिक मार्ग है।

(४) हलमन्द घाटी से दो सौ मील दक्षिण में दूसरी पर्वत श्रेणी तक बिलोचिस्तान का रेगिस्तान फैला हुआ है। इस रेगिस्तान का ढाल
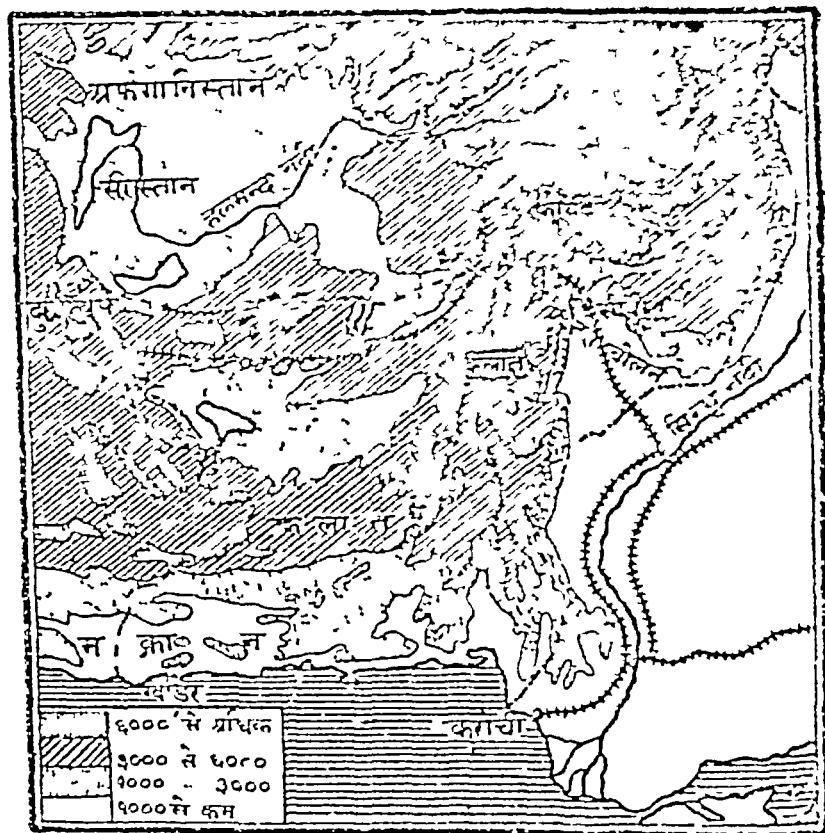
१०८—बिलोचिस्तान

उत्तर-पश्चिम की ओर है, पर इसमें हामून नाम के कई विशाल आखात हैं। जिनमें समीपवर्ती पहाडी धाराओं का पानी समा जाता है। इन आखातों के पास खेती के योग्य बहुत जमीन है। क्योंकि पानी धरातल से दूर नहीं है।

कम्बल ले जाना चाहिये। पर शीतकाल में ऊंचे पठार पर कड़ाके का जाड़ा पड़ता है।

यहाँ के जङ्गली पेड़ बहुत छोटे और मुरझाये हुये रहते हैं। जङ्गली जैतून, पिस्ता, रामास मुख्य पेड़ हैं। सानी के पास कत्तन में मिट्टी के तेल के कुछ चश्मे मिले हैं। सेक्वान के सीसा और लसबेला में ताँबा मिलने के निशान पाये जाते हैं। हर्नोई घाटी में सस्ती गन्धक और सुरमा मिलता है। जहाँ कहीं पहाड़ी धाराओं या करेज (पहाड़ी ढालों से जमीन के भीतर आने वाली नहरों) से सिंचाई सम्भव है। वहाँ खेती होती है। कलात, क्वेटा, मस्तुङ्ग, पिसीन आदि स्थानों में स्वादिष्ट फल होते हैं। छोटी घाटियों में कच्चे घर और खेत अक्सर मिलते हैं। दश्त और पञ्जगूर में अपनी बाढ़ के साथ नदियों ने इतनी उपजाऊ काँप बिछा दी है कि वहाँ अनाज, कपास, अंगूर और छुहारे बहुतायत से उगते हैं। फारस की सीमा पर केज, तुम्प और मान्डनगर छुहारों के बगीचों के बीच में बसे हुये हैं।

बिलोचिस्तान का दृश्य दिन में बड़ा बुरा रहता है, पर मकरान का सूर्योदय और सूर्यास्त बड़ा सुन्दर माना जाता है। कुछ चोटियों पर जून तक बरफ रहती है। अधिकतर पहाड़ नंगे और उजाड़ हैं। कुछ ढालों पर हरियाली दिखाई देती है। क्वेटा और पिसीन में ऋतु के साथ दृश्य बदलता है। शीतकाल की वर्षा के बाद बसन्त में सुन्दर सुगन्धित फूल खिल जाते हैं। लहलहाती हुई फसल जून में कटती है। जुलाई, अगस्त और सितम्बर में धूल भरी हुई गरम आँधियां चलती हैं। अक्टूबर में रात को पाला पड़ने लगता है। आकाश में धूल का नाम नहीं रहता। शीतकाल में पत्तियां झड़ जाती हैं और जहाँ तहाँ बरफ पड़ने लगती है।

यहाँ की आबादी लगभग ५ लाख है। बलोच लोग बद्दू हैं और फारसी की ही एक उपभाषा बोलते हैं। इसमें पञ्जाबी और सिन्धी के शब्द मिले रहते हैं। लिपिबद्ध भाषा का अभाव है। इसीसे

दूर दूर रहने वाले फिरके एक दूसरे की बोली नहीं समझ पाते हैं। इास लोग अपने को अरब ला।।ा की सन्तान बताते हैं। पंजगूर के कचकी

१०९—बिलोचिस्तान का एक घुड़सवार

लोग एक सिक्ख उपनिवेश से उत्पन्न हुये हैं। लूस बेला के लूमरी लोग सोमर राजपूत हैं। खरान रेगिस्तान के नौशेर वानी लोग फारसी लोगों की सन्तान हैं।

मध्यवर्ती पठार के प्रधान निवासी ब्रहुई हैं। ये लोग बलोचियों से भिन्न हैं। ब्रहुई भाषा दक्षिण भारत की द्राविड़ भाषा से मिलती

जुलती है। वहां के अधिकतर निवासी मुसलमान हैं। हिंदुओं की संख्या कम है। हिन्दू लोग प्रायः शहरों और बन्दरगाहों में बसे हैं। और लेन देन और व्यापार के काम में लगे हुये हैं। वहाँ के लोग अतिथि-सत्कार के लिये प्रसिद्ध हैं। उनमें अफगानिस्तान के पठानों का सा धार्मिक कट्टरपन भी नहीं है। बलोच लोग कद में अफगानिस्तान से कुछ छोटे हैं। वे लम्बे घूंघरदार बाल रखते हैं। अक्सर चाकू, ढाल और तलवार बांधते हैं। उनके सूती कपड़े बहुत ढीले ढाले होते हैं। साफा बहुत बड़ा होता है। चूंकि अधिकतर ये लोग चलते फिरते रहते हैं। इसलिये इनकी स्त्रियों में परदा नहीं होता है। वहां का व्यापार अधिक नहीं है। यहां की पहाड़ी ऊन बड़ी अच्छी होती है। यह व्यापार बहुत कुछ बढ़ाया जा सकता है।

उन्नीसवाँ अध्याय

सीमा प्रान्त

सीमाप्रदेश पठानों का देश है। वे पठानिस्तान चाहते हैं। पर अभी मुस्लिम लीग ने उन्हें दबा कर पाकिस्तान में मिला रक्खा है।

अगर हम डेरागाजीखाँ के सामने सुलेमान पहाड़ के पश्चिमी सिरे से ठीक पश्चिम की ओर एक लकीर क्वेटा तक खींचे तो उस लकीर के दक्षिण में बलोच और उत्तर में पठान जातियां मिलेंगी। इस प्रकार सफेद कोह और सुलेमान का प्रदेश पठानों का देश है। देश प्रदेश की पूर्वी सीमा पर सिन्ध नदी और पश्चिमी सीमा पर अफगानिस्तान है। इसके उत्तर में काश्मीर राज्य और कुंआर नदी है।

यह लम्बा प्रदेश बहुत ऊंचा नीचा है। यहां उजाड़, पथरीली पहाड़ियां और गहरी घाटियां हैं। कहीं-कहीं पहाड़ी नदियाँ हैं। किसी किसी पहाड़ के सपाट ढाल या नदी के कोड़ पर कछारी धरती में एक आध खेत हैं। यहाँ के रास्ते बड़े भयानक हैं। इस प्रदेश में कुर्रम गोमल, जोब, काबुल तथा उसकी सहायक चित्राल और स्वात नदियां हैं।

पश्तो या पख्तो की भाषा है। कोमल कन्धारी बोली पश्तो नाम से पुकारी जाती है। पेशावर घाटी कर्ण कटु भाषा को पख्तो कहते हैं। यह भाषा संस्कृत, प्राकृत और अरबी, फारसी के मिश्रण से बनी है।

पठान लोग 'पुख्तन वाली'' के नियमों को मानते हैं। इसके अनुसार ये शरणागत शत्रु को भी आश्रय देते हैं। बदला लेना इनका दूसरा धर्म है। इस प्रकार अतिथि-सत्कार करना इनका तीसरा धर्म है। ये लोग बदला लेना कभी नहीं भूलते हैं। अंग्रेजी फौज में जहां दूसरे

या खानदान के लोग रहते हैं। हर एक कंडी का प्रबन्ध करने के लिये एक मालिक होता है। हर एक कंडी में एक जमात या मस्जिद भी होती है। इसकी देख भाल मुल्ला के हाथ में रहती है। मस्जिद के पास ही हुजरा या सभा भवन होता है। दर्शक या यात्री लोग यहीं ठहरते
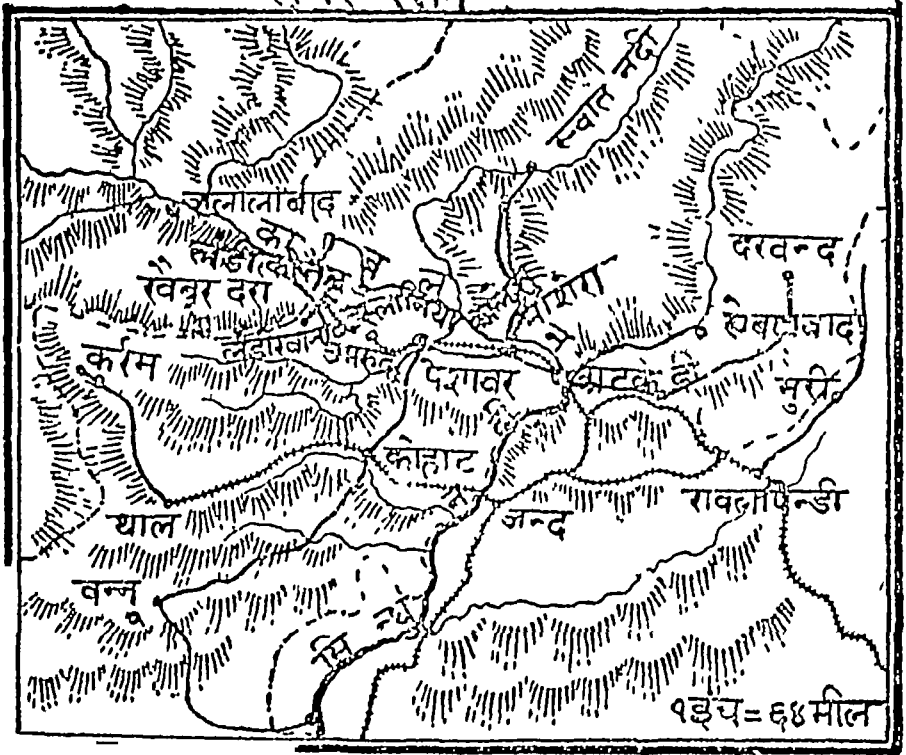
१११—खैबर-प्रदेश

हैं। गांव की सभा भी यहां होती है। महत्व की बातें इसी भाग या जिरगाह में तय होती हैं। खान या फिरके का मालिक सभापति बनता है। अधिकतर पठान कट्टर सुन्नी हैं। केवल तुरी, कुछ बङ्गश और कजई लोग शिया हैं।

सिपाही शादी विवाह के लिये छुट्टी लेते थे वहां पठान सिपाही अपने शत्रु से बदला लेने के लिये छुट्टी लेते थे।
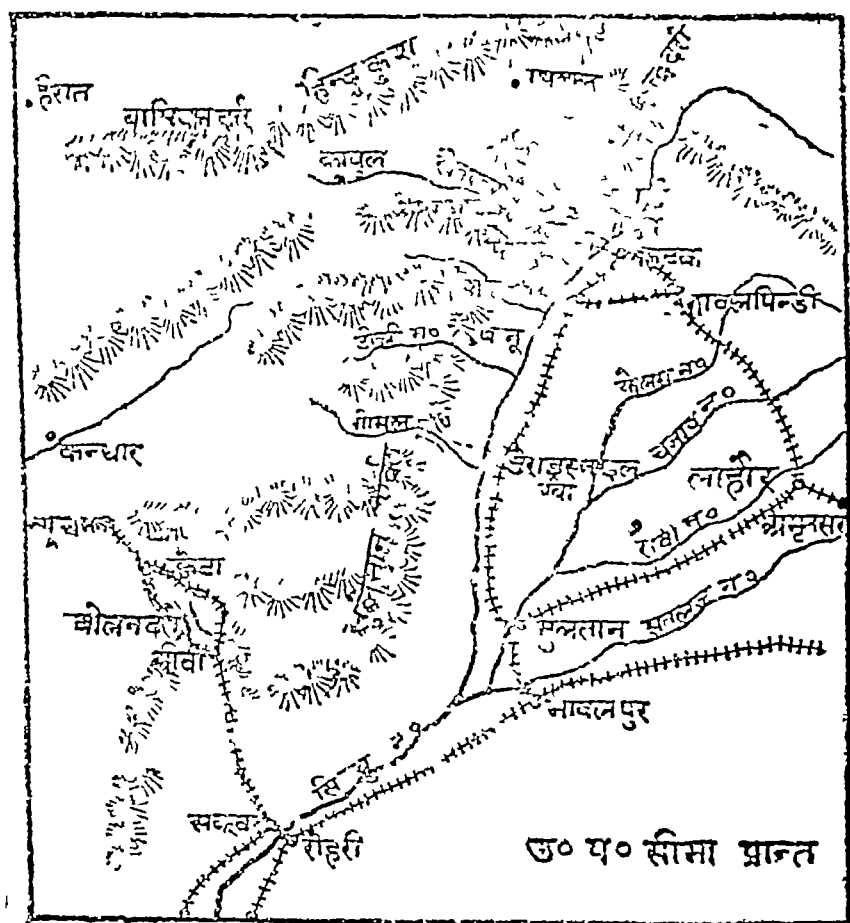
११०—उत्तरी-पश्चिमी सीमाप्रान्त

पठान लोग अधिकतर खेतिहर या चरवाहे होते हैं। कुछ लोग तिजारत भी करते हैं। इनके घर दुर्गाकार होते हैं। इनके गाँव कई भागों या कण्डियों में बटे हैं। प्रत्येक कन्डी में किसी खास खेल

या खानदान के लोग रहते हैं। हर एक कंडी का प्रबन्ध करने के लिये एक मालिक होता है। हर एक कंडी में एक जमात या मस्जिद भी होती है। इसकी देख भाल मुल्ला के हाथ में रहती है। मस्जिद के पास ही हुजरा या सभा भवन होता है। दर्शक या यात्री लोग यहीं ठहरते
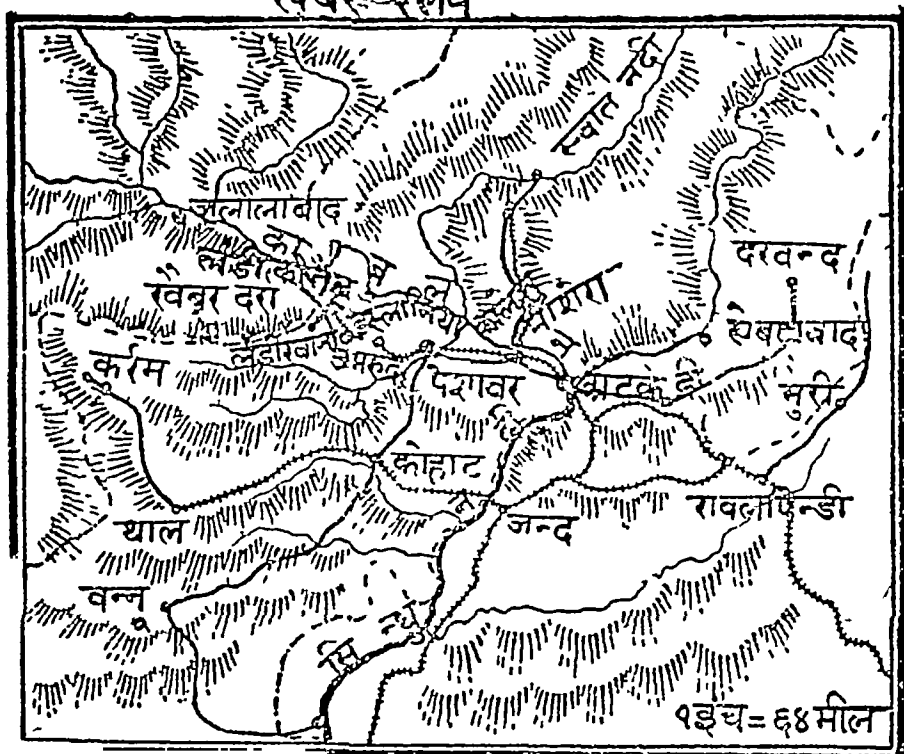
१११—खैबर-प्रदेश

हैं। गांव की सभा भी यहां होती है। महत्व की बातें इसी भाग या जिरगाह में तय होती हैं। खान या फिरके का मालिक सभापति बनता है। अधिकतर पठान कट्टर सुन्नी हैं। केवल तुरी, कुछ बङ्गश और कजई लोग शिया हैं।

उत्तरी-पश्चिमी सीमाप्रान्त भारतवर्ष का प्रायः सबसे छोटा प्रान्त है। इसकी लम्बाई प्रायः ४०० मील और औसत चौड़ाई डेढ़ सौ मील है। इसका क्षेत्रफल ३८,००० वर्गमील है। इस प्रान्त का केवल १३,००० वर्गमील प्रदेश सीधे प्रान्त के शासन में है। शेष २५,००० वर्गमील पर भिन्न-भिन्न अर्द्ध स्वतंत्र [illegible] का अधिकार है। भीतरी प्रबन्ध में ये लोग स्वतन्त्र हैं। बाहरी मामलों में ये पाकिस्तान सरकार के अधीन हैं। पाकिस्तानी प्रदेश पांच (हजारा, पेशावर, कोहाट, बन्नू और डेराइस्माइल खाँ) जिलों में बटा हुआ है। इन जिलों की पश्चिमी सीमा प्रायः ६०० मील लम्बी है। इसी सीमा के बाद सीमा प्रान्तीय जातियों का प्रदेश है। इन लोगों पर स्वात, दीर, चित्राल खैबर, कुर्रम और उत्तरी-दक्षिणी वजीरिस्तान की पोलिटिकल एजेन्सियों के द्वारा शासन होता है। इस प्रकार इस प्रदेश की बाहरी सीमा या डयूरेन्ड लाइन ८०० मील से कम नहीं है। यही लाइन पाकिस्तान और अफगान प्रदेश को अलग करने वाली सीमा है।

पांच जिलों की आबादी २४ लाख है। सीमा प्रदेश के बाहरी भाग की आबादी प्रायः २२ लाख है। संख्या में कम होने पर भी ये लोग बड़े लड़ाका हैं। इसलिये पेशावर, कोहाट, बन्नू और डेराइस्माइलखाँ में क्रमशः खैबर और मलाकन्द कुर्रम टोची और वजीरिस्तान की रक्षा के लिये फौजें रक्खी गई हैं। फौजें खतरे की खबर पाते ही चढ़ाई के लिये तैयार रहती हैं। इनको सहायता पहुंचाने के लिये रेल और सड़कों का भी प्रबन्ध किया गया है। एक रेलवे लाइन नौशेरा से मलाकन्द को जाती है। दूसरी रेलवे लाइन खुशालगढ़ में सिन्ध नदी को पार करके कोहाट और हांगू होती हुई थाल को गई है। थाल नगर कुर्रम घाटी के दक्षिणी सिरे पर स्थित है। एक तीसरी लाइन बन्नू काला बाग में सिन्ध नदी को पार करके पहाड़ के ढाल पर बन्नू शहर को गई है। सैनिक दृष्टि से खैबर रेलवे बड़े महत्व की है। यह रेलवे जमरूद (पेशावर से १० मील आगे) से लंडीखाना तक जाती

है। इसकी समस्त लम्बाई केवल २७ मील है, पर रेल निकालने के लिये इसी २७ मील में ३२ सुरंग बनाने पड़े हैं। खैबर दर्रे को पार करके इसने हिन्दुस्तान रेल को अफगानिस्तान तक पहुँचा दिया है। जमरूद में पास पोर्ट देखे जाते हैं। बिना पासपोर्ट के कोई यात्री जमरूद के आगे नहीं बढ़ने पाता है।

इस देश में कई फिरकों का निवास है;:—

यूसुफजई—यूसुफजई लोग पेशावर जिले और पास वाले स्वाधीन प्रदेश में रहते हैं।

आकोजई—ये स्वात घाटी (७० मील लम्बी और १२ मील चौड़ी) में रहते हैं। हिम-नदियों और बरफ के पिघलने से अप्रैल में नदी उमड़ आती है। पर सितम्बर से नदी फिर घटने लगती है। पहाड़ की चोटियों पर सुन्दर घने बन मिलते हैं। सजल घाटियों में मेवा के पेड़ और खेत हैं। स्वात और बाजौर में प्राचीन हिन्दू और बौद्ध भग्नावशेष गड़े पड़े हैं। कई स्थानों पर पाली के शिला-लेख मिले हैं।

उतमनखेल—इनका देश रूद, पञ्जकोरा, स्वात और अम्बहर नदियों के बीच में स्थित है।

सीमाप्रदेश के उत्तरी भाग में सबसे बड़ी रियासत चित्राल है। यह गिलगिट के पश्चिम में है। हिन्दूकुश पहाड़ इसे अफगानिस्तान के काफिरस्तान प्रदेश से अलग करता है। यह देश विशेषरूप से पहाड़ी है। यहां बहुत ही ऊंची बर्फीली पहाड़ियां और उजाड़ पहाड़ हैं। खेती के योग्य जमीन यहां बहुत ही कम है। घाटियाँ बहुत ही तंग और

समुद्र तल से मील डेढ़ मील ऊंची है। जलवायु ऊंचाई के अनुसार भिन्न है। एक मील की ऊंचाई पर शीतकाल का तापक्रम १२ फारेन हाइट रहता है। पर गरमी में १०० अन्श हो जाता है। यहां भोजन की इतनी कमी है कि एक भी मोटा आदमी नजर नहीं आता है। जिस नदी से इस प्रदेश की सिंचाई होती है, वह हिन्दूकुश के एक हिमागार से निकलती है उत्तरी भाग में इस नदी को यार खून, मरदूब या चित्राल नाम से पुकारते हैं। दक्षिणी भाग में यही नदी कुंआर नदी कहलाती है और जलालाबाद के पास काबुल नदी में मिल जाती है। इसे पार करने के लिये रस्सों के कई पुल हैं।

दक्षिणी मैदान और उत्तरी मैदान के बीच में ४०० मील चौड़ा पहाड़ी प्रदेश है। इसके २०० मील चित्राल में स्थित हैं। इस पहाड़ी देश की आबादी ७०,२०० है। पर ये चित्राली लोग बड़े लड़ाकू हैं। ये सब के सब सुन्नी हैं। जब एक मेहतर (यहां का राजा मेहतर कहलाता है।) गद्दी पर बैठता है तो वह खून की नदी बहाने पर ही सफल हो पाता है। भाई भाई को और पिता पुत्र को मार डालने में कुछ भी नहीं हिचकता है।

मोहमन्द—ये लोग दो भागों में बटे हुये हैं। कुज (मैदानी) मोहमन्द पेशावर के मैदान में रहते हैं। बार (पहाड़ी) मोहमन्द प्राचीन गान्धार की पहाड़ियों पर बस गये। वहां वे अब भी पाये जाते हैं। जहां कहीं जमीन में पानी पास ही मिलता है वहां किले-नुमा गांव है। मोहमन्द प्रदेश में कुछ अनाज, घास लकड़ी ही मुख्य उपज है। यहां से रस्सी, चटाई, शहद, लकड़ी, कोयला और ढोर बाहर भेजे जाते हैं। पर मोहमन्द प्रदेश में होकर चित्राल, कुंआर और लगमान के लट्ठे, बाजौर का लोहा दीर और स्वात का मोम, घी कपड़ा और चावल पाकिस्तान पहुंचता है। नमक, शक्कर, तम्बाकू,

कपड़ा, साबुन, चाय, सुई और दूसरा पक्का माल इधर आता है। गरमी के दिनों में लट्ठों या मश्कों की सहायता से काबुल नदी से बड़ी तेजी से व्यापार होता है।

मोहमन्द प्रदेश पहाड़ी अवश्य है, पर यहां के पहाड़ दुर्गम नहीं हैं। इसी से यहां कई सड़कें हैं। पेशावर से डक्का जाने वाली सड़क सब से अधिक प्रसिद्ध है।

अफ़रीदी—अफ़रीदियों का फिरका बहुत बड़ा है। वे लोग पेशावर जिले के दक्षिण-पश्चिम में सफ़ेद कोह के पूर्वी ढालों पर बसे हुये हैं। अफ़रीदी प्रदेश बहुत ही वीरान और ठंडा है। वर्षा कम होने से खेती भी बहुत ही कम होती है। कुछ लोग लकड़ी काट कर और ढोर बेच कर निर्वाह करते हैं। अधिकांश लोग गाय, बैल, भेड़, बकरी, गधे, खच्चर और घोड़े पालते हैं। ये लोग कपड़ा और चटाई बुनने में बड़े होशियार होते हैं। मैदान और इलम आदि स्थानों में बन्दूकें भी बनाई जाती हैं। ये लोग मजबूत और गोरे होते हैं। ये लोग लड़ाई में भी बहादुर होते हैं।

ओरकजई—अफ़रीदियों के दक्षिण में ओरकजई लोग बसे हैं। इनका प्रदेश ६० मील लम्बा और २० मील चौड़ा है। कुछ ओरकजई लोग कोहाट जिले में भी बसे हुये हैं। इनका प्रदेश प्रायः ओरकजई टिहरा कहलाता है। इनके देश का एक दरवाजा अफ़गानिस्तान की ओर खुला है। दूसरा दरवाजा हिन्दुस्तान की ओर है। यहाँ के लोगों की सम्पत्ति इनके गल्ले हैं।

बंगश—ये लोग अधिकतर मीरनजई और कुर्रम घाटियों में बसे हुये हैं। कोहाट जिले का सबसे अधिक मनोहर भाग मीरनजई की

ही घाटी है। जिस सफेद कोह की सफेद चोटियाँ हर एक चीज के ऊपर उठी हुई हैं, उसी की तलहटी में मीरनजई की घाटी है।

११२—खैबर दर्रा के पास पहरा देने वाले दो संतरी

कुर्रम घाटी में सब कहीं अनाज के खेत और फलों के बगीचे मिलते हैं। अधिक ऊंचाई पर देवदारु के पेड़ हैं। कुर्रम घाटी ६२ मील लम्बी और प्रायः १० मील चौड़ी है। मीरनजई और कुर्रम घाटियां अपने मार्गों के लिये प्रसिद्ध हैं। कोहाट से थाल तक रेलवे लाइन है। थाल से पाराचिनार तक अच्छी सड़क है। पाराचिनार

से पेवार-कोतल केवल १५ मील पश्चिम में है। इसकी ऊंचाई ६२०० फुट है। इसके बाद शुतुर्गर्दन या ऊँट की गर्दन का दर्रा है। यह ११,६०० फुट ऊंचा है। इसको पार करने पर लोगर घाटी काबुल को चली गई है। यह रास्ता गरमी में ही कुछ समय के लिये खुला रहता है।

बंगश लोगों में अधिकतर अरबी खून है। ये लोग शिया हैं। पश्चिमी बंगश बड़ी-बड़ी दाढ़ी रखते हैं। पर पूर्वी बंगश अपनी दाढ़ी नहीं रखते हैं। दोनों ही खेती का काम करते हैं। कुछ लोग व्यापारी हैं। ये लोग अतिथि का बड़ा सत्कार करते हैं।

वजीरी—वजीरिस्तान का पहाड़ी प्रदेश उत्तरी-पश्चिमी सीमा प्रदेश के दक्षिण भाग से मिला हुआ है और १४० मील तक सीमा बनाता है। डेराइस्माइलखां के पश्चिम में गोमल दर्रे से कोहाट जिले तक वजीरिस्तान का प्रदेश सीमा प्रदेश से मिला हुआ है। वजीरिस्तान के पश्चिम और उत्तर-पश्चिम में अफगानिस्तान है। इसके उत्तर-पूर्व और पूर्व में सीमाप्रदेश के कुर्रम, कोहाट, बन्नू और डेराइस्माइलखां के जिले हैं। इसके दक्षिण में बिलोचिस्तान है।

वजीरिस्तान का क्षेत्रफल प्रायः ५००० वर्गमील है। इसका आकार एक सामानान्तर चतुर्भुज के समान है। इस प्रदेश में कई नदियों की घाटियां हैं। जो पश्चिम से पूर्व को बहती हैं और अपने मार्ग में संकुचित मैदान बनाती है। इसके बीच में छोटे बड़े सभी तरह के पहाड़ों की गांठ है जहां से नदियों को पानी मिलता है। इसके दक्षिण में एक बड़ा पठार है।

वजीरिस्तान की दो मुख्य नदियां टोची और गोमल हैं। टोची नदी बन्नू जिले से अफगानिस्तान के बरमल जिले के लिये रास्ता बनाती है। गोमल नदी पाकिस्तान के देराजात और जोब जिलों को मिलाती है पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच में एक प्रधान मार्ग बनाती है। पौविन्दा व्यापारी इसी से आया करते हैं।

पेशावर और काबुल के बीच में ऊन, चमड़ा और रेशम आदि बहुत सा सामान मजबूत ऊंट और घोड़ों की पीठ पर लद कर आता है।

सिन्ध-प्रान्त—पहले सिन्ध प्रदेश का राजनैतिक सम्बन्ध बम्बई प्रदेश से था। इस सम्बन्ध का कारण यह था कि जब सन् १८४३ ई० में ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने सिन्ध को छीना उस समय पंजाब में सिक्खों का राज्य था। इसलिये सिन्ध को बम्बई प्रदेश में ही मिला दिया गया। पर भौगोलिक दृष्टि से यह (सिन्ध) प्रदेश पञ्जाब से अधिक मिलता जुलता है। नये शासन-सुधार के अनुसार सिन्ध एक अलग प्रदेश बन गया। अब यह पाकिस्तान में शामिल है।

सिन्ध का खुश्क कछारी और निचला मैदान बिलोचिस्तान के पठार और राजपूताना के थार रेगिस्तान के बीच में घिरा हुआ है। सिन्ध नदी प्रायः इसके बीच में होकर बहती है। सिन्ध नदी ने इस प्रदेश पर वही कृपा की है जो नील नदी ने मिस्र देश पर की है। उत्तरी पूर्वी अफ्रीका और अरब के मरुस्थल की रुकावट के कारण दक्षिणी पश्चिमी मानसून (मौसमी हवा) इस ओर अधिक पानी नहीं ला पाती है। भाप रूप में यदि हवा कुछ पानी ले भी आवे तो सूर्य की विकराल गर्मी पड़ने और किसी पहाड़ के अभाव के कारण यहां पानी नहीं बरस पाता है।

ऐसी दशा में हिमालय की बरफ से पिघले हुये पानी की बाढ़ लाकर सिन्ध ने सचमुच इस प्रदेश को जीवन प्रदान किया है। यहां के लोग वर्षा पर निर्भर नहीं रहते हैं। समतल मैदान में बाढ़ के पानी का अधिक उपयोग करने के लिये यहां के लोगों ने बहुत प्राचीन समय से ही नदी से नहर निकालने का प्रयत्न किया। इन नहरों से सिंचाई हो जाने के कारण नदी के किनारे से कुछ दूर तक खेती होती रही है। पर जिन दिनों में बाढ़ का पानी सूख जाता है उन दिनों में कोई फसल नहीं हो सकती है। इस प्रकार नदी के आस पास का प्रदेश सब कहीं हरा

भरा मिलता है। पर नदी से दूर जाने पर विकराल रेगिस्तान मिलता है। कहीं कहीं पुरानी सूखी हुई नहरों और प्राचीन शहरों* के निशान मिलते हैं। सिन्ध नदी बड़ी चंचल है। कांप की मिट्टी लाकर वह लगातार नई जमीन बढ़ाती रहती है। अब से प्रायः १२ सौ वर्ष पहले जब अरबी लोगों ने इस प्रदेश पर हमला किया था तो समुद्र-तट पर देवल नाम का सुन्दर नगर था। पर अब इस नगर की स्थित कई मील भीतर की ओर पड़ गई है। सिन्ध प्रदेश में चौड़ी खुश्क और गहरी घाटियाँ भी अक्सर मिलती हैं। इनसे सिद्ध होता है कि सिन्ध नदी अपनी धारा को भी बदलती रही है। किसी समय में यह नदी वर्तमान डेल्टा से कई सौ मील दक्षिण-पूर्व की ओर कच्छ की खाड़ी में गिरती है।

हाल में नदी के उजाड़ मुहाने से प्रायः २०० मील ऊपर सक्खर नगर के नीचे नदी के आर पार एक विशाल बांध बनाया गया है। इस बांध के बन जाने से नदी के पानी से बड़ी नहरों के द्वारा दूर दूर तक सिंचाई होने लगी है।

उपज—सिन्ध की जमीन कॉंप की बनी होने के कारण बड़ी उपजाऊ है, केवल पानी की कमी है। जहाँ कहीं सिंचाई की जाती है वहाँ अच्छी फसलें होती हैं। गेहूँ और कपास यहां की मुख्य फसल है। थोड़ा बहुत धान और दूसरा अनाज भी होता है।

---

*मोहंजोदड़ो के भग्नावशेषों ने संसार की सर्वोच्च सभ्यता को प्रकट किया है।

नगर—कराची शहर सिन्ध नदी के डेल्टा* से कुछ दूर पश्चिम
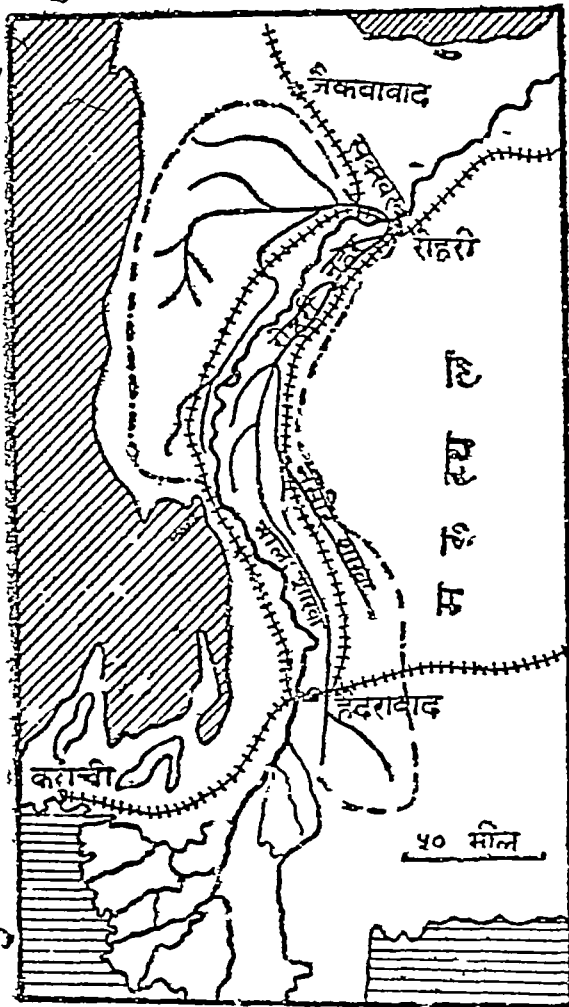
११७—सिन्ध प्रान्त की नहरें और रेलें

की ओर बसा है। यह योरुप के लिये हिन्दुस्तान का निकटतक

*सिन्ध नदी का डेल्टा बड़ा ही उजाड़ और निर्जन है। ५ ५ और गो न के आगे केवल जंगली घास और जङ्गली पौधे मिलते हैं गङ्गा के डेल्टे में जो धान की फसल या सघन आबादी है उसका नाम भी नहीं है।

गाह और सिन्ध प्रदेश तथा पाकिस्तान की राजधानी है। करांची से ही सारे पञ्जाब और सिन्ध का गेहूँ बाहर भेजा जाता है। यहां से बहुत सी कपास भी बाहर जाती है। खुश्क जलवायु के कारण अभी यहां पुतलीघर नहीं बने हैं। यहां से एक रेल सिन्ध नदी के डेल्टा के सिरे पर उस स्थान को गई है जहां पुल बन सकता है। यहीं नदी के पूर्वी किनारे पर छोटा नगर कोटरी है। हैदराबाद से एक रेल थार

११७—करांची और दिल्ली आदि नगरों में मोटरों के होते हुये भी ऊँट गाड़ियां शान से चला करती हैं।

रेगिस्तान को पार करके लूनी जङ्कशन में बाम्बे-बड़ौदा और सेंट्रल इण्डिया रेलवे से मिल जाती है। दूसरी रेल सिन्ध नदी के किनारे किनारे रोहरी होती हुई पञ्जाब को गई है। रोहरी और सक्खर के बीच में एक दूसरा पुल है। यहां नदी के बीच में एक छोटा सा द्वीप है। इसी के सहारे से बड़ा ही अद्भुत झूले का (सस्पेंशन) पुल बना है। सक्खर शहर बड़ा ही सुन्दर व्यापारिक केन्द्र है। यहां से एक रेलवे बोलन दर्रे से क्वेटा को गई है। दूसरी रेलवे सक्खर (रुक) जङ्कशन से सिन्ध के दायें किनारे होकर करांची की ओर जाती है।

पश्चिमी पञ्जाब—यह पाकिस्तान का हृदय है। यही कट्टरता और खूंख्वारी का सबसे बड़ा अड्डा था। इस प्रदेश में निम्न जिले शामिल हैं।

लाहौर—गुजरानवाला, गुरुदासपुर, शेखपूरा, स्यालकोट।

रावलपिंडी—अटक, झेलम मियांवाली, शाहपुर।

मुल्तान—डेरागाजीखां, लायलपुर, माटगोमरी, मुजफ्फरगढ़

पश्चिमी पञ्जाब का क्षेत्रफल ६२,००० वर्गमील और जनसंख्या १,८८,००,००० है। वर्तमान पश्चिमी पञ्जाब पांच नदियों का देश है। इसलिये इसका पंचनद या पञ्जाब नाम उपयुक्त है। यह प्रदेश इन्हीं नदियों द्वारा लाई हुई बारीक मिट्टी से बना है। यह उत्तर प्रदेश की ओर स्यालकोट के पास समुद्र-तल से ८५० फुट ऊंचा है। दक्षिण-पश्चिम की ओर यह क्रमशः ढालू हो गया है। मुल्तान के पास इसकी ऊंचाई समुद्र-तल से केवल ४०० फुट है। सिन्ध नदी के पश्चिमी किनारे और सुलेमान पर्वत के बीच डेराजात के मैदान की मिट्टी अधिक अच्छी नहीं है। झेलम और सिन्ध नदियों के बीच में साल्टरेंज (नमक का पहाड़) है। यह बहुत पुराना और घिसा हुआ है। यहां से नमक निकाला जाता है।

साल्टरेंज के उत्तरी टीलों और नीली पहाडियों के आगे विषम ढालू भूमि को पार करने पर एक छोटा पठार या ऊंचा मैदान मिलता है। यह पठार पञ्जाब के रावलपिंडी और झेलम जिलों में फैला हुआ है। साल्टरेंज से निकलने वाली पहाड़ी धाराओं ने इसे गहरा काट दिया है। दो नालों के बीच की भूमि महाराब के समान ऊपर उठी हुई दिखाई देती है। अधिक गहरे नालों के किनारे सपाट हैं। उनके निचले भागों में इनके पड़ोस की भूमि उपजाऊ है। यहीं कुओं से सिंचाई होती है। ऊंचे भागों में कुओं का अभाव है। कुछ स्थानों में बांध बना कर ताल तैयार किये गये हैं। यहां ढोर पानी पीने आते हैं। सूखा पड़ने पर कुए और ताल सूख जाते हैं। उस समय पानी का बड़ा कष्ट हो जाता है। गांव वालों को कई मील की दूर से पानी लाना पड़ता है।

जलवायु—यह प्रान्त समुद्र से बहुत दूर स्थित है। इसकी अधिकांश जमीन रेतीली है। इसलिये इसकी जलवायु बड़ी विकराल

है। दिन और रात के तापक्रम तथा सरदी और गरमी के तापक्रम में बड़ा अन्तर रहता है। गरमी में जुलाई से सितम्बर तक दक्षिणी पश्चिमी मानसून से बहुत कम वर्षा होती है। सरदी में जनवरी फरवरी महीनों में भूमध्य सागर के तूफानों से कुछ वर्षा हो जाती है। जून मास में यह भाग आग की भट्टी बन जाता है। कभी कभी यहां का परम ताप क्रम १२० अन्श हो जाता है। सरदी में जोर का पाला रहता है। अल्प तापक्रम हिम बिन्दु (फ्रीजिंग प्वाइंट) से भी नीचे गिर जाता है। खेती के लिये सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है।

नहरें—नदी से दूर बांगर या मंझा की जमीन अच्छी है। पर कुओं में अधिक गहराई पर पानी मिलता है। द्वाबा की इसी बीच वाली ऊंची भूमि को बड़ी नहरें सींचती हैं। झेलम, रावी और चनाब के बीच के द्वाबा को सींचने के लिये अपर चनाब और लोअर चनाब (दो) नहरें हैं। जहां कहीं सिंचाई के साधन नहीं हैं, वहां अर्द्ध रेगिस्तान भागों में ढोर पाले जाते हैं।

यहां की प्रधान फसल गेहूँ है। कुछ भागों में जौ, मक्का, कपास और ईख भी होती है।

मनुष्य और पेशे—पश्चिमी पञ्जाब में इस समय केवल मुसलमानों का निवास है। मुस्लिम लीग के विषैले प्रचार से हिन्दू और सिक्ख नष्ट कर डाले गये अथवा वे प्रान्त को छोड़कर हिंदुस्तान में आ बसे।

यहां के लोगों का प्रधान पेशा खेती है। कुछ ढोर पालते हैं। कुछ नमक के पहाड़ से नमक निकालते हैं। कुछ कपास ओटने, कातने और बुनने के काम में लगे हैं। अधिकतर लोग बड़े बड़े गांवों में रहते हैं। कुछ शहर भी हैं।

लाहौर पञ्जाब का सबसे बड़ा शहर है। यहां कई रेलवे लाइनों का जङ्कशन है। चमड़ा आदि के कुछ कारखाने हैं। यहां प्रान्त का विश्व-विद्यालय और कई कालेज हैं। यहीं प्रान्त की राजधानी है। रावी-नदी के किनारे केन्द्रवर्ती स्थिति होने के कारण यह पहले भी प्रान्त की राजधानी रहा। यहां महाराजा रणजीत सिंह का बनवाया हुआ किला और जहांगीर का मकबरा है।

मुल्तान—लाहौर से प्रायः [illegible] मील दक्षिण पश्चिम की ओर चनाब नदी के बायें किनारे पर मुल्तान नगर स्थित है। यह व्यापार मार्गों का केन्द्र है। रुई और रेशम का अच्छा काम होता है।

रावलपिंडी—बड़ी छावनी है।

लायलपुर—गेहूँ की बड़ी मन्डी है।

स्यालकोट काश्मीर की सीमा के पास व्यापार का केन्द्र है। यहीं बाबा नानक की समाधि है।

जेहलम शहर जेहलम नदी के किनारे, अटक सिन्ध नदी पर स्थित है। सिन्ध नदी के किनारे पर बसे डेरा गाजी खां और डेरा इस्माइल खां दूसरे नगर हैं।

पूर्वी पाकिस्तान

इस भाग में पूर्वी बङ्गाल के साथ आसाम का सिलहट जिला भी शामिल है। पूर्वी बङ्गाल निम्न जिलों से बना है।

(१) चिटगांव—नोआखाली, टिपरा।

(२) ढाका—फरीदपुर, बाकर गंज, मैमनसिंह।

(३) जेसोर—खुलना

(४) राजशाही—रंगपुर, पबना, बोगरा, दीनाजपुर।

पूर्वी बङ्गाल का क्षेत्रफल ४६,५०० वर्गमील है। इसी में आसाम प्रान्त के सिलहट जिले का ४,६०० वर्गमील क्षेत्रफल मिल गया। इस प्रकार समस्त पूर्वी पाकिस्तान का क्षेत्रफल ५४,१०० वर्गमील और जनसंख्या ४ करोड़ है। इसी में सिलहट जिले की २७ लाख जन-संख्या शामिल है।

ढाका पूर्वी बङ्गाल में सबसे बड़ा शहर ब्रह्मपुत्र की बूढ़ी गंगा नाम की शाखा पर बसा है। यह नगर सदियों तक अनोखी मलमल के लिये प्रसिद्ध रहा है। इस समय भी यह शहर पूर्वी बङ्गाल की उपज का केन्द्र है। यहां झालाकाटी शहर सुपारी के लिये और सिलहट शीतलपाटी और नारंगी के लिये प्रसिद्ध है।

चिटगांव—नगर से १२ मील ऊपर कर्णफुली नदी पर उत्तम बन्दरगाह है। यहां से आसाम का माल दिसावर को जाता है।

इकतीसवाँ अध्याय

भारतवर्ष की सड़कें और तार

आजकल भारतवर्ष में प्राय: ५० हजार मील पक्की और डेढ़ लाख मील कच्ची सड़कें हैं। पक्की सड़क बनाने में काफी खर्च हो जाता है। गङ्गा और सिन्ध के मैदान में प्रधान कठिनाई यह है कि सड़क बनाने के लिये पत्थर नहीं मिलता है। कहीं ईंटों को तोड़ कर सड़क की कुटाई होती है। कहीं कंकड़ से काम लिया जाता है। दूर से कंकड़ मंगाने में अधिक खर्च पड़ता है। पुल बनाने में काफी खर्च होता है। दक्षिण के ऊंचे नीचे पहाड़ी भागों में सड़क कूटने के पत्थर तो बहुत हैं पर मार्ग को काट कर बनाने और सुगम ढाल करने में बड़ी कठिनाई पड़ती है। कच्ची सड़कों पर खर्च बहुत कम होता है। लेकिन वर्षा ऋतु में वे दुर्गम हो जाती हैं।

आजकल हिन्दुस्तान के प्राय: सभी बड़े-बड़े नगर एक दूसरे से पक्की सड़कों से जुड़े हुये हैं। पर कलकत्ते से इलाहाबाद और दिल्ली होकर पेशावर तक पहूँचने वाली गांडट्रंक रोड सर्व प्रसिद्ध है। मिर्जापुर से जबलपुर होकर नागपुर जाने वाली ग्रेट डेकन रोड भी पुरानी प्रसिद्ध सड़क है। दिल्ली से गढ़मुक्तेश्वर, मुरादाबाद, बरेली, सांडी और रायबरेली होकर बनारस और पटना पहुँचने वाली सड़क भी पुरानी है। पुरानी सड़कों में से ही एक सड़क आगरे से अजमेर को गई है।

रेलों ने पक्की सड़कों का रूख बदल दिया है। सामान और मुसाफिर ढोने के लिये अधिकतर सड़कें रेलवे स्टेशनों तक बन गई हैं। लेकिन रेल और मोटर लारियों में होड़ हो गई है। कहीं पहले मोटर लारियां इतनी अधिक चल निकलती हैं कि रेल खुल खुल जाती है। कहीं रेलो पर अधिक भीड़ मुसाफिरों को इतनी तकलीफ रहती है कि वहां मोटर लारियां चलने लगती हैं और रेल की आमदनी कम हो जाती है।

रेल और सड़कों के सिवा तार की लाइन ९३,००० मील है जिसमें प्राय साढ़े चार लाख मील तार लगा है। तार से आने जाने में बड़ी सुविधा रहती है। हिन्दुस्तान में तार की प्रधान लाइनें ये हैं:—

१—कलकत्ते से मद्रास (पूर्वी तट के मार्ग से)

२—कलकत्ता से बम्बई (इलाहाबाद, जबलपुर और भुसावल होकर अथवा सिवनी, नागपुर और भुसावल होकर)

३—कलकत्ते से कराची (आगरा और हैदराबाद होकर)

४—कलकत्ते से शिमला (आगरा और दिल्ली होकर)

५—कलकत्ते से रंगून (अक्याब होकर)

६—कलकत्ते से माण्डले (अक्याब और रंगून होकर अथवा गोहाटी और मनीपुर होकर)

७—बम्बई से मद्रास (ग्रेट इण्डियन पेनिन्सुला और मद्रास रेलवे के मार्ग से अथवा दक्षिणी मराठा और मद्रास रेलवे के मार्ग से)

८—बम्बई से कराची (अहमदाबाद और दीसा होकर अथवा भुसावल मारवाड़, राठ्रशन और हैदराबाद होकर)

९—बम्बई से कालीकट (बङ्गलोर और मैसूर होकर)

१०—मद्रास से कालीकट (जोलारपट और पोदनूर होकर)

११—मद्रास से तूतीकोरन (साउथ इंडिया रेलवे के मार्ग से)

सीमा-प्रान्त पञ्जाब और उत्तर प्रदेश के प्रधान नगरों में टेलीफोन लाइनें हैं। इसी प्रकार कलकत्ता और कोयले की खानों के बीच में भी टेलीफोन लगा है।

कराची, पेशावर, इलाहाबाद, मद्रास आदि स्थानों में बेतार का तार है। बम्बई और मद्रास, बम्बई और कराची, बम्बई और कलकत्ता कलकत्ता और ढाका, कलकत्ता और रंगून, कलकत्ता और दिल्ली, दिल्ली और लाहौर, दिल्ली और कराची के बीच में हवाई-जहाज मार्ग निश्चित हुआ है।

बत्तीसवाँ अध्याय

भारतवर्ष के जल-मार्ग

सड़क या रेल-मार्ग से जल-मार्ग कहीं अधिक सस्ता पड़ता है। जल-मार्ग को बनाने या ठीक रखने में सड़क या रेल से कहीं कम खर्च होता है। यदि कोई इञ्जिन १ घन्टे में सड़क पर १० मन के बोझ को ६० मील खींच सकता है तो वही इंजिन उतने ही समय में उतनी ही दूरी तक रेल की पटरी से १०० मन और नाव के द्वारा पानी में ७०० मन बोझ खींच सकेगा।

इन सब कारणों से सभ्य जातियों ने अपने देश के जल-मार्गों को उपयोगी करने में पूरा पूरा प्रयत्न किया है। फ्रांस, जर्मनी आदि उन्नति देश अपने जल-मार्गों में ऊपर करोड़ों रुपये खर्च कर सकते हैं और नाव चलाने वालों को रेल को अनुचित स्पर्धा (होड़) से बचाते हैं। मौर्यकाल में भारत में नाव चलाने के साधन दुनिया भर से अच्छी दशा में थे। मुगल समय के अन्त तक यहां नाव चलाने का काम जोरों से होता रहा। पर जब से रेलों का आगमन हुआ तब से लाखों नाव चलाने वाले छिन्न-भिन्न हो गये। सरकारी सहायता न मिलने के कारण वे रेल का मुकाबला न कर सके। १८७८ ई० में काटन साहब ने ३० करोड़ रुपये से भारत में आवश्यक जल-मार्ग बनाने का वादा किया था। कुछ प्रधान मार्ग ये थे।

१—कलकत्ता से करांची तक-गङ्गा और सिन्ध नदी के निचले जल विभाजक में एक नहर खोदने से दोनों-जल-मार्ग जोड़ दिये जाते हैं।

२—कोकोनाडा से सूरत तक-गोदावरी और ताप्ती नदियों को सहायता से।

३—तुंगभद्रा से कारवार (अरब सागर तट पर) तक।

४—पोनाग नदी के ऊपर पालघाट और कायम्बटोर।

पर रेल पर १ अरब १२ करोड़ रुपये खर्च हो चुके थे। इसलिये काटन साहब की सुनवाई न हुई। अब तो रेलों में और भी अधिक धन लग चुका है। इसलिये हमारे जल-मार्ग अच्छी दशा में नहीं हैं।

नाव चलने योग्य नहरें

गोदावरी नहर में दोलेश्वरम् से और कृष्ण नहर में विजयवादा से समुद्र की ओर चपटे डेल्टा में तीन चार मील तक नावें चल सक्ती हैं। ये दोनों स्थान एक दूसरे से और बकिंघम* नहर से जुड़े हुये हैं। कर्नूलकड़ापा नहर भी १६० मील तक नाव चलाने योग्य है। ऊँचे नीचे धरातल के कारण इसके प्रायः ४० मील बनाने की आवश्यकता पड़ी। गोदावरी और कृष्णा डेल्टा की कपास और चावल का अधिकतर भाग नहरों द्वारा ही ढोया जाता है।

उड़ीसा नहर और मिदनापुर नहर में भी नावें चलती हैं। सुन्दर बन हुगली और दूसरी (गङ्गा) उपशाखायें नहरों द्वारा जोड़ दी गई हैं।

सोन नदी की नाव चलने योग्य तीन प्रधान नहरें बक्सर, आरा और दानापुर में गङ्गा से मिला दी गई हैं।

उत्तर प्रदेश में गङ्गा की छोटी और बड़ी नहरों में २७५ मील तक नावें चल सकती हैं। गङ्गा-नहर कानपुर में गङ्गा से मिला दी गई है।

पञ्जाब मे पश्चिमी यमुना-नहर में सिरे से लेकर दिल्ली तक नावें चल सकती हैं। (सरहिन्द-नहर में सिरे ऊपर स्थान) से लेकर फीरोजपुर।

*बकिंघम नहर कारोमंडल तट ठीक दक्षिण की ओर २६० मील तक जाती है और मद्रास शहर को कृष्णा-डेल्टा से मिलती है।

यह नहर पहाड़ी लकड़ी बहा लाने में विशेष रूप से उपयोगी है।

नगर तक नाव चलाने योग्य है फीरोजपुर में सरहिन्द नहर सतलज नदी से मिल गई है। यहां से आगे करची तक लगातार जल-मार्ग है।

नाव चलाने योग्य नदियाँ

नर्मदा और ताप्ती नदियों के निचले मार्ग में नावें चल सकती हैं। इनका शेष भाग प्रायः पहाड़ी है। पर सिन्ध, गङ्गा और ब्रह्मपुत्र नदियों में मुहाने से लेकर सैकड़ों मील तक प्रायः साल भर स्टीमर चल सकते हैं। सिन्ध नदी मुहाने से लेकर डेरा इस्माइल खां (८०० मील की दूरी) तक स्टीमर चलने योग्य है। इसकी सहायक चनाव और सतलज में भी छोटी-छोटी नावें साल भर चल सकती हैं। पर चनाव में चिनिओट और सतलज में फीरोजपुर के आगे वहुत कम नावें चला करती हैं सिन्ध की उपशाखाओं (फुलेली नहर और पूर्वी नारा) में नावें चला करती हैं।

गङ्गा नदी के मुहाने से लेकर कानपुर तक सुगमता से नावें चला करती है। यमुना नदी में प्रयोग से राजापुर तक प्रायः साल भर नावें चला करती है। गङ्गा की सहायक घाघरा नदी में भी फैजाबाद तक स्टीमर पहुँचाते हैं। पर रेल की स्पर्धा के कारण गङ्गा और सिन्ध नदियों में धुआंकश नावों को सफलता न मिल सकी। ब्रह्मपुत्र नदी में डिब्रूगढ़ तक इसकी सहायक सुरमा नदी में सिलहट और कछार तक स्टीमर चला करते हैं हुगली नदी में नदियों तक स्टीमर पहुँचते हैं। पूर्वी नाव वङ्गाल में नाव चलाने की सुविधायें इतनी अधिक है कि रेलों को वढ़ाने में वाधा पड़ती है। छोटी-छोटी नहरें वड़ी नदियों को जोड़ती हैं। इस लिये कलकत्ते से आसाम (७५० मील से ऊपर) तक स्टीमर वराबर चला करते है। अधिकांश जूट, चाय और धान नावों से ही वड़े-वड़े नगरों में पहुँचता है।

महानदी, गोदावरी और कृष्णा नदियों में डेल्टा के ऊपर कुछ दूर तक नावें चल सकती हैं। वर्षाऋतु में इनकी सहायक नदियों में भी नावें चल सकती हैं।

ब्रह्मा में इरावदी नदी में साल भर मुहाने से लेकर भामो (५०० मील की दूरी) तक स्टीमर चलते हैं। कुछ छोटे स्टीमर और आगे मिचीना तक पहुँचते हैं। इरावदी की उप शाखाओं तथा इसकी सहायक चिंडविन नदी में भी स्टीमर चलते हैं। ब्रह्मा की सीटांग तथा अन्य नदियों में भी कुछ दूर तक स्टीमर चल सकते हैं।

भारतवर्ष की जलशक्ति

ऊँचाई से गिरने वाले पानी में उसी तरह की स्वाभाविक शक्ति होती है जिस तरह कोयला या तेल जलाकर भाप से शक्ति पैदा की जाती है। पहाड़ी प्रदेश में पनचक्की (पानी के जोर से चलने वाली आटा पीसने की चक्की) का प्रयोग बहुत पुराने समय से चला आया है। पानी जितनी अधिक ऊंचाई से गिरेगा उसमे उतनी अधिक शक्ति होगी इस प्रकार १०० मन पानी १,००० फुट की ऊँचाई से गिरने पर उतनी ही शक्ति पैदा करेगा जितनी शक्ति १,००० मन पानी १०० फुट की ऊँचाई से गिरने पर पैदा करेगा।

उच्च हिमालय से निकलने वाली असंख्य नदियों में अपार शक्ति छिपी हुई है। यदि इस शक्ति से बिजली तैयार की जावे तो हिन्दुस्तान का कारबार एक दम चोटी तक पहुँच जाय।

हिन्दुस्तान मे बिजली तैयार करने का सब से बड़ा प्रयत्न बम्बई प्रान्त में हुआ है। यहां रुई आदि के कारखाने बहुत हैं। ब्रह्मा का तेल या बङ्गाल का कोयला यहां पहुँचते पहुँचते बहुत महगा पड़ता है पर पश्चिमी घाट से प्रति वर्ष डेढ़ सौ इञ्च वर्षा होती है। इस पानी से बिजली तैयार करने के लिये ताता महोदय ने भोर-घाट के ऊपर लोना वाला मे तीन विशाल बांध बनवाये। इस प्रकार लानावाला में एक अगाध जलाशय बन गया। यह पानी बड़े-बड़े नालों द्वारा १,७२५ फुट की ऊचाई से नीचे खोपोली के पावर-हाउस (शक्ति-गृह) में छोड़ा गया। इस ऊँचाई से गिरने के कारण पानी के प्रत्येक वर्ग इञ्च में

पांच मन का दबाव हो गया इसी के जोर से पानी के पहिये चलते हैं। और बिजली तैयार होती है। १९१५ ई० में लोनावाला के "ताता हाइड्रो एलोट्रिक वर्क्स" बम्बई की मिलों की और ट्रामों की बिजली चला रहे हैं। इस काम में पौने दो करोड़ रुपये लगे। पर इसमें सफलता ऐसी हुई कि दूसरे ही वर्ष "आन्ध्रा वेली पावर सपलाई कम्पनी दो करोड़ रुपये की लागत से खड़ी की गई है। यह कम्पनी बम्बई और बन्द्रा तथा कुर्ला के मुहल्लों को बिजली पहुँचने लगी। आन्ध्रा घाटी में छोटा बांध बनाना पड़ा। बांध बनने से जो आन्ध्रा झील बनी वह लोनावाला से १२ मील उत्तर पूर्व की ओर स्थित है। और ५६ मील की दूरी से बम्बई में बिजल पहुँचती है।

१९१९ई० में ६ करोड़ रुपये की लागत से एक तीसरी कम्पनी बनी। इस कम्पनी ने दक्षिण की ओर नीला और मूला नदियों में बांध बना कर बिजली तैयार करने का निश्चय किया यहां ८० मील की दूरी से बम्बई को बिजली पहुँचाई जाती है।

यहां से प्राय: १०० मील दक्षिण में बिजली बनाने की एक चौड़ी योजना हो रही है। इसमें लगभग ८ करोड़ रुपये खर्च होंगे और बम्बई के नये कारखाने में बिजली पहुँचाई जायगी।

मैसूर राज्य में कावेरी के शिवसमुद्रम् प्रताप से हिन्दुस्तान भर में सर्व प्रथम बिजली तैयार हुई। यहां से ९२ मील की दूरी पर कोलार की सोने की खानों में, और ५० मील की दूरी पर बङ्गलोर में बिजली पहुँचाई जाती है।

शिवसमुद्रम से २५ मील मेकादात् स्थान पर कावेरी में बांध बनाकर और कावेरी की सहायक शिमला नदी के स्वाभाविक प्रपात से भी मैसूर राज्य में बिजली तैयार करने का प्रयत्न हो रहा है।

काश्मीर राज्य का बिजलीघर विचित्र है। बारामूला के आगे झेलम नदी में प्रपात है पर यह बहुत ऊँचा नहीं है। इसलिये इस स्थान से पहाड़ी के किनारे किनारे लकड़ी के बड़े घेरे में सात मील तक

पानी पहुँचाया गया है। फिर वह बड़े बड़े नालों से बिजली घर में छोड़ा गया है। यहां जो बिजली तैयार होती है उसमें बारामूला और श्रीनगर में रोशनी होती है। श्रीनगर का रेशम का कारखाना भी इसी के जोर से चलता है।

बिजली के छोटे छोटे आयोजन शीलांग, कालिमपोंग (दार्जिलिंग) नैनीताल और मंसूरी में है।

मन्डी राज्य में व्यास नदी की एक सहायक उहल नदी के किनारे पञ्जाब सरकार ने बिजली तैयार करवाने का काम १६३३ से खोल दिया है। इसमें शिमला, अम्बाला, करनाल और फीरोजपुर को बिजली पहुँचती है और बहुत ही सस्ती है गङ्गा आदि कई सिंचाई की नहरों और झीलों से भी बिजली तैयार करने का विचार हो रहा है। जिससे खेती का काम भी बिजली की शक्ति से हो सकेगा।

पर मैदान की मन्दवाहिनी नदियां बिजली के काम के लिये व्यर्थ हैं।

तेंतीसवाँ अध्याय

भारतवर्ष के रेल-मार्ग

अब से प्रायः ८० वर्ष पहले हिन्दुस्तान में एक भी रेल न थी। डरते
डरते परीक्षार्थ हावड़ा (कलकत्ता) से रानीगञ्ज (१२० मील) बम्बई के
कल्यान (३३ माल) और मद्रास से आर्कोनम (३६ मील) तक तीन
रेलवे लाइनें बनाई गईं। इस जांच के बाद ८ बड़ी रेलवे कम्पनियां बनीं
रेलवे लाइन बनाने का काम इस तेजी से हुआ कि इस समय सारे
हिन्दुस्तान में ३६,००० मील से अधिक रेलवे लाइनें हैं। पर पश्चिमी
देशों के मुकाबले में हिन्दुस्तानी रेलों का विस्तार बहुत ही कम है। योरुप
का क्षेत्रफल इससे प्रायः दुगुना है। वहां की आबादी प्रायः सवाई है।
लेकिन योरुप में २ लाख मील रेलवे लाइनें हैं। संयुक्त राष्ट्र अमरीका
तो हिन्दुस्तान से दुगुना भी नहीं है। वहां की आबादी हिन्दुस्तान
की आधी है। पर वहां हिन्दुस्तानी से ठीक सात गुनी रेलवे
लाइनें हैं।

रेल निकालने में बहुत खर्च पड़ता है। इसलिये लाइन और स्टेशन
आदि बनाने के लिये कम्पनियों को जमीन मुफ्त दे दी गई। आरम्भ की
कम्पनियों को सरकार ने रेलों पर लगी हुई पूंजी पर ५ फी सदी लाभ
की गारेन्टी (टीका) दे दी।* तिस पर भी प्रति मील पर सारी लागत
का औसत फी मील दो लाख रुपये से ऊपर पड़ा। सारी लाइन में ६ अरब
५० करोड़ रुपये लगे। यदि हम चार रुपये एक साथ रख कर चांदी

---

* इसी से कम्पनियों ने लापरवाही से खर्च किया और उचित
किफायत न की।

की ऐसी लाइन बनावें जिसमें रुपये एक दूसरे को छूते रहें और उनके बीच में खाली जगह न बचे तो रुपयों की यह लाइन हिन्दुस्तान में सारे रेल-पथ (३७,००० मील) पर बिछाई जा सकती है । लाइन का जो भाग देशी रियासतों में होकर गया है। उसका खर्च उन रियासतों से लिया गया है। शेष में उधार लेकर व्यय किया गया है। जिसका हमें सूद देना पड़ता है।

रेल निकालने का मुख्य उद्देश्य यह था कि फौज और व्यापार की सुविधा मिले। लड़ाई के अवसर पर एक स्थान के सिपाही दूसरे स्थान पर शीघ्रता पूर्वक पहुँचाये जा सकते हैं। इसलिये प्रत्येक स्थान पर अधिक फौज नहीं रखनी पड़ती है। सीमा-प्रान्त और पञ्जाब की रेलें खास कर इसी उद्देश्य से खोली गई। रेलों के खुल जाने से गेहूँ आदि देश का कच्चा माल बन्दरगाहों तक समय और कम किराये में बाहर जाने के लिये पहुँचाने लगा। यह उद्देश्य प्रायः सभी रेलों का है। अकाल के समय अनाज लाने में भी रेलों से बड़ी सहायता मिलने लगी।

आंधी आदि के डर से हिन्दुस्तान की रेलें अंगरेजी रेलों (४ फुट ८½ इञ्च से अधिक चौड़ी बनाई गई। इन रेलों के पटरियों के बीच में साढ़े पाच फुट का अन्तर रक्खा गया। पर इनसे खर्च अधिक बढ़ने लगा। इसलिये आगे चल कर मीटर गेज रेलें बनी। एक मीटर ३ फुट ३⅜ इञ्च के बराबर होता है। यही अन्तर इन रेलों की पटरियों में रक्खा गया। अधिक चढ़ाई के पहाड़ी स्थानों और बहुत ही कम व्यापार वाले स्थानों में तग या नोरोगेज रेलवे खुला। इसकी पटरियों के बीच में दो या ढाई फुट का अन्तर होता है। इस तरह की रेल सारे हिन्दुस्तान में १,००० मील से अधिक नहीं है। जिन भागों में व्यापार बहुत अधिकता है। वहा चौड़ी लाइन को भी दुहरा कर दिया है। उदाहरण के लिये हावड़ा (कलकत्ता) और इलाहाबाद के बीच में दुहरा लाइन है।

हिन्दुस्तान की प्रधान रेलें

ईस्ट इण्डियन रेलवे

यह लाइन सब से पुरानी लाइनों में से है। रेलों के पहले अधिकतर व्यापार नावों से होता है। इसलिये नावों के व्यापार छीनने के लिये आरम्भ यह लाइन गङ्गा के किनारे (कानपुर तक) बनाई गई पीछे से समय बचाने के लिये मुगलसराय और सहारनपुर के बीच में गया होकर सीधी लाइन (ग्राड कार्ड) बन गई। पहले पहल प्रधान लाइन को सीधा और छोटा रखने की इतनी धुन सवार थी कि बहुत से नगर अलग छूट गये। पीछे से इनको मिलाने के लिये बहुत शाखा (ब्रांच लाइनें) खोली गईं। यह लाइन कलकत्ते से देहली होकर कालका जाती है। इसकी एक प्रधान शाखा इलाहाबाद से जबलपुर को गई है। अब इस शाखा पर जी० आई० पी० रेलवे का प्रबन्ध है। आजकल अवध रुहेलखंड रेलवे* भी इसमें शामिल हो गई है। इस प्रकार यह लाइन-देश के अत्यन्त धनी और आबाद भाग में होकर गुजरती है। कोयले की बड़ी खानें भी इसी लाइन पर स्थित हैं। इसलिये इसकी मालगाड़ियां कोयला, कपास, गेहूँ, तिलहन, चावल, अफीम, गुड़ नमक कपड़ा, मशीन आदि से खचाखच भरी रहती है। कई व्यापार-केन्द्रों, (कलकत्ता, कानपुर आदि) तीर्थ-स्थानों (प्रयाग, काशी आदि) में पहुँचने के कारण इस लाइन पर सवारियों की भी भीड़ रहती है। मेला के दिनों में स्पेशल गाड़ियां छोड़नी पड़ती हैं। कभी कभी तो तीसरे दर्जे के मुसाफिर माल गाड़ियों में भर दिये जाते हैं। यह लाइन ग्रीष्म-

---

*यह लाइन मुगलसराय से सहारनपुर तक जाती है। इसकी एक शाखा इलाहाबाद से फैजाबाद को गई है। दूसरी प्रधान शाखा लक्सर से देहरादून (हरिद्वार होकर) को गई है। कलकत्ता से सहारनपुर को सीधा रास्ता इसी लाइन से गया है।

दर्जे के मुसाफिर माल गाड़ियों में भर दिये जाते हैं। यह लाइन ग्रीष्म-ऋतु की राजधानी (शिमला) शीतकाल की राजधानी (दिल्ली) और व्यापारिक राजधानी कलकत्ते से मिलाती है। इसलिये इस लाइन मे पहले दर्जे के डब्बे भी खाली नहीं रहते हैं। इन सब कारणों से इस लाइन को प्रति वर्ष कई करोड़ रुपये का लाभ होता है। इसका समस्त विस्तार प्राय. ४ हजार मील है।

जी० आई० पी० अथवा ग्रेट इण्डियन पेनिन्सुला रेलवे

यह रेलवे भी ई० आई० आर० की तरह पुरानी है। इसका समस्त विस्तार प्राय. तीन हजार मील है। जिसमें ४६२ मील तक दुहरी लाइन है। यह रेलवे वहुत ही ऊचे-नीचे प्रदेश में होकर जाती है। इसलिये इसके माग भिन्न-भिन्न दृश्य वड़े मनोहर है। पर इसके बनाने में वहुत सा धन लग गया। वम्वई से भीतर की ओर आगे वढ़ने पर शीघ्र ही पश्चिमी घाट मार्ग में पड़ते हैं। वम्वई से पूना होकर रायचूर को जाने वाली लाइन को भोरघाट मार्ग के ऊपर चढ़ना पड़ता है। सव उंचाई १,८३१ फुट है। पर चढ़ाई का मार्ग १६ मील है। इस में २५ सुरंग पड़ते हैं। रायचूर में यह लाइन मद्रास रेलवे से मिल गई है। बम्बई से नागपुर जाने वाली लाइन थालघाट के ऊपर होकर जाती है। इस भाग की ऊचाई केवल १५२ फुट है और ६ मील की चौड़ाई में १३ सुरंग पड़ते हैं। नागपुर में यह लाइन वङ्गाल-नागपुर-रेलवे से मिलती है। इसी की एक शाखा जवलपुर को गई है। नैनी में यह ई० आई० आर० से मिलती है। प्रधान लाइन इटारसी से होशगावाद, भूपाल, वीना, झासी, ग्वालियर और आगरा होती हुई दिल्ली को जाती है। झासी से एक शाखा कानपुर को और दूसरी बांदा होती हुई मानिकपुर को गई है। इसी की शाखायें भोपाल से उज्जैन को और और बीना स कटनी को गई हैं। वह रेलवे हिन्दुस्तान के कम आवाद प्रदेश में होकर जाती है। लेकिन इस लाइन से बड़े शहर जुड़े हुये हैं।

बम्बई होकर योरुप जाने वाली डाक और फौज इसी लाइन पर होकर जाती थी। योरुप जाने वाले अधिकतर मुसाफिर पहले दर्जे में सफर करते हैं। इसलिये हिन्दुस्तान की दूसरी रेलों के मुकाबले में जी० आई० पी० का पहला दर्जा सबसे अधिक भरा रहता है। यह रेलवे दक्खिन, बरार और खान देश में कपास के विशाल क्षेत्र को पार करती है। इसलिये इसकी मालगाड़ियाँ सब से अधिक कपास ढोती हैं। कपास के अतिरिक्त यह रेलवे अनाज, पत्थर, नमक, शक्कर, तेल-लकड़ी आदि सामान ढोती है।

नार्थ वेस्टर्न रेलवे

आरम्भ में यह लाइन दिल्ली से लाहौर होकर मुलतान तक और कराची से कोटरी (हैदराबाद) तक खुली थी। इसलिये मुलतान और कोटरी के बीच में नाव-द्वारा सिन्ध नदी में यात्रा करनी पड़ती थी। आजकल हिन्दुस्तान की सबसे अधिक लम्बी (४,१०० मील) लाइन यहीं है। १७७ मील तक दुहरी लाइन है। यह लाइन फौज के सुभीते के लिये सब कहीं चौड़ी बनाई गई है। प्रधान लाइन दिल्ली से पेशावर और कराची से लाहौर को जाती है। इसकी एक प्रसिद्ध शाखा सक्कर के पास सिन्ध नदी को पार करके रुक जङ्क्शन से क्वेटा और न्यू चमन को गई है। बोलन दर्रे के मार्ग में इस शाखा लाइन को ढाई मील लम्बी खोजक सुरङ्ग पार करनी पड़ती है। यह सुरङ्ग हिन्दुस्तान भर में सबसे अधिक लम्बी है। फौजी लाइन होने से नार्थ वेस्टर्न रेलवे को हिन्दुस्तान की और रेलों से कहीं अधिक घाटा रहता है। सीमा प्रान्त और बिलोचिस्तान में इसकी गाड़ियों में तीसरे दर्जे में भी भीड़ नहीं रहती है। पर पञ्जाब में नहरों के खुल जाने से यह रेलवे सबसे

---

*वहाँ यह लाइन जमरूद और खैबर दर्रे तक बढ़ गई है।

अधिक गेहूँ दिसावर भेजती है। अब इस रेलवे का जो भाग पूर्वी पंजाब में होकर जाता है उसे ई० पी० रेलवे कहते हैं। यही भारतीय रेलवे का अंग है।

बाम्बे बड़ौदा और सेन्ट्रल इण्डिया रेलवे

यह लाइन बम्बई से आरम्भ होता है। पश्चिमी तट के पास सूरत, भड़ौच, बड़ौदा और अहमदाबाद होती हुई उत्तर में यह लाइन वीरम गाँव तक चली गई है। अहमदाबाद से मीटरगेज लाइन आरम्भ होती और माउन्ट आबू मारवाड़, जंक्शन, अजमेर और जयपुर होती हुई आगरा और कानपुर को चली गई है। यह लाइन भटिंडा और दिल्ली में नार्थ वेस्टर्न रेलवे से मिली हुई है। इसकी एक शाखा अजमेर से चित्तौड़, रतलाम और इन्दौर होती हुई खंडवा में जी० आई० पी० से मिल गई है। इसी की चौड़ी लाइन बम्बई, बड़ौदा, रतलाम, क्वेटा, भरतपुर और मथुरा होती हुई दिल्ली को गई है। मालवा प्रदेश को छोड़कर यह लाइन अधिकतर कम आबाद और रेगिस्तानी प्रदेश में होकर जाती है। लेकिन कुछ तीर्थों और प्रसिद्ध शहरों के कारण इस लाइन पर काफी मुसाफिर सफर करते हैं। इसके मार्ग में सांभर झील आदि कुछ स्थानों से नमक बहुत है। इसलिये इसकी मालगाड़ियां सब से अधिक नमक ढोती हैं। नमक के अतिरिक्त अनाज, कपास, पत्थर, गुड़ लकड़ी भी इस लाइन पर बहुत ढोई जाती है।

ओ० टी० (बङ्गाल और नार्थ वेस्टर्न) रेलवे

यह मीटरगेज रेलवे गङ्गा के उत्तर में घाघरा और कोसी नदियों के बीच के प्रदेश में खोली गई। कई स्थानों पर इस लाइन के मुसाफिर स्टीमर द्वारा गङ्गा को पार करके ई० आई० आर०. पर सवार हो जाते हैं। बहुत दिनों तक यह लाइन सब से अलग रही। पर अन्त में यह लाइन कानपुर बी० बी० एण्ड सी०.आई रेलवे से की मीटर लाइन से और कटिहार में ईस्टर्न बङ्गाल रेलवे से मिला दी गई है। भूत-पूर्व अवध रुहेलखण्ड (वर्तमान ईस्ट इण्डियन) रेलवे से यह लाइन

बनारस, जौनपुर और शाहगञ्ज में मिलती है। इसकी एक शाखा बनारस से इलाहाबाद को गई है। यह लाइन हिन्दुस्तान के अत्यन्त उपजाऊ और घने बसे हुये भाग में होकर जाती है। इसलिये इस रेलवे को माल और सवारी की कमी-कमी नहीं रहती है। इसकी मालगाड़ियाँ अधिकतर चावल, अनाज, गुड़, तिलहन, नील और अफीम ढोया करती हैं। बाढ़ के दिनों में कभी-कभी कुछ भागों में रेलगाड़ी का चलना बन्द हो जाता है। गत भूकम्प में इस लाइन को भारी हानि हुई थी।

ईस्टर्न बङ्गाल रेलवे

यह लाइन पूर्वी बङ्गाल में फैली हुई है। यह लाइन उत्तर में कलकत्ते से सिलगुड़ी तक चली गई है। सिलगुड़ी से दार्जिलिंग के लिये (दो फुट चौड़ी) पहाड़ी लाइन मिलती है। उत्तर-पूर्व के इसकी एक शाखा आसाम-बङ्गाल रेलवे से मिलती हुई है। पश्चिम में यह लाइन ई० आई० आर० और नार्थ वेस्टर्न रेलवे से मिलती है। बाढ़ और चौड़ी नदियों के कारण इस रेलवे को फैलाने में कठिनाई पड़ती है। पर यह रेलवे अत्यन्त उपजाऊ और सघन भाग में चलती है। यह रेलवे जूट, चाय चावल, मसाला और तम्बाकू बाहर पहुँचती है। सूती कपड़ा, अनाज, शक्कर आदि सामान इधर लाती है।

आसाम बङ्गाल रेलवे

यह मीटर लाइन चिटगाँव से शुरू होती है और सुरमा घाटी और उत्तरी कछार की पहाड़ियों में होकर आसाम में पहुँचती है। पहाड़ी भाग में इसका दृश्य अत्यन्त मनोहर है। पर इसके बनाने के बहुत खर्च हुआ। इसका प्रदेश इतना कम आबाद है कि रेलवे मजदूर बाहर से बुलाने पड़े। घंटों की यात्रा में स्टेशन पर केले के सिवा और कोई चीज खाने को नहीं मिलती है। इस लाइन पर भीड़ कम रहती है। पर चाय, चावल और जूट बाहर पहुँचने में इसे कुछ आमदनी होती है। लेकिन फिर भी यह रेलवे घाटे से चलती है।

बङ्गाल-नागपुर रेलवे

यह चौड़ी लाइन नागपुर से आरम्भ होकर हावड़ा, कटक और कटनी को चली गई है। १६०१ ई० से पूर्वी तट पर कटक और विजिगापट्टम के बीच की लाइन भी इसी कम्पनी के अधिकार में आ गई। रायपुर से विजिगापट्टम की लाइन अभी हाल के बनी है। इसकी एक शाखा झरिया की कोयले को खानों तक पहुँच गई। बम्बई से कलकत्ता का सबसे छोटा रास्ता इसी लाइन पर होकर है। लेकिन लाइन का बड़ा भाग कम आबाद प्रदेश में होकर जाता है। यदि इस लाइन पर जगन्नाथपुरी (तीर्थ) न हो तो इसकी गाड़ियां प्रायः खाली ही दौड़ा करें। इसकी मालगाड़ियां कोयला, कपास, चमड़ा कमाने की छाल, अनाज, जूट, नकम, लकड़ी, पत्थर, तेल, लोहा, और धातु का सामान ढोने में लगी रहती हैं।

मद्रास रेलवे

यह लाइन उत्तर-पश्चिम में जी० आई० पी० रेलवे तक और दक्षिण-पश्चिम में पश्चिम घाट तक पहुँचती है। पूर्वी तट में विजिगापट्टम और मद्रास के बीच की लाइन भी इसी रेलवे के अधिकार में है। वह लाइन अधिकतर आबाद और उपजाऊ भाग में होकर जाती है। इसके माग का केवल कुछ भाग अकाल से पीड़ित रहता है। पर मद्रास का बन्दरगाह अच्छा न होने से रेलवे की उन्नति में बाधा पड़ती है। इसकी मालगाड़ियां कोयला, कपास, रङ्ग, अनाज, फल, तरकारी, पत्थर, लकड़ी नमक, तम्बाकू और चमड़ा ढोया करती हैं।

साउथ इण्डियन रेलवे

यह मीटर लाइन दक्षिणी भाग में फैली हुई है। रामेश्वर की यात्रा के लिये इस लाइन पर बहुत से यात्री जाते हैं। जब से धनुषकोटि और तूतीकोरन से लङ्का को स्टीमर जाने लगे तब से यात्रियों की संख्या और भी अधिक बढ़ गई। यही एक लाइन है जिसमें माल की अपेक्षा मुसा-

फिरों से रेलवे को अधिक आमदनी होती है। कपास, फल, तरकारी, चावल तेल, लकड़ी आदि सामान इस रेलवे के द्वारा ढोया जाता है।

सदर्न मराठा रेलवे

वह रेलवे बम्बई प्रान्त के दक्षिणी भाग, मद्रास-प्रान्त के उत्तर और मैसूर-राज्य में स्थिति है। इसकी एक शाखा (मोरमगोआ) पूर्चगाली प्रदेश से मिली हुई है। यह लाइन अकाल-पीड़ित कम आवाद और पहाड़ी प्रदेश में चलती है। इसलिये इसको सदा घाटा रहता है। इन रेलों के अतिरिक्त देशी राज्यों में कई छोटी-छोटी रेलवे हैं। इनमें उन्हीं राज्यों की पूंजी लगी है। जिससे उन्हें काफी लाभ होता है।

वर्मा रेलवे

यह मीटर रेलवे एक प्रान्तीय रेलवे है। यदि आसाम वङ्गाल रेलवे से इसे जोड़ दिया जाय तो यह रेलवे भी हिन्दुस्तान रेलों का ही अग वन जावे इसकी प्रधान लाइन रंगून से मांडले को और मांडले से मिचीना को गई है। जव इरावदी में पुल नहीं था तव सामान और मुसाफिर स्टीमर द्वारा दूसरे किनारे पर पहुँच जाते थे। हाल में इरावदी पर आवा पुल तैयार हो गया है। इससे आने जाने में वड़ी सुविधा हो गई है। इसको एक शाखा पहाड़ी रियासतों में होकर मेमिओ और लाशियो को गई है। इरावदी में स्टीमरों के चलने पर भी इस रेलवे को चावल, चकड़ी आदि सामान और मुसाफिरों से भारी लाभ होता है। हिन्दुस्तानी रेलों की तरह सवारी गाड़ियों में सव से अधिक आमदनी तीसरे दर्जे के मुसाफिरों से होती है।

चौबीसवाँ अध्याय

भारत के हवाई मार्ग

संसार के सर्व-प्रसिद्ध हवाई मार्ग में हिन्दुस्तान की स्थिति अत्यन्त केन्द्रवत् है। हिन्दुस्तान की प्राकृतिक बनावट हवाई जहाजों के लिये बहुत ही अनुकूल है। मानसूनी महीनों को छोड़ कर यहां की जलवायु आदर्श है। हवाई जहाज को रात में उड़ाने के लिये हिन्दुस्तान की जलवायु विशेष रूप से अच्छी है। हिन्दुस्तान के अनेक बड़े-बड़े व्यापारिक शहर बहुत दूर दूर स्थित हैं। आजकल के आवागमन के साधन बहुत कम हैं। कलकत्ता से बम्बई जाने वाली डाकगाड़ी की चाल भी औसतन से भी घंटे ३० मील के कुछ ही ऊपर है और गाड़ियों का कहना ही क्या है?

हवाई मार्गों के लिये बीच वाले और अन्तिम स्टेशनों की आवश्यकता पड़ती है जहां काफी सामान और मुसाफिर मिल सकें। दो-तीन सौ मील की दूरी पर स्थित इन स्टेशनों के पास ही हवाई जहाज के उतरने का स्थान होना चाहिये। कुछ स्टेशनों पर विमानालय (एरोड्रोम) होने चाहिये। कारखानों और मरम्मत की दूकानों की दूसरी जरूरत है। कम से कम अन्तिम स्टेशनों में ऋतु विज्ञान (सम्बन्धी) मेट्योरालॉजीकल और बिना तार के तार घरों (वायरलेस) की भी आवश्यकता पड़ती है। रात में उड़ने के लिये प्रकाश-भवनों (लाइट हाउस) की जरूरत पड़ती है। रात में उड़ने के लिये २,००० मील के फासिले में रोशनी का प्रबन्ध हिन्दुस्तान में भी करना पड़ा। बिना तार के तार-घर और ऋतु-विज्ञान सम्बन्धी दफ्तरों को सूचित करने के लिये विशाल प्रकाशभवन भी होना चाहिये चुंगी वसूल करने और उतरने के अड्डों (विमानालयों) को भिन्न-भिन्न प्रकाशों से सूचित करना पड़ता है।

आजकल के हवाई जहाजों को इस बात की जरूरत है कि उनका मार्ग अधिकतर चपटी भूमि में ही हो। पहाड़ियों और पहाड़ों के बीच में पड़ने से हवाई जहाजों को बहुत ऊंचा चढ़ना पड़ता है। इससे खर्च अधिक बढ़ जाता है। सब विमानालय व्यापार-केन्द्र के पास होने चाहिये जिससे हवाई जहाज को काम मिलता रहे।

१६२० ई० में भारत-सरकार ने इलाहाबाद होकर जाने वाली बम्बई और कलकत्ता को लाइन का अनुमान लगाया था। २,००० मील का सब खर्च २६॥ लाख रुपये अन्दाजा लगाया था। मान लो यह खर्च बढ़ा कर ४० लाख रुपये रख लिया जावे, फिर भी प्रति मील पीछे हिन्दुस्तान में २ हजार रुपये हुये। इसका अर्थ यह है कि १०० मील हवाई मार्ग में उतना ही खर्च पड़ेगा जितना कि रेलवे मार्ग के एक मील में खर्च बैठता है। बहुत भारी सामान और कच्चे माल का ढोना इस समय हवाई जहाज के लिये असम्भव है। लेकिन जब एक बार बहुत से हवाई जहाज चलने लगेंगे तो अपार सामान हवाई मार्ग से ही ढोया जाने लगेगा। योरुप में इस समय स्थलवाहन आदर्श रूप से पूर्ण हैं, फिर भी मोजों से लेकर मशीनों के पुरजों के नमूने तक प्रतिदिन हवाई जहाज से ढोये जाते हैं।

सोने और चांदी का माल ढोने के लिये हवाई जहाज बड़े ही उपयुक्त हैं। बहुत कम लोगों के हाथ उन पर लगते हैं। इसलिये चोरी का बहुत कम डर है। इसी से हवाई जहाज पर बीमे की दर भी कम लगती है। दक्षिणी-अफ्रीका से (हिन्दुस्तान के लिये) केप से केरो तक हवाई लाइन खुल गई है। मिस्र से हिन्दुस्तान को हवाई जहाज का आना आसान है।

हिन्दुस्तान का पहला हवाई मार्ग दिल्ली और इलाहाबाद होकर कराची से कलकत्ता को पहुँचता है। अधिक सीधा मार्ग कराची से नसीराबाद और झांसी होकर इलाहाबाद आता है। दूर दूर की यात्रा

करने वाले हवाई चालकों ने इसी का अनुसरण किया है। इलाहाबाद और कलकत्ता में हवाई जहाजों के उतरने के लिये एरोड्रोम (विमानालय) है। बीच में गया और आसनसोल में भी हवाई जहाजों के उतरने के लिये जगह तयार हो गई है।

कराची से बम्बई हवाई मार्ग द्वारा मिला हुआ है। बम्बई से एक हवाई मार्ग मद्रास को गया है। इससे दूसरे दर्जे का मार्ग बम्बई और कलकत्ता के बीच का है। बम्बई और कलकत्ता के बीच के मार्ग में असंख्य मुसाफिर और अपार सामान हवाई जहाज को मिलता है। दूसरा प्रसिद्ध मार्ग कलकत्ता से बनारस, इलाहाबाद, कानपुर और लाहोर होकर रावलपिंडी के लिये है। इस मार्ग में अपार सामान है। कलकत्ते से एक दूसरा मार्ग विजीगापट्टम होकर मद्रास को और फिर वहा से आगे बढ़कर कोलम्बो को जाता है। मद्रास होकर बम्बई और कोलम्बो के बीच का मार्ग भी जुड़ा है। कलकत्ता और बम्बई के बीच में दो मार्ग हैं। एक मार्ग जबलपुर और इलाहाबाद होकर और दूसरा नागपुर (मध्य-प्रदेश) होकर जाता है। नागपुर होकर जाने वाला मार्ग इलाहाबाद वाले मार्ग से प्रायः २०० मील कम होगा। यह २६० मील की बचत उस लम्बे सफर के लिये बड़े काम की होगी जो कलकत्ता से रंगून तक बढ़ा दिया गया है। यह स्पष्ट है कि बम्बई और कलकत्ता के मार्ग पर हवाई जहाज रात में भी चला करते है। रात के चलने के लिये हिन्दुस्तान एक आदर्श देश है। गरमी की ऋतु में दिन की अपेक्षा रात को चलना बहुत ही अच्छा रहता है।

हिन्दुस्तान के दूसरे नगर तो रेल द्वारा जुड़े हुये हैं। कलकत्ता और रंगून के बीच में आने जाने का एक मात्र साधन जहाज है। अगर कोई मुसाफिर स्थल-मार्ग द्वारा बम्बई से कलकत्ता आवे और फिर जहाज द्वारा कलकत्ता से रंगून जावे, तो उसे पांच दिन रास्ते में लग जावेंगे। लेकिन हवाई जहाज २४ घंटे में बम्बई से रंगून पहुँचा सकता है। कलकत्ता और रंगून के बीच में स्थित अक्याब नगर

में भी जहाज ठहरते हैं। एक हवाई मार्ग ब्रह्मपुत्र और यांग्टिसी नदियों की घाटी के रास्ते से हिन्दुस्तान और चीन में नया सम्बन्ध जोड़ देता है।

भीतरी मार्गों के अतिरिक्त भारतवर्ष बाहरी मार्गों का भी प्रसिद्ध केन्द्र है। हिन्दुस्तान के पूर्व में पूर्वी द्वीपसमूह में डच लोग नियम पूर्वक हवाई जहाज ले जाते थे। जापानी हवाई जहाज सारे जापान तथा समीप वाले देशों में चक्कर लगा रहे थे। आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड भी इस दिशा में बहुत आगे बढ़ रहे हैं। पश्चिम की ओर योरुप में हवाई जहाजों का चलाना सर्वसाधरण हो गया है। लेकिन पूर्वी और पश्चिमी भागों का जकरान हिन्दुस्तान है। इस प्रकार मिस्र और कराची तथा कराची और रंगून के बीच में सुविधा होने से संसार के हवाई मार्गों को बड़ी सहायता मिलती है। योरुप से साइबेरिया होकर जो पूर्वी मार्ग है वह भू-रचना, जलवायु, जनसंख्या और व्यापार की अधिक दक्षिणी (लन्दन, पेरिस, वियना, कुस्तुन्तुनिया, बगदाद और कराची) अर्थात् भारतीय मार्ग के मुकाबिले में बहुत ही तुच्छ है। इसलिये हिन्दुस्तान में हवाई मार्ग का पूर्ण विकास निश्चित है।

पैंतीसवाँ अध्याय

संसार से भारतवर्ष का व्यापारिक सम्बन्ध

भारतवर्ष की प्राकृतिक सम्पत्ति अपार है। यहां बहुत सी ऐसी चीजें पैदा होती हैं और पाई जाती हैं जो देश की आवश्यकता पूरी करने के बाद भी फालतू बच जाती हैं। इसके विपरीत कुछ ऐसी चीजें हैं जो दूसरे देशों में बहुतायत से मिलती हैं। लेकिन इस देश में उनका प्रायः अभाव है। जल और स्थल मार्गों द्वारा अपने देश की फालतू चीजों को विदेश में भेजने और उन देशों में अपनी आवश्यकता की चीजें को यहा लाने के लिये हिन्दुस्तान की भौगोलिक स्थिति बड़ी अच्छी है। इसलिये अति प्राचीन समय से यहा संसार के भिन्न-भिन्न देशों में भारतवर्ष का व्यापारिक सम्बन्ध रहा है। पहले यह व्यापार स्थल में जानवरों की पीठ पर और जल मे बड़ी नावों द्वारा होता था। व्यापार की चीजों को एक देश से दूसरे देश को भेजने में बहुत खर्च पड़ता था। इसलिये प्राचीन समय में केवल ऐसी चीजों का व्यापार होता था जो हलकी और बहुत कीमती होती थीं। मसाला, रेशम, बढ़िया कपड़े, सोना, चांदी, हीरा माणिकादि का अधिक व्यापार होता था। पर जब से बड़े धुआंकश (जहाज) चलने लगे और देश में रेल खुल गई तब से हिन्दुस्तान के व्यापार की दशा पलट गई। रेलों और जहाजों ने दूर दूर के देशों को पड़ोसी बना दिया। अगर दूसरे देशों के धनी लोग अधिक दाम लगा सकते हैं तो देश का भारी से भारी आवश्यक माल (चाहे गरीब देशवासियों को भले ही न मिले) बाहर चला जाता है। इसी तरह यदि देश का बना हुआ माल कुछ महगा पड़ता है, तो यह माल पड़ा पड़ा सड़ता है और विदेशी माल हाथों हाथ बिक जाता है। कुछ वर्ष

प्रतिवर्ष हिन्दुस्तान प्रायः ६०० करोड़ रुपये का व्यापार समुद्री मार्ग से दूसरे देशों के साथ करता था। आजकल यह व्यापार १२२५ करोड़ रुपये का हो गया है। बाहर जाने वाले माल को निर्यात और बाहर से देश में आने वाले माल को आयात कहते हैं। हिन्दुस्तान के आयत में प्रायः फी सदी विदेशों में बना हुआ पक्का माल रहता है। यों तो विदेश से बहुत सी चीजें आती हैं। पर अधिक दाम* की चीजें निम्न हैं :—

मूल्य करोड़ रुपयों में

	१६२८	१६३४
रुई और सूती माल	७० करोड़ रुपये	३४
लोहा और फौलादी सामान	२८ ” ”	१०
शक्कर	२० ” ”	३
मशीनें और मिलों का सामान	१६ ” ”	६
मिट्टी का तेल	११ ” ”	६
रेशमी और ऊनी माल	१० ” ”	४
मोटर आदि गाड़ियां	८ ” ”	४
रेल का सामान	५ ” ”	३
कागज़ और किताबें	४ ” ”	३
शराब	४ करोड़ रुपये	२
तम्बाकू (सिगरेट)	३ ” ”	१
रंग	३ ” ”	२॥
शीशे का सामान	२॥ ” ”	२॥
दवाएँ	२ ” ”	२
नमक	२ ” ”	१

*गत वर्षों से हिन्दुस्तान को बाहर से अन्न मंगाना पड़ रहा है। फिर भी भारतवर्ष का व्यापार दुगुना हो गया है।

निर्यात (मूल्य करोड़ रुपयों में)

	१९२८	१९३४
जूट कच्चा और बना हुआ	८० करोड़ रुपये	३०
तिलहन	३० करोड़ "	११
चाय	३० करोड़ "	१७
चमड़ा	१७ करोड़	३
लाख	७ करोड़ "	१
ऊन	६ करोड़ "	२
मैंगनीज आदि कच्ची धातु और धातु का सामान	५ करोड़ "	४

१९५० में निर्यात में वृद्धि

अवमूल्यन के पश्चात् जूट के माल का निर्यात १ अरब ३२ करोड़ ६७ लाख रुपये से घट कर अब २३ करोड़ ३ लाख रुपये और कोयले का निर्यात ४ करोड़ रुपये से घट कर ३ करोड़ ७९ लाख रुपये का रह गया।

सूती कपड़े का निर्यात ३५ करोड़ ६६ लाख रुपये से बढ़ कर १ अरब १४ लाख रुपये का हो गया। चाय, खालों, चमड़े, मसाले, कपास, तम्बाकू, अबरक, लाख, फल, तेल, नारियल के रेशे का सामान, मैंगनीज धातु और कच्चे ऊन के निर्यात में वृद्धि हुई।

अवमूल्यन के बाद भारतीय माल का सबसे बड़ा आयातक भी ब्रिटेन ही रहा। ब्रिटेन ने भारत से १ अरब १० करोड़ ७१ लाख रुपये का माल मंगाया, अमेरिका ने ९५ करोड़ १८ लाख रुपये का और आस्ट्रेलिया ने २७ करोड़ ४७ लाख रुपये का। भारतीय माल के अन्य प्रमुख आयातक मलाया, लङ्का, बर्मा, हांगकांग, कनाडा, अर्जेंटीना, अदन, पश्चिमी जर्मनी, बेल्जियम, क्यूबा और केनिया थे।

पहले हिन्दुस्तान में लगभग ५ करोड़ रुपये की रुई, ७ करोड़ का सूत और कई करोड़ का कपड़ा आता था। अब यह प्रश्न उठता है कि जब हिन्दुस्तान में ही अपार रुई होती है तो बाहर से क्यों मंगाई जाती है। कारण यह है कि हिन्दुस्तान में अधिकतर छोटे रेशे की रुई होती है। बड़े रेशे की पञ्जाब-अमरीकन धारवाड़-अमरीकन और कम्बोडिया अमरीकन कपास बम्बई से दूर पैदा होती है। इस लिये बम्बई की कुछ मिलें मोम्बासा बन्दरगाह से यूगाण्डा की लंबे रेशे वाली कपास मंगा लेती हैं। कुछ रुई अमरीका से भी आती है। पहले जितना सूत हिन्दुस्तान में आता था उसका प्रायः ६५ फी सदी जापान से और ३१ फी सदी लंकाशायर से आता था। हिन्दुस्तानी जुलाहे प्रायः यही सूत अपने करघों पर बुनते थे। कपड़ों में उलटा हाल था। ६४ करोड़ रुपये के कपड़े में ८५ फी सदी लंकाशायर से और १४ फी सदी जापान से आता था। विगत कानून के अनुसार जापानी कपड़े पर २० फी सदी और लङ्काशायर के कपड़े पर १४ फी सदी कर लगता था। इससे कार बार को धक्का पहुँचा। पर स्वदेशी के प्रचार से आजकल दोनों ही देशों से हिन्दुस्तान में कपड़े आने बन्द हो गये और हिन्दुस्तान में खोई हुई लक्ष्मी फिर लौटने लगी। हिन्दुस्तान में प्रायः २३ करोड़ रुपयों की रुई बाहर जाती थी। इसमें प्रायः ५० फी सदी जापान को, १२ फी सदी चीन को, १० फी सदी इटली को जाती थी। बेल्जियम, ग्रेटब्रिटेन, जर्मनी और फ्रांस को भी लगभग पांच फी सदी जाती थी।

बम्बई में सूत की मिलों को हाल में बहुत घाटा रहा। सन् १६१४ तक प्रायः १७ करोड़ पौंड सूत बम्बई से चीन को जाता था। फिर केवल ६७ लाख पौंड वहां जाता था। यही नहीं, दूसरी तरह का लगभग सवा करोड़ पौंड सूत चीन से हिन्दुस्तान में आने लगा था।

हिन्दुस्तान की मिलो में अभी इतना कपड़ा तैयार नहीं होता है जिससे देश की मांग पूरी हो सके। लेकिन यहां विलायती कपड़े से

छोड़ बन्द हो गई हैं। हिन्दुस्तानी मिलों का कपड़ा काफी मोटा और और मजबूत होता है। इसलिये यह कपड़ा लङ्का, मलय प्राय.द्वीप फारस, इराक और पूर्वी अफ्रीका में बहुत बिकता है। पहले चीन और जापान में यहा से कपड़ा जाता था। अब वहां जाना बन्द हो गया है। फिर भी कुछ कपड़ा बाहर जाता है।

लोहा और फौलादी सामान

बिहार प्रान्त में कलकत्ते से लगभग १५० मील उत्तर-पश्चिम की ओर जमशेदपुर नगर में टाटा आयरन एण्ड स्टील वर्क्स और दूसरी कम्पनियां लोहा, खेती के यन्त्र और छत पाटने के लिये गार्डर आदि बहुत सी चीजें तैयार करती हैं। पहली बड़ी लड़ाई में दूसरे देशों के कारखानों ने मनमाने दाम बढ़ा दिये थे। लेकिन टाटा कम्पनी ने भाव के रेट का सरकार से पहले ही ठेका कर लिया था। इसलिये टाटा कम्पनी बड़ी लड़ाई से कोई विशेष लाभ न उठा सकी। बड़ी लड़ाई के बाद दूसरे देशों की कम्पनियां अपने फालतू फौलादी माल को ऐसे दामों में हिन्दुस्तान में बेचने लगीं कि टाटा कम्पनी के होने का डर था। १९२८ ई० से कम्पनी की रक्षा के लिए सरकार विदेशी फौलादी माल पर ३३॥ फीसदी का कर लगा दिया। तब कम्पनी में नई जान आ गई। आजकल लगभग ४ लाख टन फौल हिन्दुस्तान में तैयार होता है। पर अभी कुछ हिन्दुस्तानी कम्पनियां दे की मांग को पूरा करने में असमर्थ हैं। इसलिये लोहे और फौलाद बहुत सा सामान ग्रेट ब्रिटेन, बेल्जियम और अमरीका से आता है

शक्कर —अब से प्रायः ८० वर्ष पहले हिन्दुस्तान में इतनी होती थी कि यहां बाहर से शक्कर मंगाने की आवश्यकता नहीं थी। आजकल भी २५ लाख एकड़ जमीन में ईख बोई जाती है। मांग इतनी अधिक बढ़ गई कि पहले भारतीय सरकार को शक्क की उपज और वितरण पर नियन्त्रण (कण्ट्रोल) करना

पहले ईख की शक्कर संयुक्तराज्य अमरीका से और मारीशस से आती थी।

हिन्दुस्तान में मशीन और मिलों का सामान अधिकतर ग्रेटब्रिटेन और जर्मनी से आता था। अब अमरीका से आने लगा है।

मिट्टी का तेल—हिन्दुस्तान में मिट्टी के तेल की मांग बहुत बढ़ गई है। ब्रह्मा का अधिकांश तेल हिन्दुस्तान में ही आता है। ब्रह्मा का प्रायः सवा छः लाख टन तेल हिन्दुस्तान में आता है। केवल तीस या बत्तीस हजार टन तेल दूसरे देशों को जाता है। इसमें अधिकतर (मोटर चलाने का) पेट्रोल होता है। पर इससे हिन्दुस्तान की मांग पूरी नहीं होती है। इसलिये ५ करोड़ गैलन रोशनी करने का तेल संयुक्तराज्य अमरीका से और ७ या ८ करोड़ गैलन इंजनों में जलाने का तेल फारस से आता है। कुछ तेल बोर्नियो और सुमात्रा से भी आता है। पहले रूस से बहुत तेल आता था। बीच में लड़ाई के दिनों में बन्द हो गया। रूस का तेल बहुत सस्ता होता था।

रेशम—हिन्दुस्तान में रेशम की मांग कुछ कुछ बढ़ रही है। सब से अधिक रेशम चीन से आता था। पर बनावटी (कृत्रिम) रेशम प्रायः सब का सब इटली और ग्रेटब्रिटेन से आता था।

ऊपर के विवरण में हम देख चुके हैं कि हिन्दुस्तान प्रायः सब का सब पक्का माल बाहर से मंगाता है और कच्चा माल दिसावर भेजता है। सब से अधिक पक्का माल (कपड़ा, मशीन आदि) ग्रेटब्रिटेन से आता था। सारे आयात का प्रायः पचास या साठ फीसदी भाग ग्रेट ब्रिटेन से आता था। लेकिन जूट चमड़ा आदि सब मिला कर ग्रेटब्रिटेन हिन्दुस्तान के सारे निर्यात का केवल २० फीसदी माल अपने यहां मंगाता था। इस प्रकार हिन्दुस्तान ग्रेट-ब्रिटेन के पक्के माल

का सबसे बड़ा खरीदार था। लेकिन ग्रेटब्रिटेन हिन्दुस्तान से बहुत सा माल नहीं मँगाता था। यहां की चाय की ब्रिटेन में बड़ी मांग है। यहां के शाल दुशाले और पीतल के बर्तन भी यहां बहुत बिकते हैं। जर्मनी मशीन आदि पक्का माल हिन्दुस्तान को भेजता था और बदले में कच्चा जूट, कच्ची रुई और चमड़ा हिन्दुस्तान से खरीदता था। जापान और संयुक्त राष्ट्र का व्यापार हिन्दुस्तान के साथ बड़ी तेजी से बढ़ रहा है। जापान हिन्दुस्तानी रुई का सबसे बड़ा खरीदार था। जापान से यहा कपड़ा दियासलाई आदि तरह तरह का सस्ता और दिखावटी सामान आता है। संयुक्त राष्ट्र अमरीका हिन्दुस्तान से जूट, चमड़ा लाख, मैंगनीज़ और तिलहन खरीदता है और मोटरकार, मिट्टी का तेल और दूसरा पक्का माल (फाउन्टेनपेन, पेन्सिल, बिजली का लैम्प आदि यहां बेचता है। इस बार अन्न भी आने वाला है।

जावा द्वीप हिन्दुस्तान में सबसे अधिक शक्कर बेचता था। पर कुछ जूट के बोरे और चावल को छोड़ कर जावा हिन्दुस्तान से कोई अधिक सामान नहीं खरीदता है। इसके विपरीत फ्रांस, इटली, बेल्जियम और हालैंड देश हिन्दुस्तान के माल खरीदते हैं और अपना माल यहां कम बेच पाते हैं। फ्रास हिन्दुस्तान से बहुत सा तिलहन, पक्का और कच्चा जूट खरीदता हे। मार्से या (मार्सेल्स) में तिलहन को पेर कर तेल बनाया जाता है। जिससे साबुन बनता है या शुद्ध कर जैतून का तेल तैयार कर लिया जाता है।

चीन के साथ हिन्दुस्तान का व्यापार बहुत कम हो गया है। पहले यहा से बहुत सी अफीम चीन को जाती थी। फिर केवल आज्ञा मिलने पर भारत की सरकार चीन की सरकार के हाथ अफीम बेच सकती थी। पहले यहा का सूत और सूती कपड़ा भी चीन में बहुत बिकता था। अब उसका जाना बन्द सा हो गया है। लेकिन चीन से रेशम यहां अब भो बहुत आता है।

लंका में हिन्दुस्तान से चावल, कपड़ा और कुछ कोयला जाता है।

पर लंका में प्रायः वही चीजें होती हैं जो हिन्दुस्तान में होती हैं। इस लिये सुपारी और कुछ मसाले को छोड़ कर हिन्दुस्तान में लंका से कोई चीज नहीं आती है। मलय प्रायद्वीप में भी हिन्दुस्तान से कपड़ा और जूट का पक्का माल जाता है। वहां से बदले में टीन और मसाला आता है। आस्ट्रेलिया के साथ हिन्दुस्तान का व्यापार अधिक नहीं है। पर यह व्यापार धीरे धीरे बढ़ रहा है। आस्ट्रेलिया से टीन के डब्बों में अचार आदि खाने का सामान, कोयला, अन्न और वैलर घोड़े आते हैं। हाल में वहां से कुछ गेहूँ और ऊनी सामान आने लगा है। यहां से आस्ट्रेलिया को जूट के बोरे जाते हैं।

फारस अपने यहां से (इंजिनों में जलाने के काम का) मिट्टी का तेल भेजता है और बदले में सूती कपड़ा और अनाज मोल लेता है।

इराक से यहां छुहारे आदि फल और तरकारी आती है, बदले में सूती कपड़े वहां जाते हैं।

पूर्वी ब्रिटिश अफ्रीका (कीनिया उपनिवेश, यूगांडा, जैंजीबार और पेम्बा) से हिन्दुस्तान में केवल लम्बे रेशे वाली रुई आती है।

दक्षिणी-अफ्रीका और पुर्चगाली पूर्वी अफ्रीका में हिन्दुस्तान से चावल और जूट के बोरे आते थे। वहां से हिन्दुस्तान के पश्चिमी तट को कोयला जाता था। रेल का किराया अधिक होने के कारण रानी-गंज का कोयला पश्चिमी भाग में पहुँचते पहुँचते बहुत मंहगा हो जाता था। लेकिन दक्षिण- अफ्रीका की ओर से हिन्दुस्तान आने वाले जहाज कोयला के मालिकों से नाम मात्र का किराया लेते थे। इसलिये दक्षिण अफ्रीका का कोयला यहां बहुत सस्ता पड़ता था हिन्दुस्तान का व्यापार विदेशी जहाजों के द्वारा होता रहा है। इससे हिन्दुस्तान को बहुत सा धन किराये में देना पड़ता है। हिन्दुस्तान हर साल प्रायः चालीस-पचास करोड़ रुपये केवल ग्रेटब्रिटेन को जहाज के किराये में देता है। हिन्दुस्तान का सबसे अधिक माल अंग्रेजों के जहाजों में आता जाता है। कुछ दूसरे देशों के जहाज भी हिन्दुस्तानी माल को ले

११९–भारतवर्ष बन्दरगाहों का पृष्ट प्रदेश और व्यापार

जाते थे। हिन्दुस्तान से प्रायः कच्चा माल ही दिसावर भेजा जाता है। कच्चा माल अधिक जगह घेरता है और वजनी भी अधिक होता है। इसलिये इस माल को ले जाने के लिये अधिक जहाजों की जरूरत

होती है। उधर से पक्का माल आता है जो कीमत में अधिक और वजन में कम होता है। इसलिए उधर से पक्का माल लाने के लिये बहुत से जहाजों की जरूरत नहीं पड़ती है। लेकिन उधर से फालतू जहाज न लावें तो पूरी मात्रा में हिन्दुस्तान से कच्चा माल कैसे ले जावे। बिल्कुल खाली जहाज लाना भी कठिन है। इसलिये जहाज कोयला नमक, सीमेंट आदि बोझीले सामान को बहुत ही कम किराये पर हिन्दुस्तान में डाल देते हैं। अब दशा सुधर रही है।

व्यापार में स्थिरता अब आती है। तब दो देशों के बीच में प्रायः समान मूल्य वाले, समान वजन वाले और समान स्थान घेरने वाले सामान का विनिमय (अदल बदल) हो। पर जब तक देश स्वतंत्र न था और उनके पास व्यापारी जहाज न थे तब तक बराबरी का व्यापार होना प्रायः असम्भव था। उदाहरणार्थ-अगर हिन्दुस्तान योरुप को तिलहन भेजता तो जहाज कम किराया लेते और वहां की सरकार कच्चे माल पर कोई चुङ्गी नहीं लगाती थी। अगर हिन्दुस्तान तिलहन को पेर कर तेल भेजता या तेल से साबुन बना कर भेजता तो जहाज भी अधिक किराया मांगते और वहां की सरकार भी भारी चुङ्गी लगाती। पक्का माल आने से देश में बेकारी फैलती है। कच्चे माल से कई तरह का कारबार बढ़ता है। इसलिये अब अपना स्वाधीन और सुरक्षित देश बेकारी से बचने की कोशिश करता है।

हिन्दुस्तान के प्रधान बन्दरगाहों का व्यापार

हिन्दुस्तान का ९० फी सदी से अधिक व्यापार चार बड़े बड़े बन्दरगाहों में बटा हुआ है। कलकत्ते में हर साल प्रायः सवा तीन सौ करोड़ रुपये का माल उतरता और चढ़ता है। इस प्रकार कलकत्ते में सारे हिन्दुस्तान का प्रायः ३६ फीसदी व्यापार होता है। बम्बई में सारे हिन्दुस्तान का प्रायः ३३ फीसदी व्यापार होता है। कराची में प्रायः १० फीसदी, रंगून में ९ फीसदी और मद्रास में ५ फी सदी व्यापार होता था

हिन्दुस्तान के सभी बन्दरगाहों में प्रायः एक सा सामान विलायत से आता है। पर प्रत्येक बन्दरगाह का निर्यात (बाहर जाने वाला सामान) पृष्ठ-प्रदेश के अनुसार भिन्न है।

कलकत्ते का पृष्ठ-प्रदेश बहुत धनी है। इसलिये यहां से सबसे अधिक सामान बाहर जाता है। यहा से बाहर जाने वाली मुख्य मुख्य चीजें निम्न हैं:—

जूट कच्चा और पक्का
चाय (हिमालय प्रदेश की)
लाख
चमड़ा
तिलहन
कच्ची धातु और धातु का सामान

बम्बई

कलकत्ते के बाद बम्बई का नम्बर आता है। अगर बम्बई के आयात में सोना चादी भी शामिल कर लें तो बम्बई का स्थान प्रथम हो जाता है। बम्बई का बन्दरगाह अच्छा है और स्वेज तथा दक्षिणी अफ्रीका और पूर्वी अफ्रीका के लिये अधिक निकट पड़ता है। इसके पृष्ठ प्रदेश में कपास अधिक होती है और मैंगनीज भी अधिक निकाला जाता है। यहीं से कुछ तिलहन और ऊन या ऊनी सामान भेजने में भी सुभीता रहता है, इसलिये यहा बाहर जाने वाले मुख्य मुख्य पदार्थ निम्न हैं:—

कपास
तिलहन
नारियल
ऊन और ऊनी सामान

करांची

जिस प्रकार बम्बई और कलकत्ता में प्रथम स्थान के लिए होड़ रहती है उसी प्रकार रंगून और करांची में तृतीय (तीसरे) स्थान के लिये होड़ लगी रहती है। अक्सर करांची का व्यापार तीसरे नम्बर का रहता है। पर कभी कभी रंगून तीसरा स्थान ले लेता है। करांची के पृष्ट प्रदेश में नहरों के खुल जाने से गेहूँ बहुत पैदा होता है। बाहर भेजने के पहले (कभी जहाज के आने में देरी होने से और कभी पञ्जाब से काफी गेहूँ न आने के कारण) गेहूँ को अक्सर बन्दरगाह में रखना पड़ता है। इस काम के लिए कराची की खुश्क जलवायु बड़ी अच्छी है। कराची ही योरुप के लिये निकटतम बन्दरगाह है। यहां से दिसावर जाने वाली मुख्य चीजें निम्न है :—

गेहूँ
कपास
अनाज और आटा,
तिलहन

रंगून

जिस प्रकार कलकत्ता नदी के मुहाने ऊपर समुद्र से ७२ मील की दूरी पर बसा है उसी प्रकार रंगून भी नदी के मुहाने के ऊपर समुद्र से २४ मील की दूरी पर बसा है। पर दोनों बन्दर गाहों में समुद्र से बड़े बड़े जहाज आ सकते हैं। रंगून के प्रधान निर्यात निम्न हैं :—

चावल (कुछ दाल और अनाज भी)
तेल
लकड़ी
रुई और सूती माल
धातु

हिन्दुस्तान के सभी बन्दरगाहों में प्राय: एक सा सामान विलायत से आता है। पर प्रत्येक बन्दरगाह का निर्यात (बाहर जाने वाला सामान) पृष्ठ-प्रदेश के अनुसार भिन्न है।

कलकत्ते का पृष्ठ-प्रदेश बहुत धनी है। इसलिये यहां से सबसे अधिक सामान बाहर जाता है। यहां से बाहर जाने वाली मुख्य मुख्य चीजें निम्न हैं :—

जूट कच्चा और पक्का
चाय (हिमालय प्रदेश की)
लाख
चमड़ा
तिलहन
कच्ची धातु और धातु का सामान

बम्बई

कलकत्ते के बाद बम्बई का नम्बर आता है। अगर बम्बई के आयात में सोना चांदी भी शामिल कर लें तो बम्बई का स्थान प्रथम हो जाता है। बम्बई का बन्दरगाह अच्छा है और स्वेज तथा दक्षिणी अफ्रीका और पूर्वी अफ्रीका के लिये अधिक निकट पड़ता है। इसके पृष्ठ प्रदेश में कपास अधिक होती है और मैंगनीज भी अधिक निकाला जाता है। यहीं से कुछ तिलहन और ऊन या ऊनी सामान भेजने में भी सुभीता रहता है, इसलिये यहां बाहर जाने वाले मुख्य मुख्य पदार्थ निम्न हैं :—

कपास
तिलहन
नारियल
ऊन और ऊनी सामान

कराची

जिस प्रकार बम्बई और कलकत्ता में प्रथम स्थान के लिए होड़ रहती है उसी प्रकार रंगून और करांची में तृतीय (तीसरे) स्थान के लिये होड़ लगी रहती है। अक्सर करांची का व्यापार तीसरे नम्बर का रहता है। पर कभी कभी रंगून तीसरा स्थान ले लेता है। करांची के पृष्ट प्रदेश में नहरों के खुल जाने से गेहूँ बहुत पैदा होता है। बाहर भेजने के पहले (कभी जहाज के आने में देरी होने से और कभी पञ्जाब से काफी गेहूँ न आने के कारण) गेहूँ को अक्सर बन्दरगाह में रखना पड़ता है। इस काम के लिए कराची की खुश्क जलवायु बड़ी अच्छी है। कराची ही योरुप के लिये निकटतम बन्दरगाह है। यहां से दिसावर जाने वाली मुख्य चीजें निम्न है :—

गेहूँ
कपास
अनाज और आटा,
तिलहन

रंगून

जिस प्रकार कलकत्ता नदी के मुहाने ऊपर समुद्र से ७२ मील की दूरी पर बसा है उसी प्रकार रंगून भी नदी के मुहाने के ऊपर समुद्र से २४ मील की दूरी पर बसा है। पर दोनों बन्दर गाहों में समुद्र से बड़े बड़े जहाज आ सकते हैं। रंगून के प्रधान निर्यात निम्न हैं :—

चावल (कुछ दाल और अनाज भी)
तेल
लकड़ी
रुई और सूती माल
धातु

है। पर यदि हिन्दुस्तान का व्यापारी बेड़ा बढ़ जावे तो यह व्यापार और भी अधिक बढ़ सकता है। तटीय व्यापार में आजकल प्रायः बङ्गाल का कोयला, जूट, बोरे, बोरियां, कपड़ा बम्बई और मद्रास के सूती कपड़े, जमशेदपुर (बिहार) के लोहे और फौलाद का सामान ब्रह्मा को जाता है और वहां से तेल, लकड़ी, चावल आता है।

भारतवर्ष के कुछ बन्दरगाहों की दशा

कराची	बन्दरगाह है। अधिक स्थान बढ़ाया गया है।
बम्बई	सर्वोत्तम बन्दरगाह है।
मङ्गलोर	समुद्र उथला होने के कारण जहाज दूर लंगर डालते हैं और छोटी नावें हैं
टेलिचरी	” ” ” ।
कालीकट	” ” ”
कोचीन	सामने टीले थे। अब बन्दरगाह सुधर गया है,
एलेप्पी	डाक नहीं है, नये खम्भे हैं।
क्विलन	मई से सितम्बर तक यहां लङ्गर पड़ता है।
त्रिवेन्दुरम्	लोहे के खम्भे हैं।
नीगापट्टम	इसमें मजबूत लोहे के खम्भे हैं।
पाण्डिचेरी	डाक नहीं है, खम्भे हैं।
मद्रास	बन्दरगाह है, डाक नहीं है।
मसूलीपट्टम	तट पर जहाज नहीं आते और नावें सामान के लिये रहती हैं।
कोकोनाडा	” ” ”
विजिगापट्टम	पहले जहाज पर से सामान उतारने चढ़ाने को नावें थीं। अब बन्दरगाह बन गया है।
गंजाम	बन्दरगाह तूफानी है। नावें हैं।
पुरी	तट से दूर जहाज लङ्गर डालते हैं, नावें हैं।

कलकत्ता	किदर पुर डाक के अतिरिक्त और स्थान बढ़ाया जा रहा है,
चिटगांव	मिट्टी निकाल कर बन्दरगाह को सदा साफ रखना आवश्यक है।
अक्याब	बन्दरगाह है। खम्भे हैं।
रंगून	नदी का बन्दर और पानटून जेटी हैं।
मौलमीन	छोटे जहाज ठहरते हैं।
कोलम्बो	छोटे-छोटी नावें सामान उतारती हैं, पर जहाजों के ठहने की जगह है।
गाल	जहाज लंगर डालते हैं और छोटी छोटी नावें हैं।
बैटीकोला	तट से दूर लंगर पड़ता है और कारगो (माल) नावें बोझा उतारती हैं।
ट्रिंकोमाली	बड़ा भारी स्वाभाविक बन्दरगाह है।

सीमा-प्रान्तीय व्यापार

भारतवर्ष का सीमा-प्रान्तीय व्यापार भी काफी बड़ा है सीमा-प्रान्तीय व्यापार मार्ग अत्यन्त दुर्गम है। एक दो स्थानों को छोड़ कर यहां मोटर या रेल की गुजर नहीं है। शीतकाल में मार्ग अक्सर वर्फ से घिर जाते हैं। इसलिये व्यापार मन्दा पड़ जाता है। ग्रीष्म-ऋतु मे भी प्रायः ऊंट-खच्चर,घोड़े,बैल, बकरे और याक की पीठ पर सामान लद कर आता है। इन कठिनाइयों के होने पर भी हिन्दुस्तान मे प्रतिवर्ष चालीस पचास करोड़ रुपये का सीमा-प्रान्तीय व्यापार होता है।

अफगानिस्तान और हिन्दुस्तान का व्यापार बड़े मार्के का है। अफगानिस्तान से फल, तरकारी, हींग, मेवा, ऊन और ऊनी सामान हिन्दुस्तान में आता है। हिन्दुस्तान से सूती कपड़े, चाय, शक्कर चमड़े का सामान और नील अफगानिस्तान को जाता है। यह सब व्यापार प्रति वर्ष प्रायः पांच करोड़ रुपये का होता है।

फारस और हिन्दुस्तान का स्थल व्यापार भी प्रायः इसी प्रकार का होता था। फारस में हिन्दुस्तान के सूत और कपड़े तथा चमड़े की मांग हैं। फारस और हिन्दुतान का व्यापार बिलोचिस्तान और अफगानिस्तान के मार्ग से होता है। नैपाल और हिन्दुस्तान के बीच में प्रायः नौ दस करोड़ रुपये का व्यापार होता हैं। नैपाल से चावल और जूट (पाट) बहुत आता है। हिन्दुस्तान से सूत और सूती माल नैपाल में पहुँचाता हैं। पर अब धीरे धीरे नैपाल में चरखे का प्रचार बढ़ रहा है इसलिये भविष्य में नैपाल को बाहर से अधिक कपड़ा मंगाने की आवश्यकता न रहेगी।

हिन्दुस्तान और ब्रह्मा का व्यापार अधिकतर मनीपुर के रास्ते से होता है। हिन्दुस्तान से बोरियां और सूती कपड़ा ब्रह्मा को जाता है। वहां से चावल, पेट्रोल और मिट्टी का तेल आता हैं। भामो और कुलांग घाट से चीन और ब्रह्मा के बीच में व्यापार होता है स्याम और चीन का व्यापार टेनाय के रास्ते से होता है।

तिब्बत और हिन्दुस्तान के बीच में अधिकतर चाय और ऊन का व्यापार होता है।

लङ्का का व्यापार

लङ्का का प्राय: ९७ फी सदी व्यापार कोलम्बो बन्दरगाह द्वारा होता है। लङ्का में प्राय: ३६ करोड़ रुपये का सामान बाहर से आता है और ४८ करोड़ रुपये का सामान लङ्का से बाहर जाता है। इस प्रकार लङ्का को विदेशी व्यापार से प्राय: १२ करोड़ रुपये की बचत रहती है। लङ्का में बाहर से आने वाली मुख्य चीजें निम्न हैं :—

चावल	१० करोड़ रुपये
रुई और सूती सामान	२ " "
मिट्टी का तेल	२½ " "
कोयला	२ " "
रबड़	१½ " "
खाद	६½ " "
शक्कर	१½ " "
मछली	८० लाख "
मोटरकार और लारी	७४ " "

पहले लङ्का में चावल उन हिन्दुस्तानी कुलियों के लिये आता था जो चाय और रबड़ आदि के बगीचों में काम करते थे। हिन्दुस्तानी कुली जहां कहीं जाते हैं, हिन्दुस्तान का ही चावल और मोटा देशी कपड़ा पसन्द करते हैं। इसलिये जहा जहां हिन्दुस्तानी कुली जाते हैं। वहा वहां हिन्दुस्तान का चावल और कपड़ा भी जाता है। लङ्का में कपड़े का कोई कारखाना नहीं है। इसलिये लङ्का का कपड़ा लङ्काशायर और दक्षिण भारत से आता है।

लङ्का में मिट्टी का तेल बरमा के अतिरिक्त (खासकर इञ्जिनों में जलाने वाला तेल) फारस और वोर्नियो से आता है।

लङ्का में कोयले का अभाव है। भीतरी की ओर पहाड़ी नदियों से बिजली तैयार करने का प्रयत्न हो रहा हैं। आजकल सब कोयला देश के काम के लिये और यहां ठहरने वाले जहाजों के लिये हिन्दुस्तान (कलकत्ता), नैटाल और ग्रेट ब्रिटेन से आता है।

रबड़—दक्षिण भारत की रबड़ सीधे दिसावर नहीं जाती है। वह पहले लङ्का जाती है और यहा से फिर दिसावर भेजी जाती है।

लङ्का में खाद और शक्कर ग्रेटब्रिटेन और आस्ट्रेलिया से आती हैं।

मछली, मोटकार और लारी अधिकतर ग्रेटब्रिटेन; कनाडा और संयुक्त राज्य अमरीका से आती हैं।

लङ्का से बाहर जाने वाली प्रधान चीजें निम्न हैं:—

चाय	२० करोड़ रु०
रबड़	१७ करोड़ ,,
नारियल	८ करोड़ ,,
दारचीनी और सुपारी	७२ लाख ,,
प्लम्बागो (पेन्सिल का मसाला)	३२ लाख ,,

लङ्का के निर्यात का प्रायः ४० फी सदी ही माल ग्रेटब्रिटेन को जाता है। पर लङ्का की चाय ग्रेटब्रिटेन को छोड़ कर संयुक्त राज्य अमरीका; कनाडा, आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड, मिस्र आदि कई देशों को जाती है।

सुपारी अधिकतर हिन्दुस्तान में आती हैं इसी तरह प्लम्बागो (पेंसिल बनाने का मसाला) प्रायः सब का सब ग्रेटब्रिटेन को जाता हैं।

पहले जैसे हिन्दुस्तान में उसी प्रकार लङ्का में आयात और

नर्यात-क कर सरकार की आमदनी के लिये थे। देश में कारबार बढ़ाना, दूसरे कारखानों की रक्षा करना उनका प्रधान उद्देश्य नहीं था। केवल लोहे और फौलाद के कर (जुंगी) से जमशेदपुर) ताता के कारखानों की रक्षा अवश्य होती थी।

दूसरी बड़ी लड़ाई से व्यापार की दिशा और स्थिति एक दम बदल गई है। इस समय बाहरी व्यापार प्राय: शिथिल दशा में है। पर धीरे धीरे व्यापार के बढ़ने की आशा है।

परिशिष्ट

तालिक नं० १

विदेशों में भारतीयों की संख्या

देश का नाम	भारतीय की संख्या	गणना का वर्ष (सन)
लङ्का	८,२१,०००	१६२६
मलयद्वीप	६,५०,०००	१६२६
हांककाग	२,५५५	१६११
मारिशश	२,६४,५२६	१६११
सिशलीज	३२३	१६११
जिब्राल्टर	१०	१६२०
नाइजीरिया	५०	१६२०
कीनिया	२६,७५६	१६२२
यूगाण्डा	५,६०४	१६२१
न्यासालैण्ड	५१५	१६२१
जंजीवार	१२,८४१	१६२१
टैंगानीका	६,४११	१६२१

देश का नाम	भारतीयों की संख्या	गणना का वर्ष (सन्)
जमैका	१८,४०१	१९२२
ट्रिनीडाड	१.२१.२०	१९११
ब्रिटिश गायना	१,२४,९३५	१९११
फीजी	६०,६३४	१९२१
स्टूटोलैंड	१९७	१९११
स्वीज़रलैंड	७	१९११
रोडेशिया	१,३०६	१९२१
कनाडा	१,२०	१९२०
आस्ट्रेलिया	२ ०००	१९२२
न्यूज़ीलैंड	६०६	१९२१
नैटाल	१,४१,३३६	१९२१
ट्रांसवाल	१४५	१९२१
केपकलोनी	६,४९८	१९२१
आरेंजफ्रीस्टेट	१००	१९२१
ब्रिटिश-साम्राज्य	२२,९४७२२	
संयुक्तराज्य	३,१७५	१९२०
मेडेगास्कर	५,२७२	१९१७
रूमानिया	२.१४	१९११
ईस्ट इण्डीज़	५०.०२०	१९२१
सूरीनाम	३४.९५७	१२०
मोज़म्बीक	१.१००	अज्ञात
फ़ारस	३.८२०	१९२२
अन्य देश	१,००.५२५	

समस्त प्रवासी भारतीय २६,९५,२९४

तालिका

भारतवर्ष के प्रसिद्ध स्थानों की ऊँचाई (फुटों में समुद्र तापक्रम और वर्षा । प्रत्येक स्थान के सामने ऊपर की

पर्वतीय

नाम स्थान	स्थिति	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून
शीलांग	अ २५-३५	४६-५	५१८	६०४	६५-२	६६-६	६८-८
(४,९२०)	दे ९१-५८	०-४६	०-८१	१-८५	४-२६	१००६	१६-४६
दार्जिलिंग	अ २७२०	४०-१	४१-६	५१-७	५६-२	५८-३	५६-६
(७,६७६)	दे ८८-२३	०-७६	१-०८	२-७१	४-०८	७-८३	२४१६
शिमला	अ ३१-५	३८-८	४० ७	५१-५	५६-३	६६-०	६६-६
(७,२२४)	दे ७७-१२	३-२१	३-०७	७-४०	२-३२	३-७१	७-८४
मरी	अ ३३-५०	४०-५	४१-१	५१-१	६१-२	६८ ३	७२-३
(६,३३३)	दे ७२-२५	३-७३	४-१४	३ ६६	३-६२	२-६६	३-४१
श्रीनगर	अ ३४-२	३०-७	३३-०	४१-१	५५-७	६-६	६-६
(५,२०४	दे ७४ ०	३ ३६	१ २४	३ १०	३ ३०	२ ७२	१ ७
आबूपर्वत	अ २४ ६	५ ९२	६ ०	६० ६	७८ ०	७६ ८	७० ७
(३,६४५)	दे ७ ४५	० ७	० ३१	० १०	० ०८	० ६७	५ ५६
उटकमंड	अ ११ २३	१४०	५१५	८ ६	६१ ५	६ ३	५८ २
(७,३२७)	दे ७६ ४०	० ५	० ३८	१ ००	३ ४६	५ ३	६ १८
कोदईकनाल	अ १०१३	५५	० ५३	७ ५६ ६	६१ ५	६ ६	५६ ४
(७,६८८)	दे ७७ ३२	१ १७	१ ४८	३ ५६	५-२६	६ ४७	४ ०१
समुद्र तट के नगर							
कराची	अ २४ २५	६५ ५३	६८ ४	७५ ०	८० ६	८४ ०	८६ ८
(४६)	दे ६७०	० ६४	० ३	• १५	० २	० १	• २

नं० ३

तल से ऊपर) अक्षांस, देशान्तर, मासिक तथा वार्षिक ऊपरकी पंक्तिमें तापक्रम और नीचे की पंक्ति में वर्षा दी गई है:–

प्रदेश के नगर

जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर	वार्षिक	
७०.०	६६.०	६८.४	६७.१	६६.५	५०.७	६१.७	तापक्रम
१३.४८	१२.७६	१४.८५	६.२३	०.६८	०.२५	८२.४४	वर्षा
६१.५	६०.६	५६.४	५५.२	४८.८	४१.८	५२.७	तापक्रम
३१.७४	२५.६८	१८.३४	५.३५	०.१४	०.२०	१२१.८	वर्षा
६४.३	६२.८	६.६	५६.७	५०.१	४३.४	५५.१	तापक्रम
१८.४२	१७.८७	६.१७	१.१६	०.४१	१.२८	६७.६७	वर्षा
६६.४	६७.२	६५.६	६१.३	५२.८	४५.०	५८.०	तापक्रम
१२.५१	१३.४०	५.६४	१.८१	१.२७	१.३७	५.०६	वर्षा
७३.०	७०.८	६४.४	८३.२	४४.०	३६.२	५३.३	तापक्रम
२.७८	१.६५	१.१८	१.१४	०.४१	१.०८	२७.०३	वर्षा
६६.८	६६.६	६६.६	७१.६	६५.२	५६.०	६८.८	तापक्रम
२२.०५	२१.५१	६.५८	१.४६	०.२८	०.२४	६२.४६	वर्षा
५६.६	५७.४	५७.३	५७.२	५५.४	५४.३	५७.३	तापक्रम
५.६४	४.७०	४.४४	८.५७	४.००	१.६५	४६.६	वर्षा
५७.६	५८.७	५७.६	५६.६	५५.०	५५.०	५७.८	तापक्रम
३.८६	५.६६	६.७०	१२.४६	८.१७	५.२७	६४.८२	वर्षा
८४.३	८२.४	८२.०	८०.०	७४.४	६७.४	७७.६	तापक्रम
३.१६	१.७७	०.६	०.०१	०.१६	०.१६	७.६६	वर्षा

नाम स्थान		स्थिति	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून
दरावल	अ	२१.०	६९.६	७०.२	७०.०	७९.१	८१.५	८२.५
(१८)	दे	७०.२०	०.०१	०.०३	०.००	०.००	०.०२	५.३१
वम्बई	अ	१८.५७	७४.५	७४.८	७५.८	८१.१	८४.६	८२.४
(३७)	दे	७२.५५	०.१२	०.०२	००.१	००.५	०.५५	२०.५६
रत्नागिरि	अ	१६.५९	७३.२	७६.०	७२.५	८२.८	८४.३	८०.७
(११०)	दे	७३.२३	०.६०	०.०२	०.०५	०.५	१.२७	३.३२
मंगलोर	अ	१२.४९	७८.२	७९.३	८१.१	८३.४	८३.५	७८.८
(६२)	दे	७४.५४	० १३	००.७	०.११	२.८६	७.२६	३८.४७
कालीकट	अ	११.१२	७७.८	७९.८	८१.६	८३.६	८३.१	७८.५
(२७)	दे	७५.५०	०.१७	०.१६	०.७९	३.७०	९.०४	३६.४६
नीगापट्टम	अ	१७.४२	७५.५	७७.४	८०.५	८४.८	८७.७	८७.०
(२१)	दे	७२.४९	१.१५	०.७२	०.३२	१ ०२	१.८१	१.३०
मद्रास	अ	१३.५०	७५.३	७६.६	७९.५	८४.१	८८.१	८८.४
(२२)	दे	७९ २०	०.८३	०.२८	०.३७	०.६५	१.९३	२.०६
मसूलीपट्टम	अ	१६.४	७३.६	७६.७	८०.३	८५.२	८९.८	८७.८
(१५)	दे	८१.३३	०.१७०	०.६	०.२६	०.४०	१.३४	४.३३
गोपालपुर	अ	१९.२३	७०.०	७४.७	७८.३	८१.६	८४.१	८३.०
(१)	दे	८४ ९८	०.२३	०.४३	०.५६	०.७३	२.०१	५.७६
रंगून	अ	१६.५९	७४.७	७७.३	८१.२	८५.०	८२.२	६९.५
(२७)	दे	९६.२०	०.११	०.२३	०.१६	१.७४	११.७२	१८.३०

मैदान के नगर

नाम स्थान		स्थिति	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून
टांगू	अ	१८.५९	७०.०	३४.७	७१.९	८६.७	८५.३	८१.३
(१३८)	दे	९६.४०	०.०६	०.१२	०.०८	१.९०	६.४३	१३.६२
मांडले	अ	२२.०	६८.८	७३.८	८२.१	८९.२	८८.५	८५.४
(२५०)	दे	९३.१५	०.०६	०.०८	०२१	१.१९	५.२६	५.१०

जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर	वार्षिक	
८०-०	७६-१	७६-०	७६-५	७३-•	७२-३	७२-३	तापक्रम
८-६२	७-२७	२-४०	०-८१	०-६६	०-१०	२५-५३	वर्षा
७१-५	७३-४	७६-४	८७-७	७६-३	७६-४	७६-२	तापक्रम
२०-२६	१४-६३	१०-६३	१-७६	२-४७	०-०५	७३-६६	वर्षा
७८-३	७८-४	७८-२	७१.५	७७-६	७७-६	८६-२	तापक्रम
३४-१५	२०-१६	१२-५३	३-६२	०-६५	०-०६	१०४-१७	वर्षा
७७.१	७७-३	७७-६	७८-६	७९-८	७६-०	७६-६	तापक्रम
३७-३६	२२-८८	११-६	७-६•	१६.७	०-५०	१२६-८३	वर्षा
७६-७	७७-४	७८-३	७६-१	७६-५	७८-६	७५-६	तापक्रम
२६-३६	१४-८६	७-३६	६-,२	३-८०	१-३२	११६-२०	वर्षा
८५-६	८४-४	८३-४	८०-६	७८-३	७६-०	८१.८	तापक्रम
१-७४	३-२६	३- ५	१०-०८	१५-७१	६-१२	५१-२२	वर्षा
८५-७	८४-५	८३-०	८८-८	७७-६	७५-७	८६-८	तापक्रम
३-८०	४-६६	४-८४	१•-६३	१३-३०	५-२५	४८-३	वर्षा
८३-६	८३-४	८३-०	८१-२	७७-४	७४-०	८१-४	तापक्रम
५-६७	६-०७	६-५६	८-६३	४-४३	•-५३	३८-३०	वर्षा
८१-८	८२.०	८२-२	७६-ं	७४-३	६६-८	७८-३	तापक्रम
६-११	७-२•	६-८६	६-८४	३-५०	०७-२	४३-६५	वर्षा
७८-८	७८-७	७६-१	८०-०	७८-३	७५-३	७६-२	तापक्रम
२१-३७	१६-६५	१५-८६	७-,२	२-५२	•-०७	०८-८६	वर्षा
८०-१	८१-१	८१-३	८१-४	७७-४	७१-६	७६-३	तापक्रम
१७-४८	१८-५३	११-४६	६-४५	१-२५	०-१६	७८-०५	वर्षा
८५-२	८७-४	८३-५	८२-५	५५-६	६६-५	८०-८	तापक्रम
३-२६	४-१६	६-२१	४-४५	१-६७	•-२०	३२-६३	वर्षा

स्थान	स्थिति	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून
सिल्चर	अ २४-५०	६३-८	६७-९	७६-९	७८-०	८०-१	८१-२
(१०४)	दे ९२-५१	०-६४	२-३२	७-९३	१३-५६	१५-७६	२०-३९
कलकत्ता	अ २२-३२	६५-२	७०-३	७९-३	८५-०	८५-७	८४-५
(२१)	दे ८८-२६	०-२९	१-०२	१-१४	१-४५	५-६०	११-०४
बर्दवान	अ २३-२०	६५-७	७०-०	८०-४	८६-७	८९-५	८५-९
(९९)	दे ८७-५५	०-३८	०-८९	१-२४	२-२०	५-५६	१०-१७
पटना	अ २५-३८	६०-८	६५-३	७६-९	८६-२	८८-०	८६-४
(१८३)	दे ८५-१२	०-७२	०-५३	०-३५	०-३०	१-७०	७-७६
बनारस	अ २५-२५	६०-०	६५-३	७६-६	८६-८	९१-३	८९-४
(२६७)	दे ३०	०-७८	०-५१	०-३३	०-१५	०-५६	५-४५
प्रयाग	अ २५-३०	५९-५	६४-९	७६-८	८७-५	९२-५	९०-८
(३०९)	दे ८१-५५	०-८२	०-४८	०-२८	०-१४	०-२९	५-०९
लखनऊ	अ १६-५३	५८-७	६३-७	७५-२	८६-४	९०-६	९०-२
(३६८)	दे ८०-५२	०-९०	०-४५	०-३२	०-११	०-९१	५-३४
आगरा	अ २७-१८	६०-१	६८	७६-७	८८-१	९४-०	९३-४
(५५५)	दे ७७-५७	०-५५	०-३३	०-२५	०-१६	०-६४	२-८४
मेरठ	अ २९-९	५६-०	६०-१	७१-१	८२-७	८८-४	८९-४
(७३८)	दे ७७-३८	१-०५	०-८३	०-८३	०-३४	०-७०	३-१३
दिल्ली	अ २८-३५	५७-९	६२-२	७४-१	८६-२	९१-७	९१-२
(७१८)	दे ७७-१०	१-०२	०-६१	०-६७	०-३५	०-७१	३-१८
लाहौर	अ ३१-३५	५३-०	५७-३	६९-०	८०-९	८८-९	९३-०
(७०२)	दे ७४-२०	०-८७	१-१३	०-८९	०-५१	०-८०	१-८६
मुल्तान	अ ३०-१०	५५-६	५९-८	७१-६	८२-३	९१-४	९४-९
(४२०)	दे ७१-२२	०-३९	०-३६	०-४२	०-२७	०-३९	०-४३
जैकबाबाद	अ २८-२०	५७-३	६२-४	७४-५	८५-५	९४-२	९०-७
(१८६)	दे ६८-२८	०-८२	०-२७	०-२५	०-१७	०-१५	०-१०

जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर	वार्षिक	
८२-६	८२-४	८१-७	७०-७	७३-१	६६·०	७५-९	तापक्रम
१९.१८	१८.७६	१३.३५	६.४०	१.३१	२.१४	१२१.४३	वर्षा
८३.०	८०.४	८०.६	८०.०	७२.४	६५.६	७७.९	तापक्रम
१२.३१	१२.३९	१०.४०	३.८७	०.६२	०.३१	६०.८३	वर्षा
८३.६	८२.८	८३.१	८०.७	७३.०	६६.३	७८.६	तापक्रम
१२.३२	११.४९	८.५९	३.९३	०.६४	०.१३	५७.५४	वर्षा
८३.६	८३.१	८३.१	७९.५	७[illegible].१	६२.२	७७.१	तापक्रम
११.४१	१०.७२	७.८२	३.८९	०.२०	०.१४	४४.५४	वर्षा
८४.१	८२.१	८३.३	७७.९	६७.८	६०.२	७७.२	तापक्रम
१२.५४	११.१९	६.५४	२.०४	०.१७	०.१७	४०५९	वर्षा
८४.५	८३.२	८३.०	७७.६	६७.५	५९.७	७७.३	तापक्रम
१२.२४	१०.८८	६.३२	२.४	०.५	०.२३	३९.५२	वर्षा
८५.३	८३.४	८३.१२	७७.०	६६.३	५८.९	७६.६	तापक्रम
११.३९	११.३३	६.६१	१.३३	०.०८	०.४४	३९.२	वर्षा
८६.०	८३.२	८४.२	७९.४	६८.०	६१.२	७८.४	तापक्रम
९.६७	७.११	४.४१	०.३९	०.०६	०.२९	२६.७	वर्षा
८५.०	७३.२	८१.७	७३.७	६३.५	५६.७	७४.४	तापक्रम
९.३७	७.६४	४.५५	८.४३	०.०८	०.०४	२९.६२	वर्षा
८६.४	८४.५	८३.९	७८.५	६७.६	५९.६	७७.१	तापक्रम
८.३८	७.४४	४.४३	०.३९	०.१०	४.४१	२०.७	वर्षा
८९.१	८७.१	८४.८	७५.७	६३.२	६५.४	७४.७	तापक्रम
६.६५	४.१८	२.१०	०.४३	०.११	०.४७	२०.७	वर्षा
९२.७	९०.४	८८.०	७८.६	६७.१	५७.७	७७.५	तापक्रम
२.१९	१.६६	०.६०	१.०७	०.०६	०.२७	७.११	वर्षा
९५.०	९१.६	८८.८	७९.२	६०.५	५८.९	७९.३	तापक्रम
१.१८	१.२५	०.१९	०.०१	०.१०	०.१५	४.१	वर्षा

स्थान	स्थिति	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून
हैदराबाद सिन्ध	अ १८.०	६३.६	६७.१	७७.६	८६.२	९१.६	९१.७
(९६)	दे ७८-०	०-२४	०-२२	०-१०	०-०७	०-११	०-४१
बीकानेर	अ २८-०	५९-२	६३-६	७६-६	८८-४	९४-१	९४-७
(७७१)	दे ७३-१२	०-३८	०-२४	०-१८	०-१४	०-१४	१-६५
राजकोट	अ २७-२५	६६-८	७०-०	७७-१	८५-१	८०-२	८७-५
(४२५)	दे ७०-४२	०-०५	०-१०	०-०१	०-०१	०-३१	५-२१
अहमदाबाद	अ १९-१२	७०-३	७१-०	८०-७	८१-२	९२-६	८१-४
(१६३)	दे ७४-३४	०-०२	०-१०	०-०१	०-०३	०-४६	३-१४

पठार के नगर

स्थान	स्थिति	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून
अकोला	अ २०-४४	६८-५	७३-७	८१-०	९०-१	९३-३	८६-२
(९३०)	दे ७७-५७	०.४५	०.१८	०.२३	०.१६	०.३१	५.१२
जबलपुर	अ २३.१२	६१.८	६८.८	७६.५	८६.३	९१.९	८५.७
(१,०२५)	दे ७९.५	०.७१	०.५१	०.४८	०.२२	०.४७	८.५३
नागपुर	अ २०.१२	६८.८	७४.३	८२.४	९०.६	९४.५	८६.०
(१,०३७)	दे ७९.४	०.५८	०.४२	०.५७	०.४६	०.६८	८.२४
रायपुर	अ २१.३८	६७.७	७३.६	८१.९	९०.३	९३.६	८६.०
(९७०)	दे ८१.४७	०.३०	०.३३	०.५९	०.५९	०.७६	६.३८
अहमदनगर	अ २३.५	६७.१	७१.३	७७.५	८२.५	८३.८	७९.२
(२,१५२)	दे ७१.३५	०.२७	०.१२	०.१५	०.४०	१.१६	४.३७
पूना	अ १८.२५	६१.८	७३.९	८०.१	८३.९	८३.८	७८.७
(१,८४०)	दे ७३.५२	०.१८	०.०५	०.१३	०.५८	१.४५	५.२४
शोलापुर	अ १७.३७	७२.७	७७.७	८४.२	८८.४	८८.९	८१.८
(१,५९०)	दे ७५.४	०.०६	०.०८	०.९२	०.३३	१.०९	४.११
बेलगांव	अ १५.५०	६९.८	७२.०	७७.५	७९.२	७८.०	७.२८
(२,५३९)	दे ७४.३२	०.०६	०.०३	०.४९	२.०५	२.७३	९.३२

जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नव०	दिसम्बर	वार्षिक	
८८-६	८६-०	८६-०	८२-७	७३-४	६५-०	७९-९	तापक्रम
२-६१	२-७७	०-५४	०-००	०-१०	०-०५	७-२२	वर्षा
९०-४	८७-३	८७-४	८२-४	७०-५	६१-४	७९-६	तापक्रम
३-२९	३-१४	१-०८	०-०९	०-६	०-१८	११-२७	वर्षा
८१-७	८०-६	८०-८	८०-४	७४-१	६८-४	७८-५	तापक्रम
१०-८९	६-४१	३-७५	०-६७	०-३३	०-०६	२७-८०	वर्षा
८३-७	८३-०	८३-५	८४-३	७८-३	७२-९	८२-१	तापक्रम
११-४९	८-२६	४-४२	०-५५	०-१९	०.०४	२९-५२	वर्षा
८०-६	७८-९	७९-७	७७-९	७१-७	६६-८	७९-२	तापक्रम
८-७४	६-४८	६-२४	२-१४	०-४४	०-५८	३१-१०	वर्षा
७९-०	७८-०	७९-०	७४-८	६६-६	६०-३	७५-६	तापक्रम
१८-८२	१५-१३	८-३८	१-५५	०-३०	०-२६	५५-४५	वर्षा
८०-४	७९-४	८०-४	७८-४	७२-३	६७-१	७९-६	तापक्रम
१३-१९	९-७९	८-११	२-१४	०-५१	०-४३	४५-६२	वर्षा
७१-६	७१-०	८०-३	७८-१	७१-५	६६-०	७९-०	तापक्रम
१४-९४	१२-७१	७-७५	२-०९	०-६२	०-२०	५०-२७	वर्षा
७६-२	७४-९	७४-५	७१ ५	७०-५	६५-१	७५ ०	तापक्रम
३-०३	३-६०	६-७५	३-१२	०-८९	०-४४	२४-६६	वर्षा
७४-९	७३-७	७४-४	७४-२	७३-५	६८-९	७५-९	तापक्रम
६-९०	४-०३	४-४३	४-११	०-८५	०-२०	२८-२६	वर्षा
७८-९	७०-९	७५-३	७५-७	७४-६	६१-२	७९-३	तापक्रम
४-१९	६-४२	७-७७	३-६३	०-८७	०-३०	२-७४	वर्षा
७०-१	६९-७	७०-४	७० ९	७०-९	६९-३	७१-८	तापक्रम
१५-३७	९-१५	४-०५	५-०९	१३-३	०-२४	४९-९१	वर्षा

स्थान	स्थिति	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून
हैदराबाद सिन्ध	अ १८.०	६३.६	६७.१	७७.६	८६.२	९१.६	९१.७
(९६)	दे ७८-०	०-२४	०-२२	०-१०	०-०७	०-११	०-४१
बीकानेर	अ २८-०	५९-२	६३-६	७६-६	८८-४	९४-१	९४-७
(७७१)	दे ७३-१२	०-३८	०-२४	०-१८	०-१४	०-१४	१-६५
राजकोट	अ २७-२५	६६-८	७०-०	७७-१	८५-१	८०-२	८७-५
(४२५)	दे ७०-४२	०-०५	०-१०	०-०१	०-०१	०-३१	५-२१
अहमदाबाद	अ १९-१२	७०-३	७१-०	८०-७	८१-२	९२-९	८१-४
(१६३)	दे ७४-३४	०-०२	०-१०	०-०१	०-०३	०-४६	३-१४
पठार के नगर							
अकोला	अ २०-४४	६८-५	७३-७	८१-०	९०-१	९३-३	८६-२
(९३०)	दे ७७-५७	०.४५	०.१८	०.२३	०.१६	०.३१	५.१२
जबलपुर	अ २३.१२	६१.८	६८.८	७६.५	८६.३	९१.९	८५.७
(१,०२५)	दे ७९.५	०.७१	०.५१	०.४८	०.२२	०.४७	८.५३
नागपुर	अ २०.१२	६८.८	७४.३	८२.४	९०.६	९४.५	८६.०
(१,०३७)	दे ७९ ४	०.५८	०.४२	०.५७	०.४६	०.६८	८.२४
रायपुर	अ २१.३८	६७.७	७३.६	८१.९	९०.३	९३.६	८६.०
(९७०)	दे ८१.४७	०.३०	०.३३	०.५९	०.५९	०.७६	६.३८
अहमदनगर	अ २३.५	६७.१	७१.३	७७.५	८२.५	८३.८	७९.२
(२,१५२)	दे ७१.३५	०.२७	०.१२	०.१५	०.४०	१.१६	४.३७
पूना	अ १८.२५	६१.८	७३.९	८०.१	८३.९	८३.८	७८.७
(१,८४०)	दे ७३.५२	०.१८	०.०५	०.१३	०.५८	१.४५	५.२४
शोलापुर	अ १७.३७	७२.७	७७.७	८४.२	८८.४	८८.९	८१.८
(१,५९०)	दे ७५.४	०.०६	०.०८	०.९२	०.३३	१.०९	४.११
बेलगाव	अ १५.५०	६९.८	७२.०	७७.५	७९.२	७८.०	७.२८
(२,५३९)	दे ७४.३२	०.०६	०.०३	०.४९	२.०५	२.७३	९.३२

जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नव०	दिसम्बर	वार्षिक	
८८-६	८६-०	८६-०	८२-७	७३-४	६५-०	७९-९	तापक्रम
२-६१	२-७७	०-५४	०-००	०-१०	०-०५	७-२२	वर्षा
९०-४	८७-३	८७-४	८२-४	७०-५	६१-४	७९-६	तापक्रम
३-२९	३-१४	१-०८	०-०९	०-६	०-१८	११-२७	वर्षा
८१-७	८०-६	८०-८	८०-४	७४-१	६८-४	७८-५	तापक्रम
१०-८९	६-४१	३-७५	०-६७	०-३३	०-०६	२७-८०	वर्षा
८३-७	८३-०	८३-५	८४-३	७८-३	७२-९	८२-१	तापक्रम
११-४९	८-२६	४-४२	०-५५	०-१९	०.०४	२९-५२	वर्षा
८०-६	७८-९	७९-७	७७-९	७१-७	६६-८	७९-२	तापक्रम
८-७४	६-४८	६-२४	२-१४	०-४४	०-५८	३१-१०	वर्षा
७९-०	७८-०	७९-०	७४-८	६६-६	६०-३	७५-६	तापक्रम
१८-८२	१५-१३	८-३८	१-५५	०-३०	०-२६	५५-४५	वर्षा
८०-४	७९-४	८०-४	७८-४	७२-३	६७-१	७९-६	तापक्रम
१३-१९	९-७९	८-११	२-१४	०-५१	०-४३	४५-६२	वर्षा
७१-६	७१-०	८०-३	७८-१	७१-५	६६-०	७९-०	तापक्रम
१४-९४	१२-७१	७-७५	२-०९	०-६२	०-२०	५०-२७	वर्षा
७६-२	७४-९	७४-५	७१ ५	७०-५	६५-१	७५ ०	तापक्रम
३-०३	३-६०	६-७५	३-१२	०-८९	०-४४	२४-६६	वर्षा
७४-९	७३-७	७४-४	७४-२	७३-५	६८-९	७५-९	तापक्रम
६-९०	४-०३	४-४३	४-११	०-८५	०-२०	२८-२६	वर्षा
७८-९	७०-९	७५-३	७५-७	७४-६	६१-२	७९-३	तापक्रम
४-१९	६-४२	७-७७	३-६३	०-८७	०-३०	२-७४	वर्षा
७०-१	६९-७	७०-४	७० ९	७०-९	६९-३	७१-८	तापक्रम
१५-३७	९-१५	५-०५	५-०९	१३-३	०-२४	४९-९१	वर्षा

स्थान	स्थिति	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून
हैदराबाद सिन्ध	अ १८.०	६३.६	६७.१	७७.६	८६.२	९१.६	९१.७
(९६)	दे ७८-०	०-२४	०-२२	०-१०	०-०७	०-११	०-४१
बीकानेर	अ २८-०	५९-२	६३-६	७६-६	८८-४	९४-१	९४-७
(७७१)	दे ७३-१२	०-३८	०-२४	०-१८	०-१४	०-१४	१-६५
राजकोट	अ २७-२५	६६-८	७०-०	७७-१	८५-१	८०-२	८७-५
(४२५)	दे ७०-४२	०-०५	०-१०	०-०१	०-०१	०-३१	५-२१
अहमदाबाद	अ १९-१२	७०-३	७१-०	८०-७	८१-२	९२-९	८१-४
(१६३)	दे ७४-३४	०-०२	०-१०	०-०१	०-०३	०-४६	३-१४

पठार के नगर

स्थान	स्थिति	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून
अकोला	अ २०-४४	६८-५	७३-७	८१-०	९०-१	९३-३	८६-२
(९३०)	दे ७७-५७	०.४५	०.१८	०.२३	०.१६	०.३१	५.१२
जबलपुर	अ २३.१२	६१.८	६८.८	७६.५	८६.३	९१.९	८५.७
(१,०२५)	दे ७९.५	०.७१	०.५१	०.४८	०.२२	०.४७	८.५३
नागपुर	अ २०.१२	६८.८	७४.३	८२.४	९०.६	९४.५	८६.०
(१,०३७)	दे ७९ ४	०.५८	०.४२	०.५७	०.४६	०.६८	८.२४
रायपुर	अ २१.३८	६७.७	७३.६	८१.९	९०.३	९३.६	८६.०
(९७०)	दे ८१.४७	०.३०	०.३३	०.५९	०.५९	०.७६	६.३८
अहमदनगर	अ २३.५	६७.१	७१.३	७७.५	८२.५	८३.८	७९.२
(२,१५२)	दे ७१.३५	०.२७	०.१२	०.१५	०.४०	१.१६	४.३७
पूना	अ १८.२५	६१.८	७३.९	८०.१	८३.९	८३.८	७८.७
(१,८४०)	दे ७३.५२	०.१८	०.०५	०.१३	०.५८	१.४५	५.२४
शोलापुर	अ १७.३७	७२ ७	७७.७	८४.२	८८.४	८८.९	८१.८
(१,५९०)	दे ७५.४	०.०६	०.०८	०.९२	०.३३	१.०९	४.११
बेलगांव	अ १५.५०	६९.८	७२.०	७७.५	७९.२	७८.०	७.२८
(२,५३९)	दे ७४.३२	०.०६	०.०३	०.४९	२.०५	२.७३	९.३२

जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नव०	दिसम्बर	वार्षिक	
८८-६	८६-०	८६-०	८२-७	७३-४	६५-०	७९-९	तापक्रम
२-६१	२-७७	०-५४	०-००	०-१०	०-०५	७-२२	वर्षा
९०-४	८७-३	८७-४	८२-४	७०-५	६१-४	७९-६	तापक्रम
३-२९	३-१४	१-०८	०-०९	०-६	०-१८	११-२७	वर्षा
८१-७	८०-६	८०-८	८०-४	७४-१	६८-४	७८-५	तापक्रम
१०-८९	६-४१	३-७५	०-६७	०-३३	०-०६	२७-८०	वर्षा
८३-७	८३-०	८३-५	८४-३	७८-३	७२-९	८२-१	तापक्रम
११-४९	८-२६	४-४२	०-५५	०-१९	०-०४	२९-५२	वर्षा
८०-६	७८-९	७९-७	७७-९	७१-७	६६-८	७९-२	तापक्रम
८-७४	६-४८	६-२४	२-१४	०-४४	०-५८	३१-१०	वर्षा
७९-०	७८-०	७९-०	७४-८	६६-६	६०-३	७५-६	तापक्रम
१८-८२	१५-१३	८-३८	१-५५	०-३०	०-२६	५५-४५	वर्षा
८०-४	७९-४	८०-४	७८-४	७२-३	६७-१	७९-६	तापक्रम
१३-१९	९-७९	८-११	२-१४	०-५१	०-४३	४५-६२	वर्षा
७१-६	७१-०	८०-३	७८-१	७१-५	६६-०	७९-०	तापक्रम
१४-९४	१२-७१	७-७५	२-०९	०-६२	०-२०	५०-२७	वर्षा
७६-२	७४-९	७४-५	७१ ५	७०-५	६५-१	७५ ०	तापक्रम
३-०३	३-६०	६-७५	३-१२	०-८९	०-४४	२४-६६	वर्षा
७४-९	७३-७	७४-४	७४-२	७३-५	६८-९	७५-९	तापक्रम
६-९०	४-०३	४-४३	४-११	०-८५	०-२०	२८-२६	वर्षा
७८-९	७०-७	७७-३	७७-७	७४-६	६१-२	७९-३	तापक्रम
४-१९	६-४२	७-७७	३-६३	०-८७	०-३०	२-७४	वर्षा
७०-१	६९-७	७०-४	७० ९	७०-९	६९-३	७१-८	तापक्रम
१५-३७	९-१५	४-०५	५-०९	१३-३	०-२४	४९-९१	वर्षा

स्थान		स्थिति	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून
हैदराबाद द०	अ	२५.३०	७०.४	७७.१	८३.१	८८.०	९०.१	८२.६
(१,६९०)	दे	६८.२२	०.०५	०.१२	०.६७	०.७३	०.७८	४.४४
बंगलोर	अ	१७.५	६७.५	७२.०	७६.७	७९.९	७८.५	७५.०
(३०२१)	दे	७७.३०	०.०६	०.२२	०.७२	१.१९	४.५३	४.१३
विलारी	अ	१५.१२	७३.२	७९.६	८५.६	८९.३	८९.०	८३.४
(७५)	दे	७६.५०	०.१०	०.०३	०.४२	०.८३	१.९३	१.८४

तालिका

भारतवर्ष की उपज का

	धान	गेहूँ	दाल इत्यादि	ईख
मद्रास	१२,९३२	३९	२५-०३४	८६
बम्बई	३८२५	३८१७	२६,५८२	९२
बङ्गाल	५४ ५०५	२ ६१७	१२,४१३	१००८
उत्तर प्रदेश	९,४३२	१०,२१०	२६,८०२	१,७०४
पञ्जाब	१,०७२	१२,२१५	१३३५५	५१७
ब्रह्मा	१४ ५४२	२३	२,२१७	२०
मध्यप्रदेश और बरार	७,०१४	५ २७३	१७,०१८	३०
आसाम	६,१८८	१६	१५७	६३
उ० प० सीमाप्रान्त	५१	१५११	८१[illegible]	४३
योग	१,०९,६०७	३६,८६१	१,२४,७८६	३,५६२

जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नव०	दिसम्बर	वार्षिक	
७७.६	७७.१	७७.४	७६.८	७२.३	६६.	७८.५	तापक्रम
६.२८	३.७६	७.१०	२.६८	१.५३	०.१७	३१.५५	वर्षा
७२.०	७१.८	७१.८	७१.८	६६.६	६७.५	७२.८	तापक्रम
४.१३	६.००	७.००	६.७४	२.३१	०.३६	३६.८३	वर्षा
८०.६	८०.६	८०.२	७१.१	७५.३	७२.५	८०.८	तापक्रम
४.०१	२.१८	४.१२	४.०४	१.२०	०.२०	१८.६०	वर्षा

नं०

विस्तारक्षेत्र (वर्ग मीलों में)

जानवरों का चारा	चाय	पोस्ता	तम्बाकू	नील	रुई
३७३	१६	...	२२९	४०६	२,७६५
२५	...	...	१२६	६	५,६०५
१०६	११२	३३५	८४०	३६०	१२५
१,५४४	१३	६८६	८६	२२०	१,३०६
३,३३०	१६	१४	८४	८४	१,६३०
४०	३	...	१००	१	२४६
४३०	...	...	५०	...	६,४६५
७७	५२८	...	७	...	६
८०	...	...	१०	....	८
५,२०५	७११	१,०३८	१,५२४	१,११३	१८,५३६

तालिक नं० ४

भारतवर्ष के प्रसिद्ध स्थानों की दूरी (मीलों में)

समुद्री मार्ग से दूरी

बम्बई—अदन	१६५०
”—बन्दर अब्बास	९७०
”—बसरा	१५९७
”—कलकत्ता	२०६
”—कोलम्बो	८८०३
”—डरबन	३८२१
”—कराची	४८०
” लण्डन	६२६०
”—मार्सेल्स	४२५३
”—प्लीमथ	६०००
”—पोर्टसईद	३०४७
”—सिंगापूर	२४५०
”—रंगून	२१०७
”—हांगकाग	३९१०
”—शंघाई	४८४१
”—सिडनी	६४३१
”—जैंजीबार	२५०९
”—एडेलेड	५३५४

कलकत्ता—एडेलेड	५७३९
”—अदन	३३५३
”—बसरा	३५८४
”—बम्बई	२१०६
”—कोलम्बो	१२३१
”—डरबन	४७६१
”—कराची	२५६६
”—लण्डन	७९५४
”—मार्सेल्स	६२४७
”—प्लीमथ	७७००
”—पोटसईद	३७४१
”—सिंगापुर	१६३०
”—रंगून	७३७
”—हांगकांग	४२५३
”—शंघाई	५२२६
”—सिडनी	५८४०

तालिका नं० ५

रेल-मार्ग से दूरी

कलकत्ता—शिमला—	११२६ (ई०)	बम्बई—लखनऊ	८८५
	१०८६ (ओ०)	”-सिकन्दराबाद	४८७
”-दिल्ली	९०३	”-मद्रास	७९४
”-बम्बई	१३४७ (ई०)	”-बङ्गलोर	७४४ पू० लो०
	१२२३ (बी०)	”-	६९२ वा०
”-लाहौर	१२१६ (ई०)	दिल्ली-शिमला	२२३
	११७६ (ओ)	”-लखनऊ	३१५
”-पेशावर	१५०१ (ई०)	”-दिल्ली-आगरा	१२२
	१४६३ (बी०)	”-कानपुर	२७०
बम्बई—शिमला	११८६ (जी०)	”-मद्रास	११६७
	१०६८ (बी०)	”-कोलम्बो	२२३३
”—कराची	९९२	”-कराची	७८१ (बी०)
”-क्वेटा	१३०७		
”-दिल्ली	९५७ (जी०)	”-क्वेटा	८५२
	८६५(बी०)	”-लाहौर	३१०
”-लाहौर	१२५४ (जी०)	”-	
	१११६ (बी०)		
”-रावलपिंडी	१४३४ (जी०)	दिल्ली-रावलपिंडी	४७७
	१३४२ (जी०)	”-पेशावर	५८५
”-पेशावर	२५४२ (जी०)	”-रंगून-मांडले	३८६
	१४५० (बी)	”-मिचीना	७२५

ई०=ईस्ट इण्डियन बी०=बी० बी० एण्ड सी० आई, जी०=जी० आई० पी० ओ०=अवध रुहेलखंड, ना०=नार्थ वेस्टर्न, पू०=पूना लोंडा होकर, वा—वादी रायचूर होकर।

नं० ६

सिंचाई की नहरें

उपशाखायें और बम्बे	लगी हुई पूँजी	आमदनी
मील	रु०	रु०
६०२	१,२२८५,६१८	८८,८,४६०
५६८	८३,६१,६२८	४०६६१२
१,६७१	४५,५२,०६७	११,१४,७४८
१८६	५०,८७,३१७	१,५२६६
७६५	५२,८७,८८५	२१८६,२६६
	७३,२१,४३६	३,६७,२२७
३,२६७	३.६७,८३,१२३	६२,८८,३७०
११३	४० ८१,८१,६	६०,८१५
५८	१,०१६०,६७०	३८१५६३
१,६६४	१,५६,४७,१७६	४०१२११४
४६३	६०,४४,७६२	३२४६३६
२५८	६०,०६,०१८	२,४४,१२२
२,१८६	१,६६,७१,७७५	३७,२८,०१६
२८६	२,२३,६६,४८४	२,५७७०६
२,२४२	३०,६४,७८४	१६,६३,२८२६
३,१३४	४,१७,२०,८५५	४३,१६,६३८
६६२	१,७३,३०४७६	४३,८२,६४६
१४७	४२,६२,८३६	५,६६०३३
४६६	१,००२१,२८६	५३,८१४
२२१	५७,१४,३८१	३,४४,०६३

नहरों का नाम	प्रान्त, मुख्य नहरें और शाखायें	
मान की नहर	ब्रह्मा	५४
मूथा की नहरें	बम्बई दक्षिण और गुजरात	६८
नीरा की नहर	,, ,, ,, ,,	१०७
नीरा के दाहिने किनारे की नहर	,, ,, ,, ,,	—
उड़ीसा का बांध	बिहार और उड़ीसा	३२०
पिनर नदी के नहरें	मद्रास	३०
पेरियर नहर	,,	१४५
परवरा की नहरें	बम्बई दक्षिण और गुजरात	३३
ऋशीकुल्य नहर	मद्रास	८०
श्वेवो का नहर	ब्रह्मा	७६
सरहिन्द की नहर	पञ्जाब	३१८
सोन नहर	बिहार और उड़ीसा	३५७
तेंदुला की नहर	मध्य प्रदेश	६८
त्रिवेनी की नहर	बिहार और उड़ीसा	६१
ट्रिपिल—नहरें	पञ्जाब	४३३
ऊपरी बड़ी द्वाब नहर	,,	८२
,, स्वात की नहर	उत्तरी प० सीमाप्रान्त	१४
वानगङ्गा की नहर	मध्य प्रदेश	२८
पश्चिमी यमुना की नहर सिरसा की शाखा को लेते हुए	पञ्जाब	२६४४
यूकी नहर	ब्रह्मा	५३५

१—भारतवर्ष का एक नक्शा खींचो और उसमें स्थलसीमा बनाने वाले सभी देशों के नाम लिखो। पैमाने से नाप कर यह भी बतलाओ कि प्रत्येक देश कितनी दूर (मील) तक भारतवर्ष के साथ सीमा बनाता है ?

२—उन सब प्रान्तों और प्रधान शहरों और नदियों के नाम लिखो जो कर्क रेखा के उत्तर में स्थित हैं। कर्क रेखा हिन्दुस्तान के किन किन पर्वतों और नदियों को काटती है।

३—भारतवर्ष के मुख्य प्राकृतिक विभाग क्या है। प्रत्येक की विशेषता का संक्षिप्त वर्णन करो।

४—भावर, तराई, कछार और दून से क्या अर्थ समझते हो ?

५—हिमालय प्रदेश की नदियों से दक्षिण भारत की नदियों की तुलना करो ?

६—भारतवर्ष में खनिज सम्पत्ति की बहुतायत होने का कारण क्या है ?

७—भारतवर्ष के किन भागों में सब से अधिक उपजाऊ धरती मिलती है, वह किस प्रका रबनी है ?

८—भारतवर्ष में कई प्रकार की जलवायु क्यों है। सब से अधिक खुश्क और सब से अधिक नम भागों को एक नक्शे में अङ्कित करो।

९—दक्षिणी-पश्चिमी मानसून से किन किन भागों में प्रबल वर्षा होती है। किन किन भागों में दूसरी मानसून से वर्षा होती है और क्यों ?

१०—भारतवर्ष के भिन्न भिन्न भागों में सिंचाई के क्या साधन हैं ?

११—धान, गेहूँ, और तम्बाकू को जमीन और जलवायु सम्बन्धी किन किन सुविधाओं की आवश्यकता होती है ?

१२—भारत के फौलाद और रुई के कारखाने पर एक संक्षिप्त लेख लिखो।

१३—भाषाओं के अनुसार भारतवर्ष किन किन प्रान्तों में विभाजित किया जा सकता है ? भाषा सम्बन्धी प्रत्येक प्रान्त का संक्षिप्त वर्णन करो।

१४—उत्तर प्रदेश के उन जिलों को एक नक्शे में अंकित करो जो शक्कर, ऊनी समान, क़लई के वर्तन, रेशम और अफीम के कारवार के लिये प्रसिद्ध हैं।

१५—पश्चिमी तटीय प्रदेश और पठार प्रदेश की उपज, जलवायु और आवादी का संक्षिप्त वर्णन करो।

१६—वम्बई, अहमदावाद और शोलापुर में पुतलीघरों की भरमार क्यों है?

१७—हैदरावाद राज्य की प्राकृतिक सम्पत्ति क्या है? यहां के निवासियों का संक्षिप्त वर्णन करो।

१८—कोयला और पेट्रोलियम किस प्रदेश में अधिक पाया जाता है और क्यों?

१९—चाय, जूट, नारियल, अफीम और मसाले हिन्दुस्तान के किन भागों में पैदा होते हैं और क्यों?

२०—काश्मीर के भूगर्भ, प्राकृतिक सम्पत्ति, मार्ग और उपज को ध्यान में रखकर एक लेख लिखो।

२१—नैपाल का एक नक्शा खींचों और उसमें प्रसिद्ध नगर, नदियों और पर्वतों को अंकित करो।

२२—शिकम और भूटान की तुलना करो।

२३—जूट के कारवार का विस्तार पूर्वक वर्णन करो।

२४—कलकत्ते की उत्पत्ति और वृद्धि इतनी शीघ्रता के साथ किन भौगोलिक कारणों से हुई?

२५—विहार प्रान्त और उत्तर प्रदेश की जलवायु और उपज में क्या अन्तर है।

२६—उत्तर प्रदेश में प्रधान प्राकृतिक विभाग कौन कौन से हैं?

२७—व्यापारिक महत्व की दृष्टि से सिन्ध और गङ्गा के मैदानों की तुलना करो।

२८—वम्बई प्रान्त में कौन से प्राकृतिक प्रदेश शामिल हैं?

जैकबाबाद
इलाहाब
नागपुर
मद्रा